

# गिट की स्त्राँस्वें

[ सामाजिक उपन्यास ]

लेखक

प्रो० श्यामसुन्दर

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

जी० एफ० डिग्री कॉलेज

शाहजहाँपुर

प्रकाशक

शक्ति प्रकाशन

शाहजहाँपुर

प्रथमावृत्ति ]

१९६३

[ मूल्य सात रुपया



प्रकाशक :—

शक्ति प्रकाशन

शाहजहाँपुर

मूल्य ७०० न० पैसे

सर्वाधिकार लेखक के आधीन

अपने पूजनीय भाई

डॉ० विशेश्वर प्रसाद, डि० लिट०

अध्यक्ष, इतिहास विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय

को

सादर समर्पित



## दो शब्द

मेरे प्रथम उपन्यास 'चट्टाने' के पश्चात् यह मेरा दूसरा उपन्यास 'गिद्ध की आँखें' समाज के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है। इसमें गाँधी युग से लेकर आज तक के युग सत्य का जागरूक चित्रण है। गाँधी जी जिस आदर्श को लेकर समाज का निर्माण करना चाहते थे, आज प्रत्येक क्षेत्र में ठीक उसके विपरीत भ्रष्टाचार हो रहा है। शिक्षा सस्थाओं से लेकर असेम्बली भवन तक इसके शिकार हैं। निम्न वर्ग को भी हमारे इस पाश्चात्य सभ्यता वाले नारे का पता चल गया है कि 'लिखित नहीं होना चाहिये फिर कुछ भी करते रहो।' इसका निवारण करने के लिये यदि कोई भी सामाजिक नेता, विधायक, मिनिस्टर अथवा समाज का कोई भी पुरुष आगे बढ़ता है, उसे उल्टे मुँह की खानी पड़ती है।

मुझे इतना ही कहना है, शेष तो पाठक-गण ही इसकी सार्थकता को सिद्ध कर सकेंगे। यदि इस पुस्तक के रूप में मैं समाज को कुछ भी दे सका, यही मेरी सफलता होगी।

श्यामसुन्दर

१ जून १९६३

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

जी० एफ० डिग्री कॉलेज

शाहजहाँपुर



गिद्ध की आँखें



मास्टर साहब ने मेरी ओर आकर्षित होते हुए कहा 'क्यों जी तुम रो क्यों रहे हो ?'

मैंने अपने कोट की बाहों से अपने आँसू पोछते हुए उत्तर दिया 'मास्टर साहब सुशील कहते हैं, मेरी माँ मर गई' यह कहते हुए मैंने फिर से अपनी कमीज की छोर से आँसू पोछ लिये ।

मास्टर साहब ने कुरसी पर से उठते हुए, मेरे पास आकर मेरी पीठ सुहलाते हुए समझाया 'नहीं बेटा, रोते नहीं है, तुम्हारे पिता जी ने मुझसे कहा है कि तुम्हारी माँ अस्पताल में इलाज करवाने गई है । अच्छी होकर वह वापस आ जायेगी ।'

सुशील ने फिर से बिछी हुई पट्टियों पर से उठते हुए कहा 'नहीं मास्टर साहब यह हमसे कह रहे थे कि इनकी माँ को लोग कपड़ों में लपेट कर चींटों से कसकर ले गये ।

'चल बैठ बड़ा बातूनी आया, अरे वह स्ट्रेचर होगा । स्ट्रेचर ही अस्पताल ले जाया जाता है । वह बीमार अधिक हो गई होगी । इसीलिये उन्हें अस्पताल पहुँचा दिया गया ।' मास्टर साहब ने फिर से मेरे सिर के बाल सुहलाते हुए कहा ।

इसके पश्चात मास्टर साहब अपने स्थान पर चले गये और ब्लैक बोर्ड पर बड़ा-बड़ा चॉक से लिख दिया 'ख' और मुझसे पूछा, 'यह क्या है ?'

मुझे अपनी प्रारम्भिक पाठशाला में अध्ययन करते हुए केवल चार ही दिवस व्यतीत हुए थे। मैंने देख लिया था कि मास्टर साहब की बात का उत्तर खड़े होकर दिया जाता है। मैं अपनी तख्ती उठाकर खड़ा हो गया। तैंतीस इंच के छोटे पुरुष ने खड़े होते हुए उत्तर दिया 'ख से खरगोश'।

मास्टर साहब ने फिर पूछा 'तुमने खरगोश देखा है' मैंने तुरंत तपाक से उत्तर दिया 'जी मास्टर साहब मेरे नाना के पास कई खरगोश हैं'।

एक दूसरा लड़का महेश भी खड़ा हो गया। बोला 'मास्टर साहब कल यह कह रहे थे कि इनके खरगोश का सिर बिल्ली खा गई।'।

मास्टर साहब अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बोले 'हाँ बिल्लियाँ खरगोश खाती हैं।' मेरी ओर आकर्षित होते हुए समझाते हुए कहते गये 'देखो खरगोश कैसा सीधा पर चौकन्ना जानवर होता है। मनुष्य को ऐसा ही जीवन में चौकन्ना और सतर्क रहना चाहिए। खरगोश के बहुत से शत्रु होते हैं, इसीलिये वह सदा अपने कान खड़े किये रहता है। उसके कैसे लम्बे लम्बे नोकीले कान होते हैं। ऐसे ही कान खोलकर हर बात सुननी और समझनी चाहिये।'।

मेरी छोटी सी पाठशाला बड़े ही सुंदर वातावरण में बनी हुई थी। खूब ऊँचे-ऊँचे हवादार कमरे थे। रोशनी आने का अच्छा प्रबंध था। एक लाइन में दोहरे सात-आठ कमरे बने हुए थे। स्कूल का बरामदा काफी चौड़ा था। कमरों के सामने काफी बड़ा मैदान था, जहाँ सदियों में खेलने में बड़ा आनंद आता था। हम लोगों के लिये छोटी कक्षाओं में बैठने के लिये केवल लम्बी लम्बी टाट की पट्टियाँ डाल दी जाती थी। मैं कक्षा 'अ' का विद्यार्थी था। मेरी कक्षा के सामने ही एक नीम का पेड़ था। गर्मियों में हम लोग इसकी शीतल सुखद छाया में आनंद लिया करते थे। कभी कभी संध्या समय बगुलो की लम्बी कतार आकाश से उतरती हुई नीम के पेड़ पर बैठ जाती। हल्के धीरे

ध्यान से बगुलो की ओर देखने लगते । मास्टर साहब हम लोगो का ध्यान उस ओर बँटा हुआ देखकर बोल उठते ।

‘देखो बच्चो तुम लोगो को बगुले बहुत अच्छे लगते है ।’

मुझे खडा कर पूछते ‘बेटे इसका रंग कैसा है ।’

मैं अपने नन्हे दाँतो को फँलाकर कह उठता ‘सफेद’

‘हाँ शाबाश, ठीक मेरी मूछो जैसा सफेद’

लडके मुस्कराते हुए एक दूसरे की ओर देखने लगते ।

मास्टर साहब का शब्द-प्रवाह चलता रहता ।

‘बच्चो सफेद रंग देखने मे अच्छा लगता है । ऐसे ही अपने मन को सफेद रखना । किसी बुरी आदत मे मत पडना । किसी को गाली मत देना । अपने से बडो का कहना मानना, दूसरो का काम पहले करना, अपना बाद मे ऐसा करने से तुम्हारा मन भी सफेद रहेगा और सब लोग ऐसे बच्चो को इतने ही ध्यान से देखेगे, जैसे तुम बगुलो को इस समय देख रहे हो ।

मेरे नाना का परिवार बहुत लम्बा था । उनके यहाँ हल बैल की खेती का काम होता था । नाना के चार लडके और दो लडकियाँ थी । मेरी माँ अपनी बहनो मे बडी थी । माँ को पुराना ज्वर रह गया था, अत धीरे-धीरे घुल घुल कर उसने अपने प्राण त्याग दिये थे । पिता किसी रजवाडे मे मँनेजर थे । वह माँ की मृत्यु पर छुट्टी लेकर आये थे । माँ के मरने पर मेरा नाम प्रारम्भिक पाठशाला मे लिखवाकर चले गये थे ।

छुट्टी के दिन मैं नाना के साथ पीछे पीछे खेत चला जाता । नाना अपने हाथ से हल चलाते । मैं हल के फल द्वारा खोदी हुई मिट्टी के ढेर पर जान बूझ कर लुढ़क कर गिर पडता । मिट्टी के गुदगुदेपन मे जो आनन्द आता वह बडे होने पर मैंने मखमली गद्दो मे भी अनुभव न किया । मिट्टी के बडे बडे ढेले उलटने-पलटने मे मैं निमग्न रहता । मुझे क्या

मालूम था कि प्रकृति केचुओ के समान भूमि को उर्वरा बनाने में एक नन्हें बालक से भी अजजाने में कार्य ले लेती है ।

एक दिन नाना हल चलाते हुए बहुत आगे निकल गये । मै दूर दो लम्बी गरदन वाले सारसों की ओर बढ़ गया । सारसों की लम्बी लाल चोच, उनकी गुलाबी लम्बी टांगें देखकर मै सिहर गया । सारसों का एक जोड़ा अपने साथ में एक छोटे बच्चे को लिए चलना सिखला रहा था । मै जैसे ही उनके पीछे दौड़ा, वह पख फैलाकर दूर लम्बे ऊँचे गन्ने के खेतों के उस पार चले गये । उनके साथ उनका बच्चा भी धीरे-धीरे उड़ान भरता हुआ चला गया । नाना बहुत दूर हो गये थे अतः उन्होंने जोरों से मुझे आवाज दी 'चढ़ू ।'

मुझे नाना के इस तेज प्यार भरे शब्द में बड़ा आनंद आया । मै गद्गद् हो उठा और जैसे ही नाना की ओर बढ़ने को हुआ कि बड़क के एक तीव्र शब्द ने मेरे कानों को झकृत कर दिया । गन्ने के खेत के उस पार जहाँ सारस छिप गये थे मुझे फिर से आकाश में केवल दो ही सारस, एक बड़ा तथा एक छोटा बच्चा दृष्टिगत हुआ । मै सोचने लगा अभी तो तीन सारस उड़कर उस ओर गये थे, अब केवल दो ही दिख रहे हैं । इतने में मैंने देखा, गन्ने के खेत के इस पार कई शिकारी बड़क से लैस चले आ रहे हैं । उनमें से एक के हाथ में रुधिर से लथपथ गर्दन नीची किये हुए एक सारस लटक रहा है । मैंने अपनी छोटी बुद्धि से अनुमान लगाया, हो न हो बच्चा अपनी माँ से बिछड़ गया ।

मै नाना के पास दौड़ा गया । नाना हल रोक कर खड़े हो गये । बैलों के रुक जाने से बैलों के गले में बँधी घटिया बजना भी रुक गई । बीच बीच में बैल जब भी अपनी गर्दन ऊपर नीचे करते, घटिया बज उठती ।

नाना ने मुझे देखते हुए कहा 'चढ़ू' क्या बड़क की आवाज सुनकर डर गया ।

मैं दृढ़ता से मिट्टी में अपने पैरो को धँसाता हुए बोला 'नहीं नाना, वह देखिये उन लोगो ने एक लम्बी गर्दन वाला सारस मार डाला। उनके हाथ में उसकी गर्दन खून से सनी हुई लटक रही है। मैं जब गन्ने के खेत के कोने पर था, उस ससय वहाँ पर तीन नारस थे। उनमें से एक बच्चा था। शायद उसकी माँ को इन लोगो ने मार डाला।'।

नाना ने मेरी पीठ को थपथपाते हुए कहा 'चढ़' अब वह बच्चा अपने आप खुले आकाश में उड़ना सीखेगा' फिर धीमे से ओठ बंद करते हुए बोले 'ऐसा ही प्रकृति का नियम है, जिसे जीवन में अकेले जूझना पड़ता है, वह अधिक वीर और परिश्रमी होता है। मैं भी बचपन में अनाथ हो चुका था।'।

यह सब जो कुछ नाना ने धीमे से कहा था, मेरी समझ से परे था।

इस प्रकार मैं खेत के वातावरण में धीरे-धीरे बड़ा होता गया। एक एक कक्षा पार करता हुआ मैं प्राइमरी कक्षाएँ पास करता गया। मैं अधिकतर चुप रहा करता था, पर प्रत्येक बात की गहराई को गभीरता से मनन करना सीख गया था। मेरे नाना मुझसे घर पर 'रामायण' तथा 'महाभारत' पढ़ने को कहा करते थे। मुझे रामायण का अयोध्याकांड पढ़ने में बड़ा आनन्द आता था। विशेषकर राम का वन को प्रस्थान करना तथा उस समय उनके प्रति उनकी प्रजा का प्रेम। किस प्रकार ग्रामवासी, अन्य नर, नारी तथा पशु-पक्षी इत्यादि रूपी उनकी विरह से कैसे पीड़ित दिखाई देते हैं। इन पक्तियों को पढ़कर मेरा हृदय द्रवित हो जाता था।

राम वियोग विकल सब ठाढ़े।

जहं तह मनहु चित्र लिखि काढ़े ॥

मैं सोचा करता था कि राम का चरित्र कितना महान था जिसका प्रभाव केवल मानवी जगत पर ही नहीं, अपितु मूक पशु-पक्षियों तथा प्राकृतिक जगत पर भी था।

छुट्टी के दिन मैं नाना के साथ खेत पर अवश्य जाता था। मेरे सबसे बड़े मामा नाना को बहुत प्यार करते थे। जब नाना को वह कार्य करते देखते, वह तुरन्त उनकी बैठाल देते। नाना के बड़े लडके का नाम मिट्ठनलाल था। उनको सब लोग 'मिट्ठन' के नाम से ही सम्बोधित करते। वह अपने पिता के समान ही परिश्रमी थे। मिट्ठन मामा बराबर नहर से खेत तक की नाली पर ध्यान रखते कि उसका पानी इधर उधर फैलने तो नहीं पाता। एक खेत में पानी भर गया था। नाना ने खेत के कोने में बैठे बैठे हाँक लगाई 'मिट्ठन पानी पास वाले खेत में काट दो।'।

मिट्ठन मामा ने तुरन्त पानी दूसरे खेत में लगा दिया।

नाना कमर पर हाथ रखकर अपने दुबले लम्बे पुष्ट शरीर से खेत की मेड़ पर चक्कर काटते रहे। नाना ने अपने लम्बे चेहरे पर विस्फारित नेत्रों में प्रसन्नता की झलक लाते हुए कहा 'मिट्ठन, अबकी धान अच्छा हुआ है।'।

'हाँ काका, भगवान ने आपके परिश्रम का फल अच्छा दिया है।' मामा लोग नाना को काका से सम्बोधित करते थे।

'अबकी खेत की गुड़ाई में मिट्ठन तुमने बड़ा परिश्रम किया था।'।

खेत की बाले हवा में लहरा रही थी। हवा के बहने से खेत में ज्वारभाटा सा दृष्टिगत होने लगता। नाना तथा मामा धान की एक-एक बाल मन भर कर देख लेते।

नाना ने मेड़ पर बैठे-बैठे एक अकसा के पौधे को नोचते हुए कहा 'इस बार फसल अच्छी हुई है, अबकी सोचते हैं विट्ठना का व्याह कर देंगे।'।

विट्ठना नाना की सबसे छोटी लडकी थी।

नाना तथा मिट्ठन मामा को जब खेत पर देर हो जाती, तो नाना के चौथे लडके मैकू मामा खेत पर ही खाना पहुँचा देते थे। आज भी मैकू मामा खाना ले आते दिखे।

नाना ने खखारते हुए कहा 'बेटा हम लोग तो आ ही रहे थे, अच्छा तुम खाना ले आये, अच्छा किया। आओ मिट्ठन चलो, इधर कोने मे घास पर बैठ जाये।'।

मिट्ठन मामा ने पीतल के टिफिन का डब्बा खोलते हुए कहा 'काका, आज तो आलू मटर की तरकारी अम्मा ने भेजी है। छोटी-छोटी चने तथा गेहूँ की रोटियाँ मक्खन से चुपड़ी हुई मिट्ठन मामा ने एक तश्तरी मे निकाल कर रखी। मैकू मामा दूर खेत के पास की कच्ची कुइया से पानी लेने चले गये। नाना यद्यपि साठ के पूरे हो चुके थे, लेकिन उनके दाँत वैसे ही थे। नाना ने मोटी रोटी के घास तोड़-तोड़ कर खाना प्रारम्भ कर दिया। मैकू मामा पानी ले आये थे।

नाना ने मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा।

'बैठो मैकू जल ले आये' घास को निगलते हुए आगे बोले मैकू तुम बी० एस सी खेती की भले कर लो, पर तुम्हारी अगरेजी ढग की खेती हमारी पुरानी खेती को चपरा कर देगी। इस खेती मे मनुष्य जितना परिश्रमी बन जाता है उतना तुम्हारी टिरेक्टर की खेती से नहीं बन सकता। मैकू मामा ने भी अपनी खाकी थैला नुमा पतलून मम्हालते हुए कहा।

'काका ऐसी बात नहीं। योरोप के लोग बडे परिश्रमी होते है। वह एक मिनट भी अपना समय व्यर्थ मे नष्ट नहीं करते। वहाँ के किसान वैज्ञानिक ढग से खेती करते है, जभी उनके किसान खुशहाल है। उनकी झोपडियो मे भी वही आन्दोपभोग की सामग्री देखने को मिलेगी जो शहर वालो के यहाँ होती है ?

काका मुस्कराने लगे, मुस्कराने से उनके गाल पर कई झुर्रियाँ पड जाती थी। उनके गाल पर पडी हुई तीनों झुर्रियाँ बीस बीस वर्ष का पूर्ण अनुभव एव सजीव इतिहास चित्रित करती थी। गाँधी जी का समय था। वह गाँधी जी से बहुत अधिक प्रभावित थे। उनकी प्रत्येक बात मे गाँधी जी का उदाहरण अवश्य रहता था। नाना यद्यपि केवल

मिडिल ही पास थे पर उनका अखबारी ज्ञान अत्यधिक बढ़ा चढ़ा था ।

नाना ने जल पीते हुए कहा ।

‘अरे मैकू यह अगरेजी राज जो शिक्षा न दे वह थोड़ी है ।’ हम तो क्या रहेगे, तुम लोग अपने समय में देखना । इस ट्रिक्टर की खेती से भारतवर्ष को दूसरों के हाथ न बेचना पड़े तो मेरा नाम ‘गजाधर प्रसाद’ नहीं । अभी तो सोलह सेर का गेहूँ खाने को मिल रहा है । यही रुपये का चार सेर भी बिक जाय वह भी गनीमत है । हम लोगों की जवानी में गेहूँ रुपये का पूरा मन भर था । वह भी शहरी मन नहीं, हमारे देहाती मन से ।’

मिट्ठन मासा ने भी हामी भरते हुए कहा ।

‘हाँ काका, यह लडके अगरेजी सभ्यता में पले हुए क्या समझेंगे इन्हें तो पहनने के लिये सूट बूट चाहिये । यह लोग खेती क्या पढ़ेंगे । यह तो किताबी खेती सीखते हैं । जिस दिन गाँव गाँव में ट्रिक्टर की खेती फैल गई हम और भी अकर्मण्य बन जायेंगे । काका, मैकू, दिन भर तो दूर रहा, छ. घण्टे भी लगातार धूप में काम नहीं कर सकता । हम आप हल जोतते रहते हैं, इसने कभी भी अपनी रुचि से हल नहीं थामा ।’

मैकू मामा यह सुनकर पर्याप्त आवेश में आ गये थे । उन्होंने प्रयाग के नैनी के कृषि स्कूल में फार्मिंग का अनुभव लेना प्रारम्भ कर दिया था । अतः एक विद्यार्थी होने के नाते वह किसी की बात को अपने से श्रेष्ठ समझना नहीं चाहते थे । मैकू मामा ने घास की कुछ पत्तियों को नोचते हुए कहा—

‘दादा ऐसी बात नहीं है । हम लोगों से काफी परिश्रम लिया जाता है, फिर हम लोगों को जुताई बुआई की विधियाँ भी बतलाई जाती हैं । अच्छी फसल होने के लिये इन सब बातों का भी जानना आवश्यक है । जैसे धान तीन प्रकार का होता है । पहला कुआरी धान जो वर्षा के आरम्भ में बोया जाता है तथा सितम्बर में काट लिया जाता है ।

दूसरा अगहनी धान, यह धान नवम्बर में पक कर तैयार हो जाता है। तीसरा जेठी धान, यह जाड़ो में बोया जाता है उसकी फसल मई में हो जाती है। धान के लिये गरमो में दो बार जुताई करनी चाहिये। इससे खेत की घास के कीड़े मकोड़े मर जाते हैं। धान के लिये हरी खाद सबसे अच्छी होती है।'

मिट्ठन मामा ने हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त की थी। उसके पश्चात् नाना ने उन्हें खेती में ही लगा लिया था। उनका भी अनुभव के बल पर खेती का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने मैकू मामा को समझाते हुए कहा—

‘मैकू मैं यह थोड़े ही कहता हूँ कि तुम वहाँ कुछ सीखते ही नहीं, घास खोदते हो। मेरा कहने का आशय है कि आज के स्कूल कालेज की शिक्षा व्यावहारिक शिक्षा में बहुत दूर हो गई है। स्कूल कालेजो में केवल पुस्तको को रटा कर दूसरो को उपदेश देना भर आ जाता है। वह दूर पर खड़ा होकर केवल मजदूरों को विधियाँ ही बतलाना जान जाता है। स्वयं मजदूर बनना नहीं सीख पाता। तुम केवल इतना ही बतला सकते हो कि प्रति एकड़ पन्द्रह बीस गाड़ी गोबर की सड़ी खाद और बीस मन अड़ी की खली डालनी चाहिये, जबकि हम अपने अनुभव से खेत की दशा को ध्यान में रखकर उसमें कुछ हेर फेर भी कर सकते हैं। यह तो उसी प्रकार हुआ कि किसी स्त्री को यदि रोटी बनाना सिखलाया जाय तो उसे कागज में लिखकर दे दो कि सेर भर आटा गूँथने के लिये पानी तौल कर डालो। उसके पश्चात् उसकी लोइयो को तराजू से तौल कर छोटी-छोटी छटाँक भर की अलग कर लो। घड़ी देखकर तबे पर रोटी को केवल एक मिनट ही रहने दो इत्यादि।’

नाना जो अब तक शान्त होकर दोनों की बात सुन रहे थे। मैकू मामा की ओर कार्कषित होते हुए बोले।

‘भइया तुम्हारे मिट्ठन दादा ठीक कहते हैं। तुम्हें तो माह में एक बार शायद कालेज में खेत जोतने का अवसर मिलता हो। हम

लोग जो नित्य यही कार्य करते रहते हैं मिट्टी की नस-नस को पहचानते हैं। मनुष्य को केवल परिश्रमी बनना चाहिये। कार्य से नहीं घबराना चाहिये। मैंने अपने बचपन से ही अपने पिता के साथ पौ फटते ही हल बैल सम्हाल कर खेत की ओर चल देना सीखा, सूर्यास्त होने पर ही घर को वापस जाना। अपना जो आम का बाग है, इसके पेड़ों को लगाने के लिये कड़ी दुपहरी में गरमियों के दिन मैंने अपने हाथ से तीन-तीन फुट चकोर और तीन फुट गहरे गड्ढे खोदे हैं। यह मिट्टन भी हमारे साथ रहकर परिश्रमी बन गया है।'

मैकू मामा ने यह समझाने के लिये कि हमारा भारतवर्ष कितना पिछड़ा रहा है, विदेशों के ऐतिहासिक तथ्य देना प्रारम्भ कर दिये। मैकू मामा अपने सिर पर हाथ फेरते हुए बोले—

‘काका अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध इंग्लैंड कृषि प्रधान प्रदेश कहलाता था। वहाँ के लोग मुख्य रूप से खेती ही करते थे। लेकिन लोग पुराने ढंग के औजार ही काम में लाते थे। लोग खेत दो साल बो कर तीसरे साल खाली छोड़ देते थे। इस प्रथा से लाभ कम तथा हानियाँ अधिक थी। इंग्लैंड की जनसंख्या में वृद्धि हो रही थी। उस समय युद्ध का समय था। अपने ही देश में अन्न अधिक उत्पन्न करने की आवश्यकता समझी गई। वर्कशाय के जेथ्रोटल नाम के व्यक्ति ने सर्वप्रथम कृषि में कुछ सुधार करना चाहा। वह खेत की जुताई करवा कर सावधानी से बीजों को एक लाइन में गिरवाने लगा। अब पहले की अपेक्षा बीज कम लगने लगे। कुछ समय उपरान्त उसने ‘ड्रिल’ नाम की एक मशीन का भी आविष्कार कर लिया। इसके द्वारा फसलों की सरलता से निकौनी हो जाती और पौधों की जड़ों में मिट्टी पहुँच जाती। इसके बाद उसने ‘होइंग’ नाम की एक मशीन भी ढूँढ़ निकाली जिससे खेतों का जोतना आसान हो गया। खेतों की उन्नति के लिये टाउनशेन्ड नाम के एक व्यक्ति ने भी बहुत काम किया। वह एक ही खेत में क्रमानुसार गेहूँ, चुकन्दर अथवा शकरकन्द, जौ अथवा जई

इत्यादि की फसल उगाने लगा। राबर्ट बेकवेल नामक एक व्यक्ति ने मवेशियों तथा भेड़ों की नस्ल को उन्नत किया। कृषि तथा पशुओं में विशेष प्रगति होने लगी। इनकी देखभाल के लिये स्मिथ फील्ड क्लब, सरकारी कृषि विभाग आदि कई संस्थाएँ खुल गईं। आर्थर यंग ने कृषि सम्बन्धी लेख लिखे। घूम घूम कर उनका प्रचार किया। परती जमीन जुताऊ बनाई जाने लगी। छोटी-छोटी भूमि को टुकड़ियों की बड़े-बड़े खेतों और फार्मों में बदल दिया गया। खुले खेतों के चारों ओर मेड़े डालकर बड़े बाँध दिये जाने लगे। इस प्रकार सत्तर लाख एकड़ भूमि घेर डाली गई। इस प्रकार इंग्लैण्ड का कृषि व्यवसाय उन्नतशील हो गया और देश की फसल पहले से पाँच गुनी हो गई।

नाना बेटे के इस भाषण को सुनकर मन ही मन गद्गद हो रहे थे कि उनका बेटा कृषि के विषय में अच्छा ज्ञान रखता है, पर उन्हें इतने से ही सतोष नहीं मिल रहा था, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि आने वाले समय में स्वयं अपने हाथ से कार्य करने का अभ्यास होना चाहिये। नाना ने अपने दुबले लम्बे चेहरे को गभीरता से हिलाते हुए कहा—

‘बेटा मैंकू तुम्हारा इतना लम्बा भाषण तो केवल यही बतलाता है कि एक प्रोफेसर बन जाओ पर तुम खेत में हाथ से हल जोतने-निराने और काटने योग्य नहीं रह गये। ऐसा ही होता तो तुम नित्य मेरे साथ बीबा, दो बीघा जमीन जुतवाया करते। गाँधी जी ने केवल उपदेश नहीं दिया, जिन बातों को वह कहा करते थे, उसे वह अपने जीवन में घटित करके दिखलाते भी थे।

नाना के तीसरे लड़के का नाम था जैराखन। उन्हें पढ़ाने का बहुत प्रयत्न किया गया पर उन्होंने पढ़ा ही नहीं। वह छठी कक्षा के आगे न बढ़ सके। नाना जब भी घर आते, वह उनकी शिकायतों से परेशान रहते। खेत से सव्या समय जैसे ही मिट्ठन मामा तथा नाना

घर आये, मिट्ठन मामा वाली मामी तथा राखन मामा से कहा-मुनी हो रही थी ।

मामी कह रही थी 'मेरे श्रृंगारदान में एक डिबिया में दस रुपये का नोट रखा हुआ था, वहाँ और कोई नहीं जाना । सुबह राखन बाबू ही उधर गये थे ।

राखन मामा तीव्र शब्द में कह रहे थे । 'भाभी आपको मेरे ऊपर बेकार को शक रहता है । मुझे तो बाल काढ़ने को कथा नहीं मिल रहा था, वही मैं वहाँ लेने गया था । मुझे क्या पता आप किम डिबिया में नोट रखती हैं । घर में चूहे बहुत बढ़ गये हैं । कोई चूहा घसीट ले गया होगा ।

मामी ने जवाब देते हुए कहा 'हाँ चूहे को नशा चढ़ गया होगा, जभी उसके अपने दाँतो से डिबिया खोल ली होगी । राखन मामा नशे के नाम से आग बबूला हो जाते थे । शराब पीने वाले में यदि शराब का नाम ले दिया जाय तो वह चिढ़ जाता है ।

राखन मामा ने आँखें लाल करते हुए कहा 'भाभी आप यह क्या कह रही हैं । मैं नशे से कोसों दूर रहता हूँ । जिसे देखो वही मेरे ऊपर व्यर्थ के दोष मढ़ा करता है ।

नाना के आते ही सब शांत हो गये । मामी भी मुँह फेर कर अपने कमरे में चली गई ।

नाना ने घर के आगन में प्रवेश करते समय तेज शब्द सुने थे, अतः उन्होंने घर की दहलीज में दृष्टि डालते हुए कहा 'क्या है राखन, क्यों शोर मचा रहे हो । न तो खेत पर ही आते हो । न घर का कोई काम करते हो । दिन पर किसी न किसी से उलझते रहते हो । केवल मिट्ठन ही हमारा हाथ बटाते हैं । मैं कितने दिन का हूँ मैं तो पका आम हूँ पता नहीं किस दिन डाल से बिलग हो जाऊँ । अरे खेत के काम में कोई बड़ी पढ़ाई की आवश्यकता भी नहीं । पर नुम परिश्रम से मुख मोड़ते हो । क्या करोगे जीवन में ।'

मैं वहीं पास ही खड़ा था। नाना ने मेरी ओर सकेत करते हुए कहा 'तुम सबसे तो मेरा चन्दू अच्छा है। छुट्टी के दिन पूरे दिन मेरे साथ रहता है।'

इतना कहकर नाना ने मेरी पीठ थपथपा दी।

नाना नित्य के समान अपने हाथ पैर धोने लगे। हाथ पैर धोते हुए नाना ने कहा 'राखन तुमने भैंस की सानी कर दी?' राखन सामा ने उत्तर न दिया। वह चारपाई पर बैठे सिर नीचा किये दहलीज की जमीन की ओर देख रहे थे।

नाना ने उठते हुए कहा 'इस बूढ़े में जब तक दम है, तुम लोगो की सेवा किये जा रहा है। मेरी मृत्यु के बाद न जाने तुम लोग क्या करोगे।'

मैं चुपके से बाहर हो गया। मैंने टोकरी में कुट्टी भर कर धीरे से भैंस को चुपकारते हुए उसकी नाँद में उलट दी। जैसे ही मैं खली लेने कुट्टी की कोठरी में बड़ा था, कि मिट्ठन मामा ने मुझसे डलिया ले ली। मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा 'तुम बैठो भइया, भानजो से काम नहीं लिया जाता'।

मैंने मामा को तुरन्त उत्तर देते हुए कहा—

'मामा, अभी से हम परिश्रम करना नहीं सीखेंगे फिर आप और नाना के समान दिन भर व्यस्त रहना कैसे सीख सकेंगे।' नाना भी बाहर आ गये थे, उन्होंने मुझे यह कहते हुए सुन लिया था। मुझे शाबाशी देते हुए बोले—

'ठीक कहते हो बेटा, कम से कम मेरा नाती तो इस योग्य निकला। नाना के नाम को उजागर करेगा।'

नाना के इन वाक्यों को सुनकर मेरा मन हर्षातिरेक से नृत्य कर उठा। मुझे लगा, मानो मुझे बहुत बड़ी निधि मिल गई हो। नाना का वह वाक्य मेरे लिये स्कूल कालेज के जीवन में मिले हुए बड़े-बड़े पुरस्कारों से भी कहीं श्रेष्ठ था।

मिट्ठन मामा ने भैंस की सानी कर दी थी। नाना के लिये मैं अन्दर से छोटी बाल्टी ले आया। नाना नित्य इसी बाल्टी में दूध दुहा करते थे। भैंस की पडिया मुझे बड़ी प्यारी लगती थी। मैं उसके सुहलाने में मुझे बड़ा आनन्द आता। भैंस के पास ही एक गाय बँधी रहती थी। मिट्ठन मामा भैंस की सानी समाप्त कर गाय वाली नाँद की ओर बढ़ गये थे। गाय गाभिन थी, अतः उन दिनों वह दूध नहीं दे रही थी। गाय का बछड़ा काफी बड़ा हो रहा था। मिट्ठन मामा ने नाना की ओर सकेत करते हुए कहा।

‘काका, अब बछड़े को भी कभी-कभी हल में जोता जाया करे। यह अब बड़ा हो गया है। इसके खुर कैसे भारी है। यह बढ़िया बैल बनेगा।’

‘हाँ मिट्ठन तुमने सेवा भी तो इसकी बहुत की है।’ नाना ने अपने दोनों बैलों के नाम चानू तथा भानू रख छोड़े थे। नाना ने भानू की ओर सकेत करते हुए कहा ‘चानू बूढ़ा हो रहा है। यह तैयार होकर चानू का स्थान ले लेगा।’

नाना खाना खाकर घर के बाहर लेटे थे । नाना का यह नित्य का कार्यक्रम था । वह खाना जल्दी ही खा लेते थे । बाहर के छप्पर के सामने उनकी चारपाई पड जाती थी । आस पड़ोस के लोग उनके पास आ जाते और देर तक बातचीत चलती रहती । गर्मियों के दिन थे । फिर भी होली के निकट रात्रि ठंडी होती ही है । अधिक रात होने पर नाना अपनी चारपाई छप्पर के नीचे कर लेते थे । सामने के मकान में दुर्गाप्रसाद रहते थे । वह नित्य रात्रि के समय खाना खाने के बाद नाना ही के पास आ जाते थे । वह नाना के परिवार से बड़ी सहानुभुति रखते थे । स्वयं वह रजिस्ट्रार कानूनगो रह चुके थे । अब रिटायर होने के बाद अपना जीवन यो ही व्यतीत कर रहे थे । उनका एक लडका मेरा सहपाठी था । छप्पर के नीचे तीन चार काठ की बेमेल कुर्सियाँ पड़ी रहती थी । बहुत पुरानी होने के कारण उनके सफेद हो गये थे तथा उनकी चूले ढीली होने के कारण लोहे की पत्तियों से जड कर ठीक कर दी गई थीं । फिर भी वह बैठने पर मचमचा जाती थी । यह कुर्सियाँ नाना की चारपाई के पास डाल दी जाती थी । मोहल्ले के परिचित इन्ही पर गर्व से बैठकर मोहल्ले भर की समस्यायें छेड़ा करते ।

दुर्गा प्रसाद जी अपनी धोती ऊँची घुटनो तक सिकोड कर बैठे हुए थे । उन्होंने नाना से, (जो लिपटे हुए विस्तर को पीठ की टेक देकर

घुटने सिकोड़े हुए चारपाई पर पड़े थे) कुछ झुकते हुए धीमे से कहा। नाना ने भी उनकी बात को सुनने के लिये उनकी ओर करवट ले ली।

‘भइया गजाधर। (कुछ रुकते हुए) एक बात है। कहते हुए बड़ी लज्जा लग रही है। बुरा मत मानना’

‘नहीं नहीं कहो, तुम्हारी बात का कभी बुरा माना है। तुमने मदा हमारे साथ मदानुभूति दिखाई है।’ नाना ने उत्सुकता की मुद्रा बनाते हुए कहा।

‘तुम्हारा राखन खराब हो रहा है। हमने आज उसे भट्ठी से निकलते देखा। उसने शराब पीना सीख लिया है। इसे रोको नहीं यह घर बर्बाद कर देगा। इसके साथ के लोग अच्छे नहीं थे। वह लोग हमें आवारा लगे।’

नाना उठ बैठे। नाना की मुद्रा अजीब और अनोखी थी। उन्हें लगा जैसे उन पर वज्रपात हुआ हो।

नाना की आँखें खुली की खुली रह गई थी। आँखों में हल्की-हल्की नींद की खुमारी आ रही थी। वह गायब हो गई। नाना ने अपने पोपले मुँह के होठ को दाँतो से दबाते हुए कहा—

‘क्या कहे भइया दुर्गा, मेरा स्वयं लज्जा के कारण सिर झुका जा रहा है। मुझे भी मिट्ठन की पत्नी से इसकी ऐसी बातों की झलक मिलती रही है, पर अभी तक मुझे पूर्ण विश्वास न था कि यह इतना खराब होगा। आज मुझे पूरा विश्वास हो गया कि यह हाथ बेहाथ हो रहा है। दुर्गा भइया तुम्हीं कोई युक्ति बताओ जिससे यह मार्ग पर लग जाये।’

दुर्गा भइया ने नाना के और निकट होते हुए कहा ‘मेरे विचार से इसका ब्याह कर दो।’

‘अभी तो मैंकू पढ़ रहा है। पहले उसका होगा। फिर कहीं जयराखन का नम्बर आयेगा। छोटे भाई का पहले कैसे हो जाये।’

बिटला को तो पहले निबटाना है ही। उसका तो तय हो ही गया है। अगले महीने में उससे छुट्टी मिल जायेगी।'।

नाना चारपाई पर पल्यी मारे हुए बैठे बैठे कह गये। 'इनमें हर्ज ही क्या है। छोटे भाई का क्या पहले होता नहीं है। बड़ा भाई पढ़ने में सलग्न है। वह पढ़ने में अच्छा भी है। उसे पढ़ने दो। वह घर उजागर करेगा। पर यह कही घर चौपट न कर दे। इससे बचने के लिये यही युक्ति मुझे सर्वोचित जँचती है।'।

दुर्गा प्रसाद जी ने कुरसी पर सीधे बैठते हुए कहा।

नाना बड़ी देर तक आकाश में नक्षत्रों की ओर टकटकी लगाये न जाने क्या सोचते रहे। मैं नाना के पास ही छोटी सी खाट डाल कर सोता था। मुझे भी उन लोगों की बातें जब तक होती रहीं बड़ी उत्सुकता रही कि यह लोग राखन मामा को खराब क्यों कहते हैं। नाना उन रात बीच-बीच में जग पड़ते थे। उन्हें ठीक से नीद नहीं आई।

एक दिन जयराखन मामा मुझे पास की एक नदी में कई अपने मित्रों के साथ नहलाने ले गये। मुझे नदी के किनारे जाने में बड़ा आनंद आता था, अतः मैं नानी से हठ कर के जयराखन मामा के साथ चल दिया था। राखन मामा साइकिल चला रहे थे। घर में मुझे ही अकेले बैठाल कर वह ले गये थे। आगे चलकर उनके मित्र मिल गये। एक साइकिल के पीछे बैठा। एक डबे पर आगे बैठा और मुझे उन लोगों के हैडिल पर बैठाया। मैं डर के मारे रोने-मा लगा, क्योंकि मुझे बड़ी घबराहट हो रही थी कि मैं कहीं गिर न पड़ूँ। मुझे जयराखन मामा ने जोर से डपट बताई और मैं सहम कर चुप हो गया। पक्की मड़क पार कर हम लोग कच्ची सड़क पर आ गये थे। इधर-उधर नदी के पास का मैदान दिखने लगा। मामा साइकिल चलाते-चलाते थक गये थे। मामा के मित्र जो पीछे बैठे थे, सीट पर बैठ कर साइकिल चलाने लगे। नदी निकट आ गई थी। इधर-उधर झाऊ की झाड़ियाँ बड़ी सुंदर तथा सुहावनी लग रही थी। गरमी के दिन थे ही इधर-

उधर खरबूजे ककडी के खेत भी दृष्टिगत हो रहे थे। नदी की एक क्षीण धारा पार कर उस पार चौड़ी धारा थी। मामा तथा उनके मित्रों ने योजना बनाई कि नदी की पतली धारा पार कर उस पार नहायेंगे। पहली धार की गहराई मामा के कंधे तक ही थी। मामा ने मुझे अपने कंधे पर बिठाकर उस पार निकाल दिया। इन दोनों धारों के बीच में बालू सुंदर चौड़ा मैदान था। मैं उस मैदान में पैरों से बालू उछाल-उछाल कर भागने लगा। कहीं-कहीं मुझे सीप और घोघे दिखते मैं वहीं बैठकर उन्हें इकट्ठा करता। मुझे उनके उलटने-पलटने में बड़ा आनंद आ रहा था। मामा ने मुझसे उसी स्थान पर खेलने के लिये कह दिया। वह तीनों मित्र मैदान के सीधे दूर तक निकल गये। उनके पास एक झोला था। मुझे उसमें एक बोतल सी दिखी थी। क्योंकि मामा के मित्र जब झोले में कपड़े सभाल कर रख रहे थे, मुझे उस बोतल की झलक मिल गई थी। रगीन सी कोई चीज देखकर मैं बोल पड़ा था 'मामा इसमें क्या है'।

मामा ने तुरंत मेरी बात का उत्तर देते हुए कह दिया था 'कुछ नहीं इसमें इनका तेल है।'।

मैं शान्त हो गया था। वह लोग काफी दूर निकल गये थे। मैं अपने खेल में निमग्न था। कभी उस ठंडी रेतीली जमीन पर हिरन-सा चौकड़ी भरता। कभी चलता-चलता नदी के ऊँचे कगारों के निकट पहुँच जाता। मेरे पहुँचते ही छोटे-छोटे कछुए के बच्चे जो पानी के बाहर बैठे रहते, मेरी आहट पाते ही डुप-डुप कर जल के अंदर रेंग जाते। मुझे उनके इस डुप-डुप के शब्द में इतना आनंद आता कि मैं उसी आनंद को उठाने के लिये फिर और आगे बढ़ जाता।

इस स्थान से मामा तथा उनके मित्र मुझे एक किनारे बैठे दिखे। वह लोग एक ग्लास में कोई रगीन चीज बारी-बारी कर पी रहे थे। मुझे पहले तो ऐसा लगा कि यह लोग क्या पी सकते हैं। बोतल में तेल था। मैंने शीशे का ग्लास देखा नहीं था, वह जो झोले में मुझसे छुपा कर रखा गया था।

मुझे उस दिन रात वाली दुर्गा नाना की शिकायत याद आ गई कि वह नाना से राखन मामा की किसी चीज के पीने की बात कह रहे थे, जो अवश्य खराब होती होगी। जभी तो उसको पीने के लिए मामा को खराब कहा गया था। मैं दुर्गा प्रसाद जी को दुर्गा नाना से हो सम्बोधित करता था, क्योंकि वह नाना के अनन्य मित्र थे।

यह लोग बीच-बीच में कहकहा लगा देते थे। मैं डरा कि जय-राखन मामा ने मुझे देख लिया तो वह मुझे अवश्य पीटेंगे। मैं वहाँ से दुबक कर पीछे लौट आया। थोड़ी ही देर में वह लोग मेरे पास आ गये। मैं मुझसे राखन मामा ने पूछा 'चटू हमारा बड़ा प्यारा है, ककडी खाओगे ?'

'मैंने धीरे से सिर हिला दिया।'

मामा के एक मित्र का नाम था बैजू और दूसरे का नाम था शारदा। मामा को बार-बार इन नामों से उन्हें सम्बोधित करते हुए देख, मैं उन लोगों के नाम से परिचित हो गया था।

मामा ने बैजू को सम्बोधित करते हुए, नदी के उस पार के खेत की ओर संकेत करते हुए कहा—

'चलो बैजू, चटू के लिए वहाँ से ककडी लायेंगे।'

शारदा और बैजू भी उमग में भर कर उचकते हुए बोल पड़े, 'चलो, चलो जी, तैर कर जाने में बड़ा आनंद आयेगा', मामा ने मेरी ओर दृष्टि डालते हुए कहा—

'और चटू कैसे चलेगा। वह इतनी देर से तो अकेला खेल रहा है, ऊब गया होगा।'

शारदा मेरी पीठ ठोक कर बोल पड़ा 'चटू मेरी पीठ पर बैठेगा, और मैं तैर कर उसे उस पार ले जाऊँगा।'

मैंने तुरन्त भिनभिनाते हुए, डरकर उत्तर दिया 'नहीं नहीं हम नहीं जायेंगे। हम यही खेलेंगे। आप लोग हो आइये।'

कुछ शैकीन लोगों को उस पार ले जाने के लिए इक्का-दुक्का

नावे भी वही आ जाती थी। अतः मे निश्चित यही हुआ कि मुझे वह लोग उस पार नाव द्वारा भेज देंगे और स्वयं अपने मूड का आनंद लेने के लिये तैर कर जायेंगे।

हम लोग उस पार हो गये थे। मैं ककड़ी के खेत में इधर-उधर भागने लगा। बालू में फैली हुई बेल के पत्तों के बीच में ककड़ी ढूँढने में बड़ा आनंद आ रहा था। मुझे उतना खाने में आनंद नहीं आया, जितना उसे पत्तों के नीचे लगी हुई देखकर, टेढ़ी-मेढ़ी सी हाथ में लेकर तोड़ने में आनंद आया, मैंने एक ककड़ी पत्तों के नीचे खोज कर तोड़ ली। एक छप्पर की छोटी झोपड़ी से पंद्रह-सोलह वर्ष की वयस्क लड़की घेंघरी पहने हुए निकल पड़ी। मेरे हाथ में ककड़ी देखकर झपट उठी।

‘अरे कौन ककड़ी तोड़त है, दहिजार क ताती।’

मामा इत्यादि घूमते हुए कुछ दूर चले गये थे। उन लोगों ने ऐसी आवाज सुनते ही मेरी ओर देखा, फिर उस लड़की की ओर धीरे-धीरे कुछ कहते हुए बढ़े। बैजू हाव-भाव तथा मजाकिया भाषा उच्चारित करने में बड़ा तेज था। बैजू उस लड़की की ओर देखते हुए मुस्करा दिया। दूर से ही उसकी ओर दृष्टि फेंकते हुए तथा धीरे-धीरे अंदा से अपना सिर झुलाते हुए बोला—

‘अरे बैसेने अंदा से एक दर्ई फिर से बोल दे ओ। एकन्नी का, चवन्नी लेओ रानी। बाहूरी ककड़ी सी मस्त जवानी’।

जयराखन मामा तथा शारदा आगे बढ़ते जा रहे थे। पीछे-पीछे मटक-मटक कर मस्तानी चाल में झैला सा बना हुआ बैजू भी बकता जा रहा था ‘बाहूरी अल्हडता, ‘बाहूरी भरी नदी सी मस्ती, नदी के पास जो रहती है’। वह धीरे-धीरे कहता हुआ शारदा के कंधे पर टेक लेकर लँगडा कर चलने लगा।

मैं यह सब कुछ न समझकर जहाँ ककड़ी तोड़ी थी, वही खड़ा

रहा। मैं यह अवश्य समझ रहा था, कि मैंने ककडी तोड़कर बहुत बड़ा अपराध किया है पर नाना के साथ जब भी मैं कही गया, मैं कही नहीं टोका गया था। मैंने बहुधा गन्ने के खेतों से गन्ने बिना पूछे तोड़े, पर किसी ने कभी चूँ तक न की थी।

झोपडी में वहाँ कोई न था। शारदा ने एक रुपया निकाल कर अपनी हथेली पर रखते हुए आगे बढ़ा दिया। जयराखन मामा कह रहे थे।

‘ले लो ना, शर्माती काहे हो, अपने पैसे ले ला। ककडी तोड़ी है, कुछ और तो लिया नहीं।’

लडकी अदा से मुस्करा कर बोली—

‘इहाँ खोटा रुपया नहीं चलत है, ‘सीधे ककडी जेतनी लेव, ओहकर हमे पैसा दै देओ।’

मामा बोल पड़े, ‘तौन हम का कुछ और माँगित है

‘ई रुपया घर लेउ, कल हम लै लेब पैमा।’

बीच में बैजू आगे गरदन बढ़ाता हुआ बल पड़ा।

‘अरे यह रुपया क्या, जब से एक पाँच रुपये का नोट निकालता हुआ आगे बोला, ‘तुम्हारे लिये पैसा की कौनो कमी है, यह लेओ, रुपया खोटा है, यह नोट लेओ, हम लोग राजीना हिप्रई ककडी खाइत है।’

लडकी अपनी घेघरी हिलाती हुई मटक कर बोल पड़ी—‘ई लोट ओट अपनी बहिनियाँक दिखाओ जाय के। हमै मजाक नहीं आवत है।’

यह कहते हुए वह पास की चिड़ियों को हँकाने लगी। उसका बूढ़ा बाप उधर से आ रहा था। उन लोगों को देखते हुए बोल पड़ा।

‘का बात है बाबू जी।’

बैजू ने बुढ़ऊ के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—‘कुछ नहीं बाबा।

अरे बच्चे ने ककडी तोड़ ली, सो टूटा पैसा नहीं है, हम कह रहे हैं, नोट रख लो, हम पैसा कल ले लेंगे ।’

इतना कहते हुए बैजू, बाबा की झोपड़ी में घुस गया और उसकी टुटही बैसखटिया पर बैठता हुआ बोला—

‘कहो बाबा कुछौ खरबूजा अरबूजा नहीं है ?

‘हाँ हाँ, है काहे नहीं’ अपनी लडकी को आवाज देते हुए बोला—

‘ए बिलसिया तनी दुइ चार खरबुजवा ओहर से तोड़ लाव ।’ इस बीच में जयराखन मामा ने इन लोगो को बातो में लगा लिया था ।

‘कहो बुढऊ तुम्हारे कितने बच्चे है ?

‘कुछ नहीं बाबू जी यही एक लडकी है, इसकी माँ बचपन में इसे छोड़कर गुजर गई । हमी इसका पालन-पोषण करते हैं । चौदह की पूरी हो गई, पद्रहवी लगी है । जल्दी से इसका ब्याह कर देना है ।

वह बूढा अपनी कहानी दुहरा रहा था, कि इतने में लडकी खरबूजे ले आई । उसने हल्की मुस्कान छुपाते हुए सामने रख दिये ।

दिन चढ रहा था । नहाने वालो की भीड भी कम हो रही थी । यह तीनों तैर तैर कर ककडियाँ फेंकते जा रहे थे । जिस आर लडकियो का झुंड था, उसी आर यह लोग खरबूजे तथा ककडियाँ फेंक फेंक कर किलोले कर रहे थे । कभी-कोई उल्टी तैर तैरता, कभी कोई पत्थी मारकर तैरता हुआ गहरे में निकल जाता । मैं छिछले पानी में छपछपा रहा था । कोई कछुआ मेरे पैर के नीचे पड जाता । मैं मारे डर के चीख उठता ।

नदी अठखेलियाँ करना हुई मस्ती से बह रहा थी । धूप बढ गई थी । पानी से बाहर निकलने पर शरीर के सूखने ही चुनचुनी लगती । फिर से पानी के अदरग जाने की इच्छा हाती । पर धूप के कारण वह आनंद भी, जल के बाहर होने पर, बेहद खलता । वह तीनों मित्र अपनी जवानी का आनंद लेते हुए वापस चल दिये ।

नाना के चौथे बेटे का नाम मक्खन लाल था। मैं उन्हें मक्खन मामा ही कहा करता था। नाना के बेटों में करीब चार-चार वर्ष का अंतर था। वैसे ही मिट्ठन मामा तथा मैकू मामा में अधिक अंतर था। मिट्ठन मामा करीब तीस के थे। उनसे छोटे मैकू मामा पचीस वर्ष के थे। नाना के पुत्रों की पढाई देर से प्रारम्भ हुई थी। फिर यह सब मिडिल पास कर अगरेजी कक्षाओं में प्रवेश लेने के पक्षपाती थे, जिससे उनकी बुद्धि परिपक्व हो जाती थी। ऐसा नाना का विश्वास था। जयराखन तथा मक्खन मामा बाइस तथा बीस के थे। मक्खन मामा ने इटरमीडिएट पास किया था। उनके प्रवेश लेने का प्रश्न था। उन्हें लखनऊ विश्वविद्यालय में बी० ए० कक्षा में प्रवेश दिलवाने की बातचीत चल रही थी।

नाना के मुहल्ले में ही एक वकील साहब रहते थे। उनकी एक लड़की प्रयाग विश्वविद्यालय से बी० ए० कर रही थी। छुट्टियों में वह भी अपने घर आई हुई थी। मैकू मामा बहुधा वकील साहब के यहाँ चले जाते थे। वकील साहब का नाम था लछमन स्वरूप। मुझे सब मामा लोग बड़ा प्यार करते थे। सभी जहाँ कही जाते मुझे अपने साथ चलने के लिये वाध्य करते। मैकू मामा वकील साहब के यहाँ जा रहे थे, मुझसे भी चलने को कहा। मैं चल दिया।

दोपहर का समय था। वकील साहब अपने बच्चों के साथ कैरम खेल रहे थे। मैकू मामा को देखते ही बोल पड़े।

‘आओ मैकू, आज तो कई दिन बाद दिखलाई दिये। आओ कैरम खेलेंगे।’

मैकू मामा के आने से सरला कुछ सम्मलती हुई झिझक सी रही थी। वकील साहब ने एक हेड प्वायट लेते हुये कहा—

‘कहां मैकूलाल तुम्हारा परीक्षा-फल कब आ रहा है। तुम फर्स्ट डिवीजन तो ला ही रहे हो। तुम तो पढ़ने में काफी तेज हो तुम्हारी ता पाजीशन आनी चाहिये।’

मैकू मामा ने विश्वासपूर्वक मुस्कराते हुए वकील साहब की ओर देखते हुए कहा—

‘देखिये आशा तो है, पर कुछ कहा नहीं जा सकता’।

मैकू मामा ने सरला की ओर निगाह फेरते हुए कहा—‘ओर सरला जी के भी पेपर्स अच्छे हुये हैं।

सरला ने मुस्कराते हुए अपना उल्टा पल्लू सम्हालते हुए ‘जी नहीं पेपर्स यूँ ही हुए हैं, देखिये पास ही हो जाऊँ; गनीमत है।’

सरला ने एक गोट रिबाउन्ड लेते हुये गेम समाप्त कर दिया था। वकील साहब गेम समाप्त कर अदर चले गये। जाते जाते वह कहते गये।

‘अच्छा तुम लोग खेलो, मुझे नीद लग रही है। देखो रानी को मैं भेजता हूँ, चदू अकेला बैठा है। इस प्रकार तुम लोग चार हो जाओगे।’

रानी सरला की छोटी बहन थी, वह आठवी कक्षा में पढ़ती थी। वकील साहब के जाते ही सरला की माँ तथा रानी और उसका बड़ा भाई जो एल एल बी आगरा के विश्वविद्यालय के एक कालेज से कर रहा था, वहाँ आ पहुँचे।

मैकू मामा ने खडे होकर सबसे नमस्ते की। मेरे लिये मैकू मामा बोल पड़े।

‘यह मेरा भानजा चढ़ू है ।’

‘हाँ हाँ इसे मैं जानती हूँ । यह तो मेरे घर आ चुके हैं’ सरला की माँ ने मुझे अपने बगल में खड़ा करते हुए कहा ।

‘यह भी पढ़ने में बड़ा होशियार है’ सरला के भाई रमन ने मेरे गाल पर हाथ फेरते हुए कहा ।

रमन ने मैकू मामा की ओर आकर्षित होते हुए कहा—‘कहो भाई मैकूलाल रेजल्ट कब मँगा रहे हो ।’

‘अभी यही सरला जी से भी बातचीत हो रही थी । क्या आप को कोई समाचार मिला ?’

मैकू मामा ने उत्सुकता से रमन के मुख की ओर ध्यान से देखते हुए कहा—

‘अजी छोड़ो रेजल्ट तो आता ही रहता है । किसी न किसी दिन तो आयेगा ही ।’

रमन की बात सुनकर सब लोग हँस पड़े ।

रमन की माँ ने अपने बेटे की ओर देखते हुए कहा—‘अजी तुम्हें रेजल्ट की चिंता काहे की । साल भर तो मौज की है । पढ़ने-लिखने से बास्ता नहीं । सोच रहे होंगे पास होने पर पिता जी जबरदस्ती बकालत शुरू करा देंगे । फेल होने से एक वर्ष और चैन करने को मिलेगा ।’

‘चाची जी एल. एल. बी. में सब पास हो जाते हैं । आप चिंता न करें । रमन भइया ऐसे ही बात करते हैं । आप को यह चिढ़ाते हैं । इनके परचे बहुत अच्छे हुए हैं । पिछले वर्ष यूँ ही यह रह गये थे ।’

मैकू मामा ने हँसते हुए कभी रमन की ओर कभी रमन की माँ की ओर देखते हुए कहा—

‘माँ इस वर्ष मैं पास हो गया तो पिता जी से मोटर साइकिल अवश्य दिलवाइयेगा ।’

रमन ने अपनी माँ की ओर हँसते हुए पैरो को जमीन पर टेकते हुए कुर्सी के दो पिछले पायों पर हल्का-सा झुकते हुए कहा ।

‘पहले पास तो हो, मोटर साइकिल की पहले से फिकर लगी है ।’

माँ ने अपनी नाक पर का चश्मा सम्हालते हुए कहा ।

रमन ने मैकू मामा की ओर आकर्षित होते हुए कहा ।

‘पिछले वर्ष मैकूलाल हम लोगो के लॉ इक्जामिनेशन्स पोस्टपोन ( स्थगित ) कर दिये गये ।’

मैकू मामा ने बीच में टोकते हुए कहा ।

‘क्यों, क्या बात हो गई थी ।’

‘बात यह थी, कि हमारे एक लॉ के प्रोफेसर साहब बहुत सीधे थे । वह परचे आउट कर देते थे । उन्हें लडके बहुत प्यार करते थे । वह कालेज में बहुत प्रसिद्ध थे ।’

रमन जैसे ही अपनी बात कह रहे थे, माँ ने बीच में टोकते हुए कहा ।’

‘उन्हीं के कारण तो तुम्हारा एक वर्ष बरबाद हुआ ।’

रमन माँ की बात सुनी अनसुनी कर आगे कहते गये ‘हम लोगो की परीक्षा हो रही थी । एक इनवीजिलेटर साहब मिस्टर राय जो भइया बड़ा स्ट्रिक्ट जल्लाद था । उसने देखा कमरे के बाहर कुछ कापियाँ रखी थी ।’

‘कापियाँ कैसी ?’

सरला ने बीच में टोकते हुए कहा ।

‘अरे वही जो हम लोग परीक्षा प्रारम्भ होने के पूर्व कमरे के बाहर रख देते हैं । मिस्टर राय की दृष्टि किसी लडके की कापी पर पड़ गई । उन्होंने कापी उल्टी पल्टी । देखा कापियो में सारे प्रश्न लिखे हुए हैं, जो पेपर में पूछे गये थे । क्रमानुसार वैसे ही प्रश्न लिखे हुए थे ।’

‘अच्छा, फिर क्या हुआ ।’ मैकू मामा ने उत्सुकता से प्रश्न किया ।  
रमन आगे कहते गये ।

‘इसके पश्चात वायस चासलर तक रिपोर्ट पहुँच गई । पेपर कैसिल कर दिया गया । हम लोग बड़े चक्कर में पड़े । हम लोगो से कहा गया कि परचे की तारीख बाद में सूचित कर दी जायगी । संभवतः परचे अब गर्मियों की छुट्टी के बाद ही होंगे’ मैकू मामा ने आँखें फँलाते हुए आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा ।

‘तब तो बड़ी परेशानी हुई होगी ।’

‘अरे परेशानी, लडको ने मुसोबत कर दी । सध्या हो गई । वायस चासलर साहब की कार लडको ने घेर ली । कार जैसे ही आगे बढ़ी, लडको ने पथराव प्रारम्भ कर दिया । पीछे से राय साहब आ रहे थे । वह साइकिल पर थे । लडको ने उन्हें भी घेर लिया । उन पर भी पत्थर फेंके जाने लगे । वह बेचारे भाग कर एक लैंटरिन में घुस गये । चपरासियों ने उनको दूसरा मार्ग बतला कर उनकी जान बचाई ।’

सरला यह सब कहानी सुनकर गम्भीरता से बोल पड़ी—लडको बड़े बत्तमीज होते हैं, उनको अपने टीचर्स की मान-मर्यादा का भी ध्यान नहीं रहता’ ।

‘इसमें बत्तमीजी क्या ? राय साहब को आखिर क्या सूझी उनकी क्या हानि थी, यदि सब विद्यार्थी प्रतिवर्ष पास हो जाते थे ।’

रमन ने अपनी गर्दन आगे सरला की ओर बढ़ाते हुए कहा—  
‘फिर क्या आपके घर चोरी होती रहे, उसकी कोई रिपोर्ट ही न करे । क्योंकि रिपोर्ट करने वाले का लाभ ही क्या, आपको मार्ग में कोई लूटता रहे । किसी को बोलने की कोई आवश्यकता ही नहीं, क्योंकि उससे उसका तो कोई लाभ होता नहीं ।’

सरला जल्दी-जल्दी कहती गई ।

‘परीक्षा की चोरी से क्या तुलना । लडको को पास करा देना तो सेवा का कार्य है ।’

रमन ने दाँन दिखलाते हुए गर्दन हिलाकर कहा ।

‘और चोर को पुलिस से छुड़वा देना भी तो सेवा का कार्य है, तभी तो रमन भइया वकील बनने जा रहे हैं ।’

सरला ने हँसते हुए कहा ।

‘वकील को तो जिधर से भी पैसा मिलेगा, वह झूठ को सत्य और सत्य को झूठ बनायेगा, इसमें भी दिमाग लगाना पड़ता है । यह कोई सरल कार्य थोड़े ही है ।’

रमन ने अपने वकीली पेशे को श्रेष्ठ ठहराने के लिये अपनी बात को दृढतापूर्वक कहा ।

रमन की माँ बीच ही में टोकते हुए बोल पड़ी ।

‘अरी सरला तेरे पिता जी भी तो इसी का कमाते हैं । तू जिस रुपये से पल रही है, उसी की बुराई कर रही है ।’

‘माता जी गाँधी जी ने भी तो अपने वकालत के पेशे को बुरा कह कर अपनी जीविका का साधन ही त्याग दिया था’ । सरला ने रमन भइया की ओर ध्यान से देखते हुए कहा ।

मैकू मामा जो अब तक चुप थे, वह भी आदर्श की बुराई सुन कर बोल पड़े ।

‘सरला जी ठीक तो कह रही हैं । आज सब भौतिकता तथा यथार्थ की दुहाई देते हैं, तभी तो घर घर में स्वार्थ बढ़ रहा है । चोरी डकैती लूटमार के किस्से निरंतर बढ़ते जा रहे हैं । फिर हमी उसकी आलोचना भी करते हैं कि ऐसा राज्य में क्यों होता है । ऐसे राज्य को आग लगा देना चाहिये । अशोक तथा चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्य का उदाहरण देते हैं ।’

रमन मैकू मामा की ओर ताकते हुए बोल पड़े ।

‘भाई मैं तो यह सब भाव जगत की बातें समझता हूँ । ससार

मे स्वार्थ चलता ही रहता है। भूखा यदि चोरी करके खा लेता है तो मैं उसे चोरी नहीं समझता।'।

मैकू मामा ने गर्दन उठा कर हँसते हुए कहा।

'यदि किसी को दूसरे को कार में जाता देख, कार की भूख लगती है तो उसे भी चोरी नहीं कहना चाहिये।'।

'वाह कार की भूख और पेट की भूख एक समान है।'।

रमन कुरसी के नीचे अपनी टाँग हिलाते हुए बोले—'अपने स्तर के लोगो को आनदोपभोग की वस्तुओ का आनद लेते हुए देखकर जब यदि मनुष्य स्वयं उन वस्तुओ से वंचित रहता है। उनके फलस्वरूप जिस घुटन का वह अदर ही अदर अनुभव करता है मैं समझता हूँ कि यह उसके लिये जीवित मौत के समान है।

मैकू मामा ने गभीरता से मेज पर अपनी आँखें गड़ाते हुए कहा।

सरला मैकू मामा की ओर से अनायास ही बोल पड़ी।

'मैं भी इससे महमत हूँ।'।

मैकू मामा ने अपनी बात की पुष्टि के लिये अपने एक प्रोफेसर का उदाहरण दिया।

'मेरे एक प्रोफेसर मिह साहब कहा करते हैं कि यह यूनीवर्सिटी और कालेज की छोटी-छोटी बातें हमें जीवन के विशाल क्षेत्र के लिये लिये तैयार कर देती हैं। यदि हम कक्षा में पक्वुअल अर्थात् समय पर उपस्थित होते हैं, कहने के लिये वह छोटी सी बात है पर उससे हम जीवन में प्रविष्ट होने पर समय का पालन करना सीखते हैं'

रमन ने नौकर को जो चाय ले आया था मेज पर रखने के लिये सकेत करते हुए कहा—

'भाई मैकूलाल मैं इस आदर्शवादिता में विश्वास नहीं करता। बहुत से प्रोफेसर लडको को अटेडेस शार्ट (उपस्थिति कम) होने के कारण परीक्षा में सम्मिलित होने से रोक देते हैं। मेरे एक प्रोफेसर रोशनलाल है। उनसे कोई लडका कितनी भी शार्ट अटेडेस पूरी करवा सकता है।'।

मैकू मामा ने अपनी कुरसी पीछे हटाते हुए कहा, (नौकर उसी मेज पर चाय सजाने लगा जिसके चारो ओर यह लोग बैठे थे ।)

‘मेरे विचार से इस प्रकार ही लडके आगे चलकर नौकरी करने पर अपने कार्य में अनीतियाँ बरतने लगते हैं । अतर केवल इनना ही रहता है कि अध्यापक बिना पैसे लिए कार्य करता है जबकि वही दफ्तर का कर्मचारी होने पर घूसखोरी करने में तनिक भी नहीं हिचकता’

रमन ने एक प्याले में चाय उडेलते हुए कहा ।

इसमें बेचारे उस प्रोफेसर की क्या गलती है ।’

मैकूलाल जो पहले से समझते थे कि रमन द्वारा यही उत्तर मिलेगा, तुरन्त बोल उठते हैं ।

‘मेरे विचार से एटेडेम पूरी करना सुनने वाले को अच्छा लगता है । सभी की उस प्रोफेसर के प्रति सहानुभूति हो जाती है पर जीवन में प्रविष्ट होने पर वही विद्यार्थी नियमों का अकारण ही उल्लंघन करना सीखता है, जिसकी एटेडेम की पूर्ति की जाती है अथवा अंक बढ़ा दिये जाते हैं’

रमन ने चाय की ओर सकेत करते हुए मैकूलाल से प्रारम्भ करने के लिए कहा ।

‘भाई मैकूलाल तुम आवश्यकता से अधिक आदर्शवादी हो । इस धरती पर पैर रखो । ससार में सबको ही जीवित रहने का अधिकार है । हम लोगों के पास बुद्धि कम है क्योंकि ईश्वर ने ही हमें इतनी अच्छी स्मरण-शक्ति प्रदान नहीं की, अतः हमें अच्छे अंक परीक्षाओं में नहीं मिलते । इसके अर्थ हैं कि मुझे ससार में रहने का अधिकार नहीं है ।’

मैकूलाल ने चाय की कुछ घूँट पी ही थी कि वकील साहब आ जाते हैं । वकील साहब ने रमन को कुछ जोश में आते देख कहा ।

‘कहो जी, तुम लोग क्या बहस कर रहे हो?’

मैकूलाल ने शिष्टतापूर्वक उठते हुए कहा ।

‘आइये, जी कुछ नहीं हम लोग यूँ ही कालेज की कुछ बातें करने लगे थे’

वकील साहब मैकू मामा की ओर बढ़कर उनकी पीठ को थप-थपाकर उन्हें बैठने के लिये बाध्य करते हुए स्वयं भी सरला की कुर्सी पर बैठ गये । सरला उनके आने से तख्त पर बैठ गई थी ।

रमन ने थोड़ी देर की शांति को भग करते हुए कहा ।

‘पिता जी मैकूलाल जी बहुत आदर्शवादी हैं ।’

‘तो क्या हुआ । आदर्शवाद की ही अंत में विजय होती है । गाँधी जी भी आदर्शवादी थे’

सरला ने बीच से मुस्कराते हुए अपनी बात पिता की ओर देखते हुए कही ।

‘पिता जी हमारी टीचर्स भी आदर्श पर चलने की शिक्षा देती हैं ।

रमन ने बीच में बोलते हुए कहा ।

‘पिता जी आप भी बहुधा यह कहा करते हैं कि आज के युग के लिये आदर्शवादी होना उचित नहीं है’

‘पर मैं आदर्शवाद को खराब तो नहीं कहता हूँ । आदर्शों पर चलना कठिन कार्य है, पर जो निभा सकता है, मैं समझता हूँ उससे महान कोई न होगा’ ।

वकील साहब ने मुझे चुपचाप बैठा देखकर अपने पास बुलाते हुए बोले ।

‘लो जी चढ़ तुम भी तो कुछ खाओ ।’ मेरे हाथ में प्लेट उठाकर एक मठरी देते हुए बोले ।

‘यह चढ़ बड़ा गंभीर रहता है, ऐसा लगता है, वह प्रत्येक बात को बड़े ध्यान से सुनकर खूब मनन करता है ।’

वकील साहब रमन की ओर देखते हुए बोले ।

‘मैकूलाल यह तुमसे भी अधिक होशियार लडका होगा । कहो जी तुम क्या बनोगे । प्रोफेसर बनोगे या वकील बनोगे ?’

‘मै उनकी ओर देखते हुए मुस्करा दिया’

वकील साहब मेरी पीठ पर हाथ थपथपाते हुए बोले ।

‘देखो वकील मत बनना । इस पेशे में झूठ को सत्य और सत्य को झूठ साबित करना होता है । ऐसा न करे तो हम लोगों का पेट भी नहीं चलने का’ ।

रमन ने चाय का प्याला मेज पर रखते हुए कहा ।

‘पिता जी इसे डाक्टर बनना चाहिये ।’

मेरे गालों पर हाथ फेरते हुए रमन ने आगे कहा ।

‘पर आजकल के डाक्टर भी मक्कार होते हैं ।’

‘पैसे पैदा करने के लिये मनुष्यता तो लेशमात्र को भी नहीं रह जाती डाक्टर में’ ।

रमन ने मेज पर के प्याले ट्रे में सम्हाल कर रखते हुए उठा कर पास के तख्त पर रख दिये । नौकर को उठा कर ले जाने के लिये आवाज देकर अपनी कुरसी पर बैठते हुए बोले—

‘पिता जी मेरे छोटे भाई को जो इन्टरमीडिएट वायलोजी से कर रहा है डाक्टर बनाने को कहते हैं’ ।

सरला जो बहुत देर से चुपचाप बैठी हुई थी अपने छोटे भाई चमन का नाम सुनकर बोल उठी ।

‘चमन तो कहता है कि मैं मोटरकार खरीदूँगा और शहर से बाहर एक डीसेट बँगला बनवाऊँगा ।’

रमन ने सरला की ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा—

‘और यह सब वह जभी कर सकेगा जब चार आने के मिक्श्चर के वह चार रुपये ऐंठा करेगा । और पानी के इजेक्शन लगाया करेगा । मरीज को कोई रोग भी न हो पर उल्टी सीधी दवा बतलाकर पाँच रुपये सीधे किया करेगा ।’

वकील साहब अपने पुत्र की ओर देखते हुए बोले ।

‘फिर तुम लोग चमन को क्या इन्जीनियर बनाना चाहते हो ?’

चमन कुछ रुककर मुस्कराते हुए बोले ।

पर इन्जीनियर भी तो ठेके देने में घूम खा लेते हैं पिता जी ।  
मोटरकार लेने के लिये तो उसे आदर्श से हटना ही होगा ।’

सरला पिता जी की ओर देखते हुए बोली ।

‘पर पिता जी क्या यह आवश्यक है कि झूठ बोलकर ही यह सब कार्य पूरे किये जायें ।

वकील साहब पैरो के दोनों घुटनों को हिलाते हुए बोले ।

‘बेटी बिना आदर्श से हटे मनुष्य सम्पत्तिशाली नहीं हो सकता पर इसके यह अर्थ भी नहीं कि आप वेवकूफों के समान इस प्रकार अपने आदर्शों से हटे कि लोग रगे हाथ आपको पकड़ लें ।’

मैकू मामा जो चुपचाप हम लोगों की बातें सुन रहे थे । पहले तो उन्होंने शांत रहना ही अधिक अच्छा समझा था, पर वह अपने को न रोक सके । कुछ गभीर होकर बोले—

‘तो क्या आवश्यक है कि प्रत्येक पुरुष सम्पत्तिशाली बनने का प्रयत्न करे । यदि इसी प्रकार झूठ बोलकर आदर्शों से गिरकर हम लोग धनाढ्य बनने की कामना करते रहे तो एकदिन भावी समाज क्या होगा इसकी सरलता से कल्पना की जा सकती है ।’

रमन अपनी कुरसी पर आगे झुकते हुए बोले ।

मैकूलाल जी हम समाज की चिन्ता करे अथवा अपने पेट की ।’

मैकू मामा गभीरता पूर्वक बोले—

‘बस यही पर हमारे आपके दृष्टिकोण में अन्तर है । बहस का परिणाम कुछ नहीं निकलने का ।’

‘रमन ने हँसते हुए मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा ।’

‘मैकूलाल जी लगता है, मेरी बातों को आप बुरा मान गये ।’

‘नहीं, नहीं, इसमें बुरा मानने की क्या बात है । यह तो अपना अपना

दृष्टिकोण है। प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है, जीवन को जिस रूप में समझें।’

वकील साहब ने गभीर होकर कहा—

‘नही बाबू गजाधर प्रसाद जी के बच्चे बहुत अच्छे हैं। उन्होंने अपने बच्चों को अपने खेतिहर जीवन के होते हुए भी इतना चरित्रवान बना लिया है। इसके लिये उनको बहुत बड़ा ध्येय मिलना चाहिये। यह चढ़ भी बहुत होशियार निकलेगा।’

मैकू मामा ने वकील साहब की बातों का उत्तर देते हुए कहा ‘यह सब आप बुजुर्गों की कृपा है।’

मैकू मामा ने मुस्कराते हुए मेरी ओर सकेत करते हुए कहा ‘अच्छा चाचा जी आज्ञा दीजिये। हम लोगो ने आपका काफी समय ले लिया। हम दोनों सबको नमस्ते करते हुए अपने घर की ओर चल दिये।

एक दिन नाना प्रातः काल दत्तन करते हुए अपने बढते हुए बछड़े को देख-देख कर मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे कि वह धीरे-धीरे कैसे पुष्ट हो रहा है। वह अपने भाव की पुष्टि के लिये बछड़े के उभरते हुए सींग पर उँगली से टटोलने लगे। बछड़ा उनसे पहलवानी करने के लिये अपना मत्था नाना की हथेली से भिड़ाने लगा।

नाना ने मुझे संकेत करते हुए कहा।

‘देख चढ़ यह कैसा पुट्ठा बँल बनेगा। अभी से मुझसे अपनी शक्ति अजमा रहा है। चढ़ यह तेरे जैसा ही फुर्तीला है। जैसे ही जैसे इसके सींग निकलेगे वैसे ही तेरे अकिल दाढ़ निकलेगी और तब तू भी इसी की तरह परिश्रमी बनना। नाना ने अपनी दत्तन एक ओर फेंकते हुए उसकी पीठ को ठोकते हुए कहा।

‘वाह बछड़े तेरा और चढ़ का जोड़ अच्छा है। तू जितनी तेज भागेगा चढ़ भी तेरे ही जैसा उछलने वाला है।’

मैं नाना की बात सुनते ही बोल पड़ा।

‘नाना यह मेरी बराबरी क्या करेगा। मैं इससे भी तेज भाग सकता हूँ। हाँ यह बिजली जैसा उछलता है। शेर जैसा तड़पता है।’

नाना ने हँसते हुए कहा—

‘वाह तू भी बिजली जैसा उछलना न सीख सका तो फिर जीवन ही निरर्थक है। देखा गाँधी बूढ़े होते हुए भी कैसे बिजली जैसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर इस बछड़े जैसे ही दृष्टिगत होते हैं। ऐसे न होते तो कभी नमक आदोलन, कभी सत्याग्रह, कभी चर्खा दगल

कभी हरिजन आदोलन इतने कार्य कैसे इतनी जल्दी उठा लेते। फिर आश्चर्य यह कि सभी ओर एक समान ध्यान। सभी को सफल बनाना उनका ध्येय है।

नाना यह कहते हुए लोटे में बाल्टी से जल लेकर कुल्ली करने लगे। वह मुँह-हाथ धो ही रहे थे कि एक पुलिस का दारोगा एक सिपाही के साथ उनके आगे खड़ा होकर पूछ रहा था।

‘क्या जयराखन आप ही का पुत्र है।’

नाना सकपकाते हुए बोले—‘जी कहिये दारोगा साहब, मेरा ही पुत्र है। कुशल तो है।’

यह कहते हुए नाना ने मुझे कुरसी लाने के लिये संकेत किया।

मैं कुरसी उठा लाया। नाना ने मिट्ठन मामा को आवाज दी। मिट्ठन मामा भी आ गये थे। घर के सभी लोग उस समय घर पर थे। मैंकू मामा भी कई आवाजे एक साथ सुनकर बाहर आ गये थे। जयराखन मामा को भी अदर से भनक मिल गई थी पुलिस के आने की। वह धोती कुरता पहनकर एक कोने से जा ही रहे थे, कि पुलिस कास्टेबल ने उनकी ओर बढ़ते हुए कहा—‘मुझे आप ही की तलाश थी। आप कहाँ जा रहे हैं। आपके नाम वारंट है।’

यह कहते हुए पुलिस कास्टेबल ने उनके हाथों में हथकड़ी डाल दी।

सब लोग अवाक् थे। एक बारगी मिट्ठन मामा फिर नाना के मुख से एक एक कर वाक्य फूटने लगे।

‘क्या बात है इस्पेक्टर साहब।’ इसने कोई जघन्य अपराध किया है क्या?’

‘ऐसा क्या इस चाडाल ने किया, मेरे मुख में कानिख लगा दी। जो जीवन भर न देखा था वह निर्लज्जता आज सहनी पड़ रही है।’

नाना कौतूहलतावश जल्दी-जल्दी अपने पोपले मुख से कहे जा रहे थे।

इंसपेक्टर साहब ने नाना की ओर देखते हुए कहा—

‘आपके सुपुत्र जयराखन पर कई दफाये दायर की गई है। इन्होंने एक बूढ़ी औरत को मारकर जिसमे कई लोग शामिल थे उसके जेवरात चुराये है। उसका नगदी रुपया दो हजार के करीब गायब किया। एक बूढ़े आदमी की जवान लड़की को भगाकर दूसरे शहर मे भिजवा देने का मुकदमा अलग है। इनके साथ पूरा गिराह है।’

नाना यह सुनते जाते थे। वह गौर से इंसपेक्टर साहब को देखते रहे। जयराखन की ओर देखा। एक बारगी फूट पडे।

यह मैं अपने कानो क्या सुन रहा हूँ। धरती फट क्यों नहीं जाती। मैं उसी मे समा जाऊँ। लाओ बंदूक मैं अभी इसे अपने सामने गोली से उड़ाये देता हूँ।’

पुलिस को देखकर मार्ग पर चलने वाले एकत्रित होने लगे। दुर्गा प्रसाद जी जो सामने ही रहते थे आ गये थे। वह मिट्ठन मामा से धीमे धीमे कह रहे थे।

‘मैने बेटा गजाधर भइया को पहले ही सचेत कर दिया था। कहाँ एक ओर तुम्हारे ऐसे सज्जन, अपने परिश्रम पर भरोसा रखने वाले, मैकूलाल जैसा होनहार, चरित्रवान बेटा जिसकी सभी प्रशंसा करते है और कहाँ यह कलक लगाने वाला ‘राखन’ ऐसा मूर्ख बुद्धिहीन लड़का जो ऐसे होनहार उजागर परिवार पर धब्बा लगा रहा है।’

नाना के टप, टप आँसुओ की अविरल धार बह रही थी। रोते-रोते वह कहते जाते थे।

‘वाह रे राखन तूने मुझको ही क्यों न खतम कर दिया था। मुझे यह देखने को तो न मिलता। बोलता क्यों नहीं यह जेवर रुपया इत्यादि कहा गया। दरोगा साहब आप मेरी घर की तलाशी ले। मुझे भी इसके साथ गिरफ्तार करे। इसमे मेरा दोष है। मैने ऐसा बेटा क्यों पैदा किया। मैं इस योग्य नहीं हूँ कि समाज मे रह सकूँ। जब मैं अपने ही पुत्र को मार्ग पर न लगा सका फिर मेरे सम्पर्क मे आने वाले सभी

भृष्ट होंगे अतः मेरे ऐसे व्यक्ति को जितना भी अपमान सहन करना पड़े वह भी थोड़ा है ।’

नाना मत्थे पर हाथ रखे यह सब कहते जाते थे । दुर्गाप्रसाद जी दरोगा साहब से कह रहे थे ।

‘साहब मोहल्ले में क्या, शहर में आपको ऐसा चरित्रवान परिवार देखने को न मिलेगा, पर कहने वाले का भी इस हरकत के आगे मुँह बंद हो जाता है । यह तो आपके पास ऐसा प्रमाण है कि सुनने वाला भी समझेगा कि यह सब झूठी प्रशंसा हो रही है ।’

दरोगा साहब कुरसी पर बैठे कह रहे थे ।

‘यह सब ठीक है । पर कानून के आगे सब बेकार है । हम लोगों के पास पूरे प्रमाण है जिसमें यह लड़का उस बुढ़िया को जिसकी नगदी और जेवरात गायब किये गये हैं, कतल करने में शामिल था ।’

जयराखन मामा कुछ नहीं बोल रहे थे । चबूतरे के नीचे भीड़ लग रही थी । प्रत्येक व्यक्ति ‘राखन’ को ही बुरा कह कर नाना पर सहानु-भूति प्रकट कर रहा था ।

धूप निकल आई थी । मार्ग चलने वाले नाना की प्रशंसा करते हुए जयराखन मामा को बुरा-भला कहते हुए नाना की मान-मर्यादा में बट्टा लगाने का उत्तरदायित्व उन्हीं पर मढ़ रहे थे ।

दारोगा साहब ने कुरसी पर से उठते हुए कहा ।

‘अच्छा कानस्टेबिल साहब इन्हे थाने ले चलिए ।’

पुलिस हथकड़ी डालकर मामा को ले गई । मैं अवाक् खड़ा यह सब देख रहा था । मैंने सोचा मैंकू मामा को सब लोग अच्छा कहते हैं, क्यों कि वह विश्वविद्यालय की पढाई में लगे हैं । जयराखन मामा नदी में तैरने जाते हैं ककड़ी के खेत में छोकरियों से छेड़खानी करते हैं । इसी लिये उन्हें सब लोग खराब कहते हैं । उनके साथी अच्छे नहीं हैं । अवश्य इनके साथ बैजू और शारदा भी सम्मिलित होंगे ।

नाना हरे भरे अरहर के खेत में उस बड़े अरहर के पौधे के समान लग रहे थे जिसे देखकर उस खेत के पास से निकलने वाले सभी आश्चर्य करते हैं कि यही पेड़ क्यों इतना दृढ़ और पुष्ट है जबकि अन्य आस पास के पेड़ हरे भरे होते हुए भी छोटे हैं। अकस्मात् उस पेड़ की कीड़ा लग जाने से जो दशा हो जाया करती है, जिसे बहुधा लोग 'नजर लग गई होगी' कहकर अशिक्षितों को बहला दिया करते हैं ठीक वही दशा नाना की हो रही थी। लोग नाना के परिवार पर नजर लग जाने की बात ही कह रहे थे।

नाना बड़ी देर तक छप्पर के नीचे पड़ी कुर्सी पर बैठे सोचते रहे। नाना के दोनों बैल चानू-मानू पास बँधे थे। सूर्य की किरणें छप्पर से छन छन कर चानू-मानू तथा नाना की पीठ पर गोल ठप्पे बना रही थी। चानू नाना के कान से अपना नथना छा रहा था। चानू गहरी साँस भर कर नाना के कान के पास छोड़ रहा था। मैं उन समय उसकी साकेतिक भाषा तथा नाना के प्रति प्रदर्शित बैलों की सहानुभूति समझने में असमर्थ था, पर बड़ा होकर पशुओं की भाषा तथा नाना के प्रति दर्शाये हुए उस बैल की योगिक क्रिया द्वारा नाना को समझाने की विधि समझ में आ गई।

मिट्ठन मामा जो घर के मुख्य दरवाजे की देहरी पर बैठे मत्थे पर हाथ रखे बड़ी देर से अपने मस्तिष्क के भीतर राखन मामा के जीवन से सम्बन्धित कठपुतलियों का नाटक अकेले बैठे देख रहे थे और जैसे ही एक कठपुतले ने एक बूढ़ी कठपुतली का गला घोट दिया, वह तुरन्त चौंक गये। उठते हुए नाना की ओर बढ़कर बोने 'काका चलो अन्दर धूप हो रही है।

नाना के मस्तिष्क के भीतर रगमव तो था पर वहाँ कोई पात्र न था। नाट्यशाला के परदे उठे थे पर कोई पात्र सम्मुख उपस्थित होने का सामर्थ्य नहीं रख रहा था। नाना की ग्रीवा पर बैलों ने कई बार अपनी जीभ फेरी पर नाना को इसका कुछ पता न था।

नाना खाँसते हुए उठ गये । अपने पोपले मुँह से कुछ कहते गये पर वह अस्पष्ट ही था । कमर सीधी करते हुए कुछ जोर से कहा ।

‘या भगवान, अभी क्या क्या देखना है । जीवन एक विचित्र पहेली है ।’

धीरे-धीरे नाना मकान के अन्दर हो रहे । दहलीज में एक चारपाई पड़ी थी । वही बैठते हुए मिट्ठन मामा की ओर सकेत करते हुए बोले ।

‘मिट्ठन मेरा जीवन तो ममाप्त हो गया । रहा सहा इस जयरखना ने ले डाला । इस घर की मान-मर्यादा सब नष्ट हो गई ।’

मिट्ठन मामा चारपाई को अरदावन की ओर बैठते हुए बोले ।

‘तो जयरखन की जमानत इत्यादि का तो प्रबन्ध करना ही होगा ?’  
नाना जमानत का नाम सुनकर जोर जोर से कहने लगे ।

‘मैं तो चाहता हूँ ऐसे लडके को कठोर से कठोर सजा दी जाय मेरा कोई उससे नाता नहीं रह गया ।’

मिट्ठन मामा ने बात काटते हुए उत्तर दिया ।

‘नहीं काका दुनिया क्या कहेगी कोई उसे बचाने को भी न खड़ा हुआ । फिर क्या पता वह दोषी है भी । यह पुलिस वाले जो भी किसी पर आरोपित न कर दे थोड़ा है । राखन उद्द्व अवश्य है । उसके साथी बुरे हैं, पर मुझे आश्चर्य ही है कि यह कतल इत्यादि में कैसे सम्मिलित हो सकता है ।’

मैंकू मामा भी पास ही चारपाई पर बैठे थे । उन्होंने भी बीच में बोलते हुए कहा ।

‘जी काका यह मुझे भी विश्वास नहीं होता कि राखन ऐसा करेगा घर वालों के वह रुपये भले ही निकाल ले पर घर का नाम वह इस प्रकार नहीं डुबो सकता । कुसगत करने से जो कालिख लगती है यह सब उसी का परिणाम है ।’

नाना ने आवाज धीमी करते हुए कहा 'मुझसे बाबू दुर्गा प्रसाद कह रहे थे एक दिन कि तुम्हारा राखन खराब हो रहा है, उन्होंने उसे कुछ खराब लोगो के साथ भट्ठी से निकलते देखा है। वह शराब पीने लगा है।'

मैकू मामा ने फिर नाना की बात के बीच ही में बोलते हुए कहा— 'काका इसकी छानबीन करनी ही होगी। उसका साथ खराब लोगो का हो सकता है। पर परिवार का भी कुछ प्रभाव होता ही है। हम लोगो में से कोई ऐसा नहीं है जिसमें दुर्व्यसन हो। इसका पता लगाकर उसकी कुसगत छ्ड़ा दी जाय। यह कार्य राखन का नहीं हो सकता। नाना घरती पर ही दृष्टि गड़ोये यह सब सुनते रहे। दीर्घ साँस भरते हुए बोले।

'क्या कहूँ मेरी तो बुद्धि ही कुन्थित हो गई। मेरे पुत्रो में कोई ऐसा न निकला। मिट्ठन इतने कामकाजी। मैकू को पुस्तको में ही फुरसत नहीं। माखन भी अच्छा ही जा रहा है। राखन को भी तुम्ही लोग सुधारो।'

मिट्ठन मामा जो धोती पहने हुए थे। अपनी धोती में घुटने वन्द करते हुए उठ कर बोले।

'काका आप चिन्ता न करे। मैं थाने जा रहा हूँ। मैं सब पता करना हूँ आखिर यह सब मामला क्या है।'

मैकू मामा ने भी खडे होते हुए कहा।

'चलो भइया मैं भी चलना हूँ। यह कोई हम लोगो के परिवार से ईर्ष्या रखने लगा है। मानो उसी ने राखन को फँसाया है। यह काका पुलिस के हथकडे है। इस प्रकार यह लोग पैसा बनाते हैं। इस विभाग का यह कार्य ही है। वास्तविक चोर नहीं पकडा जाता, सदैव यह लोग किसी सीधे व्यक्ति को पकड लेते हैं। यह सब पैसे ऐंठने के ढंग हैं।'

नाना ने उठकर दूर खखारकर थूकते हुए कहा—

'कुछ भी हो बेटा। हम कहते हैं उसने बुरे लोगो का साथ किया

ही क्यों । क्या उसके भाई नहीं हैं । उनको नहीं देखता कि सभी पढ़ने में तेज । नकल करने चला है गुण्डो और बदमाशों की । मैंने उसे खेत के काम में मिट्ठन के साथ ही लगाना चाहा सो भी जी चुराकर भागता है ।’

मिट्ठन मामा ने कभीज पहनते हुए कहा ।

‘नहीं काका हम लोगों को ऐसा विश्वास नहीं था कि यह इतना खराब निकलेगा । घर पर कभी कभी रुपयों की चोरी तो सुनी गई पर कोई क्या जानता था कि यह सब क्या हो रहा है ।’

मिट्ठन मामा ने मामी की ओर जो पास ही खम्भे की आड़ में खड़ी सुन रही थी सकेत करते हुए कहा ।

‘मेरा कोट ले आना’ कुछ रुककर ‘और देखो छड़ी भी’ यह कहते हुए मिट्ठन मामा बोले ‘नहीं मैकू का कहना ठीक है । इसमें राखन को जानबूझकर फँसाया गया है ।’

मैं दूसरी चारपाई पर एक किनारे पैर नीचे किए हुए यह सब सुन रहा था । मैंने सिर उठाकर नाना की ओर देखते हुए कहा—‘नाना एक दिन राखन मामा मुझे नदी किनारे ले गये थे । वहाँ उनके साथ दो और लड़के थे । उनका नाम है बैजू और शारदा । वह लोग पहले तो कोई रगीन शबंत जैसा कुछ पी रहे थे । मुझसे कहा था कि वह तेल है । फिर ककड़ी वाले की छोकरी से बैजू और शारदा खूब हँसी मजाक कर रहे थे ।’

मैं कहता जा रहा था । सब लोग मेरी बात को बड़े ध्यान से सुन रहे थे । मामी तो पास के खम्भे की आड़ से सुन कर मुस्कराती जाती थी । वह बोली तो कुछ नहीं पर ऐसा लग रहा था कि वह यह सब सुन कर प्रसन्न हो रही थी । मैकू मामा ने मेरे पास आते हुए कहा ।

‘तुम कब गये थे राखन के साथ चन्दू ?’

मैंने उनकी ओर देखते हुए कहा ।

‘यह तीन-चार महीने पहले की बात है ।’

## गिद्ध की आँखें

मिट्ठन मामा भी मेरी बात ध्यान से सुनते रहे। वह सुनकर बोल पड़े।

‘बस इसमें उसके यही दोनो साथी होंगे। यह पनवाडियों और जुआडियों का साथ करने का परिणाम है।

मैकू मामा ने मिट्ठन मामा की ओर देखते हुए कहा।

‘आप क्या इनको जानते हैं भइया?’

मिट्ठन मामा ने अपनी छड़ी को जमीन पर पटकते हुए कहा।

‘अरे यह उसी कुन्दनलाल का लडका है बैजू। जो पहले तो पतंग की दुकान रखे था। अब एक पान की दुकान रख ली है। उसी में छिपा कर शराब रखता है। छिपे छिपे शराब बेचता है बिना लाइसेंस की। हर दिवाली में लम्बे जुएँ खेलता है। महा भ्रष्ट परिवार है।’

मैकू मामा ने अपनी ठुड्डी पर हाथ रखते हुए कहा।

‘और यह शारदा कौन है?’

मिट्ठन मामा जेब से घड़ी निकालकर टाइम देखते हुए बोले।

‘यह भी शायद एक है जीवट जिसकी परचूनी की दुकान है, उसका बेटा है।’

मिट्ठन मामा ने टाइम देखने के लिये छड़ी अपनी बगल में दबा ली थी। बगल से छड़ी हाथ में लेते हुए बोले।

‘अच्छा मैकू जल्दी चलो दस बज रहा है।’

नानी को साँस का रोग था। वह एक कमरे में चारपाई पर पड़ी थी। वह बहुत ही ऊँचा सुनती थी। जब कभी कोई कार्य करती एक मोटा चश्मा आँखों पर चढ़ा लेती। अधिकतर वह पूजा-पाठ में ही लगी रहती। प्रातः काल दस बजे तक उनका जाप चलता। जाप समाप्त कर ही वह अन्दर की कोठरी से निकली थी। नाना दहलीज में चारपाई पर बैठे थे। उनके तेज हीन मुख मंडल से नानी को समझने में बिलम्ब न हुआ और वह ताड़ गई कि अवश्य कोई महान घटना घटी है और उनसे नहीं बतलाया गया। वह अपनी बहू से बोली।

‘वह क्या बात है ?’

वह अवाक् थी। उनके मुख पर भी रूखापन था। यद्यपि वह सदैव हँसती ही रहती थी। वह घर में चहल पहल मचाये रहती थी। नानी नाना के पास आई। उनकी कमर बहुत मोटी हो गई थी। वह झुक कर ही चलती थी। बुढ़ापे ने उन्हें पृथ्वी के तत्वों को अच्छी तरह से अध्ययन करने के लिये मानो बहुत झुका दिया था तथा वह बारबार याद दिलाता था कि इस पृथ्वी में ही सबको समा जाना है। इस मिट्टी की विशेषताओं को समझने का प्रयत्न करना चाहिये।

नानी कमर पर हाथ रखकर आँखों पर चश्मा चढ़ाये हुए केवल आध इंच अपने शरीर को ऊपर उठाते हुए नाना को झकझोरती हुई बोली।

‘क्या बात है, सब लोग शांत है। मुझे कुछ छुपाया जा रहा है। मैं तो पूजा की कोठरी में पूजा कर रही थी। ओहो मेरी आरती की बाती बुझ-बुझ जा रही थी। कई बार जलाने पर भी न जली। अवश्य कोई विघ्न पड़ा है। या भगवान हमसे क्या छुपाया जा रहा है। उन्होंने आवाज लगाना प्रारम्भ कर दिया।

‘मिट्ठन, मैकू, माखन, जयराखन’ सब कहाँ गये। मुझे क्या नहीं बताते, सब कहाँ गये।

मैं नाना के पास ही दहलीज की अलमारी से लग कर खड़ा था। अलमारी में एक बिल्ली रखी थी। मुझे लग रहा था कि मुझे वह चिढ़ा रही है। नानी के यह वेग से कहे हुए शब्दों को सुनकर मुझे घबराहट हो आई।

उन्होंने मेरी भी झलक पा ली थी। मुझे अपने हाथ से अपनी ओर मेरा मुख करते हुए बोली।

‘चन्हू बेटा तू ही बता, क्या बात है?’

मैंने धीमी आवाज में काँपते हुए कहा।

‘जयराखन मामा को पुलिस ले गई।’

नानी की दयनीय दशा देखकर मैं अत्यधिक विचलित हो गया था ।  
नानी ने तुरन्त कौतूहलता पूर्वक मेरी ही बात दुहराई ।

‘जयराखन मामा को पुलिस ले गई ।’ ‘क्यों कहाँ ले गई’ । ‘क्या किया राखन ने’ ?

नाना ने जो जमीन पर ही दृष्टि गड़ोये बड़ी देर से देख रहे थे ।  
नानी की ओर देखते हुए बोले ।

‘राखन ने हम लोगो के मुँह में कालिख पोत दी है । उसने एक स्त्री का कतल किया है । उसके जेवर और नगदी गायब की है’

‘राखन ने कतल किया है । अरे कैसी अनहोनी बात करते हो तुम लोग । और क्या जेवर, नगदी गायब किया है । यह सब सही है । क्या कह रहे हो यह सब’ ।

‘हाँ जी, सब सही है’ नाना ने एक पैर पर दूसरा पैर रखते हुए कहा ।

नानी नाना के पैरो के पास ही बैठ गई । चश्मे के अन्दर से ही नीचे देखती हुए कहती गई ।

‘यह बुढ़ापे में क्या सुनने को मिला । कालिख तुम लोगो पर नहीं है । कालिख मुझ पर है । मेरे स्तनो में यह घृणित दुग्ध धार कहाँ से प्रवाहित हुई जिसने इस बच्चे को ऐसा लम्पट बनाया । मेरी तो इच्छा होती है । मेरे सामने यह रखना आये, मैं अपने हाथ से इसे गड़ासे से काटूँगी । उसके पश्चात मुझे सूली पर लटका दिया जाय ।’

नानी के नेत्र आँसुओं से छलछला आये । वह आगे कहती जा रही थी ।

‘बदमास कही का । चोरो और लुच्चो की सगत सीखी है ।’  
नाना होठो को खींचते हुए बोले ।

‘बिटझा का व्याह उधर कुछ महीनो को टल गया था । अब क्या होगा । लड़के वाले यह खबर सुनेगे । वह लोग क्या समझेंगे । कही शादी न मारी जाये’

नानी भी आँखें फाड़ कर आँगन के बीच में दृष्टि गड़ोये कहती जाती थी ।

‘आखिर यह राखन को हुआ क्या । उसे पैसे की कमी नहीं है जो चाहता है खर्च करता है । पढ़ा लिखा नहीं, तो यह घृणित व्यापार करेगा ?

नाना धीमे-धीमे गर्दन हिलाते हुए बोले ।

‘कबिरा सगत साधु की हरै और की व्याधि ,

सगत बुरी असाधु की, आठो पहर उपाधि ,

‘यह कुसगत का फल है ।,

नानी गर्दन हिलाती हुई बोली ।

‘और क्या ?’

आँगन में धूप काफी फैल गई थी । बाहर गाय बैल तथा बछड़े रँभा रहे थे । नाँदे खाली पड़ी थी । बछड़े इधर-उधर बिखरा हुआ नीचे का भूसा नथुने से फूँक मारते हुए चाट लेते । घर का चूल्हा मनहूसियत प्रकट कर रहा था । चिड़ियाँ घर के आँगन में थोड़ी देर चहचहाकर, कुछ न मिलने पर उड़ गई । बाहर नीम के पेड़ की छाया बिलकुल छोटी हो गई थी । गाय बैल रँभाते रँभाते शांत होकर गर्दन पृथ्वी से छुला कर बैठ गये । मध्याह्न का सूर्य ढलने लगा । खाने का समय हो गया था । चिड़ियाँ एक बार फिर नानी के निकट चहचहाने लगी । नानी ने हाथ झटक दिया । वह उड़ उड़ कर फिर से कहीं नानी के निकट आती कहीं मामी के पास चहचहाती पर सभी उन्हें हाथ से बार बार झटक देते । फिर से घर सूना हो गया ।

मिट्ठन मामा के आने की आहट हुई । मैकू मामा भी पीछे से आ गये । नाना ने आते ही कौतूहलता से प्रश्न किया ।

‘कहो मिट्ठन क्या हुआ’

मिट्ठन मामा ने दरवाजे के कोने में छड़ी टिकाते हुए कहा ।

‘इन्स्पेक्टर साहब ने कहा है यदि राखन मुखबिर बन जाय तो इसे छुटकारा मिल सकता है ।’

मिट्ठन मामा ने बीच ही में आवाज लगाई ।

‘राखन, राखन,’ ‘मैकू राखन कहाँ गया ?’

राखन मामा बाहर बैलो के पास ही एक झाँखर का तिनका दातो से तोड़ तोड़ कर फेक रहे थे । मैकू मामा ने तुरन्त बाहर जाकर झाँका । मैकू मामा ने उनकी ओर देखते हुए कहा ।

‘राखन आओ अंदर बैठो चलकर । तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा ।’

‘राखन मामा का मुख बिलकुल सफेद था । पहले तो कुछ न बोले । मैकू मामा के फिर आग्रह करने पर धीमे से बोल पड़े ।

‘आते हैं’ यह सुनकर मैकू अन्दर चले गये यह कहते हुए ‘अच्छा देखो कहीं जाना मत ।’

मैकू मामा ने अन्दर जाते हुए मिट्ठन मामा की ओर देखते हुए कहा ।

‘राखन से हमने कह दिया है, वह कहीं नहीं जायेगा । वह बाहर ही खड़ा है ।’

नाना काँनूटल-पूर्ण नेत्रों से मिट्ठन मामा की ओर देखते हुए बोले ।

‘तो मिट्ठन, राखन ने भी कुछ कबूला है’ नाना के नेत्र जो बुढ़ापे के कारण अन्दर को घँस गये थे, आज और भी गड़्ढे में दिख रहे थे । नेत्रों के कोरों में ढेर-सा कीचड़ जमा हो गया था । नाना ने धोती के छोर से कीचड़ पोछते हुए आगे कहा—

‘आखिर राखन की बातों से क्या पता चला । उसी ने कतल किया है अथवा किसी और ने ।’

मिट्ठन मामा, जो नाना के पीछे कोने पर उसी चारपाई पर बैठ गये थे बोले—

‘राखन ने यह कबूल लिया है कि कतल बैजू द्वारा किया गया है । उसमें शारदा ने बुढ़िया के हाथ पैर बाँधे थे । राखन स्वयं बाहर देख रेख के लिये खड़ा था कि कोई आने न पाये ।’ नाना गुस्से से होठ मीचते जा रहे थे और बारबार आँखें मीच कर एक बारगी फाड़ लेते

थे । ऐसा लगता था कि उनके नेत्र कान तक फट जायेंगे । माथे पर अगणित बल पड़ गये थे । मैंने गौर में देखा था । नाना के नेत्र फिर फटे के फटे ही रह गये । बड़ी देर तक होठ मीचे, नथुने फुलाये, माथे पर शिकने चढ़ाये जाने किस ओर देखते रहे । उनकी साँस कई बार तेज हुई । माथे की शिकने और बढ़ी । ऐसा लगा उनकी शिकने चढ़ोआ तक बढ़ जायेंगी । उनके नेत्र बन्द न हुए । नाना एक बारगी चार-पाई पर से लुढ़क कर नीचे गिर गये । मिट्ठन मामा ने हाथ लगाया । मैकू मामा ने घुटनों के बल बैठ कर उनका सिर उठाया । दोनों ने उठा कर उसी चारपाई पर लिटा दिया । नानी चीख पड़ी—

‘हाय भगवान, दया करो ।’

मामी दौड़ पड़ी । इतने में नानी ने नाना वाली चारपाई की पाटी से अपना मत्था दे मारा । नानी का चश्मा फूट गया था, मत्था लहू लहान हो गया । चश्मे के शीशे की किरचे आँखों में घुस गई ।

माखन मामा लोटे में दौड़ कर पानी लाये । नाना के सिर पर मिट्ठन मामा पानी उड़ने लगे । नाना की नब्ज देखी । नाना नब्ज छोड़ चुके थे । कई बार नाड़ी टटोलने पर भी न मिली । नानी को पीडा असह थी । रुधिर धरती पर टपक टपक कर फैल रहा था । नानी कठिनाई से उठते हुये नाना के चरणों पर चारपाई पर गिर पड़ी । शायद उस अचेत अवस्था में भी पत्नी को हिन्दू सस्कृति में पोषित होने के कारण पति के श्री चरणों में अंतिम साँस लेने से नारी के लौकिक पाप धुलकर उस स्वर्ग के द्वार में प्रवेश करने के लिये प्रमाण पत्र मिल जायेगा । मैकू मामा ने नानी को पकड़ा । उनको सम्हालना चाहा । राखन मामा अन्दर आ गये थे । वह भी नाना नानी के पास खड़े थे । उनमें उन सात्विक प्रवृत्ति वाले उस पवित्र युगल को अपने पापी हाथों से स्पर्श करने की शक्ति नहीं रह गई थी । वह उस प्रतीत आत्माओं की सतान होते हुये भी उस हृदय-विदारक स्थिति में अपने को कतई अलग समझ रहे थे । शायद अभी उनका अन्त करण उनको आगे बढ़ने

के लिये प्रेरित नहीं कर रहा था। उनका अन्त चेतन शुद्ध था, उप-चेतन चोर था।

नाना नानी दोनों के ही प्राण पखेरू उड़ गये थे। मामी जोर जोर से रोने लगी। पास पड़ोस के लोग एकत्रित होने लगे। मैं उम हृदय विदारक दृश्य को आज भी भूलने में असमर्थ हूँ। लोग नाना-नानी के चरणों का स्पर्श कर दहलीज के कोने में बैठते जाते थे। मिट्ठन मामा अपनी धोती से बार बार आँसू पोछते जाते थे। मैकू मामा जोर से बार बार नाक साफ करते, जैसे ऐसा करने से आँसू का वेग कम हो जायेगा, पर अश्रुधारा रोकने पर भी न रुकती थी। मामी नानी के चरणों पर सिर पटक रही थी। किसी नवागन्तुक स्त्री के आने पर वह फिर से दहाड़ मारकर रो उठती। मैं एक खम्भे की आड़ में खड़ा होकर यह सब दृश्य ध्यान से निहार रहा था। यह एक बारगी क्या से क्या घटित हो गया, मेरी बुद्धि से परे था। बराम्दे में एकत्रित स्त्रियाँ सिसकियाँ भर कर अपने आँसू पोछ रही थी। मैं जब भी उन लोगों की ओर निहारता मेरे भी अश्रु निकल आते। नाना मुझे समय समय पर बड़ी उपयोगी बातें बतलाते रहते। वह मुझे एक एक कर याद आने लगी।

बाहर कुछ लोग बाँस की खपाचियाँ फाड़ फाड़ कर नाना तथा नानी के शवों के लिये टिकटियों की तैयारी कर रहे थे। पयाल बिछा कर टिकटियाँ अन्दर लायी गईं। शवों को उन पर रखते ही घर में कोहराम मच गया। कफन की एक चादर नीचे बिछाई गई थी। ऊपर दूसरी चादर से ढक दिया गया। कुछ पान के पत्ते रखकर कलावे तथा वान से शव को लपेट दिया गया। उसके ऊपर से सिल्क की चादरे डाल दी गईं। जैसे ही टिकटियाँ बाहर दहलीज में रखी गईं, चानू मानू तथा अन्य गाय बैल खड़े हो गये थे। बछड़े उन टिकटियों को देखकर जोर जोर से रँभाने लगे। बैल डकरा रहे थे। गायें दहाड़ उठीं। शवों के सड़क पर लाते ही गाय, बैल अपना खूटा छुड़ाने का प्रयत्न करने में उछलने लगे।

नाना-नानी की दसवीं मनाने के लिये सारे सबंधी एकत्रित हुए थे । उसी दिन मेरे पिता जी आ गये थे । उनसे मामी राखन मामा के बारे में सब कुछ बतला रही थी । नाना नानी पर उनके कारण जो घोर आघात पहुँचा था उसका सविस्तार वर्णन उन्होंने मेरे पिता जी से किया ।

पिता जी बहुत गंभीर थे । वह मेरी ओर निहार कर किसी गंभीर प्रश्न के सुलझाने में निमग्न हो गये थे । उनके माथे पर की सिकुड़ने तथा उनके नीचे के होठ दाँत से दबे हुए इस बात का आभास दे रहे थे । मामी की बातें सुनते जा रहे थे, पर उनका ध्यान किसी विशेष समस्या को सुलझाने की ओर ही था । वह पृथ्वी पर एक टक निहारते रहे । मिट्ठन मामा मेरे पिता जी को जीजा जी से सम्बोधित करते थे । घर के अन्दर की दालान में एक चारपाई पड़ी थी । बीचो-बीच दीवाल के दोनों ओर के ताखों के सहारे एक बाँस रखा हुआ था, जिस पर घर भर के कपड़े पड़े हुए थे । इधर-उधर दालान में वस्तुएँ अस्तव्यस्त थी । कोने में एक बिना पालिश का स्टूल था जो बहुत पुराना होने के कारण सफेद हो चला था । राखन मामा कहीं से घूम कर आये थे । वह उसी कोने में पड़े हुये स्टूल पर बैठ गये । मिट्ठन मामा भी जो नित्य लम्बी पूजा किया करते थे, उससे निवृत्त होकर दालान ही में आ गये थे । वह खड़े-खड़े मामी को सकेत करते हुये बोले—

‘जीजा जी ने कुछ नाश्ता किया है ? अरे जाकर हलुवा ही बना लो ।’

‘मेरे पिता जी ने मिट्ठन मामा की ओर देखते हुये कहा ।’

‘बैठो मिट्ठन लाल, नाश्ते की चिंता मत करो ।’

‘मामी उठकर नाश्ते की तयारी के लिये चली गई थी ।’

पिता जी ने राखन मामा की ओर आकर्षित होते हुये कहा—

‘कहो राखन, अब तो घर की खेती की देखभाल तो किसी को करनी ही होगी । अकेले मिट्ठनलाल क्या-क्या कर लेगे । तुमने पढाई से भी मुख मोड़ा । अब मिट्ठन की ही सहायता करो । यह चार-वाशी छोड़ो ।’

राखन मामा जो स्टूल पर बैठे कभी छत की ओर निहार रहे थे कभी पास के ताख पर रखे एक टूटे खिलौने को गौर से देख रहे थे पिता जी के इन शब्दों को मुनकर चौक पड़े । उनकी ओर आकर्षित होते हुये बोले—

‘जी मैं खेत पर जाता तो हूँ । खेती तो सम्भालनी ही होगी ।’

पिता जी ने यह सुनते ही कहा—

‘हाँ, शाबाश ! तुम तो समझदार लड़के हो, जीवन में कार्य तथा परिश्रम करना ही काम आता है ।’

मामी इधर-उधर छोटे-मोटे डिब्बे पलट रही थी । वह शायद हलुए के लिये रवा खोज रही थी, पर रवा न मिलने पर उन्होंने आटे का हलुवा तैयार करना प्रारम्भ कर दिया था । हलुए की सोधी सुगंध ने राखन मामा तथा मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया था । कई दिन से घर में खाना न पकने के कारण आधे पेट रह जाना पड़ता था । भुने हुये आटे की सुगंध मुझे बड़ा आनन्द दे रही थी । इच्छा हो रही थी, चीनी मिला हुआ आटा ही फाँकने को मिल जाता । राखन मामा मुझे सकेत करते हुये उधर बुला ले गये । पिछली रात राखन मामा ने एक

हाँडी से चार लड्डू मामी की आँख बचा कर चुराये थे । मुझे भी उनसे से दो लड्डू खाने को दिये थे, पर उन लड्डूओ से दिन भर की भूख की तृप्ति न हुई थी । मुझे भी इस बात का आभास मिल गया था कि गमी के दिनों घर में खाना नहीं पकता । सारे घर के लोग उपवास करते हैं । राखन मामा द्वारा दिये हुये लड्डूओ को खाने के लिये मैं अपने को न रोक सका था । जैसे ही राखन मामा मामी के निकट खड़े हुए, मामी ने उनकी ओर देखते हुए कहा—

‘क्या है राखन बाबू ?’

राखन मामा मामी को भाभी शब्द से संबोधित करते थे । मामी की ओर देखते हुए राखन मामा बोले—

‘कुछ नहीं भाभी भूख बड़ी जोरो से लग रही है ।’

मामी ने उत्तर देते हुये कहा—

‘अभी खाना पकेगा । घबराओ नहीं । यह जीजा जी के लिये नाश्ता पका रही हूँ । वह कल रात के आये हैं ।’

‘और भाभी मैं और चट्ट भी तो दो दिन से भूखे हैं ।’

मेरे मुख से अकस्मात् निकल गया ।

‘मामी मैंने कल रात दो लड्डू खाये थे, राखन मामा ने दिये थे ।’ राखन मामा ने मेरी ओर देखते हुये ऐसी आँख बनाई मानो वह मुझसे ऐसी आशा नहीं कर रहे थे कि मैं यह बात मामी के सम्मुख खोल दूँगा ।

मामी ने मेरी बात सुनते ही मुझसे तो कुछ न कहा पर राखन मामा की ओर क्रांन्ध-पूर्ण दृष्टि डालती हुई बोली—

‘बड़ी लज्जा जनक बात है राखन ! जहा पिता की गमी हुई हो, उसका दुख तो दूर रहा तुम्हें लड्डू खाने की पडी थी ।’

मुझे मामी के शब्द ऐसे लगे मानो मैंने राखन मामा द्वारा कल दिये गये लड्डू स्वीकार कर बड़ी भारी भूल की थी, पर मेरे अन्तःकरण के किसी कोने से निकली हुई आवाज मुझे शांति दे रही थी कि

रात्रि को अधिक भूख लगने पर यदि लड्डू खा लिये गये तो इसमें क्या हर्ज था ।

इतना कहकर मामी ने भुने हुये आटे में चीनी मिलाकर करछल से जल्दी-जल्दी चलाना प्रारम्भ कर दिया । चीनी मिल जाने पर जैसे ही आटा कढाई में लगने लगा मामी ढेर-सा पानी उड़ेल कर गीले आटे का चलाने लगी ।'

राखन मामा ने फिर कहा—

‘तो मुझे हलुआ नहीं मिलेगा ।’

मामी जो करछल चलाती जा रही थी अपने कंधे पर से खिसकी हुई धोती सम्हालती हुई बोली—

‘नहीं यह जीजा जी के लिये बन रहा है, घबराओ नहीं खाना पकने जा रहा है ।’

मामी ने दो प्लेटों में हलुआ सजा कर रखा था, जैसे ही मामी पास की कोठरी से शीशे ग्लास लेने गई, राखन मामा ने एक हलुए की प्लेट उठाली और धीरे से प्लेट घुमाये हुए बाहर चले गये । राखन मामा ने मुझे भी बाहर चलने को सकेत किया पर मेरी हिम्मत न पड़ी और मैं वहाँ से हटकर मिट्ठन मामा के पास चला गया ।

मामी जैसे ही ग्लास लेकर वापस आई । हलुए की एक प्लेट गायब देखकर कहती जा रही थी ।

‘राखन बाबू को कुछ समझ नहीं । घर में चाहे मेहमान बैठा हो । पहले अपना पेट भरने की पड़ी रहती है ।’

पिता जी ने यह बात सुन ली थी ।

जैसे ही मामी पिता जी के पास प्लेट रखने लगी, पिता जी बोल उठे ।

‘अरे पहले बच्चों को दो । लड्डू को भी भूख अधिक लगती है । उनकी बात पूरी करनी चाहिए ।’

‘मामी ने तुरत उत्तर देते हुए कहा ।’

‘आप खाइये तो, यह राखन बाबू ऐसे ही किया करते हैं उनकी आदत ही ऐसी है। आप नहीं जानते ऐसा न होता तो यह घर में ऐसी बिपत्ति ही क्यों आती’

पिताजी ने मिट्ठन मामा की ओर देखते हुए कहा ‘अरे राखन कहाँ गया उसे बुला लो।’

मिट्ठन मामा जो चारपाई के पैताने बैठे हुए थे, पिता जी को प्लेट की आर सकेत करते हुए बोले—

‘भाई साहब आप खाइये तो। यह बच्चे ऐसे ही उत्पाती होते हैं। राखन की आप कितनी ही खातिर कीजिये वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आने का।’ पिता जी ने धीमे से सिर हिलाते हुए कहा।’

‘नहीं भइया मिट्ठन ऐसी बात नहीं है, बच्चों को यदि प्यार से रखा जाय तो वह कभी बर्बाद नहीं हो सकते। घर से जब वह वचित कर दिये जाते हैं जभी उनको बाहर की शरण लेनी पड़ती है। उनके उद्भट होने का यही कारण है।’

मामी पिता जी के इन वाक्यों को सुनकर यही समझ रही थी मानो राखन की बर्बादी का वही कारण हो। मामी पास ही एक बान की बिनी हुई मचिया पर बैठी थी। वह अपना सर हिलाते हुए बोली—

‘जीजा जी आप समझते हैं राखन बाबू को हम लोग कष्ट देते हैं इस कारण वह बिगड़ गये हैं। ऐसी बात नहीं है। यह बचपन से ही शरारती हैं। इनके उत्पातों को आप नहीं जानते। इस छोटी आयु में ही यह क्या नहीं जानते। शराब पीना इन्होंने सीख लिया है। वेश्याओं के यहाँ यह जाते हैं।’

पिता जी जैसे इन वाक्यों को सुनकर चौक गये। शायद उन्हें इस बात की चिंता हो रही थी कि यह वाक्य मेरे सम्मुख क्यों कहे गये थे। मुझ पर उनका क्या प्रभाव पड़ेगा। उन्हें अदर अदर एक घुटन सी हो रही थी पर वह उस घुटन को दबाते हुए बोले—

‘मुझे तुम लोग क्षमा करना । मैं समझता हूँ राखन की इस बरबादी का कारण घर वालों पर ही जाता है ।’

‘भामी अपनी सारी का पल्लू सम्भालते हुए बोली ।’

‘जीजा जी और मैकू बाबू भी तो इसी घर के बच्चे हैं । वह क्यों नहीं पथ-भ्रष्ट हो गये ।’

पिता जी ने जो चारपाई की पाटी पर एक ही ढब से बैठे बैठे थक गये थे उस स्थान से कुछ खिसककर सम्भल कर बैठते हुए बोले । शायद एक ही ढब से बैठे-बैठे उनकी जाँघ सुन्न हो गई थी ।

‘मैकू को अच्छी शिक्षा मिली है । चाहे उस पर अपने पिता का प्रभाव हो, अथवा उसके अव्यापको का असर हो । उसे कोई न कोई अच्छा साथ मिला है । यह मत्सग का प्रभाव ही है जो वह पढाई में अधिक ध्यान देता है । बड़े होकर अच्छी पुस्तकें बच्चे को अच्छे माग पर लगा दिया करती है ।’

यह कह कर पिता जी स्वयं चरपाई पर से उठ गये तथा घर के आँगन के बाहर जाते हुए राखन मामा को अदर लिवा लाये उन्हें अपने पास बिठाते हुए बोले ।’

‘आओ राखन मेरे पाम बैठो । तुम्हें क्या कष्ट है । साफ-साफ कहो राखन मामा रोआसे में हो आये थे । वह भरे हुए कठ में बोले— ‘जीजा जी अमुझे भी बड़ी जोरो से भूख लग रही थी । आज मात, आठ दिन से घर पर ठीक में खाना नहीं पकता । कभी बाजार से पूडियाँ आती हैं । कभी पडोस वालों के यहाँ से खाना आता है, मैं भूखा रह जाता हूँ । उसी कारण मैंने एक प्लेट हलुए की उठा ली थी । भाभी ने मुझे देने से मना कर दिया था ।’

राखन मामा यह कहते जा रहे थे । उनके आँसू टप-टप पृथ्वी पर गिर रहे थे ।

भामी यह सब सुनकर अवाक थी । मिट्ठन मामा भी एक अजीब सी मुद्रा बनाये हुए बैठे थे । वह जैसे अपना अपमान सुनकर राखन को पीटने

के लिये बढना चाहते थे पर शायद पिता जी के भय के कारण वह ऐसा करने में असमर्थ थे । वह दाँत पीसकर क्रोध को अदर ही पी गये ।

पिता जी के समक्ष अर्जाब परिस्थिति थी । वह तो अवाक रहे मिठ्ठन मामा भी कुछ न बोले । मामी बात बढाते हुए बोली ।’

‘वाहरे कलयुग । कहाँ पर मे गमी के दिन । किसी को खाने की ही पडी रहे रात दिन । कहीं सुना है दमवी तक घर मे कढाई तवा नही चढता, रुखा सूखा खाकर रहा जाता है । पर राखन बाबू को कहाँ इतनी समझ जो आया सो बक दिया । घर की मर्यादा का भी कभी ध्यान किया है ।

‘अच्छा शान्त हो जाओ राखन, कोई बात नही है आज तुम्हें मैं बढिया मे बढिया भोजन कग्वाऊँगा’ पिता जी ने सबको शान्त करते हुए कहा ।

सध्या समय पिता जी मुझे तथा राखन मामा को लेकर टहलाने के बहाने बाहर निकल गये । नाना का घर शहर पार कर गाँव के निकट था । वही से गाँव की आबादी प्रारम्भ हो जाती थी । कच्चे मकानों की गलियों को पार करते हुए हम लोग शहर मे आ गये थे । कहने के लिये शहर की सड़के पक्की थी पर सड़को के नाम के पत्थर नगर-पालिका के मेम्बरो तथा चेयरमैन के घरों को ऊँचा एवं शानदार बना देने के कारण सड़को के गड्ढे कभी न भर पाये थे । मेरा पैर कभी गड्ढे मे पड जाने से मैं गिरते-गिरते बच जाता । मेरे पिता जी तुरत बोल उठे ।

‘वाह रे शहर ! यहाँ की कैसी है ग्युन्निगेन्टी । आधे-आधे फिट के गड्ढे हो रहे है । आगे कितने ही कुत्ते झुड मे खडे भौक रहे थे । सड़क के थोडी थोडी दूर कूडे के ढेर । हलवाई के दूकानों के पास पडे हुए दोनों के चाटने के लिये कुत्ते आपस मे झपट रहे थे । राखन मामा ने शान्ति भग करते हुए कहा—

‘जीजा जी आज मेरी ओर से मेरी एक प्रार्थना स्वीकार करेंगे ।’

‘क्यों प्रार्थना क्या ? कहो कहो क्या बात है ।’

पिता जी ने चलते चलते राखन को पीठ पर हाथ रखते हुये कहा ।

‘आप मेरे साथ शरान की पट्टी चले चलिये ।’

राखन मामा ने निघडक पिता जी से अपने यह शब्द दुहरा दिये ।  
‘उसकी वहाँ क्या आवश्यकता है । तुम्हें यदि पीने ही का शौक है, मैं तुम्हें पैसे देता हूँ । वहाँ से बोतल ले आओ । किसी एकान्त स्थान में पी सकते हो ।’

‘नहीं जीजा जी वहाँ का वातावरण आनंद लेने के योग्य होता है । आप एक बार मेरे साथ चले चले । देखिये कैसी तफरीह का स्थान होता है ।’

राखन मामा चलते हुए अपनी हथेली पर मुट्ठी पटक-पटक कर कहते जा रहे थे ।

पिता जी मेरी ओर देखकर सहमते जा रहे थे कि मैं भट्टी पर किस प्रकार जा सकूँगा । वह कुछ सोचकर बोले ‘तो चढ़ूँ को घर पहुँचा दिया जाय’ राखन मामा तुरत मुझे आगे करते हुए बोले—

चढ़ूँ के रहने में हर्ज ही क्या है, मैं समझता हूँ जीजा जी यदि किसी व्यक्ति को जितना ही कह कह कर जिन वस्तुओं से विलग रखा जाता है वह उतना ही उस ओर आकर्षित होता है । चढ़ूँ वही खड़ा रहेगा ।’

पिता जी कुछ गभीर होकर शान्त हो गये । वह लोग आगे बढ़ते जा रहे थे । सामने अंधेरे में बहुत से घास वाले मड़क के दोनों ओर बैठे हुए घास बेच रहे थे । झुटपुटा हो रहा था । बाजार शुरू हो गया था । मिठाई वालों की दुकानें जगमगा रही थीं । घास वालों के बीच में साधारण खोन्चे वाले चाट की दुकानें लगाये खड़े थे । इक्के ताँगे वाले ताड़ी पी पी कर चाट के दोने चाट चाट कर चटकारियाँ भर रहे थे । बीड़ियों के धुएँ में एक दूसरे की माँ बहनो में शब्दों में घनिष्ट संबंध स्थापित कर रहे थे । आगे ही दो दुकानों के बीच से होकर एक

गली के दस गज दूरी पर बाये हाथ को एक बड़ा सा फाटक था, जिसके अंदर दो चार लालटेनें टिमटिमा रही थीं । बड़े से मैदान में लोग झुंडो में बैठे कहकहे लगा रहे थे । इधर उधर तिपाइयाँ पड़ी थी । कहीं कोई एकातवासी बनकर किन्हीं भावों में तल्लीन बैठा था । उसकी दुनिया सबसे अलग थी । किसी कोने में सेठ साहूकार बाजार के सौदे-बाजी की चर्चा कर रहे थे ।

राखन मामा ने पिता जी से तपाक से कहा —

‘जीजा जी एक दस रुपये का नोट दीजिये ।’

पिता जी जैसे कुछ सकपकाये, पर न देने की इच्छा होते हुए भी उन्होंने जेब में हाथ डाला, हाथ बहुत चाहा अंदर की जेब से बाहर न निकले पर शब्दों के खोजने पर भी शायद कोई भी शब्द न मिल सके जो उनके हाथ को अंदर की जेब से बाहर न निकलने देते ।

पिता जी का हाथ जेब के अंदर ही था, कुछ सामने के नीम के वृक्ष की ओर देखते हुए बोले—

‘ओ राखन मेरे पास तो शायद सौ रुपये का नोट होगा । दस-पाँच का कोई टूटा नोट नहीं है ।’

राखन मामा पिता जी के चेहरे के सामने देखते हुये बोले, यद्यपि शायद पिता जी उनके मुख को सामने से देखने के भाव को टालना चाह रहे थे ।

‘जीजा जी यहाँ सौ का नोट न टूटेगा तो फिर उसके टूटने का कौन सा स्थल होगा ।’

पिता जी ने देखा कि उनका नोट साबित न बच सकेगा । उनमें शायद यह भी शका हुई कि राखन मामा के हाथ में वह नोट लेकर न जाने उसकी क्या दशा हो अतः वह तुरंत बोल उठे—

‘अच्छा मैं देखता हूँ टूटता है अथवा नहीं ।’

यह कहते हुये वह आगे बढ़ गये । राखन मामा भी पीछे-पीछे उनके साथ ही बढ़ते गये । मैं वहीं खड़ा था । राखन मामा इतने में

आगे हो गये थे । मैं दस गज दूर पर ही था । मैंने राखन मामा को यह कहते हुये सुना । दुकानदार की ओर आकर्षित होते हुए वह कह रहे थे—

‘देखो जी एक बोनल रगीन देना, और यह सौ का नोट तोड़ दो’ पिता जी से सौ का नोट लेकर स्वयं ठेकेदार के हाथ में रख दिया । पिता जी ने इतने में हाथ काउटर के अंदर डालकर नोट अपने हवाले कर लिये थे ।

राखन मामा दो कुल्हड लेकर एक कोने में पड़ी हुई अँधरे में तिपाई पर बैठ गये । मुझे भी वही पास बुला लिया गया । दूर सामने छप्पर के नीचे एक दुकानदार के पास से राखन मामा कुछ कलेजी तथा भुना हुआ गोश्त ले आये ।

राखन मामा ने पिता जी की ओर चुस्की लगाकर मुँह बनाते हुए कहाँ, ‘जीजा जी असली दुनिया यही है । यहाँ छल कपट, जाल फरेब से रहित होकर मनुष्य आता है । एक यही स्थल ऐसा है, जहाँ पर मनुष्य अपराध करके भी स्वीकार कर लेता है’ ।

पिता जी ने धीमे में एक घूँट निगलते हुए कहा ।

‘हूँ, तो राखन क्या तुमने सचमुच किसी का कतल किया था ?’

राखन मामा जैसे चौक गये । इधर उधर मुँह बचाकर बोले—

‘नहीं जीजा जी मैं यदि करना भी चाहूँ मैं नहीं कर सकता । मुझे मे इतनी सामर्थ्य भी नहीं थी । मुझे पता भी नहीं था कि मेरे साथियों की क्या योजना थी । मुझे तो बाहर बहकावे में रखा गया । मुझे तो यह सब घटना घटित हो जाने पर पता चला कि मैं निर्दोष किस प्रकार फाँसा गया ।

‘फिर तुमने ऐसे लोगो का साथ ही क्यों किया’ ?

पिता जी ने एक कलेजी का टुकड़ा मुख में रखते हुए कहा ।

‘जीजा जी ‘साथ’, यही तो सारी कहानी है ।’

कुछ रुककर राखन मामा जैसे अपना हृदय खोलकर प्रत्येक अक्षर

पढ लेने के लिये रखने जा रहे हो। पृथ्वी पर गौर करते हुए फिर ऊपर नीम के पेड़ की ओर निहार कर कुल्हड़ में पड़ी हुई मदिरा की ओर देखते हुए बोले—

‘मैं तिरस्कृत सतान हूँ इस घर की जीजा जी। भाभी जिस दिन से इस घर में आई है, मुझसे पता नहीं क्यों इतनी घृणा करती है। माँ के कान इन्होंने ही भरे थे। यद्यपि वह बेचारी अब चल बसी, वह मेरी और चन्दू की बड़ी देखभाल करती थी। वह मेरे ऊपर आँच भी नहीं आने देती थी। काका भले ही उनकी बातों से एक अंश पर विश्वास कर लेते हो पर माँ कभी भी उनकी बातों का विश्वास नहीं करती थी।’

‘तो फिर इसका चारा यह तो नहीं था, कि तुम कुसंगत में पड़ते। तुम्हें पढाई से मुख नहीं मोड़ना चाहिए था।’

पिता जी ने राखन मामा की ओर देखते हुए कहा।

राखन मामा आँख बन्द कर झूमने का आनंद ले रहे थे। उन्हें उस वातावरण में बैठ कर मदिरापान करने में अत्यधिक आनंद मिलता था। सामने हो रहे किसी गोष्ठी के कहकहे को देखकर चोक्ते हुए बोले।

‘जीजा जी मेरी पढाई में तबियत नहीं लगती। मैं जो कुछ पढता था मुझे याद ही नहीं होता था। यदि कोई अर्थ इत्यादि घर पर मिट्ठन भाई साहब से पूछता वह टाल देते कि मुझे अवकाश नहीं है। मैंकू भाई अधिकतर बाहर ही रहते हैं। मुझे कुश्ती दगल से अधिक प्रेम है, जिसके लिये घर वाले मुझे सदैव फटकारते रहे’।

राखन मामा देख तो सामने रहे थे पर ऐसा लग रहा था कि वह शून्य में देख रहे हो। सामने ही देखते हुए वह कहते जा रहे थे कि पिता जी ने उनसे टोकते हुए कहा।

‘कुश्ती लडना कोई खराब बात नहीं है पर राखन यह मदिरा-पान तुम्हारे स्वास्थ्य को नष्ट कर देगी। तुम कहोगे मैं स्वयं तुम्हारा साथ दे रहा हूँ और तुम्हें इससे मना कर रहा हूँ’।

‘नहीं जीजा जी, आप ऐसी बात कैसे सोचते हैं, मैं सदैव आपको अपना पूज्य समझना रहा हूँ, मुझे मालूम है आप नहीं पीते, यह आप मेरी इच्छा पूर्ण करने के लिये ही साथ दे रहे हैं’ ।

राखन मामा ग्लास में कुछ और मदिरा उडेलते हुए कहा । मेरी ओर देखते हुए बोले ।

‘लो चन्दू, थोड़ी सी तुम भी लो, यह अमृत है । इससे बुद्धि के दरवाजे खुल जाया करते हैं’ ।

पिता जी ने तुरन्त मेरी ओर सकेत कर दिया था । वह तुरन्त बोल उठे ।

‘नहीं राखन बच्चे इसका शौक नहीं करते । चन्दू को मत दो’ ।

मैंने तुरन्त वहाँ से हटते हुए कहा ।

‘नहीं ‘नहीं, इसमें बड़ी गंध आ रही है’ ।

ऊपर नीम के वृक्ष पर बीच बीच में कौए जो उस पेड़ पर बसेरा लेने के लिए एकत्रित हो गये थे, एक डाल से दूसरी डाल पर शांति से बैठने के लिये हर हर का शब्द कर उठते । बीच बीच में जो दोनों पर झपटते हुए कुत्ते कोहराम मचा देते फिर भी उधर किसी का ध्यान न बाँटना । मैं कभी ऊपर कौओं का हरहराना तथा कभी कुत्तों के झपटने के शब्द की ओर आकर्षित हो जाता ।

पिता जी ने राखन मामा से बात का रुख बदलते हुए कहा—

‘कहो राखन तुम्हारी भाभी चन्दू को चाहती है, चन्दू का यहाँ रहना उन्हें खलेगा तो नहीं’ ।

राखन मामा ने दाँत निपोरते हुए कहा ।

‘यह आप चन्दू से ही पूछ सकते हैं, कल मैं जब हलुए की प्लेट लेकर बाहर चला गया था, उस समय चन्दू भी वहाँ पर था । भाभी ने चन्दू तक को हलुए के लिये नहीं पूछा । मुझे गुस्सा आया, मैंने कहा देगी कैसे नहीं, मैं एक प्लेट उठा कर चल दिया । क्या मैं नहीं समझता

था कि जीजा जी के लिये हलुआ बन रहा है, पर हम दोनों भी तो कई दिन के भूखे थे ।’

आज आठ नौ दिन से गमी का नाम लेकर हम लोगो को उल्टा-सीधा खाना दे दिया जाता है और भाभी को मैंने स्वयं देखा है, बाजार से पेडे और जलेबियाँ मँगवाकर खाते हुए । देने वाले तो मिट्ठन भइया ही हैं । हम छोटे बच्चे आखिर कब तक भूखे रहेंगे ।’

पिता जी बीच ही में राखन मामा की ओर देखते हुए बोले ।

अच्छा वह स्वयं खा लेती है और तुम लोगो को नहीं देती ।’

‘जो जीजा जी, मैं आप से झूठ थाड़े ही बोल रहा हूँ ।’

राखन मामा ने आँखें फाड़ते हुए कहा । उनका क्रोध अन्त करण में उभर आया था अतः वह आगे कहते गये—

जीजा जी, मुझे चोर भाभी ने ही बनाया है । मैंने इन दिनों चूरा-चुरा कर खाया । भाभी को पता भी नहीं चल पाता । मैं उनके नोट गायब कर देता हूँ और इस प्रकार मैं अपनी इच्छाओं की पूर्ति करता हूँ ।’

पिता जी कुछ गभीर हो गये थे । वह राखन मामा की बातों की ओर ध्यान नहीं दे रहे थे । वह सुनी अनसुनी करते हुए किसी गभीर प्रश्न के सुलझाने में निमग्न हो गये । मैं उनके ढब से कुछ ताड़ रहा था कि वह शायद मेरे भविष्य के बारे में सोच रहे थे । उन्होंने कई लम्बी साँसें भरी और फिर किसी गूढ़ विचारधारा में निमग्न हो गये ।

मुझे पास बिठालते हुए पिता जी ने कहा ।

‘चढ़ तुम कुछ खा लो ।’

मैंने नीचे देखते हुए कहा ।

‘जी नहीं’

पिता जी, समझ गये थे कि मैं इसलिये नहीं कह रहा था कि

शायद मुझे वहाँ की गद्दी चाट अथवा गोश्त खाने को मिलेगा। उन्होंने स्वयं कहा —

‘अजी तुम यहाँ की कोई चीज मत खाना। बाहर जाकर मिठाई ले लो किसी अच्छी दुकान से, मुझे मालूम है तुम भूखे होगे।’

यह कहते हुए पिता जी ने मेरे हाथ पर एक रुपया रख दिया मैं रुपया लेकर मिठाई की तलाश में निकल गया। मैं आठ आने के रसगुल्ले लेकर तुरत लौट आया। राखन मामा की ओर जैसे ही मैंने रसगुल्ले बढ़ाये वह बोल उठे।

‘चढ़ तुम खाओ, इसके साथ मीठी चीज नहीं खाई जाती।’ मैंने पिता जी को बची हुई अठन्नी वापस कर दी और पिता जी के बगल में बैठ कर रसगुल्ले खाने लगा। मुझे आज के रसगुल्लो में न जाने क्यों इतना आनंद आ रहा था। अदर ही अदर बड़ी प्रसन्नता से एक एक रसगुल्ले का आनंद लेता हुआ कभी गर्दन ऊपर उठाकर कभी नीचे झुका कर सब खा गया। उसका स्वाद मैं बहुत देर तक याद करता रहा।

पिता जी ने कहा।

‘चढ़ खा चुके, अच्छा चलो अब उठना चाहिये।’

यह कहते हुए हम तीनों ही वहाँ से चल दिये।

एक दिन पिता जी ने मुझे एकांत में बुलाकर मुझ से पूछने लगे ‘चढ़ तुम क्या चाहते हो ? तुम यहाँ रहोगे अथवा मेरे साथ चलोगे’ मैं कुछ न समझ सका कि मैं क्या उत्तर दूँ पर मुझ से अनायास ही निकल गया।

‘मैं आपके साथ चलूँगा।’

मुझे नाना की मृत्यु के उपरांत इन दस-बारह दिवसों में ही बड़ी घुटन-सी लगने लगी थी।

पिता जी मेरे उत्तर से ताड़ गये जैसे मैं प्रसन्न नहीं था अपनी वर्तमान स्थिति से। नाना पर पिता जी को भी अगाध विश्वास था

और शायद उन्हीं के कारण मुझे उन्होंने यहाँ छोड़ भी रखा था। पिता जी ने मेरे गव्व मुनते ही कहा।

‘अच्छी बात है बेटा,’ ‘माँ के न रहने पर सतान की बुरी दशा हो जाती है।’ एकबारगी उनके मुख से शब्द फूट पड़े। फिर कुछ रुक कर गम्भीर मुद्रा बना कर बोले।

‘कुछ भी हो, तुम्हीं मेरे बुढ़ापे की लकड़ी हो। मेरे साथ चल तो रहे हो। सावधानी से रहना। चाचा चाचियों का साथ। वहाँ भी तुम्हें गम्भीर परिस्थितिओं का सामना करना होगा।’

कुछ रुक कर अपनी धोती की छोर से आँसू पौछते हुए बोले—  
‘ईश्वर सब कुछ यार लगायेगा, उस पर विश्वास कर आगे बड़े चलो।’

दूसरे ही दिन पिता जी ने मामा जी के सम्मुख प्रस्ताव रख दिया कि वह मुझे अपने साथ ले जाना चाहते हैं।

मिट्ठन मामा ने पिता जी से समझाते हुए कहा।

‘आप चढ़ू को कहीं नहीं ले जायेंगे। चढ़ू मेरे साथ ही रहेगा, चढ़ू को हमी लोगो ने इतना बड़ा किया है। यह हमारे साथ ही रहेगा।’

‘नहीं अब यह बड़ा भी हो गया है, इसकी पढाई भी बड़े शहर में ही होनी चाहिये जिससे किसी काम का निकल सके।’

पिता जी मिट्ठन मामा की ओर देखते हुए बोले।

‘क्यों जी चढ़ू तुम हम लोगो को छोड़ देना चाहते हो? तुम्हीं ने जीजा जी से कुछ कहा होगा। अरे पगले नाना नानी न सही, तेरे मामा मामी तो हैं।’

‘मैं कुछ न बोला। उनके उत्तर में मैं अपने पाजामे के नारे के एक सिरे को उलटता पलटता रहा।’

‘नहीं अब इसे मेरे साथ जाने ही दीजिये। वह बूढ़े आदमी घर पर इसकी देखभाल करते रहते थे। तुम लोग अपने काम में

लगे रहोगे । यह घर पर भी सबको परेशान करेगा ।’

पिता जी ने गर्दन उठा कर मिट्ठन मामा की ओर, कभी नीचे की ओर देखते हुए कहा ।

मैकू मामा जो पास ही खड़े, ताख पर रखी हुई वस्तुओं को उलट पलट रहे थे, शायद उनके कमीज के कफ के बटन इधर उधर हो गये थे, मेरे जाने की चर्चा सुनते ही पिता जी की ओर आकर्षित होते हुए बोले —

‘क्या बात है जीजा जी, चट्टू को आप नहीं ले जायेंगे । यह मेरे साथ रहेगा । मैं इसकी देख-रेख के लिये काफी हूँ । यह पथभ्रष्ट नहीं हो सकता । मैं इसकी अच्छी तरह कनपकड़ी करूँगा । इतना कहते हुये उन्होंने आगे बढ़कर मेरे गाल पर हाथ फेरते हुए कहा ‘क्यों चट्टू, अपने मैकू मामा को छोड़कर जाने की तैयारी कर रहा है ?’

मैकू मामा के इन शब्दों को सुनकर मेरा गला भर आया । मैंने एक बार मामी की ओर देखा, पिता जी की ओर दृष्टि फेरी तथा फिर से मैकू मामा की ओर देखते हुए मुस्करा दिया ।

मैकू मामा मेरे गाल पर फिर से हाथ फेरते हुए बोले—

‘चट्टू के चले जाने पर यहाँ के चानू मानू क्या करेंगे । चट्टू तुम तो अपने नाना से कहा करते थे कि मैं चानू जैसा फुर्तीला बनूँगा । बिना चानू मानू के देखे तू किस प्रकार चुस्त बन सकेगा ?’

पिता जी, जो एक दो दिन बड़ी गभीरता से मेरे ले जाने के विषय में सोच रहे थे, स्वयं असमजम में पड़ गये । पिता जी की दृष्टि सामने दिवाल पर एक छिपकली पर जा पड़ी, जा किसी काले दाग पर चिपके हुए तिनके की ओर ताक लगाये बैठी थी । हल्की हवा से तिनका हिलने के कारण छिपकली को पूर्ण विश्वास दिला रहा था कि वह काला दाग जैसा कोई पतिंगा ही हो । वह तिनके के हिलने से बार बार दुम हिलाती हुई, आगे धीमे-धीमे खिसक रही थी । पर जैसे ही वह उस मायावी तिनके पर झपटी उसका सारा परिश्रम व्यर्थ गया और वह निराश

होकर, वही बड़ी देर तक चिपटी रही। धीमे धीमे वह आगे बढ़ गई। पिता जी उस दृश्य को देखकर न जाने क्या सोचने लगे और मैकू मामा की ओर दृष्टि फेरते हुए बोले—

‘तो मैकू चट्ट की देखभाल तुम्हारे ही भरोसे है। मिट्ठन बाबू को गृहस्थी के क्षण्टो से अवकाश नहीं मिलेगा। माखन को तो शायद पढ़ाने के लिये तुम लोग बाहर भेज रहे थे?’

मिट्ठन मामा जी शांतिपूर्वक मैकू मामा की बातें सुन रहे थे, राखन मामा की बात छिड़ने पर बोल पड़े।

‘जी जीजा जी, अब यही सब तो तय करना होगा। यह इतनी बड़ी गृहस्थी का भार किस प्रकार सम्भाला जाय।

‘हाँ मिट्ठन लाल तुम्हारे ऊपर सचमुच बड़ी मुसीबत आ गई बैठे-बैठे। देखो राखन को तुम खेती पर लगाओ। मेरे विचार से उसकी सगाई भी शीघ्र करने का प्रयत्न करो’। पिता जी ने गम्भीरता से उनकी परेशानी का समाधान सुझाते हुए कहा—

‘पर अभी विट्ठना ही हमारे सामने है, मैकू है, फिर आजकल तो विवाह शीघ्र होते भी नहीं’।

मिट्ठन मामा ने कभी मुस्कुराकर) फिर बीच में गम्भीर होते हुए उत्तर दिया।

इतने में मामी सबके लिये ग्लासों में आधा दूध आधी चाय लेकर आ गई थी। पिता जी को, नीचे रखी हुई प्लेट पर ग्लास रख, आगे बढ़ाते हुये बोली—

‘लीजिए जीजा जी! चाय पी लीजिये, यह घर का झगड़ा तो ऐसे ही चलता रहेगा।’

पिता जी ने तुरन्त राखन मामा का नाम लेते हुए कहा—

‘राखन को चाय मिल गई। भाई तुम लोग पहले राखन का ध्यान कर लिया करो, फिर किसी और को पूछो’।

पिता जी के ऐसा कहने पर मामी मुस्करा दी। मिट्ठन मामा औठ दबाकर नीचे को देखने लगे।

मामी ने उत्तर देते हुए कहा—

‘वह अभी घूम कर वापस नहीं आये है। उनके लिये चाय रख दी गई है।’

पिता जी ने प्लेट में चाय उड़ेल कर पीने हुए कहा—

‘इतने स्वादिष्ट दूध की चाय तुम लोग पी सकते हो। आजकल बढ़िया दूध तो मिलता नहीं, अतः हम लोग एक ग्याली में दो चम्मच दूध डाल कर पी लेना अधिक पसंद करते हैं। मिट्ठन मामा ने अपनी प्लेट और ग्लास हाथ में लेते हुये कहा, ‘और कुछ खाने को नहीं लाई जीजा जी के लिये’

हाँ हाँ जीजा जी तो बातों में ऐसा लगा लेते हैं, मैं चीकें में मठरी रख कर भूल आई।’

यह कह कर मामी मठरी की प्लेट लाने चली गई। मठरियाँ अच्छे घी में तली हुई थी, जो अजवाइन डालकर स्वादिष्ट बना दी गई थी।

पिता जी ने मठरी ढूंगते हुये कहा—

‘अच्छा तो आज शाम की गाड़ी से मेरा प्रस्थान होगा।’

‘क्यों जीजा जी, अभी जल्दी क्या है, आप के आने से हम लोगों को बड़ी साखना मिली।’

‘नहीं भइया मेरे प्रेम का काम ठप पड़ा होगा। मेरी अनुपस्थिति में कोई काम नहीं हो पाता। प्रेम का काम बड़ा बेठक होता है। आर्डर लाना, तथा कम्पोजीटर्स भी काम के महारे ही मजदूरी पाते हैं। कोई बड़ा प्रेस नहीं है। यदि चार छ दिन बंद हो गया, तो आमदनी नहीं हो पाती। फिलहाल मैं चटू को तुम लोगों के ग्यवानुगार, तुम लोगो के पास ही छोड़े जा रहा हूँ।’

मैं आठवी कक्षा में पहुँच गया था। मेरे स्कूल के उत्तर दक्षिण तथा पूर्व की ओर अमरूद के घने बाग थे। स्कूल के अहाते की ऊँची ऊँची मुँडेर पर कडैल के पेड़ थे। किन्हीं पेड़ों में लाल फूलों के सुन्दर गुच्छे लगते थे तथा किन्हीं में लम्बे पीले फूल होते थे, जो देखने में अत्यधिक सुन्दर लगते। यह पेड़ पुरुषों के कद से भी काफी बड़े थे। उनकी पतली लम्बी पत्तियाँ देखने में सुन्दर लगती थी। कडैल के फूलों के झर जाने पर उनमें तिक्तोंने हरे फल लद जाते। लड़के कहते, इन्हें सम्हालकर तोड़ने चाहिये, क्योंकि इनका दूध लगने से आँख फूट जाती है। बच्चे छुट्टी होने पर फल तोड़ तोड़ कर पेड़ खाली कर देते, मेरा एक साथी था बीनू वह मुझ से कहता कि मैं नीचे खड़ा रहूँ। वह चढ़ जाता और फलों को तोड़-तोड़ कर नीचे फेंकता जाता। मैं दस बारह कडैल के फल जो भी मिलते बटोर कर एकत्रित कर रहा था। पीछे से एक लड़का जो हम लोगों का सहपाठी ही था, उसे सब लोग पोचू नाम से सम्बोधित करते थे, चुपके से जाया और मेरे सब कडैल उठा कर भाग खड़ा हुआ। बीनू ने उसे देख लिया था। बीनू तुरन्त पेड़ पर से कूद पड़ा और पोचू का खदेड़ लिया। पोचू स्कूल के हाँकी फील्ड के बीच से भाग रहा था। पीछे से बीनू उसका पीछा कर रहा था। पोचू दौड़ते दौड़ते हाँफ गया था। उसे अवगत था कि यदि बीनू उसे पकड़ लेगा तो उसकी अच्छी तरह खबर लेगा, अतः वह और तेज भागता हुआ हाँकी फील्ड के सामने वाले लकड़ी के बने घेरे की ओर

जहाँ गोल करने के लिये गेद फेंकी जाती है, निकल गया। वीनू उससे दस ही गज पीछे रह गया था। पोचू ने चाहा कि लकड़ी की एक फीट ऊँची दीवार को वह लाँघ जायेगा पर अचानक उसका जूता उछलने पर भी उससे फँस गया और वह ऐसा गिरा कि उसका मुँह लहूलहान हो गया जिस पर वीनू जो यह न समझ सका कि पोचू को चोट लग चुकी उस पर झपट पड़ा और उसकी पीठ पर दो चार घूँसे जमाते हुये उसकी मुट्ठी से कड़ैल छीन लिये, पर जैसे ही वीनू उसके पास खड़ा हुआ, उसने देखा उसका मुख लहूलहान हो गया है। वीनू बोला 'देख चोरी करने का फल तुझे भगवान ने तुरत दे दिया। पोचू चुप था। उसकी चोट गहरी थी, पर वीनू कहता जा रहा था 'उठना क्यों नहीं, मक्कर कर रहा है। ऐसी भी क्या चोट? चोरी की थी तो फल भोग।'।

पास ही दूर से एक मास्टर साहब जो हम लोगो को कवायद सिखाते थे, यह सब देख रहे थे। वह भागते हुये आये और तुरत पोचू को उठाते हुये कहा।

'क्या बात है पोचू चोट कैसे लगी?'

पोचू अवाक् था। वीनू कुछ बोलना न चाहता था। क्योंकि वह जानता था कि कड़ैल के नाम से बेहद मार पड़ेगी।

मास्टर साहब पोचू को तुरन्त उठा ले गये। लड़को की भीड़ लग गई थी। हेड मास्टर साहब के कमरे में पोचू लम्बी मेज पर लिटाया गया। उसकी मरहम पट्टी हो रही थी। मास्टर साहब लड़को को डाँट कर हटा रहे थे कि वहाँ वह बेकार की भीड़ न लगाये।

दूसरे दिन हेडमास्टर साहब के सामने हम लोग उपस्थित किये गये। मैंने हेडमास्टर साहब से साफ-साफ कह दिया था कि वीनू कड़ैल तोड़ रहा था तथा मैं नीचे बिन रहा था। वीनू ने ही पोचू से कड़ैल छीनने चाहे थे।

हेडमास्टर साहब ने गभीरता से अपनी गर्दन दो बार हिलाते हुए कहा—

‘आखिर तुम लोग इन कडैल के फलों का क्या करते हो ?’

मैंने धीमे से उत्तर दिया—

‘जी इसे खेलते हैं हम लोग ।’

हेडमास्टर साहब उस छिलके उतरे हुये मटमैले फल को उलटते-पलटते हुए बोले—

‘अजी बच्चो यह तो विष होता है, इसका दूध यदि आँख में लग जाय तो आँख फूट जाती है, मुँह में चला जाय तो हानि कर सकता है ।’

ड्रिल मास्टर साहब विस्तार से बतला रहे थे कि यह खेल कैसे खेला जाता है, वह कह रहे थे ।

‘साहब यह बच्चे जमीन में तीन चार इंच गहरा गड्ढा करते हैं । फिर एक लडका बहुत से कडैल उस गड्ढे में फेकता है जिसमें खेल में भाग लेने वालों के चार-चार छ छ कडैल होते हैं । इसके पश्चात् वह एक बड़े कडैल से एक विशेष कडैल को मारता है जिसको मारने के लिए दूसरा लडका बतला देता है यदि वह मारने में सफल होता है तो वह जीत जाता है, तथा गड्ढे के अंदर के कडैल तो उसकी जीत के होते ही हैं ।’

हेड मास्टर साहब मत्थे पर कई बल लाते हुए बोले—

‘इससे मैं समझता हूँ लडका क्या सीख सकता है, केवल निशाना लगाना भले सीख ले, पर इसके द्वारा सबसे बड़ा अवगुण जो बच्चा सीख जाता है वह है जुआँ खेलने की आदत ।’

यह कहते हुए उनके हाथ का बेत जमीन पर दबाने से मुड़ गया था ।

उनका बेत उठ गया था और उन्होंने वीनू से हाथ फैलाने को कहा । वीनू की दोनो गदेली पर छ छ बेत एक के बाद एक लगातार

पड़ने लगे । मैं देखकर काँप रहा था । इसके पश्चात् मेरे भी दो दो बेत गदेलियों पर पड़ गये । उनकी धारियाँ एक सप्ताह तक बनी रही । उसके पश्चात् मैं कभी भी कडैल न खेला तथा न ही कडैल के पेड़ के फल तोड़े । जबसे मुझे दूर से उनके फूल ही देखने में आनन्द आता है ।

मेरे साथ एक कजड का लडका पढ़ता था । एक दिन वह मुझे कई लडकों के साथ अमरूद की बाग में ले गया । एक लडके का नाम था तिनकौड़ी , कजड के लडके का नाम था बाबू । अमरूद की बाग वाले के लडके से बाबू की बड़ी मित्रता थी । बाबू ने अपनी मैली मखमली टोपी टेढ़ी करते हुए कहा—

‘भोला तुम्हारी बाग में इतने अमरूद पकते हैं, किस काम के जो तूने अपने मित्रों को भी न खिलाया ।’

भोला ने एक पेड़ की डाल को पकड़ते हुए कहा—

‘देखो यदि मेरा बाप देख लेगा तो मुझे बड़ी फटकार पड़ेगी ।’

‘अरे भोला तुम लोगों के पास दिल नहीं होता । तुम लोग कजूस मक्खीचूस होते हो । मेरे घर आओ, देखो मैं तुम्हारी कैसी खातिर करता हूँ ।’

बाबू ने आँखें मटकते हुए तथा सिर हिला हिलाकर कहा—

‘अरे बड़ा खिलाने वाला आया । तेरे घर खायेगा कौन ? कजड के घर किसी ने आज तक खाया है । जो खाय उसे समाज से भी वहिष्कृत होना पड़े ।’

‘भोला ने बड़े रोब से अपनी बात दोहरा दी ।’

‘तिनकौड़ी ने भी एक पेड़ की शाखा नोचते हुए कहा—

‘और क्या बाबू बेकार की बकवास क्या करते हो, तुम्हारे घर खायेगा कौन ?’

बाबू उन लोगों की बात सुनकर झेप सा गया । उसने टेढ़ा मुँह करते हुए मेरी ओर देखकर कहा—

‘क्यों चढ़ तुम मेरे साथ चलोगे, मेरे घर पर ।’

‘मेरे मुख से अनायास ही निकल गया ।’

‘हा हाँ अवश्य चलूँगा इसमें हर्ज ही क्या है ।’

‘तिनकौड़ी तुरत बोल पडा—

‘अरे चढ़ तुम इसके घर जओगे ।’

एक लडका दुर्गा जिसके पीठ पर बड़ा सा कूबड था । वह थोड़ा झुककर चलता था अपनी पीठ सीधी करते हुए थोड़ा उचककर बोला—  
‘अच्छा चढ़, तुम कजड के घर खा लोगे ?’

‘हाँ हाँ यदि सफाई से मुझे कोई भी खिलाये मैं खा लूँगा ।’

‘भोला के हाथ में चिड़ियों के हकाने का एक छोटा सा डडा था ।,

‘वह पृथ्वी पर पटकता हुआ बोला—

‘अरे यह भी कजड है ।’

बाबू का मुख लाल हो आया था । उसके नथुने फूल गये थे । उसने पहले तो अपने होठ मीचे । मैंने उसकी ओर देखा । उसकी भौंहे टेढ़ी हो गई थी ।

‘उसने तुरत भोला के एक चाटा रसीद कर दिया ।’

भोला ने अपना डडा उठाकर बाबू की ओर तान दिया । यद्यपि भोला बाबू का मित्र था पर भोला ने शायद उतने बच्चों के बीच में अपमानित होने के कारण अपना डडा केवल ताना ही था कि बाबू ने जो क्रोध से तमतमा उठा था उसका डडा पकड़कर उसी की पीठ पर जमा दिया । भोला जोर जोर चीखने लगा ।

‘दौड़ो दौड़ो, अरे बप्पा बचाओ । अमरूद तोड़त है ।’

उसके आवाज देते ही सब बच्चे भाग खड़े हुए । बाबू वही खडा मैं भी खडा रहा ।

‘अमरूद वाला आ गया था । वह डौकते हुए बोला—’

‘क्या है लडको ? अमरूद चोरी करते हो ऊपर से मेरे बेटे को मारा है ।’

‘चल झूठा कही का इसीलिये ऐसे को मार मिलनी चाहिए बाबू ने कड़क कर उत्तर दिया ।’

‘चल हट बड़ा बना है लौंडा । अभी पकड़कर ले चलूँगा बड़े मास्टर के पास तेरी अकल दुरुस्त हो जायेगी । पड़ने क्या लगा है कजड़ तो कजड़ ही रहेगा चोर कही का ।’

‘बाग वाला अपनी जीभ कतरनी की भाँति चलाये जा रहा था ।’

मुझसे उसकी बातें सुनकर न रहा गया । क्यों बाग वाले यह सब क्या बकते हो । इन लागों ने कोई अमरुद नहीं तोड़ा । तुम्हारा लडका बार बार कजड़ कजड़ कहे जा रहा था । क्या कजड़ होना कोई पाप है, पहले तुम्हारे लडके ने ही डडा उठाया था ।

बाग वाला बीच ही में टोकता हुआ बोल पड़ा—‘पर तुमतो तुम कजड़ नहीं मालूम पड़ते ।’

‘मैंने तुरत बात काटते हुए कहा—’

‘मैं भी कजड़ हूँ ।’

‘ओ हो जबही तुम भी उसकी ओरी ले रहे थे ।’

‘मेरे मुख से निकल गया ।’

‘हा हाँ, और क्या ।’

‘अच्छा अच्छा जाओ तुम लोग अपना रास्ता नापो ।’

‘मैं मुह नीचा किये हुए वहाँ से चला आया, उस दिन मे बाबू मेरा उस घटना के कारण बड़ा घनिष्ट मित्र हो गया ।

‘एक दिन बाबू ने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—

‘चदू आज मेरे घर चलोगे । आज मेरे घर पचायत का खाना है ।’

‘मैंने कहा चलो मेरे घर चले चलो घर पर कह कर चलूँगा ।’

बाबू के घर सड़क के किनारे बड़ी भीड़ जमा थी । सड़क पर ही नीम के पेड़ थे । सरदी के दिन थे । लोग उन्हीं की छाया में अलाव जलाये हुए कहकहे लगा रहे थे । पास ही बोतल छलक रही थी ।

मदिरा की गध तथा पाम बहते हुए नाले की गध दोनों मिलकर एक अनोखी सडॉध उत्पन्न कर रही थी। सडक के दूसरी ओर बाबू की कोठरी थी जिसमें उसके तीन भाई, उसके माँ, बाप तथा उसकी दादी रहनी थी।

सध्या का झुटपुटा हो गया था। पक्षीगण वृक्षों पर बसेरा लेने के लिये लौट रहे थे। इस नीम पर बहुधा बगुलो के झुण्ड के झुण्ड आकर बैठ जाते। पेड़ बगुलो से सफेद हो गया था। प्रत्येक डाल बगुलो से भरी होने के कारण झुक झुक पड़ती थी। बगुलो की के के भी उस भीड़ में बोलने वालों की ध्वनि में विलीन हो जाती थी। नाले से दूर हटकर एक छोटा-सा कवरिस्तान था। कवरिस्तान में भी एक दो घने पाकड़ तथा नीम के पेड़ थे। उन पर भी आज विशेषरूप से न जाने कहाँ से इतने बगुले आ गये थे, कि झुण्ड के झुण्ड आकर बैठते जाते थे।

भीड़ में से एक व्यक्ति ने अपने तीव्र शब्द में कहा।

‘धीसू यदि तुम खैरियत चाहते हो तो लछमिया के साथ व्याह कर दो।’ यह कहते हुए उसने कुल्हड़ मुँह से लगा कर फिर धूल धूसरित जमीन पर रख दिया।

बगुलो की हर हर के बीच में दूसरे व्यक्ति ने उत्तर देते हुए कहा—  
उसने अपनी आवाज और भी बुलन्द करते हुए अपनी बात दुहराई—  
‘धीसू यह कोई हँसी ठट्ठा नहीं है। तुम्हारे भतीजे ने झूठ बोल कर, अपनी हैसियत छिपाकर मेरी लडकी से व्याह करना चाहा है।’  
पास ही बाबू की माँ, दादी, लडकी की माँ एवं अन्य कजडों की स्त्रियाँ झुण्ड लगाये बैठी थी। वह लोग उन पुरुषों की वार्तालाप चुपचाप सुन रही थी।

धीसू जो पैरों के बल बैठा था अपनी घुटनों तक धोती सम्हालते हुए बोला।

‘झुम्मन तब तुमने नहीं जाना था कि हैसियत क्या है। बाबू की

भेट के ढाई सौ रुपये विरादरी के खानेमे खर्च करवा दिये । आज कह रहे हो कि हैसियत नहीं है' कुल्हड की ओर सकेत करते हुए, इसकी कसम है अगर लछमियाँ का ब्याह चरना के साथ न किया गया ।

झुम्न ने जमीन पर मुट्ठी दे मारते हुए कहा । पृथ्वी पर मुट्ठी पटकते हुए उसने अपनी बात दृढता से कही—

‘मुझे यहाँ आकर सब पता चला गया है कि किस प्रकार चरना अपनी रोजी चलाता है । इसने हम लोगो से कहा था कि मैं एक बाबू के घर नौकरी करता हूँ । यह झूठा है । यह गाय, बैल और भैंसो को विष खिलाता है’ ।

बीज ही मे बाबू की मा तेज होकर बोल उठी ।

‘अरे किस ससुरे ने यह बात कही है । अरे यह अपनी मौत से नरते है । मजबूरी आती है, सो हम लोग जाते भी नहीं । वह कसाई के लौडो से हम लोग यह काम करवाते है’ ।

चरना बाबू का बडा भाई था, वह पच्चीस वर्ष का होगा ।

एक व्यक्ति ने झुम्न मे मुँह सटाकर उसके कान मे कहा ।

‘अरे झुम्न नसे मे क्या कह रहे हो । अभी पुलिस पकड लेगी हम सबको ।

झुम्न ने पीछे से अपनी बोतल उठाते हुए कुल्हड भर लिया और एक ही घूँट मे चढा गया । एक झटके से गर्दन जमीन तक ले जाते हुए बोला ।

‘अरे पुलिस की दुम । पुलिस तुमको पकडे । मेरा\*\*\*क्या करेगी मैं चोर थोडे हूँ । मैं तो मसक्कत की कमाई खाता हूँ । मेरा सूप का रोजगार अलीगढ मे सब जानते है कैसा चलता है ।’ घीसू बीच ही बात अडाते हुए बोला ।

‘अरे छोडो पुलिस का नाम । पुलिस तो पैसे की भूखी होती है । दस-बीस रुपये दे दो पुलिस वाला दुम हिलाने लगता है’ ।

ऊपर पेड़ों की ओर दृष्टि डालता हुआ घीसू बोला ।

‘आज यह साले बगुलो की भीड़ कहाँ से लग गई।’ यह कहकर उसने झुम्मन की ओर देखते हुए कहा ।

‘झुम्मन खाल का काम साधारण नहीं होता है । एक एक खाल चालीस-पचास रुपये की बिकती है, तुम्हारे ऐसे लोगो को हम खरीद ले । हम लोगो के मजूर खाल नोचने का काम करते हैं, कोई हम अपने हाथ से करते है ?’

बाबू की माँ फिर बोल पड़ी ।

‘अरे इसमें छुपाने की क्या बात । हम लोग तो बड़े बड़े घरों में जाते हैं । गाँधी जी तो हम लोगो को साथ बिठाने को तैयार हैं सो यह कहाँ के आये लोग’ ।

‘चुप रह बाबू की माँ, तू काहे को बोलती है जो मैं बोलता हूँ’ बाबू की माँ अपने सिर पर की धोती जिसमें छेद होने के कारण उसके बाल चमक जाते थे, सम्हालते हुए चुप हो गई । घीसू ने अपनी आस्तीन सम्हालते हुए कहा ।

‘हम कुछ भी करते हो’ । हम पैसा कमाते हैं । खाते हैं, पीते हैं जमकर । कोई मेरा क्या कर सकता है । पुलिस वाले साले हमारे लोगो के बदौलत मजा काटते हैं । हमी तो उन्हें पाँच पाच सौ रुपये खिलाने वाले हैं ।

बीच ही में पीछे से एक काले आदमी ने घीसू को झकझोरते हुए कहा ।

‘अरे क्या बकते हो घीसू । पी तनी जादा गया है । होस में बात कर । कहाँ की बात कहाँ पहुँचा दी ।’

झुम्मन ने तुरन्त बोलते हुए कहा ।

‘हाँ घुरई देखो तो कहाँ की बकवास लगाई है घीसू ने । अभी कोई सुने तो हम भी फँस जाये । बेकार की बातों से क्या फायदा ।’

घुरई ने आँखें फाड़ते हुए झुम्मन की ओर खिसकते हुए कहा—

‘देखो आज की पचायत इसीलिये बुलाई गई है। बाबू की माँ आज सबका खाना करेगी। बढिया खाना तैयार हो रहा है। तुम्हारी लछमियाँ बडी प्रसन्न रहेगी। चरना काम काजी लडका है। अब चुप रहो झम्मन। बहुत कुछ हो गया। तुमने बहुत कुछ कह लिया।’

भीड ने एक स्वर मे दुहराना प्रारम्भ कर दिया—

‘हाँ हाँ झुम्मन चुप रहो।’

झुम्मन ने दोनों हाथ ऊपर करते हुये कुछ सोचकर कहा। हाथो की उँगलियों की ओर देखता हुआ बोला—

‘तो ढाई सौ रुपया हमे दिलाओ तब ब्याह का वादा पक्का होगा।’

धीसू झुम्मन के कधे को झकझोरते हुये बोला—

‘अरे क्या तुम भी झुम्मन पैसे की बात करते हो।’

बाबू की माँ की ओर सकेत करते हुये धीसू कडककर बोला—

‘अरे बाबू की माँ हमी भर दे, कौन बडी रकम है ढाई सौ रुपया। यह तो हाथो का मैल है।’

बाबू की माँ ने धीसू के कहते ही धीमे से कह दिया—

‘अरे तो चरना क्या देगा नही।’

‘अरे तू बोल चरना तुझी को देना है, कही और ले जाता है। माँ को हमी भरनी चाहिये।’

धीसू ने मुँह की मूँछो पर ताव देना प्रारम्भ कर दिया। उसने भरे चेहरे पर रोब दर्शाते हुये कहा—वह रूपये के नाम पर बार-बार मूँछो पर अँगुलियाँ दौडा रहा था। उसके भतीजो का मामला जो था।

‘बाबू का बाप स्वर्गवासी हो गया था। विशेष अवसरो पर धीसू ही आकर हर मामले को तय कर देता था।’

झुम्मन दोनों हाथ ऊपर को उठाकर रगड़ते हुये बोला—

‘रूपया तो अभी दे दो, तब हम उसी हिसाब से शादी की तयारी करे ।’

यह कहते हुये उसने अपने होठो मे हवा भर ली और एक दो बार ऐसी क्रिया करते हुये वह नीचे देखने लगा ।

बाबू की माँ धीमे से अपनी कोठरी की ओर गई और पाँच मिनट मे वापस आती हुई एक पोटली मे बँधे हुये नोट घीसू को दे दिये । घीसू ने रोब से झुम्मन की ओर देखते हुये कहा—

‘अरे झुम्मन भइया, अब तो तुम हमारे समधी ठहरे ।’ यह कहते हुये झुम्मन की ओर नोट बढ़ा दिये ।

‘लो अच्छी तरह से गिन लो ।’

सारी भीड ने प्रसन्नता दर्शाते हुये कहा—

‘लो भाई अब बात शांत करो । अच्छे-अच्छे ब्याह रच दो चरना का । चलो झगडा निपटा । रोजीना हाय-हाय मचती थी ।’ एक पोपले गाल वाले मनुष्य ने धीमे से कहा—

‘अरे रूपयो का मामला था सो पहले ही कह देते, काहे को इतना फसाद होता । असानी से मामला तय हो जाता ।’

हल्की-हल्की ठड पड रही थी पर यह सब, कोई एक बनियाइन पहने, कोई सिल्क की मैली कमीज चढाये हुये अपनी गोष्ठी का आनंद ले रहे थे ।

बाबू मेरे लिये एक मोडा कही से ले आया था । मुझे पास की एक तम्बोली की दुकान के पास ही बैठा दिया था । वह बोला—

‘आज हमारे भाई का ब्याह है, हम तुम्हारी क्या खातिर करे । हम लोगो का खाना तुम्हारे योग्य नहीं होगा । इसलिये लो कम से कम मिठाई ही खा लो ।’

यह कहते हुए वह पास के हलवाई के यहाँ से एक दोने में कलाकद ले आया ।

मैंने दोना हाथ मे ले लिया । कलाकद खाता हुआ बोला —

‘तुम लोग किसी काम के करने में झगड़ते बहुत हो ।’

मैकू मामा को घर पर पता चल गया था कि मै कही गया हूँ । वह कुछ देर होने पर मेरा पता लेने के लिये चल पड़े थे । मुझे वहाँ बैठा देखकर बोल पड़े ।

‘चलो चढ़ू तुम कहाँ आ गए ।’

मैकू मामा को देखते ही मैं खड़ा हो गया था । बाबू मेरे मामा को पहचानता था । वह उन्हें देखता ही एक दोना मिठाई और ले आया और उनकी ओर बढ़ाते हुये बोला—

‘आज मेरे भाई का ब्याह तय हो गया है । इसीलिए हम चढ़ू को घर से आज्ञा लेकर लिवा लाये थे । आप जानते हैं हम लोग पिछड़े हुए लोग हैं । हर काम हमारे यहाँ झगड़ा फ़माद करके निश्चिन्न होता है ।’

मामा ने मुस्कराते हुए कहा—

‘तो मिठाई की क्या बात है, चढ़ू तुम्हारे मित्र ने खा ली ।’

बाबू ने मिठाई वाले की ओर सकेत करते हुए कहा—

‘अभी ताजी मिठाई इसी सामने वाले हलवाई के यहाँ से लाया है, थोड़ी तो चख लीजिए ।’

मैकू मामा ने एक टुकड़ा उठाते हुए उत्तर दिया—

‘तुम्हें यह कहने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि मिठाई सामने वाले से ली है । तुम्हारे यहाँ जो वस्तु सफ़ाई से बनी होगी उसे स्वीकार करने में पड़े लिखे लोग आनाकानी नहीं करते । जो मीनमेख निकालते हैं वह शिक्षा के उद्देश्य को नहीं समझते ।’

यह कहते हुए मैकू मामा ने मिठाई खाली । बाबू बहुत प्रसन्न था । वह दौड़ा हुआ अपनी माँ को दूर से दिखला रहा था कि उसके मित्र के घर के लोग भी आये हैं । बाबू की माँ ने वही से सिर उठाकर देखा । उसने दूसरे रिश्तेदारों की ओर भीड़ पर रोब दर्शाते हुए कहा ।

‘वह देखो बाबू लोग भी आये हैं । हमारा बेटा बाबू अपने दोस्तों

को बुलाकर लाया है। हमारा बड़े बड़े घरानों में मेल है। बीच ही में उस काले मनुष्य ने हाथ फैलाते हुए दाँत निकालकर आँखें मटकाते हुए कहा—

‘अरे बाबू का अम्मा बुला चरना को उससे बोल अभी मेवे वाली रगीन दारू लाये जाकर। कम से कम आठ बोतल आयेगी। बाबू की मा बहुत प्रसन्न थी। उसके बेटे का ब्याह कई साल से नहीं हो रहा था। कोई उसे चोर समझता, कोई उसे जुआरी समझता। अब वह जानवरो को विप खिलाकर निधडक पैसे कमा रहा था। पुलिस वाले उसके मित्र थे अतः कभी भी उसके पकड़े जाने का प्रश्न न उठता। बाबू की माँ ने दाँत निकालकर हँसते हुये उत्तर दिया।

‘अरे आठ बोतल क्या बीस बोतल दारू पियो’।

मिनटों में दारू आ गई। सड़क पर चलने वालों की भीड़ कम हो रही थी। कुल्हड़ों के दौरे चलने लगे। बाबू की माँ ने नाली के पास ही जो उसकी कोठरी से लगकर बहती थी, जिसे मेहतर कभी साफ करने की चिंता न करते थे, ईंटे रखकर चूल्हा जल गया। आध घंटे में ही बकरा वही तेज छुरे से हलाल हुआ। मिनटों में पतीला चढ़ गया। पुरुष झूमने लगे। काले मुह वाला आदमी कमर पर हाथ रख कर भीड़ में मटक मटक कर मुर्गों की चाल चलता हुआ स्वागत करने लगा। बच्चे उसकी गर्दन के हावभाव पर कहकहा लगा उठते। स्त्री-पुरुषों दोनों ने खूब चढ़ाई।

धीसू ने पचायत में एक प्रस्ताव रखा।

‘देखो पचो सुरजी को विधवा हुए छ. महीने हो गये, उसके तीनो बेटे काम पर लग गये हैं। तीनों के ब्याह भी हो गये हैं। सुरजी की दो छोटी बेटियाँ तथा एक छोटे बेटे का जो भी भार लूँ उससे सुरजी का ब्याह रच दिया जाय। आखिर सुरजी किसी मर्द की साया बगैर नहीं रह सकती। अभी सुरजी चालीस के ऊपर होगी, उसका पल्ला मत्था पकड़ने को तयार है’

नत्था डील डौल का सुडौल, तबे ऐसा काला शरीर, गेर जैसी मूँछें जो बनियाइन चढ़ाये घुटनो तक धोती पहने था घीसू के प्रस्ताव रखते ही बोला—

‘हमे तो कोई एतराज है नही, हम जिम्मा लेते है । सब बच्चों की देखरेख की । मेरे चार बच्चे है, जिनमे दो किनारे लग गये है दो की देखरेख के लिये किसी की जरूरत है ही ।’

सुरजी स्त्रियों की भीड़ में बैठी कनखियों से नत्था की ओर देख लेती । स्त्रियाँ उसे कोहनी से धकिया रही थी । वह उठकर मसाला पीसने में लग गई । पास ही किसी के यहाँ से सिलबट्टा आ गया था, और बाबू ही पास की दुकान से हल्दी, धनियाँ, मिर्च, तेजपात, दालचीनी इत्यादि ले आया था, जिसका पीसना एक साधारण स्त्री का कार्य न था ।

बाबू की माँ हँसते हुए बोल पड़ी । हँसने से उसके मसूढ़ों सहित पूरे दाँत चमक उठे ।

‘हाँ हाँ सुरजी तैयार है ।’

सुरजी और भी सिर झुकाकर मसाला पीसने में तल्लीन हो गई । उसके चौड़े मस्तक के नीचे आँखें हल्की झुकती हुई फैल गई थी ।

भीड़ के तीन चार व्यक्ति बोल पड़े—

‘हाँ हाँ ठीक है, जब मियाँ बीबी राजी तो ’ ।’

घीसू जो सबका सरदार था बोल पड़ा—

‘पर देख नत्था यह बड़ा गोश्त खिलाकर ब्याह नहीं रचा जाएगा । जो चाहे भैसे का गोश्त खिलाकर ब्याह रच ले । देख जैसे बाबू की माँ कलेजा खोलकर खरिच कर रही है ऐसई पचन की खातिर होय ।’

घुरई खड़ा होकर मुँह फैलाता हुआ बोल पड़ा—

‘हाँ नत्था ’ ई समझ लेंओ । बाबू तो जवान है । तुम्हरी जवानी फेर आय रही है । गई जवानी बुलाय में दिल खोल के खरिच होना चाहिए ।’

सब ने एक साथ ताली पीट दी । बच्चे ठहाका मार कर हँस पड़े । वह काला आदमी फिर से चरना की टोपी अपने सिर पर टोपी के दोनों सिरो को अपने दोनों कान से छुला कर रखता हुआ आधा झुक कर भीड़ में मटक-मटक कर चलने लगा । बीच बीच में झटके से शब्द दुहरा देता ।

‘हाय जवानी फिर से आई, हाय जवानी फिर से,’ ‘फिर से,’ फिर से, फिर से, फिर से’ हाय जवानी “ ”

भीड़ का कहकहे में लोग लोट लोट गये । स्त्रियाँ जो पूडियाँ बेन रही थी, एक दूसरे पर बेलन दे दे मारकर ठहाके लगाना प्रारम्भ कर दिया ।

इतने में कब्रिस्तान में एक मुर्दा आता दिखा । कब्रिस्तान के एक ओर यह लोग नाच रग में मस्त थे । दूसरी ओर शव का पलग नीचे रख दिया गया । उनमें से एक सज्जन इन लोगों को शात हो जाने के लिये कहने आया उसने आगे बढ़ते हुये चीखते हुये कहा—

‘अरे तुम लोग चुप हो जाओ । लाश दफनाई जा रही है ।’

उस काले आदमी ने हाथ फैलाते हुये कहा—

‘अरे साहब मरना जीना तो लगा ही रहता है । यही भगवान की माया है, कही मौत कही खुशी की छाया है ।’

वह सज्जन भी कुछ न बोले, आगे बढ़ते हुए चले गये ।

नीम के पास घोबी के बँधे गधे ऊँघ रहे थे । भीड़ के कहकहे से वह एक वारंगी आँखें खोलते हुए गरदन ऊपर उठाकर फिर ऊँघने लगते । पास हलवाई की दुकान पर कुत्ते दोनों पर झपटते हुए लड़ रहे थे । कुछ कुत्ते बाबू की माँ की कोठरी के पास ही नाली के निकट जहाँ गोश्त चढ़ा हुआ था, उसकी सुगंध से दूर खड़े सूँघते हुए बीच बीच में तेज हवा नाक से छोड़ देते । रात भीग रही थी । ऊपर आकाश में तारे टिमटिमा आये थे । चन्द्रमा अपने प्रकाश से नाली के कीचड़ को देखकर मुस्करा रहा था, उधर यह निम्न जाति अपने में

अबोध धनी व्यक्तियों की दृष्टि में घृणित जीवन से परिपूर्ण ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं में वैभव में ही मस्त रहने वाले व्यक्तियों से कहीं अधिक आनंद अपने इन सरल समारोहों द्वारा ले रहे थे। रात की नीरवता को भग करने के लिए दूर से एक साथ बहुत से कुत्तों के शब्द सुनाई देने लगे। लाश दफनाने वाले चले गये थे। नीम के पेड़ का उल्लू पचायत के भोज के समय बीच बीच में अपने रात्रि के शासन की याद दिला देता था कि रात्रि के समय उस नीरव वातावरण में केवल उसी का अधिकार है, पर यह पशु-जगत के अधिक निकट रहने वाली जाति उसके शासन को स्वीकार नहीं करना चाहती थी। जभी वह काला आदमी उस उल्लू से अपना निकट संबंध स्थापित करते हुए उसकी नकल करते हुए बीच बीच में स्वयं भी चीख उठता और अतत उस उल्लू को ही हार माननी पड़ती।

बिटन्ना मौसी का ब्याह तय हो गया था । बरात आ गई थी । घर मेहमानों से भरा हुआ था । मैकू मामा की इच्छा के विरुद्ध बिटन्ना का ब्याह मिट्ठन मामा ने एक साधारण घराने में तय कर दिया था । लडका कहीं किसी गाँव का पटवारी था । अनाथालय वालों का साधारण बैड बज रहा था । लडके वाले भी बड़ी साधारण बरात लाये थे । रिश्तेदारों की भीड़ के बीच में मैकू मामा कह रहे थे ।

‘मिट्ठन भइया को मैंने बहुत समझाया, पर पता नहीं क्यों बिटन्ना का विवाह इतनी शीघ्र कर दिया, ।

मिट्ठन मामा के एक साले साहब समझा-समझाकर कह रहे थे, ।

‘भाई समझते नहीं हो । सयानी लडकी को घर पर बैठाना ठीक नहीं होता, जब तक माँ-बाप होते हैं और ही बात होती है । माँ-बाप के पीछे लडकी का उद्धार शीघ्र ही होना चाहिये’ ।

मैकू मामा कमर पर हाथ रखकर तपाक से बोल पड़े ।

‘ऐसी क्या सयानी हुई बिटन्ना, मैं प्रथम श्रेणी में पास हुआ हूँ और ईश्वर की कृपा से मेरी पोजीशन भी सब में प्रथम है । मुझे भइया यदि आगे न भी पढाये मैं अच्छी नौकरी पा सकता हूँ और बिटन्ना को मैं पढाने को सोच रहा था । यह भी क्या, काका कभी भी इतनी साधारण शादी नहीं करते । यह तो भइया खानापूरी कर रहे हैं ।’ मिट्ठन मामा के साले जिनका नाम था सन्तू अपने पैर को बिछे हुए तखत के ऊपर टेकते हुये बोले—

‘अरे मैकू तुम अभी लडके हो । समझते नहीं । तुम्हारे मिट्ठन

भइया के आगे पूरी गृहस्थी है। उनके स्वयं चार बच्चे हैं। बड़े होंगे। उनकी पढाई का भी प्रश्न सामने है। अभी तुम्हारी भी गृहस्थी बस-वानी है। राखन, मक्खन सबको किनारे लगाना है। उन्होंने जो कुछ भी किया, ठीक ही किया है।’

मैकू मामा ने आगे कुछ बोलना उचित न समझा और उनके द्वारा अपने छोटे भतीजो का अभी से भार सुनकर वह ताड़ गये कि इस बनते हुए घर का तितर-बितर होने वाला है, अतः वह बात को दूसरी ओर मोड़ते हुये बोले—

‘अच्छा चलो अभी दरवाजे के चार के तुरत बाद ही खाने का प्रबन्ध ऊपर कोठे पर हो जाना चाहिये। अपनी छत काफी लम्बी है। वहाँ पट्टियाँ बिछवा दो चलकर। पत्तल दोने आप लगवाये, मैं हलवाई को देख रहा हूँ।’

मैकू मामा बिटन्ना मौसी के पास गये। वह एक कोठरी में पड़ी ज्वर में भुन रही थी। वह मामी से कह रहे थे।

‘देखो भाभी इसकी बिदा नहीं होनी चाहिये। बिदा के लिये यह लोग फिर आ जायेंगे।’

मामी ने मैकू मामा की बात काटते हुये उत्तर दिया।

‘बाह ऐसी क्या बात है, बिदा तो ब्याह के पश्चात् ही होती है। यह भी आप क्या अपशकुन करते हैं, अरे वहाँ जाकर इजेक्शन लगवाकर ठीक हो जायेगी।’

बिटन्ना मौसी का बक्स सजाते हुये उसके कपड़े सम्हाल-सम्हाल कर रखती जाती थी। एक ओर कुछ धोतियाँ रखते हुए बोली ‘कल तो यही डाक्टर साहब ने इजेक्शन लगाये हैं। आज फिर इजेक्शन लगवा दूँगी। डाक्टर साहब तो कह रहे थे कि कोई बात नहीं है। सफर कर सकती है।’

मैकू मामा ने जैसे यह बात कही।

‘डाक्टर को तो पैसा चाहिये । उससे पैसा देकर जो चाहे कहल-वाया जा सकता है’ ।

राखन मामा जो मिठाई सजवा रहे थे, वही मिट्टी के सकोरे खोजते हुए आये थे तुरत बोल पड़े ।

‘नहीं भाभी बिट्ना की बिदा नहीं होगी । एक तो आप लोगो ने हमारी मरजी के विरुद्ध ब्याह रच दिया । उल्टे उसके साथ यह ज्यादाती हम नहीं सह सकते । वह मेरी बहन है । मैं जब तक उसका ज्वर नहीं उतर जाता इस घर से नहीं जाने दूंगा’ ।

मामी राखन मामा की बात को सुनकर कुछ रुष्ट हो गई और पारा तेज करते हुए बोली—

‘तो ब्याह खोज न लाते । बाते तो सबको बनाना खूब आती है । इन बेचारो के ब्याह खोजते-खोजते पैरो में छाले पड़ गये । क्या खराब है लडका । मास्टर है स्कूल का ।’ अपनी एक बहन की ओर संकेत करते हुए ।

‘देखती हो सरला दीदी । नौकर चाकर लडका किसे मिलता है । नाक नक्शा कैसा सुंदर । घराना सौ में एक । चार भाई चार बहने । भरा पुरा परिवार किसे मिलता है । यह तो बड़ी भाग्यशाली थी बिट्ना, जो ऐसे अच्छे घर जा रही है’ राखन मामा ने प्रत्युत्तर किया ।

‘भाभी यह क्यों नहीं कहती कि छुटकारा मिला किसी प्रकार से । मैकू भइया ठीक तो कहते हैं अभी इतनी जल्दी क्या थी’ भाभी ने झटके से बक्स बंद कर दिया । कमरे के बाहर जल्दी से निकलती हुई बोली ।’

‘अभी क्या गया है । तुम लोग मुझे जीवन भर ताना दोगे । बरात लौटाल दो । कोई हर्ज नहीं है । बुलाओ अपने भइया को । साफ मना कर दे । जब कोई भाई राजी नहीं, तो उन्हें ही काहे को जल्दी मची थी ।’

मामी की बहन धीमे-धीमे उनकी ओर मुख करते हुए बोली—

‘चुप रहो शान्ति धारण करो। यह बच्चे हैं। यह लोग तो ऐसे बकते ही रहते हैं।’

कुछ रुक कर राखन मामा की पीठ पर हाथ रखते बोली—  
‘भइया नीचे लोग सुनेगे तो क्या कहेंगे। बरात दरवाजे पर आ रही है। कहीं वहाँ खबर लग गई तो खलबली मच जायेगी। दिवाल के भी कान होते हैं।’

राखन मामा जैसे ही जीने से उतर कर बाहर दरवाजे के चार के लिये किये गये प्रबध पर दृष्टि दौडाने गये, उनमें सुनाते हुए बरातियों की ओर का एक मनुष्य जोर जोर कह रहा था—‘लडकी को टी. बी. है। हम लोगो को धोका देकर विवाह तय किया गया है। डाक्टर से इजेक्शन दिलवाकर ज्वर उतरवाया जा रहा है। यह विवाह कतई नहीं होगा।’

मैकू मामा भी राखन मामा के पीछे ही खडे थे, जो वहाँ पर एक गैस लैम्प को ठीक करने के लिये उसकी पम्पिङ्ग कर रहे थे। मैकू मामा ने बात का प्रत्युत्तर न किया, वह सुनते हुए भी शान्त थे।

घर के अंदर घुस कर नौकर चाकर कानाफूसी करने लगे। मामी तथा मिट्ठन मामा के कान तक बात पहुँच गई कि लडके वाले की ओर से बरात वापस ले जाने का प्रस्ताव रखा जा रहा है।

मिट्ठन मामा कमर पर एक हाथ रखे हुए तथा दूसरे हाथ से दहलीज के खम्भे का सहाग लेकर टेढ़े खडे हुए कह रहे थे।

‘यह लडको ने विवाह क्या एक गुडियो का खेल समझ रखा है। जो चाहा घर में बक दिया। दिवालो के भी कान होते हैं। बात हवा की भाँति फैलती है। राखन तथा मैकू की बात बरात वाले तक पहुँच गई। ज्वर की बात ने टी. बी. का रूप ले लिया है। मुझसे मामला नहीं सुलझने का। जो कुछ भी होता है, यह लोग भुगने। बातें बनाना सबको आती है। क्यों नहीं किसी डिप्टी कलेक्टर से विवाह

तय कर देते। मुझे क्या खराब लगता है। आखिर बहन तो मेरी भी है। मुझे क्या खराब लगेगा कि मेरी बहन बड़े घर में जाय।’

माभी की बहन ने हाथ फैलाते हुए कहा जिससे उनके हाथ की एक दर्जन चूड़ियाँ खनक उठी थी।

‘अरे भला यह लडको ने बरात करना क्या हँसी ठट्ठा समझ रखा है। बरात लौट गई तो किननी बदनामी होगी। लोग लडकी को ही टी बी की मरीज कह कर घर बैठने वाली बना देंगे। कहीं कोई ब्याह भी न करेगा।’

इतने में जनातियों की ओर के एक नाई ने सूचना दी।

‘बरात बाजार के चौराहे तक आकर लौट गई। कितनी बढ़िया बरात थी। बेहद आतशबाजियाँ थी। रड्डी आगे-आगे नाच रही थी। लोगो के अगल-बगल से इतर की सुगंध उठ रही थी। पास के बदबूदार नाले की गन्ध तो उम स्थान को छोड़कर कोसो दूर भाग गई थी। फुलवारी की मजधज देखने योग्य थी। लोग सुना रहे थे, चढावा पूरे डेढ़ हजार का आया था। सभी गहने लडके वाले ने इकट्ठे किये थे।’

उनमें से एक बूढ़ी औरत अपने पोपले मुँह से नीचे झुकती हुई वहाँ तक अपनी पूड़ियों की कढ़ाई छोड़कर आई थी। वह अपनी कमर सीधी करती हुई सिर ऊपर को उठाकर कह रही थी—‘वाह रे लौडपन ! क्या हो गया है इन लडको को। कितनी बदनामी की बात है। जो घर जेवर और रुपये से भरा हो उससे बड़ा और घराना क्या हो सकता है। लडका नौकर है। घर भरा पुरा है। खाने की कमी नहीं और क्या चाहिये।’

राखन मामा अदर को आ गये थे। वह तेज़ आवाज में हाथ के कुल्हंडो को पटकते हुए बोले,—जिन्हें वह शायद ऊपर खाने की पत्तलो के साथ रखने के लिये ले जा रहे थे।’

अच्छा हुआ। लौट जाने दो बरातियो को, मैं जीवित हूँ। शादी मैं कहेगा, अपनी बहन की'।

राखन मामा के यह कहने पर स्त्रियाँ अपने सलूके की ओट में मुँह छुपाकर हँस रही थी। चौके के पास बैठी हुई महरी जो पिट्ठी पीस रही थी मुँह टेढ़ा कर मुस्कराते हुए बोली—'भइया पहिले अपना तो ठिकाना कर लेओ। बहिनियों की लगी लगाई सादी खडमडल कर दियो। ई अच्छा नाही भवा।'।

राखन मामा ने चीखते हुए उत्तर दिया।

'चुप रह। महरी की जात जो ठहरी। तूने समझा क्या है? भाभी का दिया जो खाती है। तू नहीं बोल रही है। यह भाभी की रोटियाँ बोल रही है।'।

राखन मामा की ऐसी बात सुनकर सब सुन रह गये थे। किमी के मुख से चूँ तक न निकली। न बुढ़िया ही कुछ बोली, न मिट्ठन मामा के साले तथा सालियों में ही कुछ बोलने का दम रह गया था।'।

मैकू मामा भी अदर दहलीज में आ गये थे। उन्होंने मिट्ठन मामा को शात खड़े देख कर कहा—

'भइया, आप परेशान न हो सब ठीक हो जायेगा। मैं जानता हूँ आपने तिलक इत्यादि के भिजवाने में काफी पैसा व्यय किया है। आप कतई चिंता न करे। गया हुआ पैसा वापस नहीं मिलता। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, बिट्ठा का जीवन आप मुझ पर छोड़ दे।'।

वातावरण शांत था। घर मेहमानों से भरा था। मेरे पिता जी जो इस कांड के केवल एक घंटे पूर्व ही आये थे, बरातियों के ठहरने के स्थान जनवासे का प्रबन्ध देखने गये थे। वह लम्बे-लम्बे डग रखते हुये घर में आ गये। वह दोनों भौहों को सिकोड़ते हुये बोले—भौहों के सिकोड़ने से उनके नाक के आसपास जहाँ दोनों भौहे प्रारम्भ होती थी, एक-एक हल्का गड्ढा बन गया था। एक बारगी होठ मीचने हुये बोले—

‘अच्छा हुआ बरातियो को लौट जाने दो । बदनामी हो जायेगी अवश्य, पर मुझे लगा वह लोग अच्छे परिवार के नहीं थे । वेश्या जिस बरात मे आये, मै उसे अच्छा नहीं समझता । खुले आम जहाँ दारू पी जाय वह परिवार अच्छा नहीं हो सकता । मिट्ठनलाल तुमको मेरी बातें बुरी अवश्य लगेंगी, क्योंकि तुम कह सकते हो, जिसने इतना पैसा खर्च कर दिया, उसके हृदय से पूछो ।’

मैकू मामा ने, जो आँगन मे गड़े हुये माडो का एक बाँस पकड़े खड़े थे, बीच मे ही बोलते हुये कहा —

‘जीजा जी इस सबका जिम्मा मै लेता हूँ । बिट्ना के ब्याह का भार मुझ पर छोड़ दे । उसे टी०बी० है, उसे कोई स्वीकार न करे । टी० बी० के मरीज का स्वयं अपने पैरो पर खड़ा होना होता है अथवा उसका अंत हो जाना अच्छा है ।’

पिता जी ने पास ही पड़ी हुई लोहे की बनी कुरसी पर बैठते हुये कहा—

‘मिट्ठन लाल तुम परेशान मत हो । बराती मनाने योग्य नहीं है । मेरा अनुमान है, तुमने इन लोगो को गलत समझा है । लडका भी मुझे तो जँचा नहीं ।’

मिट्ठन मामा गान थे । वह नीचे बैठे आँखें गड़ोये देख रहे थे । देर तक खड़े रहकर वह माडो के पास पड़ी चारपाई पर बैठ गये थे । मामी भी पास ही खड़ी थी । घर का वातावरण शांत था । पूडियो का कड़ाव वैसे ही घी से लबालब भरा कलकला रहा था । मिठाई पास की कोठरी मे सजी हुई रखी थी । बेलने वाली औरते पूडियाँ बेले जा रही थी । दही बडो की सुगंध, कूँडो से बाहर जिसमे वह रखकर दही से लबालब भर दिये गये थे तथा सुगंधित मसाला डालकर चटपटे बना दिये गये थे, सारे घर मे फैल गई थी । बुढियाँ जो अब तक खाने की प्रशंसा जोर-जोर कर रही थी, शांत होकर मन ही मन सोच रही थी, ‘क्या आज भूखे तो नहीं रह जाना होगा ।’ बच्चे अपनी माताओ की

टाँगो से लिपट कर भूख के लिये रिरिया रहे थे। उनकी माँये उन्हें डपटकर अलग अपने को छुड़ाते हुये झटक देती थी। मट्टी का चूल्हा जो सारे घर में अपने तेज प्रकाश से किसी के जीवन को आलोकित करने के लिये प्रज्वलित हो रहा था, उसके जीवन के मोड़ पर पथ-रीला चढाव देखकर भेद पड गया था, पर अपने अगारो में उसने कोई कमी न की थी। अपने दहकते हुये अगारो से घर के प्राणियों को शिक्षा दे रहा था 'मेरी भाँति ही दहकते रहो। जीवन की लौ कभी मद पडती है कभी तीव्र हो जाती है। जैसे मुझे केवल एक लकड़ी का सहारा चाहिये, मैं फिर से प्रचलित होकर ऊपर लपटे फेकने लगूँगा, ऐसे ही जीवन को प्रकाशित करने के लिये स्फूर्ति चाहिये। वह स्फूर्ति जो नवयुवक में है, उसे केवल लकड़ी का सहारा चाहिये।'

मिट्ठन मामा ने धीमे से कहा—

‘ठीक है। जैसा आप लोग समझें।’

यह कहते हुये वह अपने मत्थे के दोनों किनारो से अँगूठे तथा बीच की बडी उँगली के सहारे धीरे-धीरे मत्थे के माँस को माथे के बीचो-बीच इकट्ठा कर छोड देते। ऐसा उन्होंने तीन-चार बार किया। इसके पश्चात वह होठ दबाते तथा नाक के कोने को पकडकर दीर्घ स्वास एक दो बार छोडते। कभी दाढी पर हाथ फेरते, कभी ठुड्डी पर एक उँगली रखकर नीचे के ओठ तक रगडते हुये ले आते।

मेरे पिता जी के कहने पर सब शांत हो गये। मामी ने नौकरो को आज्ञा दी।

‘पूडियाँ आगे सेकना बंद कर दो।’

घर के मेहमानो ने पूरे महीने भर टिक कर मेहमानी की। राखन मामा बिना रोक टोक के खूब मिठाई छुप छुपकर खाते। मुझसे कहते ‘चटू खा लो जी, लजाते नहीं। मिलती हुई चीज स्वीकार कर ली जाती है, आखिर हम लोग नहीं खायेगे तो यह भाभी की बहने भाई खा जायेगे।’

मुझे दूसरे दिन बाबू स्कूल में मिला था। मैं उसे देखकर जाने क्या सोचने लगा। मेरा मस्तिष्क अभी भाव लोक में उड़ने योग्य न बन पाया था पर मैं उस पक्षी के समान आकाश लोक में भ्रमण करना सीख लिया था जो पक्षी के निकलते ही पूरे आकाश में भ्रमण कर आना चाहता है, पर मार्ग में किसी शिकरे अथवा बाज के दिख जाने पर सहम जाता है, तथा इधर-उधर दृष्टि डालता हुआ उड़ने का प्रयत्न करता है। मैं अपने घर के काँड़ को देखकर भौचक्का हो गया था मैंने बाबू के घर की बरान भी देखी थी, अपने घर की भी। बाबू ने मुझसे प्रश्न किया—

‘चढ़ ! सुना तुम्हारे यहाँ से कल बरात वापस हो गई, क्या तुम्हारी ‘मौसी को टी० बी० है?’

मैंने उत्तर दिया।

‘हाँ कुछ होगा। मुझे कुछ नहीं मालूम। इतना अवश्य जानता हूँ, मेरे तथा तुम्हारे घर के वातावरण में कोई विशेष अन्तर नहीं। केवल अन्तर इतना ही है कि मेरे यहाँ के लोग कुछ पढ़े-लिखे हैं, तुम्हारे यहाँ के लोग कोरे अनपढ़ हैं पर मनुष्य सब एक से ही है। तुम्हारे यहाँ की लड़ाई पर मुझे उस दिन आश्चर्य हुआ था। आज अपने समाज में कुछ वैसी ही बातें मुझे देखने को मिली।’

‘बाबू ने जो कुछ मैंने कहा, उसे कुछ न समझा। केवल यह कहकर चुप हो गया।

‘अच्छा ! फिर हम सब एक तो हैं ही।’

बाबू का जीवन उन कौओं के समान था जिसे घर के आँगन में देखते ही लोग हड़ा हड़ा कह कर भगा देते हैं। मेरा जीवन उन चिड़ियों के समान था जिन्हें लोग अपने हाथ से दाना खिलाना चाहते हैं, पर पक्षी हम दोनों ही थे। मैं केवल इतना ही समझ पा सका था।

बाबू ऊपर नीचे देखता हुआ बोला—

‘मेरी माँ कह रही थी कि मेरे बड़े भाई की जिस लड़की से शादी

हुई है उसकी एक और बहन है उसी से मेरी भी शादी ठीक होने की बात हो रही है ।’

मैं उसकी बात को सुनकर सन्न रह गया । मैंने उसकी आँखों की ओर ध्यान से देखते हुए कहा—

‘क्या तुम लोगो के यहाँ इतनी जल्दी विवाह हो जाता है, हम लोग इतनी शीघ्र विवाह नहीं करते ।’

बाबू ने मुँह में एक तिनका दबाते हुए उत्तर दिया—

‘हम क्या करे, हमारी माँ कहती है कि तुम सयाने हो गये हो ।’

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा—

‘फिर तुम क्या पढ़ना छोड़ दोगे, तुम्हें पढाई में आनन्द नहीं आता ।’

उसने पास ही एक कुत्ते की ओर ईंट का ढेला फेंकते हुए उत्तर दिया—

‘माँ कहती है तुम बहुत पढ़ चुके । अब घर बसाओ । बड़ा भाई मरे हुए भैंसों को डोता है । वह अकेले एक दिन में पन्द्रह-बीस रुपये कमा लेता है । तुम भी उसकी सहायता करो । अपनी बपौती का काम नहीं छोड़ा जाता । सूप बनाना सीखो । शिकार करना सीखो ।’

मैंने उसे ऊपर से नीचे देखते हुए कहा—

‘अच्छा तो तुम लोग शिकार भी कर लेते हो । किससे शिकार करते हो, बन्दूक से ।’

वह उसी कुत्ते की ओर देख रहा था जिसे उसने ढेले से मारा था । कुत्ता पास की दीवाल से लँगड़ाता हुआ बैठ रहा था । बाबू उसकी ओर फिर से झपटना चाहता था कि मैंने उसे टोका—

‘क्या तुमको इसमें आनन्द आता है । बेचारे कुत्ते को अकारण ही मार रहे हो ।’

वह तुरन्त बोल पड़ा ।

‘तुम नहीं समझते यह कुत्ता बड़ा हरामी है । यह रोजाना मेरे सूप की ताँते खा जाता है ।’

मैं अपनी गर्दन पर हाथ फेरता हुआ बोला—

‘कुत्ते ताँत खा लेते हैं ।’

बाबू ने वही सड़क पर बैठते हुए कहा । उसने मेरा हाथ पकड़कर बैठाने की चेष्टा की ।

मैं कहता जा रहा था देखो जी सड़क पर नहीं बैठा जाता । सड़क चलने-फिरने के लिये होती है । इधर से उम्के ताँगे निकलते हैं । सड़क पर गन्दगी होती है ।’

बाबू ने मेरा हाथ धसीटते हुए मुझे वाध्य किया कि मैं वही बैठ जाऊँ । मैं अपनी ओर हाथ खींच रहा था । वह मुझे कधो से दबाकर बैठाता हुआ बोला—

‘देखो तुमको शिकार की बाते बतलाऊँगा । तुम्हे कुत्ते ताँते कैसे खाते हैं, यह बतलाऊँगा ।’

बाबू आयु में काफी बड़ा था । वह लगभग अठारह वर्ष का होगा । उसने जीवन को दूसरे पहलू से देखना प्रारम्भ कर दिया । उसके लिये शिक्षा कोई अर्थ नहीं रखती थी । वह केवल यह समझता था कि पैसा कमाकर उसे उल्टे सीधे ढग से व्यय कर देना ही जीवन का ध्येय है ।

जब उसने मुझे बैठने के लिये वाध्य किया, मैं उसे सामने के एक छोटे से तिकोने पार्क की ओर सकेत करते हुए बोला—

‘चलो वहाँ पार्क में बेच पड़ी है, वही पर बैठकर तुम्हारा किस्सा सुनेगे ।’

हम दोनों ही उस ओर बढ़ गये । बाबू पार्क के फूल तोड़ने लगा । मैंने डपटते हुए उत्तर दिया ।

‘देखो यह गलत कार्य नहीं करते । हम लोग पुस्तक में भी पढ़ते हैं कि नावर्जन लाभ के लिये लगाई हुई वस्तुएँ छुई नहीं जाती । ऐसा ही मुझसे मैकू मामा कहा करते हैं ।’

हम दोनों ही पत्थर वाली बेच पर बैठ गये ।

उसने बतलाना प्रारम्भ किया ।

‘सुनो अच्छा कुत्ते ताँते कैसे खाते हैं। तुमको घृणा लगेगी यह सुनकर। मेरी माँ भैसे की आँते बाजार से ले आती है। उसे वह तेज छुरी से महीन-महीन डोरी के समान काटतो है। उसे वह एक मिट्टी के तसले में भिगो देती है। उसकी आँख वहाँ से हटी नहीं कि यह कुत्ते खा जाते हैं। इस तरह यह कुत्ते हम लोगो की बड़ी हानि करते हैं। हमारे सूप नहीं बन पाते।’

मैंने प्रश्न किया।

‘और तुम लोग शिकार कैसे खेलते हो?’

हम लोग अलमोडा, नैनीताल के जंगलो में रहते थे। वहाँ बल्लम बरछी से शिकार करते थे। एक-एक हिरन की खाल तीस-चालीस रुपये में बिक जाती थी। नैनीताल के पास एक गाँव है, ‘घोडा खाल’ वहाँ किरमोडा का जंगल है।

मैंने कौतूहलता से प्रश्न किया।

‘किरमोडा’ क्या होता है?

‘यह एक प्रकार का पौदा होता है जो पहाड़ी पर ही देखने को मिलता है। वही पर कुरई की झाड़ियाँ हैं। उन्हीं में हिरने बारहसिंघे छुप कर बैठते हैं। इनके गोल के गोल एक साथ बैठते हैं। उनकी ओर बरछी फेंक कर उन्हें घायल कर देते हैं। मेरी माँ बड़ा अच्छा शिकार करती है। बड़े भाई को माँ ने ही इतना होशियार बनाया है।’

मैंने मुस्कराते हुए कहा—

‘तब तो तुम लोग बड़े अनुभवी लोग हो, चलो अच्छा अभी हमारे साथ मैकू मामा के पास चलो, तुम तो बड़ी मजेदार बातें जानते हो।’

मैं उसे अपने घर की ओर ले गया। मैकू मामा घर पर ही थे। वकील साहब की पुत्री सरला बिटन्ना मौसो से सहानुभूति प्रकट करने आई थी क्योंकि उनका ब्याह जो छूट गया था। हम लोग बाहर के बैठके में ही बैठ गये।

कमरा साधारण था। एक ओर सुभाषचंद्र बोस का चित्र टंगा

था। दूसरी ओर रानी लक्ष्मीबाई की तस्वीर थी। इधर-उधर दो पलंग पड़े थे, तथा बीच में ही लोहे के चादर की चार कुर्सियाँ पड़ी थी। यह नाना की गृहस्थी थी। उनका विश्वास था कि ठोस वस्तुएँ गृहस्थी में जोड़ने से पीढ़ी दर पीढ़ी तक काम देती हैं। बीच में छोटी सी स्टील की चादर की मेज थी जिसके पाये लोहे की शालाखों के थे, जो उठाने से मुड़ जाते और मेज सरलता से उठाई जा सकती थी। मेज पर बिटन्ना मौसी द्वारा काढा हुआ मेजपोश पड़ा था। जिस पर एक टोकरी फूलों में भरी हुई कढ़ी थी। पलंग एक बिछा हुआ था जिसपर ऊपर बेड शीट पड़ा था।

मैंने मैकू मामा से कहा—

‘मामा जी यह मेरा मित्र बाबू शिकारी है, इसकी माँ शिकारी है, यह बड़ी अच्छी कहानियाँ बतलाता है शिकार की।’

मामा ने कौतूहलता से कहा—

‘अच्छा तो अवश्य सुनेंगे।’

यह कहते हुए वह अदर से सरला तथा बिटन्ना मौसी को भी बुला लाये।

बिटन्ना मौसी तथा सरला दीवाल की ओर पलंग पर बैठ गईं। बाबू तथा मैकू मामा दोनों कुर्सियों पर बैठ गये। मैं दूसरे पलंग पर जिस पर बिछावन नहीं पड़ा था, बैठ गया।

मैकू मामा ने मेरी ओर सकेत करते हुए कहा—

‘चढ़ आओ कुर्सी पर बैठो।’

मैंने बिटन्ना मौसी की ओर देखते हुए कहा—

‘यह बाबू शिकार कर लेता है, हिरन और बारहसिंघे का।’

मैकू मामा सरला की ओर देखते हुए बोले।

‘सरला जी, यह चढ़ू का मित्र है। इसके साथ पढ़ता है। एक दिन इसके घर की पचायत हो रही थी। शायद इसके बड़े भाई का व्याह था। मुझे भी इसने मिठाई खिलाई।’

सरला ने मैकू की ओर मुस्कराते हुए कहा—

‘अच्छा’

और यह कहते हुए बाबू की ओर देखते हुए बोली—‘कहो जी तुम्हारी भाभी आ गई ।’

बाबू ने अपनी मखमली टोपी जिसके कोने दोनो कानो को छू रहे थे ठीक करते हुए कहा—

‘अभी नहीं । अभी तो लडकी वाला खूब पैसे वसूल रहा है ।’ सरला को यह सुनकर आश्चर्य हुआ, और वह मुस्कराते हुए मैकू मामा की ओर कौतूहलता से देखते हुए बोली—

‘यह क्या कह रहा है ?’

मैकू मामा ने मेज के लोहे की शलाख पर पैर रखते हुए कहा— ‘यह हमारी आदिम जातियों के जीते जागते उदाहरण है, जिस समय लडकी घर का भार नहीं होती थी । बहुत से कनौजिया ब्राह्मणों के यहाँ लडकी के जन्म लेते ही उसका गला घोट दिया जाता है कि लडकी के कारण उसके ब्याह की परेशानियों से उन्हें छुटकारा मिल जायेगा ।’

सरला सम्हलकर बैठते हुए बोली—‘तब तो इन लोगो के यहाँ लडकी अभिशाप नहीं समझी जाती । लडकी वाला अपने को बड़ा भाग्यशाली समझता होगा ।’

मैकू मामा ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया—‘और क्या ?’

मै बीच ही में बोल पड़ा ।

‘मामा जी आप ‘किरमोडा, कुरई, और घोडाखाल, जानते हैं ।’

मैकू मामा सिर हिलाते हुए बोले—

‘यह सब क्या, मै तो कुछ नहीं जानता ।’

बाबू बीच में बोल उठा और कुरसी पर सीधा बैठा हुआ अपने दोनो हाथ टाँगो पर जमाये हुए कहता गया ।

‘अरे ‘घोडाखाल’ भुवाली के आगे एक गाँव है। किरमोडा एक पौदा होता है और कुरई की झाड़ियाँ होती हैं। यह बड़ी घनी होती है, इनमें छोटे-छोटे पीले-पीले फूल लगते हैं, जो देखने में बड़े सुंदर लगते हैं।’

मैकू मामा ने आगे प्रश्न किया।

‘तो तुम्हारी माँ शिकार कैसे खेलती हैं?’

बाबू जो तनकर बैठा हुआ था अपनी हरी कमीज सम्हालता हुआ बोला—

‘हम लोग पहाड़ी टीलों के पीछे छुप जाते हैं। झाड़ी में से जैसे ही खर-खर की आवाज आई नहीं, कि हम अपने भाले बरछियों से तो लैस रहते ही हैं, चौकन्ने हो जाते हैं। वह भी हमारी आइट पाकर झाड़ी के बाहर भागने का प्रयत्न करते हैं, बस हम लोग तुरंत उन पर आक्रमण कर देते हैं’।

सरला ने बीच ही में अपने कंधे पर खिसकी हुई सारी को सम्हालते हुए प्रश्न किया।

‘तुम लोग क्या पहाड़ों पर रहते हो?’

बाबू ने अपनी धोती सम्हालते हुए उत्तर दिया।

‘हम लोग ऐसे ही घूमते फिरते हैं, कभी पहाड़ों पर कभी मैदानों में।’ सरला ने फिर कौतूहलता से प्रश्न किया।

‘तुम लोग नौकरी नहीं करते।’

बाबू ने सिर हिलाते हुए कहा—

‘जी नहीं; हम लोग नौकरी नहीं करते। हम लोग खाल निकाने का काम करते हैं। बाजार में खाल बड़ी महँगी बिकती है। हम लोग एक बार बाँझ के जंगलों में फँस गये। रात हो गई थी। माँ ने आग जला ली। मेरा बाप जिंदा था उस समय। उसके पैर में गठिया थी। माँ उसे सँकने लगी। आग मद पड़ गई थी। पास के जंगल से एक

सफेद भालुओ का गोल हम लोगो पर टूट पड़ा' बिटन्ना मौसी तथा सरला बड़ी कौतुहलता से उसकी ओर मुख किये हुये सुन रही थी। मैकू मामा कभी मेरी ओर तथा कभी सरला की ओर देखते जाते।

बिटन्ना मौसी तथा सरला एक साथ बोल पड़ी।

'फिर क्या हुआ ?'

बाबू जैसे चेहरे पर रोब लाता हुआ कहता जा रहा था।

'मेरी माँ तथा मेरा भाई बरछियाँ उठा-उठा कर टूट पड़े और दो रीछों को मार-मार कर ढेर कर दिया।'

मैं बोल पड़ा।

'अच्छा तो बाबू तुम्हारी माँ बड़ी वीर है'।

बाबू आगे बाला।

'सुबह ही हम लोगो ने उनकी खालें निकाल ली, और जब हम लोग बहुत सी खाले जमा कर काठगोदाम के लटकन पुल ( हैज़िंग-ब्रिज ) वाले जंगल के उम पार से आ रहे थे वहाँ चुगी चौकी वालो ने हम लोगो से खाले छीन ली यह कहते हुए कि उस जंगल में तुम लोग किमकी आज्ञा से शिकार खेलने गये थे। तुम्हारा चालान किया जायेगा'।

मैकू मामा ने सरला जी की ओर देखते हुए कहा—

'देखो सरला जी, पुस्तकीय शिक्षा से भी अधिक इन आदिम जातियो की शिक्षा कही अधिक व्यावहारिक है'।

मैंने मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा—

'मामा जी यह कह रहा था कि मेरा ब्याह होने जा रहा है, मैं पढाई छोड़ दूंगा'।

मैकू मामा ने बाबू की पीठ थपथपाते हुये कहा—

'बिलकुल नहीं, तुम होशियार लडके हो। तेरा ब्याह अभी नहीं होगा मैं तुम्हारी माँ के पास चलूंगा। तुम्हारी पढाई का प्रबन्ध मैं करा दूंगा। फीस तो तुम्हारी माफ होगी ही।'

बाबू ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया ।

‘जी माफ है’ ।

मैकू मामा सरला जी की ओर देखते हुए बोले—

‘इसकी पुस्तको का प्रबध हम लोग करेगे । ऐसे लोगो की सहायता होनी ही चाहिए । यह लोग पैसा खूब कमाते है पर इन्हे व्यय करना नही आता ।’

बाबू बीच ही मे बोल पडा ।

‘हम लोग किश्तिये से पैसा उधार लेते है । वह हर पखवारे आता है और सुद लेकर चला जाता है ।’

मैकू मामा ने उसके काले मुह की ओर ध्यान से देखते हुए कहा—  
‘तुम्हारा भाई मदिरा भी पीता है । गाँजा चरस सब पीता होगा’ बाबू ने सिर हिला-हिलाकर कहा—

‘जी, दारू पीता है । मुझे भी पिलाता है । मेरी माँ भी पीती है’ मैकू मामा उसे समझाते हुए बोले ।

‘अच्छा देखो कान पकडो आज मे दारू नही छूओगे । तुम पढने वाले लडके हो । यदि तुम दारू पियोगे तो तुम्हे अच्छी सगत नही मिल पायेगी’ ।

बाबू ने उत्तर मे केवल ‘जी’ कह दिया ।

वह कुछ गभीर-सा हो गया । उसे जैसे एकबारगी ध्यान आया कि उसने दारू की बात उन लोगो के बीच मे क्यों ले ली थी । इतने मे रमन बाबू सरला जी के भाई साहब अपनी बहन को शायद लिवाने के लिये आ गये थे । उनके आते ही सब लोग खडे हो गये । मैकू मामा ने उनका हाथ पकडते हुए पास की कुरसी पर बिठाल दिया । मैकू मामा बाबू की ओर सकेत करते हुए बोले ।

आप मेरे चद्दू के मित्र से मिलिये । इनका नाम है बाबू । कजड परिवार का लडका है । इनके साथ पढता है । यह अपने अनुभव हम लोगो को बतला रहा है ।’

रमन जी के मुख पर उसे देख कर हँसी आ गई। वह उसे ऊपर से नीचे तक देख गये। होठों के अंदर ही हँसी रोकते हुए बोले।

कजड और अनुभव। चट्टू का मित्र। मैं समझता था यह जयराखन का मित्र होगा।

मैकू मामा गंभीर हो गये। उनके गंभीर होने से मरला भी जो मुस्कुराना चाहती थी, मुस्कुराहट रोककर बोल उठी।

‘जी नहीं रमन भइया। इसकी माँ शिकारी है। यह नैनीताल, भुवाली, अल्मोडा इत्यादि में घूमने वाली आदिम जानियाँ हैं, जो मजबूरी में इधर मैदानों में बस गई हैं।’

बाबू को एकबारगी धक्का सा लगा। उसने अन्दर ही अन्दर अनुभव किया कि जैसी उसकी जाति वालों को बहिष्कृत तथा घृणित समझा जाता है। उसके अन्तःकरण में छिपी जगली वीरता ने अपनी पढाई का जामा पहन कर उसके मुख-मंडल पर तेज बिखेर दिया। उसका ललाट फैल गया। उसकी आँखें चढ़ गईं। उसने नीचे का होठ दाँतो से दाब लिया। वह भी शांत गंभीर मुद्रा से रमन को ध्यान से देखने लगा।

रमन ने अपना रूमाल निकाल कर अपनी आँख साफ करते हुए कहा—

‘तब तो इसकी माँ को लक्ष्मीबाई की उपाधि मिलनी चाहिए।’

मैकू मामा ने तुरन्त उत्तर दिया।

‘इसमें क्या शक, इसकी माँ वृन्दावनलाल वर्मा के ‘मृगनैनी’ की ‘लाखी’ है। हमारे देश में अब भी ऐसी स्त्रियाँ हैं। केवल उनके पता लगाने की आवश्यकता है। हमारी यदि ऐसी ही सेना तैयार हो जाये, अँगरेजों के छक्के छूट जायें।’

रमन अब भी बाबू को एक घृणित दृष्टि से देख रहे थे। उन्होंने व्यग्न करते हुए कहा—

‘तब तो सुभाष बोस की बनने वाली सेना में इसे भरती करवा देना चाहिये ।’

मैकू मामा ने बाबू की ओर देखते हुए उत्तर दिया । बाबू नीचे देख रहा था ।

‘बिल्कुल ठीक । केवल इन लोगों को उचित मार्ग पर लगाने की आवश्यकता है ।’

यह कहते हुए मैकू मामा ने मुझसे चाय लाने के लिए सकेत करते हुए कहा—

‘चटू देखो अन्दर से चाय ले आओ, तैयार हो गई होगी ।’

रमन मैकू मामा द्वारा यह शब्द उच्चारित होते ही बोल पड़े उन्होंने अँगरेजी में बात की जिससे वह लडका न समझ पाये ।

‘वेल दिस इज लिमिट । यू इक्सक्यूज मी प्लीज ।’

मैकू मामा उनकी ओर गौर से देखते हुए बोले—

‘मैं समझा नहीं रमन बाबू, इसमें हर्ज क्या है । हमें आपको प्राचीन सत्कारों को छोड़कर उस सकुचित तथा सीमित दायरे के बाहर आना है, जिसमें हम सब अब तक गुलाम बने सड़ते रहे ।’

यह कहते हुए मैकू मामा ने मेरी ओर फिर से चाय लाने के लिये सकेत किया । मैं उनकी बातों को समझने का प्रयत्न कर रहा था पर मैं समझ न सका था । रमन बाबू की अँगरेजी भी मेरे पल्ले न पड़ सकी थी । केवल इतना ही समझ सका था कि शायद वह चाय को मना कर रहे हैं । मैकू मामा के दुबारा सकेत करते ही मैं उठ गया और चाय की ट्रे लाकर बीच में पड़ी हुई उस लोहे की मेंज पर रख दी । मैकू मामा परिस्थिति को सम्हालने के लिये मेरी ओर देखते हुए बोले—

‘अच्छा चटू अपने मित्र के साथ तुम खेलो जाकर । इनको भी अपने साथ चाय पिलाओ जाकर ।’

यह सुनते ही बाबू वहाँ से उठ पड़ा । हम दोनों ही बाहर हो गये ।

बाबू कुछ ताड़ सा गया था कि रमन ने उसका वहाँ रहना पसंद न किया हो जैसे । मुझसे कमरे के बाहर निकलते ही बोला—

‘अच्छा मैं अब चल रहा हूँ । फिर मिलेगे ।’

मैंने उसे बहुत रोकना चाहा पर वह उस समय न रुका, और वह अपनी टोपी सम्हालता हुआ छलाँग मार कर भाग गया । मैंने कमरे में प्रवेश करते हुए मैकू मामा को सूचित किया ।

‘बाबू भाग गया ।’

मैकू मामा जो चाय का घूंट पी रहे थे, चाय का प्याला, मेज पर रख कर, मेरी ओर देखते हुए कहा—

‘क्यों तुमने रोका नहीं ।’

मैं दरवाजे के पास खड़ा खड़ा बोला—

जी मैंने रोका पर वह रुका ही नहीं, वह भाग गया ।’

रमन दालमोट चम्मच में मुँह में डालते हुए बोले—

‘अच्छा आओ चढ़ू तुम तो चाय पियो । छोड़ो जी उस कजड़-पजड़ को । कहाँ किससे तुमने मित्रता कर रखी है ।’

मैं चुप था । मैकू मामा भी आवाक् ही रहे । सरला ने बिटन्ना मौसी के हाथ से पकौड़ियों की प्लेट लेते हुए कहा—

‘आओ बिट्टन तुम भी तो बैठो । काफी पकौड़ियाँ आ गई । कितनी चटपटी पकौड़ियाँ भाभी जी ने बनाई है ।’

बिटन्ना मौसी प्लेट मेज पर रखते हुए बैठ गई । वह भी चाय पीने में लग गई । सरला ने उनके लिये चाय तैयार कर दी । सरला एक पकौड़ी की मिर्च चभनाती हुई बोली जिससे उनकी आवाज स्पष्ट नहीं निकल रही थी ।

‘मेरे विचार से बिटन्ना को अपनी पढाई प्रारम्भ कर देनी चाहिये । इन्हे घर पर पढ़ा कर हिन्दी की परीक्षाएँ पास करवाकर हाईस्कूल करवा दे ।’

मैकू मामा सरला की ओर देखते हुए बोले—

‘यही मैंने सोचा है। अभी मैं इलाहाबाद जा रहा हूँ। मेरा भविष्य का प्रोग्राम यही है। चट्ट भी जीजा जी के साथ इलाहाबाद जायेगा। विट्टन का प्रबन्ध इलाहाबाद में ही करना है। यदि भइया भी आज्ञा देगे तो गायद मक्खन का नाम भी वही लिखवा दूँ। पर सब मुझे देखना है, कि मैं क्या करता हूँ, कहाँ से मुझे कितनी सहायता मिलती है, इसी पर यह सब निर्भर करता है।’

रमन ने चाय समाप्त करते हुए कहा—

‘मैं भी एल० एल० एम० ज्वाइन करने की सोच रहा हूँ प्रयाग विश्वविद्यालय में एल० एल० एम० खुल गया है।’

मैकू मामा रमन की ओर देखते हुए बोले—‘और सरला एम. ए किस विषय में कर रही है?’

रमन रूमाल जेब से निकालते हुए मुँह पोछ चुकने के पश्चात् बोले।

‘मैं तो इससे इंग्लिश लेने के लिये कह रहा हूँ पर यह पोलिटिक्स लेने के लिए कह रही है।’

मैकू मामा सरला की ओर देखते हुए बोले।

‘पोलिटिक्स ठीक तो रहेगी। अङ्गरेजी भी ठीक है। पर आजकल पोलिटिक्स का समय है। भारत को स्वतंत्र होना है। जब तक हमारा स्त्री समाज पोलिटिकल फील्ड में नहीं आता। देश प्रगति नहीं कर सकता।’

रमन ने आँखें फाड़ते हुए मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा।

‘तो क्या सरला को राजनीति में प्रवेश करने का परामर्श दे रहे हो मैकूलाल।’

मैकू मामा ने तपाक से गर्दन सीधी करते हुए उत्तर दिया।

‘बिल्कुल। प्रयाग नेहरू और सप्रू परिवार का नगर है। वहाँ

रहकर इन लोगो का साथ जो व्यक्ति पा ले वह व्यक्ति अपने को धन्य समझे ।’

‘साथ पाना कोई सरल कार्य है ।’

रमन ने धीरे से कहा ।

मैकू मामा सरला की ओर देखते हुए बोले ।

‘बलिदान की आवश्यकता है । कर्मठ व्यक्ति के लिये सब कुछ सम्भव है ।’

रमन ने सरला की ओर देखते हुए कहा—

‘सरला सरोजनी नायडू बनेगी, यह अङ्गरेजी मे ‘लिरिक्म’ लिखती है ।’

यह कहकर जैसे ही रमन मैकू मामा की ओर देखने लगे । मैकू मामा मुस्कराते हुए बोले—

‘अच्छा, जभी आप इन्हे अङ्गरेजी लेने का परामर्श दे रहे थे ।’

सरला जो कभी विट्टन से बातें करने लगती, कभी रमन की ओर देख लेती फिर रमन की दृष्टि बचाकर मैकू की ओर ध्यान में देखने लगती पर जैसे ही रमन की दृष्टि उस पर पडने को होती वह तुरत अपनी दृष्टि मैकू की ओर से हटा लेती । उसने अपनी बात छिड़ते देख मैकू की ओर अपने कान के टॉप्स हिलाते हुए कहा —

‘नही, मैं अगरेजी नहीं लूंगी । मैं पोलिटिक्स ही लेना चाहती हूँ ।’

रमन मैकू मामा की ओर देखते हुए बोले—

‘अच्छा मैकू तुम्हारी ही राय पक्की रही ।’

कुछ देर सब शांत रहे । रमन ने सरला की ओर देखते हुए कहा—‘अच्छा सरला चलो अब देर हो रही है । पिता जी भी कोर्ट से आ गये होंगे ।’

यह कहते हुए वह सब उठ गये ।

जयराखन मामा अपने खेत के काम में जी-जान से लग गये थे । उनके हृदय में वह शब्द गूँजने लगे थे शायद, जो उन्होंने मिट्ठन मामा से बिटन्ना मौसी के विवाह के लिये कहे थे कि 'बिटन्ना मौसी का विवाह मैं करूँगा । चानू, मानू उनके प्यारे सखा हो चले थे । वह पौ फटते ही बैलो को खोलकर, हल कंधे पर लादकर खेत की ओर चल देते । वह गभीर हो चले थे । किसी से बहुत कम बोलते । एक दिन प्रातः पिता जी दातौन कर रहे थे, राखन मामा ने उनकी ओर आकर्षित होते हुए कहा—

‘आइये जीजा जी, आपको खेत की सैर करवा लाऊँ । आपको थकन तो नहीं होगी ।’

‘नहीं इसमें थकन की क्या बात ! प्रातःकाल की स्वच्छ वायु के सेवन से तो शरीर स्वस्थ रहता है, चलो मैं अवश्य चलूँगा । मुझे तो बड़ी प्रसन्नता हो रही है यह देखकर कि तुम अब परिश्रमी बन रहे हो । मैं कई दिन से देख रहा हूँ तुम नियत समय पर खेत की ओर चल देते हो ।’

जयराखन मामा ने बैलो को खोलते हुए उत्तर दिया—

‘जीजा जी मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं अपने पैरो पर खड़ा हूँगा। बिटन्ना का ब्याह मुझे करना है। मैंने बचन दिया है भाभी से मैकू भइया पढेगे आगे। उनकी कोई सहायता नहीं करेगा तो मैं करूँगा।’

पिता जी ने गभीरता से मुस्कराते हुए कहा—

‘शाबाश जैराखन। ऐमे ही लडके जीवन मे उन्नति करते है। मै हृदय से बहुत प्रमन्न हो रहा हूँ तुम्हारे यह वाक्य सुनकर। ऐसे लडको की सहायता ईश्वर भी करता है।’

पिता जी ने कुल्ली कर मुझसे भी साथ चलने को कहा। मैं भी साथ हो लिया।

मैकू मामा ने बैलों को हडक-डक करते हुए सड़क पर उतारा। बैलो का जुआँ उठा लाये। उनके कंधे पर रख दिया। जैसे ही वह हल का लम्बा डंडा अपने कंधे पर रखने को हुए पिता जी ने उनके हाथ से हल लेते हुए कहा—

‘राखन तुम बैल हाँक कर आगे बढो, यह मै लिये चल रहा हूँ।’

मैंने राखन मामा की ओर देखकर फिर पिता जी को देखते हुए कहा—‘पिता जी मैं और राखन मामा दोनो मिलकर इसको कंधे पर रखकर ले चलेगे।’

राखन मामा ने पिता जी की ओर देखकर अपना कंधा सम्हालते हुए कहा -

‘अरे जीजा जी, मै इमे कई दिन से ले जा रहा हूँ। मुझे कोई कठिनाई नहीं होती। आप छोड़िये तो। यह कैसे हो सकता है कि छोटो के सामने बडे काम सम्हाले।’

जैसे ही राखन मामा ने हल अपने कंधे पर रखा था कि मैकू मामा जो घर के बाहर के दरवाजे पर ऐसे ही दातून खोजते हुए आये थे,

राखन मामा को खेत जाते हुए देख तथा हम लोगो को भी साथ चलता हुआ देख बोले—

‘अरे राखन, शाबाश जीजा जी क्या आप राखन को ट्रेनिङ्ग दे रहे हैं। मैं भी चल रहा हूँ जीजा जी।’

यह कहते हुये वह भी भाग कर साथ हो लिये।

प्रातः काल की बसती बयार बह रही थी। रात की ओस से पृथ्वी कुछ कुछ भीगी होने के कारण भीनी-सोधी-सोधी महक से वातावरण परिपूर्ण था। पक्षियों की चहक से प्रत्येक वृक्ष गुञ्जित था। बैल घटियाँ बजाते हुये आगे बढ़ रहे थे। सड़क के इधर-उधर गहरे-नाली तथा गड्ढे बन गये थे, क्योंकि गाड़ी वालों का मार्ग भी वही था। सड़को पर लम्बी-लम्बी पतल कहीं-गन्ने के छिलके पड़े हुये थे। आते-जाते बैलों द्वारा किया हुआ गोबर सड़क पर दूर-दूर दिख रहा था। अभी ऊषा बेला ही थी। तारे धीरे-धीरे अस्त हो रहे थे। पेड़ों से उड़ान भरते हुये कौवे खेतों की ओर भागते हुए दिख जाते। मैकू मामा एक कविता गुनागुनाने लगे।

बीती विभावरो

अम्बर पनघट पर डुबो रही

तारा घट ऊषा नागरी।

खग कुल कुल सा बोल रहा

किसलय का अचल डोल रहा’ ....।

मुझसे मैकू मामा ने कविता गुनगुनाते हुये प्रश्न किया।

कहो चट्ट यह किसकी कविता है।

मैंने तुरत उत्तर दिया—

‘यह जयशंकर प्रसाद की है। मैंने उसे अभी हाल ही में पढ़ी है।’

मैकू मामा ने मेरी पीठ ठोकते हुए कहा—‘शाबाश!’

वह राखन की ओर बढ़ते हुये बोले—

‘राखन हल मुझे दे दो तुम थक गये होगे।’

‘नहीं भइया मैं थका नहीं, मुझे अभ्यास करने दीजिये । मुझे नित्य ही यह करना है ।’

यह कहते हुये राखन मामा ने बैलो को हाँकते हुये आगे कहा—

‘लो खेत आ भी गये ?’ और खेतों के गलियारे में प्रवेश करते हुये बोले—

‘अब इसे इन बैलों के जुएँ से लगाये देता हूँ यह ले चलेंगे ।’

जून माह की गरमी के पश्चात् वर्षा हो चुकी थी । जुलाई का माह लगने जा रहा था । लोगो ने अपने खेत जोत-जोतकर खाली छोड़ दिये थे जिससे मिट्टी खूब पानी पीकर अदर तक अपने ग्रीष्म से तपे हृदय को शीतल कर ले ।

मैकू मामा ने पिता जी की ओर देखते हुए कहा—

‘जीजा जी, राखन की तबियत पढ़ने में लगी नहीं, अब यह खेती सम्हालेगे । हम लोग प्रयाग रहेंगे और बीच-बीच में छट्टियों में आकर राखन की सहायता करते रहेंगे ।

पिता जी ने बैल की दुम के पास पुट्टे पर हाथ मारते हुये (जिससे टक की ध्वनि हो उठी) कहा—

‘हाँ विचार तो बहुत सुन्दर है । मुझे तो ऐसा लगता है, राखन अब जी-जान से अपने खेतों में जुट जायेंगे । मिट्टन खेतीपाती देख ही रहे हैं । उनसे अकेले सम्हालता भी नहीं था, और अब राखन उनकी सहायता में लग जायेंगे तो वह भी प्रसन्न ही होंगे और दोनों भाई मिलकर खेती अच्छी सम्हाल सकेंगे । चिड़ियों का गोल ऊपर से उड़ता हुआ खेत में बैठ जाता । पास ही एक बबूल का पेड़ था जिस पर अनेक चिड़ियाँ कलरव करती हुई वातावरण को आनन्दमय बना रही थी । मैं दौड़ता हुआ बबूल के पेड़ तक गया । मेरे बबूल के वृक्ष के निकट पहुँचते ही मारे पक्षी उड़ गये । दूर खेत में वह झुंड फिर बैठ गया । सूर्य दूर क्षितिज के पास हल्की-सी क्षीण रेखा बिखेर रहा था ।

इधर-उधर अन्य किसान हल चला रहे थे। उनके तेज शब्द 'हडक-डक वातावरण में गूँज रहे थे।'

मैकू मामा ने हल का फल ठीक किया। राखन मामा बैलो को हाँक रहे थे। मैकू मामा हल के फल को हाथ से दबाये थे। अदर की मिट्टी ऊपर निकल-निकलकर अपनी संचित शक्ति द्वारा आभास दे रही थी कि उस उर्वरा शक्ति द्वारा अच्छे पीघे उगाने में ममर्थ होगी। पिता जी खेत के बड़े-बड़े झाँखर एक स्थान पर एकत्रित कर रहे थे। मै भी सूखी जड़े जो मिट्टी के खुदने से ऊपर आ पड़ी थी एकत्र करके एक स्थान पर डाल रहा था। पक्षी पास उड़कर बैठ जाते। वह मिट्टी उलट-पलटकर किसी दाने की खोज में अपनी चोंचे मारते। कोई दाना मिलने पर कई पक्षी उस दाने के पीछे छीना झपटी करते। एक स्थान पर तीन-चार मैना आपस में बेहद लड़ रही थी। एक मैना ने दूसरी मैना को पंजों के बल नीचे गिरा दिया। वह चोंचों से उसे मार-मारकर वहाँ से चले जाने के लिये अपने साथी से कह रही थी। इस प्रकार कभी वह उमको नीचे दबा देती कभी दूसरा उस पर चढ़ बैठता। उधर से एक बाज झपट्टा मारता हुआ आया और उनमें से एक को अपने पंजे में दब कर उड़ गया। मै इस दृश्य को देखकर धक् से रह गया।

सारे पक्षी शोर कर उठे। चे-चे का शब्द बड़ी देर तक खेत में होता रहा। बहुत से पक्षी वहाँ एकत्रित हो गये। सब अपनी-अग्नी गर्दने लम्बी करते हुये ऊपर के-के करते रहे।

मैंने पिता जी से कहा—

‘पिता जी कितने आनन्द से पक्षी कलरव कर रहे थे। एक बाज झपट्टा मारकर चिड़िया को ले गया।’

पिता जी ने गंभीरता से आँखें फाड़ते हुए कहा—

‘यह जीवन ही बेटा संघर्ष शील है। यहाँ दुख और आनन्द का कहाँ अंत होगा और क्या कब से प्रारम्भ होगा, कोई नहीं जानता। यह जीवन ही सुख-दुख की आँख मिचौनी है। पक्षी लड़ रहे थे आपस

मे । प्रकृति ने शिक्षा दे दी । लडाईं अच्छी नहीं होती । पक्षी ने लडाईं के कारण अपनी जान गँवाई ।’

मेरा छोटा-सा मस्तिष्क जीवन की निस्सारता पर सोचता रहा । क्या जीवन यही है । इसी प्रकार यदि मेरे प्राण भी झटके से उड़ जायँ फिर क्या होगा । मेरे अन्तःकरण ने उत्तर दिया ‘होगा क्या, जो होना है, अपना कार्य करते चलो । सभी लोग अपना-अपना कर्तव्य निभा रहे हैं । एकबारगी मेरे किसी उपचेतन ने कहा—

‘भविष्य की चिन्ता न करो ।’

और मैं मैकू मामा की ओर देखने लगा जो राखन मामा के साथ साथ सौ गज दूर पर हलका फल दबाये आगे बढ़े जा रहे थे । खेत की बीस-पच्चीस पत्तियाँ वह लोग जोत चुके ।

सूर्य की लालिमा आकाश पर स्पष्ट झलकने लगी । सारस करेरेते हुए खेत के उस पार उड़ गये । पास के ताल के निकट जहाँ विचित्र पक्षियों का झुंड एकत्रित था ताल छोड़कर दूर उड़कर जाने लगे । सूर्योदय हो रहा था । बगुने, सारस सूर्य का अभिनदन करने के लिये उसी ओर भागे जा रहे थे जिस ओर सूर्य के किरणें दृष्टिगत हो रही थी ।

मैकू मामा कभी सूर्य के सामने दिखते कभी सूर्य की किरणें उनकी पीठ पर पड़ती । राखन मामा की कमीज पसीने से काफी भीग गई थी । मैकू मामा हल के पीछे-पीछे गुनगुनाते जा रहे थे ।

सखि नील नभस्सर मे  
निकला वह हँस अहा तिरता तिरता,  
गड़ जायें न कंटक भूतल के  
पग डाल रहा डरता डरता ।  
अब तारक भौक्तिक शेष  
निकला जिनको\*\*\*

विधाता उन दोनों युवकों के परिश्रम को देखकर अपने प्रतिनिधि सूर्य के द्वारा स्वर्णिम धूल के रूप में खेत की मिट्टी को उर्वरा शक्ति प्रदान कर रहा था जिसके फल स्वरूप उनके परिश्रम से टपका हुआ पसीने का एक-एक बिंदु धान की स्वर्णिय वालों के रूप में अपार धन-राशि में परिवर्तित कर देगा ।

धूप खेत में फैल चुकी थी । सूर्य के तीक्ष्ण बाँण पृथ्वी के अणु-अणु में प्रविष्ट करने लगे । घास पर के पतितों प्रसन्नता से फुदकते हुये एक टिड्डे को पकड़ लिया । मैकू मामा मेरे पास ही खड़े थे । मैं उन्हें उनके हरे-हरे पखों तथा उसकी लम्बी टाँगों को दिखलाने लगा ।

वह बोल पड़े—

चट्ट छोड़ दो इसे । इस समय यह प्रसन्नता मना रहा है । सबके हिंसे में हर्ष तथा उल्लास हुआ करता है । प्रातः समय यह हर्ष से फुदक रहा है, पता नहीं कब इसे कोई पक्षी अपनी चोंच में पकड़कर अपनी क्षुधा पूर्ति करे । इसलिये इसे प्रसन्न हो लेने दो । जीवन का आनन्द ले लेने दो ।’

मैंने मैकू मामा से बाज़ वाली बात बतलायी । वह तुरंत बोल पड़े—

‘यही जीवन क्रम है । कभी हर्ष है, कभी विषाद है । अपना-अपना कर्तव्य करते रहो । सब अपना-अपना कार्य कर रहे हैं निस्वार्थ भाव में । सूर्य प्रकाश प्रदान किये जा रहा है । उसका क्या स्वार्थ है ।’

यह कहते हुए मैकू मामा ने अपने मत्थे की पसीने की बूंदें पोछते हुये नीचे को झटक दी । राखन मामा थककर अपना हाफ पैट सम्हालते हुए जुती हुई मिट्टी को हाथ में मीजते हुए बैठ गये । बैलों के भी पसीना आ गया था । वह अपने शरीर की खाल में थक जाने के कारण कपन-सा उत्पन्न कर रहे थे । एक-दो बार खुरों को झटक देते । कभी अपनी गर्दन नीचे को जोर से झटका देकर ऊपर कर लेते ।

गैसे करने से उनके गर्दन बँधी हुई घटियों से जो ध्वनि निकल उठती वह उम वातावरण में किसी अभ्यस्त जल तरंग वादक में भी अधिक मधुर लगती ।

मैकू मामा ने अपने वाजुओ का पसीना पोछते हुए कहा—

‘मेरी तो इच्छा होनी है, इसी खेती को सम्हालते हुये अपना जीवनयापन करूँ, क्यों जी राखन ?’

राखन मामा ने पत्थी मारकर मिट्टी में बैठते हुये कहा—

‘नही भइया, मेरी तो पढाई में तबियत नहीं लगी । आप पढने में अच्छे हैं । आप पढे मैं खेती सम्हालूँगा । यह आवश्यक थोड़े ही है कि सब लोग एक ही धधा करे ।’

पिता जी जो पास ही धोती घुटनो तक ऊँची किये हुये दोनों पैरों के बल बैठे थे, बोल पड़े—

‘बाह् राखन तुम ता ऐसी बाते करने लगे ह’, कि क्या कोई पढा लिखा विद्वान पुरुष बाते करेगा, तुम पर ईश्वर की विशेष अनुकम्पा हुई है ।’

राखन मामा ने आँख फैलाकर दाँत दिखाते हुए कहा—

‘जीजा जी मैंने प्रण किया है, बिटन्ना तथा मैकू भइया जब तक पढते हैं, इनका भार मैं वहन करूँगा । आप इन लोगों को अपने साथ प्रयाग ले जाये । चढ़ भी वही पढेगा । डम छोटे में कस्बे में रेखा क्या है ।’

मैकू मामा ने राखन मामा की पीठ पर हाथ रखते हुये कहा—

‘और तेरी भाभी में अच्छी निभ जायेगी ।’

राखन मामा पिता जी की ओर देखते हुये बोले—

‘सो जब मैं परिश्रम करूँगा । मुझे कौन नहीं चाहेगा । मैं अपने परिश्रम से धान उगाह रहा हूँ । इसका पैसा मेरा होगा । मैं और चढ़ खूब हलुआ और मिठाई खाऊँगा ।’

हलुए और मिठाई खाने की बात सुनकर सब लोग हँस पड़े । मुझसे भी न रहा गया । मैं भी खिलखिलाकर हँसने लगा ।’

पिता जी ने हँसते हुए कहा —

‘वाह राखन वाह, तुम बड़े मस्त आदमी हो। ईश्वर करे तुम ऐसे ही सुखी रहो जीवन पर्यन्त।’

ताल के उस पार से कुछ लोग शोर मचाते लडते हुए चले आ रहे थे। मैकू मामा, राखन मामा सब उसी ओर देखने लगे। मैंने कहा, ‘यह तो बाबू की माँ और उमका भाई मालूम देता है। उससे झगडा करने वाले दो-तीन कोई और व्यक्ति थे।’

बाबू की माँ तेज शब्दों में कह रही थी—

‘यह हमारी मजूरी है, तुम हमारी खाल दे दो; नहीं भला नहीं होगा।’

दूसरा व्यक्ति चीख रहा था—

‘यह हरगिज नहीं हो सकता, यह जनावर हमारे हल्के का है, तुम्हारा इस पर जोर नहीं है। बाबू की माँ तू हट जा नहीं खून खराबा हो जायेगा।’

बाबू की माँ जिसकी फटी मैली धोती का पल्लू अपना स्थान छोड़ चुका था अपना पल्लू नीचे से उठाकर कंधे पर डालती हुई बोली—

‘खून खराबा की घाँस कर देते हो। तुम्ही खून खराबा करना जानते हो। हमें क्या कोई दण्डू औरत समझ लिया है। तुम्हारे ऐसे चार मर्दों से निपट लूँ। निकाल छूँ।’

बाबू के हाथ से खाल निकोने वाला छूँरा अपने हाथ में लेती हुई कह रही थी।

‘चल, निकाल, निकाल अभी देखूँ तेरी मर्दानगी, बड़ा मर्द बना है। मेरे बेटे पर हाथ चलाता है।’

मैकू मामा ने भी पहचान लिया था कि वह बाबू की माँ ही थी। हम लोग आगे बढ़ गये। मैकू मामा ने पूछा—

‘क्या बात है। तुम लोग क्यों लड़ रहे हो?’

बाबू की माँ हाथ फैला-फैलाकर दो-तीन बार हाथों को झटकती हुई बोली—

‘साहब, हमारी चालीस रुपये की खाल, हमने और हमारे बेटे ने इतनी मसक्कत से नोची है, सो छीन रहे है। कहते है हमारी है।’

दूसरा व्यक्ति जिसका लोहे ऐसा रंग था और जिस पर मिट्टी के धब्बे कहीं-कहीं पड़े थे। तहमत को लँगोटी के रूप में जिसने कस रखा था, आँखें लाल किए हुए दाँत निकालता हुआ बोला—

‘बाबू आप हम लोगों के मामले को नहीं समझते। हम लोगों का पुराना झगडा चल रहा है। उमका बेटा हमारे पाँच सौ रुपये लेकर भाग गया था, सो आज गिरफ्त में आया है।’

‘कौन हरामी कहता है, बन्द कर अपनी जबान जो झूठी चोरी लगाई। हमारा घर देख लो। हमारा बड़े-बड़े घरानों में मेल है। हम चोरी करेंगे?’

बाबू की माँ डकरा-डकरा कर कह रही थी।

मैकू मामा ने गभीरता से कहा—

‘बाबू की माँ शात हो जाओ। मुनो, धीमे से बात करते हैं। शान्ति से जो बात हल हो जाती है, फसाद करने से वह बात हल होने के बजाय और बढेगी।’

दूसरे व्यक्ति ने जिसके घुँघराले उलझे हुए बाल हवा से हिल रहे थे अपने मोटे-मोटे होठ फडकाते हुए बोला—

‘बाबू जी यह मसला आप से हल नहीं होने का। आप अपना काम देखें और यह कहते हुए उसने दूर पर पड़ी हुई अपनी पैरगाडी उठाई और जोर से यह कहता हुआ चला गया।

‘देखना है रुपया कैसे नहीं मिलता। यह खाल तो ले जाओ। अब मेरे हल्के में तेरे बेटे ने पैर भी रखा तो उसकी लाश भी न दिखेगी।’

बाबू का भाई चीखता हुआ बोला—

‘तो तेरी लाश क्या बच जायेगी । न कुत्तो से नुचवा दूँ तो मेरा नाम भुल्लू नहीं ।’

उस व्यक्ति के चले जाने पर मैकू मामा बाबू की माँ को समझाने लगे ।

‘बाबू की माँ, तुम्हारा बेटा तो मेरे चढ़ू के साथ पढता है । पढाई यह बाते नहीं सिखाती । तुम कितनी गाली गलौच बकती हो ।’

बाबू की माँ अपने पोपले गाल से मुस्कराते हुए बोली जिससे उसके मसूड़े चमक आये थे । दाँतो पर का मैल स्पष्ट झलक आया था जो लगता था कई दिन से साफ नहीं किए गये थे ।

‘बाबू जी यह हम लोग ऐसे ही बात करते हैं ।’

मैकू मामा शान्ति से बोले—

‘ऐसे ही बात करने से ही लडाई बढती है, यदि शान्ति से बैठकर एक दूसरे की बात सुन लो तो लडाई न हो ।’

बाबू की माँ ने हि हि हि हँसते हुए कहा—

‘सो तो हमारे लोगो मे पचायत बैठ जाती है । यह खुदाई हमारा करेगा क्या । हम पचायत बैठाल देगे । यह हमको धमकी देता है । यह हमारा कुछ नहीं कर सकता । हमारा भुल्लू ही इसको ठीक कर दे ।’

‘फिर देखो तुम उसी बात पर आ गई ।’

मैकू मामा ने धीमे से अपनी गर्दन टेढ़ी करते हुए कहा—

इस पर बाबू की माँ तुरन्त बोल पडी—

‘अच्छा बाबू जी ठीक । क्या करे हम । हमारी बोली ही ऐसी है । यह हम तेज नहीं बोलते ।’

मैकू मामा ने बाबू की माँ को समझाते हुए कहा—

‘तुम्हारा बाबू हमारे चढ़ू का मित्र है । वह अच्छी-अच्छी बाते सीखता है अच्छी सगत मे और तुम उसे इन सब बातों से बरबाद कर दोगी । और मुना है उसकी पढाई भी तुम छुड़वाना चाहती हो ।’

‘क्या करे बाबू जी, हमारे लोगो का खर्चा बहुत है। हमारा खर्चा ही नहीं चलता। फिर फीस के अलावा इतना पैसा किताब कापियो में लगता है कि हम गरीब आदमियो का बस नहीं।’

मैकू मामा ने शान्तिपूर्वक उसके अत करण को परखते हुए पूछा।

‘अच्छा ठीक ठीक बताओ, मैं किसी से नहीं कहूँगा, तुम्हारे बेटे ने खुदाई के पाँच सौ रुपये छीने हैं?’

बाबू की माँ मुस्कराती हुई दाँत के मसूड़े दिखाते हुए बोली—  
‘बाबू जी, आप तो अपने आदमी हैं। बात यह है, वह रुपये इसके नहीं थे। वह एक सरकारी दफ्तर से खुदाई चुराकर ले जा रहा था। बाबू के साथ उसने शराब पी। उसी में भुल्लू ने इमकी खुदाई की पोटली छीन ली। भुल्लू को आगे पुलिस ने पकड़ा क्योंकि खुदाई इसके पीछे-पीछे भाग रहा था शोर मचाता। सो पुलिस वाले ने तीन सौ रुपये अपने हाथ किये। दो सौ रुपये इसके (भुल्लू) के ब्याह में खर्च हो गये। यह हमारी जान खाता है। हम क्या करे।’

यह कहते हुए बाबू की माँ ने धीमे से अपना हाथ आगे करते हुए कहा—

‘बाबू जी आप यह बात किसी से न कहें। आपको ज़मने अपना समझकर सब बता दिया।’

मैकू मामा की मुखाकृति अजीब और अनोखी हो गई। मुझे भी उसके बाबू से घृणा होने लगी। पर फिर मेरे अत करण में बात पैठती कि इसमें बाबू का क्या दोष। मैकू मामा भी बड़े ध्यान से धरती पर देखते रहे और कुछ शात रहकर बोले—

‘अच्छा बाबू की माँ, तुम लोगो का मसला वास्तव में गंभीर है। तुम लोग सबके सब बड़ी बुरी हरकते करते हो। मुझे तो दुख है कि

तुम्हारा बाबू पढ़-लिखकर इससे भी भयानक हरकते करेगा । अच्छा जाओ मैं फिर बात करूँगा ।’

बाबू की माँ सिर नीचा किये हुए चली गई । मैं और मैंकू मामा भी राखन मामा तथा पिता जी के साथ धूप अधिक हो जाने के कारण खेत से वापस आ गये थे ।

गाँधी जी का सत्याग्रह आंदोलन अपने पूर्ण वेग पर था। प्रयाग राजनीतिक उथल-पुथल का केंद्र हो रहा था। विश्वविद्यालय के विद्यार्थी राजनीतिक नेताओं के भाषणों में बड़ी रुचि ले रहे थे। अङ्गरेजी राज्य का शोषण प्रबल रूप धारण किये हुए था। बंदीगृह कांग्रेसी नेताओं से ठूँसे जा रहे थे। ऐसे समय में मैकू मामा, माखन मामा तथा मैं अपने पिता जी के साथ प्रयाग में रहने लगा।

माघ मेला हो रहा था। एक दिन पिता जी के साथ माखन मामा मैकू मामा तथा मैं सभी गये थे। किले के पास वाले बाँध के ऊपर से अपार जन-समूह दृष्टिगत हो रहा था। बाँध के ऊपर से दूर चलते हुए मनुष्य गिलीवर्स ट्रेवल के छोटे मानवों का रूप धारण किए हुए थे। राजा हर्षवर्धन के दान-समारोह में कैसी भीड़ लगती होगी, इस माघ मेले के दृश्य को देखकर सरलता से अनुमान लगाया जा सकता था। अंगरेज महिलाएँ किले में निकल कर भीमकाय हाथियों पर अबीष्टित होकर सर टामस रो के भारत विवरण से लेकर लार्ड क्लाइव, हेस्टिङ्स, वेट्टिङ्स इत्यादि के क्रमिक भारतीय विकास के दृश्य पर एक विहङ्गम दृष्टि डालकर, अपने समय के उन्नतिशील भारत को देखकर अपने गुलाबी ओष्ठों पर भारतीयों द्वारा स्वतंत्रता हेतु बलि चढ़े हुए शहीदों के गाढ़े लाल रक्त लिपिस्टिका को थोपे हुए, जिन पर नगी भूखी जनता द्वारा उड़ाई हुई धूल उनके कृत्रिम वैभव के द्योतक रक्तिम वर्ण के होठों पर अट्टहास कर रही थी। हाथी के चाँदी के झौंड़े के

नीचे पड़ी हुई लम्बी मखमली झूले हिलती डुलती दर्शा रही थी कि सम्राट जहाँगीर ने अँगरेज जाति को भविष्य में सम्पूर्ण भारत में फैल जाने की उदारतावश अथवा मदहोशी में आधारशिला रख दी थी ।

माखन मामा ने मैकू मामा को एक दृश्य की ओर संकेत करते हुए कहा—

‘भट्टया वह देखिये हाथी पर चढ़े हुए अँगरेज उस स्त्री का चित्र खींच रहे हैं ।’

मैं भी ध्यान में देखने लगा । कैची नुमा दो ओर डंडे खड़े थे जिनके बीच में एक मैली मिट्टी से भी अधिक सटमैली चादर बँधी थी । जिसमें एक पाँच वर्ष की बच्ची पड़ी झुलाई जा रही थी । उसके नीचे अगारो की आग जल रही थी । पास खड़ी उसकी माँ घुटनों से भी ऊँची फटी क्षिप्ती धोती लँगोटी नुमा कमे बच्ची को झोके दे रही थी । उसके तार-तार बन्ध में उसके उरोज चमक रहे थे । धूल धूसरित उल्झे लम्बे केश शोषित भारत के नितम्ब को छुपा लेना चाहते थे । उसके पैरों पर फोडा था जिसके भीतर भारत की भूखी नगी जनता का पीप भरा था जिसका गाँधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस आन्दोलन आपरेशन करना चाहता था । मैंने उम पर चढ़ी हुई अँग्रेज महिला को चित्र खींचते हुए मैकू मामा से प्रश्न किया—

‘यह फोटो क्यों उतार रहे हैं ?’

पिनाजी मेरी पीठ पर हाथ रखते हुए बोल पड़े । मैकू मामा कुछ कहने जा रहे थे पर वह पिना जी को बोलता देख आवाक हो गये थे ।

‘यह विलायत जाकर इन चित्रों द्वारा पाश्चात्य देशों में प्रोपोगेन्डा करते हैं कि हम ऐसे भूखे, नग्न भारत की सहायता करते हुए उन्नत बना रहे हैं । भारतवर्ष गरीबों का, पतितों का देश है उसे अँग्रेज जाति शिक्षित बनाकर उचित मार्ग पर ला रही है ।’

मैकू मामा आगे बढ़ते हुए बोले—

‘जीजा जी यह अंग्रेज जाति बड़ी चालाक है। भारतीयों को निराश्रित समझती है। गाँधी जी से पाला लेना सरल कार्य नहीं है। उन्होंने भारतीयों में वह जागृति उत्पन्न कर दी है कि हिन्दुस्तानी इनके छक्के छुड़ा देंगे। यह ‘मिस मेमो’ की ‘मदर इंडिया’ नहीं चलने की। बहुत शोषण कर चुके हम लोगों का।’

यह कहते हुए वह इधर-उधर देखने लगे। मुझमें ‘पूछा माखन कहाँ गया, वह तो यही था।’

मैंने आगे दृष्टि दौड़ाई। माखन मामा एक पडाल के पास खड़े एक महात्मा जी की ओर देख रहे थे। हम लोग भी उसी ओर बढ़ गये। बीच में ऊँचे मंच पर महात्मा जी गेरुआ वस्त्र धारण किए बैठे थे। उनके इधर-उधर शेर और बकरी खुले बैठे थे। इन दृश्य को देखने के लिये उस स्थान पर सैकड़ों व्यक्ति एकत्रित थे। एक व्यक्ति महात्मा जी के मूर्छन कर रहा था।

माखन मामा उन ओर देखकर तथा फिर मैकू मामा की ओर देखते हुए बोले—

‘भइया यह शेर और बकरी पास-पास है और यह शेर शान्त भाव से बैठा हुआ है। क्या यह साधु महात्मा का योग है। यहाँ के लोग यही कहते जा रहे हैं।’

मैकू मामा ने माखन मामा के एक हल्की-सी टीप लगाते हुए कहा—

‘यह योग-भोग कुछ नहीं है। यह है निष्क्रियता का ढोंग। जो अकर्मण्य होता है, वह ही ऐसा कार्य करता है। छोटे से इसे दूध पिला कर दोनों को साथ-साथ पाला है। इसमें कोई विशेष बात थोड़ी है।’

हम लोग आगे बढ़ गये। बाँध के नीचे से मील भर तक करीब पयाल की सड़क बनाई गई थी। उस पर छिड़काव होने पर भी आस-

पान की धूल इतनी घनी आकाश पर छा गई थी कि उसमे चलन एक दुष्कर कार्य था। जन-समूह आगे उमड़ा पड़ रहा था। उस दिन विशेषकर स्नान का दिन था। पयाल की सड़क के इधर-उधर दोनों पट्टियों पर अरहर के सूखे झाँखरो तथा फूस की शोपडियाँ सैकड़ों तथा सहस्रों की सख्या में बनी हुई थी। दूर तक दोनों ओर जिधर ही दृष्टि डाली जाय रेतीला मैदान दिखता था। सामने दूर ऊँचे टीले पर जहाँ दृष्टि रुक जाती थी गंगा नदी की चौड़ी रेखा दिखती थी। बाँध से करीब दो फर्लाङ्ग पर किला तथा उससे लगकर यमुना नदी का अगाध जल शशय श्यामला भूमि-सा चमक रहा था। मैकू मामा तथा पिता जी ने अपने सिरों पर रुमाल बाँध लिये जिससे उनके बाल धूल से बचे रहे। हम लोगो के मुख धूल धूसरित हो चले थे। आँखों की भौंहों तथा वरौनियों तक में धूल बैठ गई थी। एक बार भी थूक घूँटने के लिये मुह चलाने पर धूल की किसकन अवगत होने लगती। पिता जी की मूँछें भी धूल से मैली हो गई थी। हम लोग सभी विदूषको ऐसे लग रहे थे पर वहाँ सभी ऐसे लगने के कारण एक दूसरे पर कोई नही हँस रहा था।

पास ही एक शामियाने के नीचे कुछ व्यक्ति कुर्सियों पर पैट कमीज पहने बैठे थे। कमीज पर टाइयों भी लगी थी। उस समय इस पैट-धारी वेशभूषा को क्रांतिकारी विचारधारा वाले सभ्य लोग कुछ अच्छा नहीं समझते थे, विशेषकर जब कि नेहरू परिवार वालों ने खुले आम टाइयों का जलाना प्रारंभ कर दिया था। हम लोग भी उन लोगो को इस प्रकार बैठा देखकर ठहर गये। उनके पास ही दो-तीन महिलाये कोई साधारण साया पहने हुए तथा कोई उल्टे पल्लू की धोती पहने हुए थी। उल्टे पल्लू की सारी भी बाँधने का रिवाज बहुत ही कम प्रारंभ हुआ था। उनके बीच में एक बूढ़े गोरे पादरी पता नहीं वह अङ्गरेज थे अथवा ऐंग्लो इंडियन अपना उपदेश दे रहे थे। उनका उच्चारण बहुत कुछ मुधरा हुआ था पर क्रियाओं सज्ञायों का प्रयोग

तो गोराशाही था ही 'बाई शाब।' हमारा ईसू मसीह बहुत मेहरवान है। इससे बड़ा दुनियाँ में कोई धरम नहीं है। रावन सीता को हर ले गया। उसको राम बचाया नहीं। वही रावन को खतम कर देता'।

बीच-बीच में एक काले हिन्दुस्तानी भाई अपनी टाई को झुलाते हुए बोल पड़ते।

'हिन्दू धरम का रामायन हिन्दुओं को बलहीन बना देता है, एक घोड़ी के कहने पर राम ने अपनी पत्नी को छोड़ दिया। कैसा धरम है'।

वह गोरा पादरी अपने सामने रखी हुई बाइबिल की पुस्तकें जिनकी जिल्द अत्यंत आकर्षक थी हाथ में उठाता हुआ बोला 'यह लो सब लोग एक-एक किताब मुफ्त देता है। जो ईसाई बन जाय उसको हम फौरन अच्छी नौकरी देगा। सौ रुपया का, डेढ़ सौ रुपया का। जो ग्रेजुएट होगा, उसे ढाई सौ मिलेगा। मुफ्त रहने का बँगला। वह हमारा मिशनरी का काम करेगा।'।

कुछ रुक कर अपने कोट से रुमाल निकालते हुए मुह पोछ कर आगे साहब बोलने लगे।

'जो ब्याह करेगा उनका हम अच्छी औरत से ब्याह करा देगा एक विम्बविद्यालय का विद्यार्थी जो वेषभूषा से विदूषक ही लगता था, अपना कॉलर सम्हालते हुए आगे बढ़कर बोला।

'बायसराय साहब की सुपुत्री से ब्याह करा सकोगे।'।

वह अंग्रेज पादरी अंग्रेजी में बोला, जिसका अर्थ था।

'आप अपना काम देखें। यहाँ रुकने की आवश्यकता नहीं है'।

मैकू मामा अपने कोट की जेब से हाथ निकालते हुए उसकी ओर उँगली से संकेत करते हुए बोल पड़े।

'आप हिन्दू धर्म को इस प्रकार खुले आम क्यों अपमानित करते हैं,' मैकू मामा के बोलते ही वह काले हिन्दुस्तानी ईसाई साहब बोल पड़े 'जो सच बात है, वह हम बोलता है। इसमें अपमानित करने का

क्या बात है, बोलो तुम क्या धोबी के कहने से राम ने अपनी पत्नी को नहीं त्याग दिया' ।

विश्वविद्यालय का लडका जो शेरवानी और ढीला पाजामा पहने था । तथा मखमली टोपी लगाये था ।

‘अरे छोड़िये भाई, यह जिसकी खाते हैं उसकी गाते हैं । इन्हें क्या पता, कौन थे राम और कौन था रावण । कहीं यही उस समय का धोबी तो नहीं है ।’

भीड़ के लोग मुस्कराकर हँस पड़े । पिता जी भी हँस दिये । वह लडका जिमका नाम था पचू अपने दूसरे साथी के पुकारने पर आगे बोल पड़ा उसके साथी ने कहा था ।

‘अरे पचू कहाँ तुम भी धोबी चमारो से अड गये’ ।

पचू ने उनकी ओर देखते हुए कहा—

‘यह तो अपने को लाट गवर्नर समझते हैं अब । यह देखो दो-चार बेचारे गँवारो को पकड़ कर बिठाल रखा है । इस गरीब देश की भूखी जनता को भूखो मार-मार कर ईसाई बनाने का धधा रख छोड़ा है’ ।

वह गोरा पादरी आँख लाल करते हुए चश्मे से झाँकता हुआ बोला ‘तुम जाता नहीं आगे । अभी हम तुमको अरेस्ट ( गिरफ्तार ) करवा देगा’ ।

मैकू मामा जिन्होंने अपने सिर पर का रुमाल खोल दिया था, अपने बालों पर हाथ फेरते हुए बोले ।

‘इसमें अरेस्ट करवाने की क्या बात है । जब आप किसी की बात को उद्धृत करते हैं । मेरा अर्थ है कोट करते हैं किसी बुक ( पुस्तक ) से कोई बात । आपको समझना चाहिये कि वह बात किस प्रसंग, किस वातावरण में तथा किस आशय को लेकर कही गई है । इसके पश्चात् मैकू मामा उसे अंग्रेजी में स्पष्ट करते हुए । ( एज ऐन एनवायरनमेंट इज कनसिडर्ड )’ ।

पचू ने अपनी काली शेरवानी की धूल झडाते हुए कहा—‘यह अरेस्ट करवाने का ही तो साहब के पास जोर है। चलो अच्छा है, दो-चार मेमो का उद्धार ही होगा। इन गरीबों का भला होगा। यह पैटधारी सूट टाई पहनेगे। अच्छी नौकरी पा जायेंगे। तुम्हें क्यों ईर्ष्या होती है तुम चाहो तुम भी इसाई बन जाओ। एक मेम, विलायत जाने का खर्चा सब हाजिर हो जायेगा। तुम तो ग्रेजुएट हो। बगला इत्यादि सब फ्री। आजकल बेरोजगारी ऐमे ही बढ़ रही है।

मैकू मामा पचू की ओर देखकर हँसते हुए बोले—

‘नहीं तो यह लोग बात को बिना समझे कैसे कहते हैं।’

पचू जो कद में कुछ नाटा था, तथा डील-डौल में मुडौल होने के कारण उसका नाटापन अखरता नहीं था, हँसता हुआ बोला

‘यह कोई फिलास्फर थोड़ी है जो तुम्हारी बात को समझेंगे, यह भी तो वही है समुद्र पार के जो यह है।

उन देहातियों की ओर सकेत करते हुए पचू कहता गया।

मैकू मामा पचू को ऊपर से नीचे तक देखते हुए बोले—

‘यह अगरेजी राज है। मनमानी बके जा रहे हैं। शक्ति इनके हाथ में है। यह भारत का दुर्भाग्य ही है। मुगल राज हुआ। तलवार की धार पर गाँव के गाँव हिन्दू मुसलमान बनाये गये। अब अगरेजी राज है। हिन्दू मुसलमान दोनों ही धन और पद के बल पर इसाई बनाये जा रहे हैं।’

पचू ने रूमाल में आँखें साफ करते हुए कहा—

‘तो इसमें भड़पा गलती तो हमी लोगों की है। जिन्ना साहब लीग-लीग चिल्ला रहे हैं। गाँधी जी कहते हैं सब लोग एक हो जाओ।’  
उन इसाईयों की ओर सकेत करते हुए—

‘इन लोगों ने मोचा एक होने का सच्चा ढग यही है। आओ दोनों वर्ग के लोग हमारे कैम्प में एक होकर अगरेजी वेषभूषा, खान-पान,

रहन-महन का प्रचार करो। अपना सब कुछ भूल जाओ क्योंकि तुम सब लडाके हो।’

यह कहते हुए पचू चीख पड़ा—

‘अगरेज बहादुर जिंदाबाद।’

उमके यह कहते ही विश्वविद्यालय के अन्य चार छ साथी मैकू मामा का हाथ पकड़ते हुए बसीटते हुए आगे दो-चार बार नारा लगाते हुए बढ़ गये।

‘जिन्दाबाद जिन्दाबाद भाई मुर्दाबाद’, ‘अगरेज बहादुर जिन्दाबाद नहीं नहीं मुर्दाबाद’, ‘जेल की हवा खाओगे जिदाबाद’ घोषा पाड़े जिदाबाद’।

हम लोग भी पीछे-पीछे चलने लगे। पिता जी भी धीरे-धीरे हम लोगों से कुछ दूर हटकर हम सबको देखते हुए बढ़ रहे थे कि कोई खो न जाये। इधर-उधर के लोग विद्यार्थियों को जोर जोर चीखता हुआ देखकर मुस्कराते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे।

मैकू मामा ने पचू से परिचय किया। पचू बोला मैंने एम० ए०, एल० एल० बी० डबल कोर्स लिया है। अबकी मेरा लॉ फाइनल है। एम० ए० हो चुका पालिटिक्स में।

और आप पचू ने मैकू मामा के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

‘मैंने बी० एस० सी० एग्रीकल्चर में इस वर्ष टॉप किया है। समस्या है, क्या करूँ।’

पचू ने खिलखिलाते हुए मैकू मामा का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा ‘वाह, बड़ी प्रसन्नता हुई टॉपर से मिलकर। तभी आप यहाँ इसाईयो के बीच में टाप कर रहे थे। अब आप राजनीति में टाप कीजिये। मुझसे मिलिये कभी। के० पी० यू० सी० होस्टेल में रहता हूँ।’

भीड़ का रेला आगे बढ़ता जा रहा था। इधर-उधर कपड़ों की दुकानों में भीड़ घुस जाती। दूसरी ओर पूजा-पाठ के विभिन्न बर्तनों की दुकानों पर देहातियों का मेला दिखता। छप्पर तथा टट्टरो पर ऊँची-

ऊँची हलवाईयो की दुकानों पर खूली पूडियाँ तथा मिठाइयाँ बिक रही थी जिन पर एक-एक सूत धूल पड़ी थी जबकि समाचार पत्रों में नित्य प्रशंसा निकलती “माघ मेले का प्रबन्ध बहुत सुन्दर किया गया है। कालरे से बचने के लिये सबके टीके लगवाये गये हैं। कोई भी बिना टीका लगवाये अन्दर नहीं जा सकता। सैनीटेशन का बहुत सुन्दर प्रबन्ध है, इत्यादि।’

देहाती लोग खुली चाट खाकर वही दोने फेक रहे थे। एक ओर दोनों का ढेर था कोई देहाती वही बैठा वमन कर रहा था। हलवाई निधडक मक्खियों से भिनकता हुआ सामान बेच रहे थे।

सामने पड़े अपने तखत डाले स्नान का सर्व प्रबन्ध किये हुये बैठे थे। यहाँ उनके छप्परो पर महस्त्रो पताकाये लहरा रही थी। किन्हीं पर भिन्न-भिन्न वर्णों की पताकाये थी किन्हीं पर कनस्टर, सूखी लौकियाँ अथवा टूटी मचिया अपने यजमानों के पहचान के लिये टंगे दीखने लगे। वही पर सगम था। अपार भीड़ नावों पर चढ़ चढ़कर दूर जा रही थी। निर्धन लोग गंगा, यमुना के जल के मिले हुए छिछले गंदे जल में ही छपछपाकर अपने सस्कारों से पोषित विश्वास की पूर्ति कर रहे थे कि स्वर्ग की सीढ़ी पर चढ़ने का मर्टीफिकेट उन्हें प्राप्त हो गया है। बहुत से धनोमानी तथा निर्धन पड़ो के चगुल में आकर सैकड़ों वर्ष पूर्व के योरोप के पोप के समान उन पड़ो को अपना सब कुछ सौंपकर स्वर्ग का प्रमाण-पत्र उनके आशीश के रूप में ले रहे थे।

वर्षाकाल में जहाँ बाँध से लेकर नैनी, झूँसी तक जल ही जल दृष्टिगत होता है। इस वसन्तागमन के समय वह अगाध सागर जैसा दृश्य गंगा, यमुना की क्षीण धाराओं में परिवर्तित हो गया था। राजा हर्ष के समय से लोग जिस सगम में स्नान कर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं, वह विश्वास भोली भाली जनता अपने हृदय में संचित कर मटमैला जल ही एक बोतल में भर लेती है। फिर भी चाहे वह बीच धार का स्वच्छ जल न भी हो उनके बहुत से रोग उसके पान से दूर

हो जाते हैं। वह अपना सब कुछ बेचकर डाक्टर के लिये सुमज्जित बगले बनवाने, उनके बेटों के लिये विलायत जाने का व्यय, उनके स्वयं के विलासितापूर्ण जीवन में सहायक होने से बच जाते हैं।

आकाश पैदल चलने वालों द्वारा उड़ाई हुई धूल से घूमिल हो जाने के कारण सूर्य की रश्मियों का प्रकाश भी क्षीण पड़ गया था। गंगा, यमुना के उम पार की क्षीण हरे-भरे पेड़ों की अवलियाँ साड़ी में टँकी हुई बेल के सदृश दृष्टिगत हो रही थी। दूसरी ओर दारागज वाला रेल का गंगा के ऊपर का पुल अधर में एक ओर से दूसरी ओर खिंची हुई रज्जु-सा दिखाई दे रहा था। सगम के पास से दूर यमुना के पुल की क्षीण रेखा क्षितिज में विलीन हो जाने के कारण अपना अस्तित्व भी प्रदर्शित नहीं करना चाहता था। सामने मुगल सम्राटों का बनाया हुआ किला अपने वैभव के दिन याद करता हुआ अपनी जर्जर अवस्था में भी व्यग्रात्मक अट्टहास कर रहा था। बाँध पर से उतरता हुआ अपार जन-समूह चींटियों सा स्नान करने के लिये उमड़ पड़ रहा था। सड़क की एक पट्टी से होता हुआ नागा साधुओं का समूह स्नान के लिये पक्तिबद्ध होकर बढ़ रहा था। सगम पर सहस्रों नौकायें अगणित यात्रियों से भरी हुई एक हल्के झटके से भी महसूस करने की जीवित समाधि बनाने की तैयार थी क्योंकि यात्रियों का पूर्ण विश्वास जो था कि सगम में प्राण विसर्जित होने से सीधे स्वर्ग में उन्हें स्थान मिलेगा। मुमित्रानन्दन पंत की 'तपस्विनी' का दर्शन कर सभी लाभ उठा रहे थे।

जैसे ही हम लोग सगम के निकट पहुँचे। रमन तथा सरला एक नाव से सगम की ओर जाते दिखे। सगम के किनारे वाली धार छिछली होने के कारण लोग उस पार गहरे जल में नाव द्वारा ही जा रहे थे। मैकू मामा ने ठीक से सरला जी को पहचान लिया था। पिता जी किनारे पर ही रुक गये थे। मैकू मामा ने मुझे अपने साथ लेकर नाव

द्वारा ठीक सगम के गहरे जल में ही जाना उचित समझा। मेरी नाव भी आगे बढ़ने लगी।

मैकू मामा डॉड हाथ में लेकर नाव खेने लगे। नाव वाले ने कहा—

‘भइया भीड़ बहुत है, आप से नाव नहीं चलेगी।’

मैकू मामा ने प्रति उत्तर किया—

‘नहीं जी, मैंने इसमें भी कहीं अधिक भीड़ में नाव खेई है।’

नाव भीड़ को चीरती हुई अन्य नावों के कभी कोनो से टकराती हुई, कभी नाव वाला दूसरी नाव को पास आता देख हाथ से दूर ढकेल देता जिससे उसकी नाव अन्य नावों के बीच होती हुई अपने निदिष्ट स्थान को शीघ्र पहुँच गई।

मैकू मामा ने रमन को आवाज दी।

रमन ने उत्तर दिया।

‘हलो मैकू! वाह खूब मिले।’

मैकू मामा नावों की भीड़ में चार-छ नावों पर पैर रखते हुए उसकी नाव पर पहुँच गये। मैं भी पीछे-पीछे दो नावों के बीच के जल को देखकर डरता हुआ पैर रख-रख कर वहाँ पहुँच गया।

सरला ने मेरा हाथ पकड़ लिया। वह अपने कान के टॉप्स झुलाती हुई मैकू मामा की ओर देखती हुई फिर मेरी ओर देखकर कहने लगी।

‘कहो चट्टू, अच्छे रहे। कैसी भीड़ है। कैसा अच्छा मेला है, तुम्हें अच्छा लगा।’

मैंने धीमे से उत्तर दिया—

‘जी बहुत अच्छा लगा।’

सरला जी ने मैकू मामा की ओर देखकर फिर मुझसे प्रश्न किया।

‘कहो चट्टू तुम्हें सबसे अच्छा क्या लगा?’

मैंने विनोद करते हुए सरला जी की ओर गौर से देखते हुए कहा—

‘मुझे एक स्थान बहुत अच्छा लगा जहाँ लोग इसाई बनाये जाते हैं। मैकू मामा इसाई बनने जा रहे हैं।’

सरला ने कौतूहल भरी हँसी हँसते हुए कहा जिससे उसकी भौहे सिकुड़ गई थी तथा मुँह फैलाकर हँसने का प्रयत्न कर रहा था पर हँसी फूट नहीं पा रही थी।

‘क्या तुम लोग इसाई बन रहे हो।’

रमन ने सरला को यह कहते हुए सुन लिया था। रमन ने मैकू मामा की ओर देखकर हँसते हुए कहा—

‘क्या मैकू तुम इसाई बनने जा रहे हो ? यह चढ़ू क्या कह रहा है ?’

मैकू मामा ने सरला जी को देखकर रमन से हँसते हुए उत्तर दिया।

‘इनमें हर्ज ही क्या है। विलायत जाने का सारा व्यय फ्री मिलेगा।’

रमन ने तपाक से उसके वाक्य में दूसरा वाक्य जोड़ते हुए कहा—

‘और एक सुंदर सी मेम भी मिलेगी।’

मैकू मामा ने रमन की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा—

‘वह तुम्हारे लिये वहाँ से वैरग भेज दूँगा।’

इतने में पास ही एक नाव हम लोगो की नाव से टक्कर खा गई, जिससे मैंने नीचे को झुककर अपने हाथ टेक दिये। मैकू मामा रमन तथा सरला तीनों एक दूसरे से भिड़ गये। सरला ने एक हाथ मैकू मामा का पकड़ा। रमन ने दूसरा हाथ सरला का पकड़ा तथा एक हाथ से मैकू मामा का सहारा लिया, अन्यथा तीनों ही जल में गिरते, क्योंकि वह सब नाव के किनारे ही खड़े बाते कर रहे थे।

तीनों एक साथ बोल पड़े—

‘अरे भाई इस समय गजब हो जाता, पानी में गिरते जाकर।’

सरला जी गोल मुँह करते हुए भयभीत होकर बोल पड़ी।

‘अरे मैं तुम लोगो का हाथ न पकड़ती तो जाती इसी जल में।

और अचानक जल में गिरने से तो होश भी न आता।’

मकू मामा हँसते हुए बोल पड़े—

‘अरे मैं तुम सबको जल से निकालकर यही खड़ा कर देता ।’

भीड़ की ओर सकेत करते हुए मैकू मामा ने कहा—

‘कितनी भीड़ है देखिये तो । नावे एक दूसरे से कैसी सटी हुई है ।’

सरला जी ने मुस्कराते हुए कहा—

‘स्वर्ग में ऐसी भीड़ लगेगी कि स्थान ही नहीं मिलेगा ।’

रमन ने अपना कोट उतार कर नाव पर बिछी हुई चटाई पर रखते हुए कहा—‘जभी तो मैकू इसाई बन रहे हैं कि उस ओर से ही स्वर्ग में प्रवेश मिल जाये ।’

रमन के ऐसा कहने से सब लोग हँस पड़े । मैकू मामा भी खिल-खिलाकर खूब हँसने लगे ।

रमन एक ओर जहाँ महिलाओं का झुंड स्नान कर रहा था, सबकी दृष्टि बचाकर उसी ओर गौर से देख रहे थे । स्नान करने के पश्चात् स्त्रियाँ नावों पर चढ़कर अपने वस्त्र बदल रही थी । पड़ो ने नावों पर ही अपनी मनमानी का सारा सामान रख छोड़ा था । उनके शरीर से चिपके हुए वस्त्र उनके अवयवों के किनारों को और भी स्पष्ट कर रहे थे । रमन ने धीरे से कहा—

‘यहाँ न हुए मैथिल कवि विद्यापति

‘उर हिल्लोलित चाँवर केश

चाँवर ढाँपल कनक महेश

तनसुख सुवसन हिरदय लाग

जे पुरुष देखब ते बड भाग ।’

उधर सरला जी ने धीमे से मैकू मामा की ओर देखते हुए—

‘तो क्या मैकू, तुम वास्तव में इसाई बनने जा रहे हो ।’

मैकू मामा ने हल्की हँसी हँसते हुए तथा पैनी दृष्टि बनाते हुए कहा—

‘और तुम्हें भी तो हमारे साथ इसाई बनना होगा ।’

सरला शान्त हो गई थी। उनकी साँसे तेज हो गई थी। वह नीचे जल में अपने तथा मैकू मामा के प्रतिबिम्ब को ध्यान से देखती रही।

रमन ने मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा—

‘कहो मैकू जी नहाओगे नहीं। मैं तो नहीं नहाऊँगा। मैं तो भाई मेला देखने आया था।’

मैकू मामा ने आग्रह करते हुए कहा—

‘यहाँ तक आये हैं तो स्नान कर ही लिया जाय। मैं तो अडरवियर पहने हूँ। अवश्य नहाऊँगा।’

रमन ने नाव पर पत्थी मार कर बैठते हुए कहा—

‘भाई मुझे तो स्वर्ग जाना नहीं। मुझे नर्क में ही स्थान नहीं मिलने का। मैं तो महान पातकी हूँ। मेरे भगवान मुझे अवश्य शरण देगे।’

ऐसा कहते हुए रमन ने विनयपत्रिका की ‘जो पै दूसरो कोउ होइ’ वाले पद की एक पक्ति दुहरा दी।

‘एक मुख क्यों कहों कहनासिधु के गुन गाथ।

भक्त हित धरि देह काह न कियो कोसल नाथ।

रमन जैसे ही यह पक्तियाँ उच्चारित कर रहे थे। दूसरी नाव से सरला की क्लास फेलो उसके पास आती हुई बोल पड़ी—

‘हलो सरला, खूब मिली।’

दोनों ही एक दूसरे का हाथ लेकर हँसने लगी।

वह रमन से परिचित थी। उसने रमन से नमस्ते की। रमन ने भी गम्भीरतापूर्वक सकपकाते हुए अपनी उतारी हुई कमीज चढ़ा ली। रमन ने गले में कमीज डालते हुए कहा—

‘कहिए बीना जी, कैसी भीड़ हो रही है।’

बीना ने सरला की ओर फिर उसके भाई की ओर देखते हुए कहा—

‘कहिये आप क्या तुलसीदास जी की पक्तियों का सगम पर पाठ कर रहे हैं।’

‘ओ मै पातकी और पाठ । मै किस योग्य ठहरा । जब मैं जानता हूँ मैं घोर पापी हूँ । तुलसीदास जी बड़े उदार थे तभी तो उन्होंने हमारे ऐसे अर्धमियो को भी भगवान की शरण में जाने को कहा है । भगवान सबको शरण देते हैं फिर पापियो को तो अवश्य तारते है ।’

मैकू मामा ने प्रति उत्तर किया—

‘रमन जी आपका विश्वास ही आपको तार देगा, अच्छा आप तुलसी के पछिलगा तो बने ।’

रमन ने अपनी घड़ी की चेन ठीक करते हुए कहा—

‘अरे भाई मैकू तुम क्रिस्तान बनकर स्वर्गारोहण करने जा रहे हो, तो क्या मैं इस संगम से जो सीधी सीढ़ी स्वर्ग को गई है उन पर आरोहण करने का प्रयत्न भी न करूँ ? यहाँ से तो स्वर्ग सीधा दृष्टिगत हो रहा है । पड़ो द्वारा गंगा जी में चढ़ाने के निमित्त दिया हुआ जल मिश्रित दूध मेरा जैसा भक्त अधे कवि की वह पक्ति याद कर लेता है ।’

धेनु दुहत अति ही रति बाढी ।

एक धार दोहनि पहुँचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढी ।

बीना जी ने रमन की पुष्ट बाहुओं की ओर दृष्टि डालते हुए कहा—

‘क्या दूसरी धार आप यहाँ बैठे-बैठे जिन स्वर्ग की अप्सराओं को देख रहे हैं उनकी ओर जा रही है ।’

बीना के इस वाक्य पर सब खिलखिलाकर हँस पड़े ।

पास ही एक पड़ा रमन की ओर एक छोटी सी एक डच लम्बी तथा आधी डच चौड़ी मिट्टी की कुल्हिया में दूध बढाते हुए बोला—

‘लीजिए साहब । गंगा माई को दूध चढ़ाने से परलोक में कामधेनु उपलब्ध होती है ।’

रमन ने मखौल करते हुए गम्भीरता से कहा—

अरे भाई स्वर्ग तो दूर रहा मुझे यही कोई कामधेनु मिल जाती तो हमारी पढ़ाई सार्थक हो जाती ।’

‘ऐसा क्यों कहते हो बाबू साहब, आपको क्या कमी है। आप तो सर्व सम्पन्न हैं। इस पड़े को चार आठ आना का लाभ हो जायेगा।’

रमन पड़े के हाथ से दूध की कुल्हिया लेते हुए गगा जी में जैसे ही उडेलने लगे, मैकू मामा ने बीच से जोरो से फूँक मार दी जिससे कुछ दुग्ध सरला तथा बीना पर जा पड़ा, बाकी दूध सगम की धार में बह कर जल के सदृश बनकर विलीन हो गया।

बीना ने अपनी चोटी पीछे से पकड़ कर सामने उँगलियों में दबाते हुए कहा—

‘अब आपको किसी पोप के सर्टीफिकेट की आवश्यकता नहीं होगी। स्वर्ग का आयरन गेट आपको देखते ही खुल जायगा।’

पड़े ने मैकू मामा तथा रमन के मखौल को देख कहना प्रारम्भ किया—

‘क्या बाबू आप लोग सगम ऐसे पवित्र स्थान पर परिहास करते हैं। शुद्ध हृदय से दुग्ध तर्पण करने से वैकुण्ठ निवासी विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं।’

सरला जी ने सामने किसी नाव पर कोई पड़ा किसी से गऊदान करवा रहा था, उसे देखकर मैकू मामा की ओर सकेत करते हुए कहा—

‘आप भी गऊदान करवा लीजिये। गाय की पूँछ पकड़कर बैतरणी पार कर सकेंगे।’

आगे बीना के हाथ पर अपना हाथ मारते हुए बोली—

‘देखो बीना वह आदमी कैसे नाव पर ही बछिया की पूँछ हाथ में लेकर अनुष्ठान कर रहा है।’

यह कह कर दोनों ही खिलखिलाकर एक दूसरे को ढकेलती हुई हँस पड़ी, जिससे नाव डगमगा पड़ी।

रमन ने उस दूध वाले पड़े से प्रश्न किया जो घुटने से ऊपर तक ऊँची धोती चढ़ाये था तथा जिसके घुटनों के नीचे तक जल था। उसके एक हाथ में जल-मिश्रित दूध का नोटा था।

‘क्यों जी यह पडा हम दोनो से गोदान करवा सकता है। मैं गाय के सींग पकड़ूँगा तथा रमन गाय की पूँछ’ ।

दूध वाला पडा झुझला उठा ।

‘अच्छा बाबू जी हमारा पैसा दीजिये, आप लोग मजाक के सिवाय कुछ और भी करते हैं, गंगा माई नाराज हो जायेगी’ ।

वीना और सरला ठठाका लगाने लगी । वीना ने हँसते-हँसते सरला के कँधे पर हाथ रख दिया था ।

उधर एक टिटहरी टी,टी करती हुई जल में गोता लगाती हुई उड़ गई । पास ही एक सील का उमड़ता हुआ घड़ जल के बाहर दिखा और वह जल के अंदर घुस गई ।

रमन ने अपनी आँखें नचाते हुए पतलून की जेब से एक आना निकालकर जैसे ही पड़े के हाथ में रखा पडा फिर बोल पड़ा ।

‘यह एक आना बाबू जी रख लीजिये । आपके काम आयेगा । गंगा जी आपका भला करें’ ।

मैकू मामा ने अपनी बनियाइन सम्हालते हुए कहा—

‘इसमें इतना जल देवता मिला हुआ है, और इस दूध का क्या दिया जाय । शुद्ध दुग्ध तर्पण करने से शुद्ध कामधेनु मिलती है अन्यथा अडलट्रेटेड मिलाकटी डाल्डा घी देने वाली कामधेनु मिलेगी ।

वीना रमन की ओर देखते हुए हँस पड़ी । सरला मैकू मामा की “बुद्धि की याद देनी लगी ।

‘ठीक यह बिल्कुल सही कहा आपने । यह तो हम लोग यहाँ रिसर्च कर रहे हैं । आला लगाकर देखिये इसके दूध में कितना पानी था’ ।

मैकू मामा दूर दृष्टि डालते हुए जहाँ लहरे तेज बह रही थी बोले—  
‘भगवान ने यमुना का जल इसीलिये हल्का हरा बनाया है जिससे दूध में जल मिलाने से तुरत पकड़ हो जाय’ ।

रमन ने भी मैकू की पीठ ठोकते हुए कहा—

‘गावाग, और गगा जी का जल इसी लिये मटमैला है । पर डाल्डा घी मे रग मिलाने को लोग मोचते ही हैं ।’

पडा शान्त भाव से उन लोगो की ओर तरेरता हुआ आगे बढ़ गया । दूर नौकायें तिरती हुई किले की ओर बढ़ी जा रही थी । बीच धार मे कई आदमी गोते लगा रहे थे नाव मे बैठे यात्रियों से कहते हुए ।

‘बाबू जी एक आना फेकिये, देखिये मैं जल के नीचे से निकाल कर ले आऊँगा । जान की बाजी लगाता हूँ’ ।

किसी यात्री के पैसा फेकने पर वह पाँच हाथियों की गहराई से पैसा निकाल कर तैरते हुए दूसरी नाव की ओर बढ़ रहे थे । दूर यमुना के किनारे-किनारे मछेरो के मछली मारने के जाल एक पक्ति मे बाँसो पर लटके दिख रहे थे, जो उड़ते हुए पक्षियों के लिये सरिता का कूल नापने मे सहायता प्रदान करते थे ।

वीना अपनी माँ के साथ आई थी । उसकी माँ भी दूर अपनी नाव छोड़कर उसके पास आ गई थी । सभी एक साथ वापस होने की तयारी करने लगे । उन लोगो की नाव एक ओर से मैकू मामा तथा दूसरी ओर से रमन के डॉडो से नावो की भीड़ को चीरते हुए आगे हो रही ।

जैसे हो यह लोग किनारे आ लगे । पिता जी जो वही प्रतीक्षा कर रहे थे, साथ हो लिये । सभी थके हुए गभीरतापूर्वक सिर नीचा किए हुए बालू के ढेर पर सम्हाल-सम्हालकर पैर रख रहे थे । सिरो पर बालू की धूल पड़ रही थी । बालू मे पैर धँसने से गड्ढे बन जाते जो औरो के चलने से मिट जाते ।

मैंने पिता जी की उँगली पकड़ते हुए उनके चरणो से बनाये हुए गड्ढे को ध्यान से देखकर कहा—

‘पिता जी यह पैर के चिन्ह ऐसे ही क्यों नहीं बने रहते । इन पर और लोग पैर रखेंगे और यह मिट जायेंगे’ ।

पिता जी ने वीना की बूढ़ी माँ की ओर देखते हुए कहा—

‘हम बूढ़े लोग अपने अनुभव पीछे छोड़ जाते हैं । नई पीढ़ी के

लोग अपने नये अनुभवों से पुरानी बातों को मिटा देते हैं तथा उनके स्थान पर अपने नये अनुभवों की छाप लगा देते हैं, जो उस युग का मार्ग-प्रदर्शन करने में सहायक सिद्ध होते हैं ।’

वीना की वृद्धा माता पिता जी की ओर ध्यान से देखने लगी । पिता जी नीचे दृष्टि गड़ोये आगे बढ़ रहे थे । मैं उनके पैरों के चिन्हों पर अपने छोटे पद-चिन्ह रखता जा रहा था । सरला तथा वीना एक दूसरे का हाथ पकड़े अपनी चप्पलों की बालू को सम्हालकर झारती हुई चल रही थी बालू के टीले के पार पड़ों की झोपड़ियाँ जो अपने यजमानों को टिकाने के निमित्त बनाई गई थी दृष्टिगत होने लगी । मिठाई वालों की दुकानें पार कर हम लोग प्याल वाली सड़क पर हो रहे ।

जैसे ही हम लोग प्याल वाली सड़क पर आये ही थे, कि एक बारगी यमुना पट्टी की ओर में घुए के बादल आकाश की ओर बढ़ते दिखाई दिये । लोग एक दूसरे से कह रहे थे—‘वह यमुना पट्टी में अग्न लग गई ।’

हम लोग भी सकपका गये । वीना और सरला सहम सी गई । वृद्धा भी भयभीत आवाज में बोल पड़ी ।

‘क्या आग लग गई ?’

मिनट भर में लपटे दूर भागने लगी । एक झोपड़ी से होती हुई दूसरी फूम की झोपड़ी में आग लगते देर न लगी और वह अग्नि की लपटे आकाश की उल्का समान बाँध से नीचे की ओर बढ़ती दिख रही थी । धुआँ और भी घना हो गया था । लोग बाँध पर से नीचे की ओर लंगियों में हँसिये बाँधे हुए सैकड़ों की सख्या में भाग रहे थे । यह दृश्य सगम तथा बाँध के बीचोबीच में दृश्यमान था । मैकू मामा रमन तथा पिता जी ने अपनी चाल तेज कर दी थी । मैं भी पीछे-पीछे भाग-भाग कर चल रहा था । वीना, सरला तथा वीना की माँ भी

पट्टी के उस पार सहमी-सहमी बढ रही थी। लोगो का शोर सुनाई देने लगा। कोई कह रहा था।

‘अरे आग और भी बढ रही है। फूस की झोपड़ियो की पत्ति की पत्ति सफाया हो रही है। भीड उसी ओर भाग रही थी। पास के दुकानदार डरे हुए थे। ऊपर आकाश में बहुत ऊँचाई पर चीलो का झुंड मँडरा रहा था। लपटे और तेज हो गई। यमुना पट्टी की ओर से बहनी हुई बसती बयार लपटो को प्रज्ज्वलित करने में और भी सहायता प्रदान कर रही थी। हम लोग भी ठीक उस स्थल पर पहुँच चुके थे।

पिता जी हम सबको लिये पयाल वाली सडक पर खडे थे।

एक बारगी कोहराम-सा मचा। किसी स्त्री बच्चो के जलने से चीत्कार का शब्द सुनाई दिया। मैकू मामा से न रहा गया। मैकू मामा आगे बढ गये थे। उन्होंने अपना पाजामा उतार फेका। नीचे अडरवियर था। वह लपटो से होकर किसी वृद्धा को निकाल रहे थे। उनके आसपास लोग हँसिये से बाँसो और फूस को अलग कर रहे थे। वृद्धा की बहू चीख रही थी। मैकू मामा एक हाथ से फूस के एक टट्टर को अलग कर रहे थे। दूसरे हाथ से पहले वृद्धा को घसीटा फिर उसकी बहू को टट्टर के बाहर घसीटा। वृद्धा रो रही थी।

‘हाय दइया मेरे एक हजार के नोट टट्टर में खोमे रखे थे। कहाँ गये। मैकू मामा की कमीज के पीछे का भाग जल चुका था। किसी ने पीछे से उन्हें अपनी ओर घसीटा। उन पर बालू का ढेर फेका। बालू उनके आँख में जा गिरी। वह वही घडाम से गिर पडे। स्काउटो का रेला आ गया था। किसी स्काउट ने उन्हें उठा कर बाहर ला खडा किया।

पिता जी के साथ सब सब भाग कर वही आ गये।

रमन चीख रहे थे हाथ बढा बढा कर—

‘मै कह रहा था, मैकू वहाँ मत जाओ। यह हमारे तुम्हारे बूते

का काम नहीं है। यह जो इस कार्य में अभ्यस्त होता है वही कर सकता है। मैकू तुमने यह क्या किया।’

मैकू मामा अचेत पड़े थे। पिता जी उनके मथे को सुहला रहे थे। उनकी पीठ झुलस गई थी। सरला, बीना सभी उनके पास बैठ गये। स्काउट सबको हटा रहे थे। इतने में एम्बुलेन्स आ गई। स्काउटो ने उन्हे उठाकर औरो के साथ ऐम्बुलेन्स में स्ट्रेचर पर लिटा दिया।

एक सप्ताह रह कर अस्पताल से मैकू मामा घर आ गये थे। अभी वह ठीक से उठ बैठ नहीं सकते थे। रमन तथा सरला भी पिता जी के घर पर ही उपस्थित थे। मैकू मामा को करवट लेने में कठिनाई हो रही थी। रमन ने मैकू मामा को करवट लेने के लिये सहारा देते हुए कहा—

‘मैकू तुम उस दिन एक बारगी उस आग में कूद ही क्यों पड़े।’

मैकू मामा ने पैर सीधे करते हुए कहा—

‘मैं समझता हूँ दूसरो के जीवन की रक्षा करने के लिये यदि अपने जीवन को खतरे में डाला जाय उससे बड़ा कार्य ससार में नहीं हो सकता। यदि मेरे प्राण भी उस समय चले जाते, तो मैं प्रसन्नतापूर्वक मरता। मुझे सतोष है कि मैंने उस दिन उस झोपड़ी की वृद्धा, उसकी बहू तथा उसके बच्चों को अग्नि शिखा की ज्वालाओं से घसीट कर उन लोगों की प्राण रक्षा की।’

माखन मामा पाम ही बैठे थे, उनकी ओर सकेत करते हुए मैकू मामा ने कहा—

‘जाओ माखन स्टोब पर चाय तयार कर लो।’

सरला जी ने मैकू मामा की ओर ध्यान से देखते हुए कहा, उनकी सारी का पल्ला कंधे से नीचे आ जाने से सम्हालते हुए आगे बोली—

‘आप अपनी तबियत सम्हालिये। हम लोगो के चाय की चिन्ता न करे।’

मैकू मामा ने टाँग सिकोडते हुए सरला जी की ओर लेटे-लेटे कहा—

‘मैं अपने लिये चाय के लिये कह रहा हूँ ।’

सरला जी रमन की ओर देखते हुए बोल पड़ी—

‘तो मैं चाय बनाये देती हूँ, आप निश्चिन्त रहे ।’

मैकू मामा ने मुझसे स्टोव वही ले आने के लिए कहा और सरला जी ने हम सबकी महायत्ता से वही चाय तयार कर दी ।

मैकू मामा चाय का सिप लेते जाते थे, सरला तथा फिर रमन की ओर देखते हुए बोले —

‘आज इतने दिनो बाद आप लोगो के साथ चाय पीने में बड़े आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ । जीजा जी के घर पर कोई स्त्री न होने के कारण हम लोगो को घर की महाराजिन पर ही निर्भर रहना पड़ता है । वह समय पर आती है, खाना बनाकर चली जाती है । जीजा जी प्रेस के काम से बाहर ही रहते हैं । यह माखन और चटू ही हमारी देखभाल करते हैं ।’

रमन ने मैकू मामा के प्रति सहानुभूति दर्शाते हुए कहा—

‘हम लोग होस्टल से कहो कुछ दिनो के लिये अनुमति लेकर यहाँ आ जायें जिससे तुम्हारी सेवा करने में सहायता हो सके ।’

मैकू मामा ने अपने सिर के नीचे की तकिया सम्हालते हुए कहा —

‘नहीं इसकी क्या बात है । यह लोग तो हैं ही । घर पर मिट्ठन भइया तथा जयराखन बहुत घबरा गये हैं । मैंने इन लोगो से कह दिया था कि साधारण रूप में ही वहाँ सूचना दे, पर पता नहीं माखन ने क्या लिख दिया । जयराखन नहीं मान रहा है, वह तुरत आने वाला है ।’

रमन ने कुरसी ही पर एक घुटने पर दूसरे पैर का घुटना रखते हुए कहा—

‘जयराखन बेकार आ रहा है, मैं उसे न आने का पत्र डाल दूँगा ।

वह खेती में अच्छा खासा लगा हुआ है। यहाँ आकर केवल तफरीह के अतिरिक्त और वह क्या करेगा। तुम्हारी तबियत करीब-करीब सम्भल ही गई है।

सरला जी रमन की ओर देखकर फिर मैकू मामा की ओर देखते हुए बोली—

‘अब आप काफी विश्राम करे, अधिक न बोलें और न बहुत विस्तर पर हिलने-डुलने की आवश्यकता है।’

रमन कुछ दिन अपने पुराने होस्टल में अपने साथियों के साथ रहे। इसके पश्चात् उन्होंने फाफामऊ रोड पर एक छोटी सी काँटेज लेकर वकालत प्रारम्भ कर दी। सरला होस्टल में रहती थी पर बीच बीच में वह अपने भाई के यहाँ आ जाती थी। रमन हाल ही में अपनी पढ़ाई से निवृत्त हुए थे, अतः विश्वविद्यालय के उनके साथी बहुधा उनके घर पर जमघट लगाये रहते। सरला के साथ उसकी सहपाठिने भी रमन की काँटेज पर आ जाती थी। कुछ दिन तो रमन के तफरीह में गये पर धीरे-धीरे रमन अपने मुकदमों में लगते गये। जैसे-जैसे उन्हें कुछ आय होती गई वह अपने व्यवसाय में रुचि दशति गये। एक दिन सध्या समय उनके एक मित्र जो उनमें कुछ पुराने थे तथा उन्हीं के पेशे में हाथ बँटा रहे थे, कोर्ट में उन्हीं के साथ आ गये थे। मैकू मामा मुझे लेकर बहुत दिन बाद रमन से मिलने गये। काँटेज के बाहर बरामदे में चार बेत की कुर्सियाँ पड़ी थी जिनपर हरे रंग की मखमली गद्दियाँ थी तथा उनपर पीले रेशम से कढ़ाई की गई थी। सरला भी वही थी। हम सब कुर्सियों पर बैठे थे। रमन ने अपने वकील मित्र से परिचय करवाया ‘आप मिलिये मेरे मित्र श्री मैकूलाल जी से, तथा आप हैं रमानन्द माधुर साहब’ आगे अपने दोनों हाथ बेत की कुरसी के गोल डंडों पर कुरसी की गोलाई से सटाते हुए बोले—

‘आप बड़े समाज सेवक हैं, आप बी एस. सी. कर चुके हैं, आज-कल आपकी रुचि देश-सेवा की ओर जा लगी है।’

रमानन्द कुछ मुस्कराते हुए बोले, जिससे उनके होठों के कोनो पर शिकने पड़ गई थी जो यह दर्शा रही थी मानो वह कोई व्यग करने जा रहे हो ।

‘भाई रमन जी, मेरे पिता जी कहते हैं कि गाँधी जी ने बहुतो का जीवन चौपट कर दिया है । यह वेचारे नवयुवक किन-किन अभिलाषाओं को लेकर अपनी पढाई पूरी करते हैं और उसके बाद यह देश-सेवा का ढोंग सबकी जिंदगी को बर्बाद कर देना है ।’

अपनी टाई सम्हालते हुए आगे बोले—

‘मिस्टर रमन जी आप मुझे माफ़ फरमायेंगे, मैं आप पर कोई फबती नहीं कस रहा हूँ मैं यह जेनरल बात कह रहा हूँ, जो आज बड़े-बूढ़े कहते हैं ।

मैकू मामा मुस्करा दिये जिससे उनके नथुने चौड़े हो गये थे । मुस्कराते हुए बोले—

‘आप भी तो मेरे लिये बड़े बूढ़े हैं ।’

रमानन्द माथुर फिर से अपनी टाई के नीचे का कोना पकड़ते हुए बोले—

‘देखिये मैंने कहा था ना, इंडिया का हर समाज सेवक बड़ी जल्दी बुरा मानता है । वह बहुत सेनसिटिव होता है । मैं तो करीब आप ही की आयु के आसपास का हूँ । इंग्लैंड में यदि आप किसी को बूढ़ा कह दें तो वह बुरा मान जाता है ।

मैकू मामा ने फिर से सरल मुस्कान में ही उत्तर दिया—

‘तो कहिये आप बुरा मान गये, मैं तो समाज-सेवा करने वाले को बहुत अच्छा समझता हूँ । अभी हाल ही में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भूकम्प पीड़ितों के लिये कितना धन एकत्रित किया था । मुजफ्फरपुर तथा मुंगेर जा-जाकर उन्होंने अपने हाथ से मलवा साफ़ किया बच्चों की लाशें खोद-खोदकर स्वयं सेवकों के साथ अपने हाथ से

निकाली। क्या यह एक बड़े सम्पन्न घराने के नामी वकील के बेटे वकील द्वारा नहीं हुआ।’

माथुर साहब अपने मोजो को ऊपर ठीक करते हुए बोले—

‘आप भी कहीं नेहरू परिवार के उदाहरण को लेकर चले हैं। वह बड़े परिवार के बेटे हैं। घर पर धन भरा है, चाहे जो कुछ करें’ रमन और सरला चुपचाप बैठे थे, मैकू मामा अपने गाल पर हाथ फेरते हुए बोले—

बड़े-बड़े रजवाडो में भी तो धनी मानी लोग पड़े हैं। भूकम्प द्वारा उत्पन्न प्रलयकारी दृश्यो ने उनके हृदय को क्यों नहीं दहलाया। सेटल रिलीफ कमिटी के अध्यक्ष बाबू राजेन्द्रप्रसाद भी तो वकील ही थे जिन्होंने निकम्मे लोगो के लिये एक आदर्श उपस्थित कर दिया अपनी सेवाओ के द्वारा।’

माथुर साहब फिर से रोब में अपना चमचमाता हुआ काला बूट आगे बढ़ाते हुए बोले—

‘अरे यह भूकम्प तो हिंदुस्तान के पापियो के लिये दंड-स्वरूप आया था।’ यह कहकर वह रमन की ओर फिर सरला जी की ओर देखकर जोर से हँस दिये।

मैकू मामा ने थोड़ा गंभीर होकर उत्तर दिया—

‘ब्रिटिश सरकार भी तो इसको सविनय भग के लिये दैवी दंड कहती है। फिर प्रत्येक कष्ट को ईश्वराज्ञा समझकर उसे कम करने का मनुष्य को प्रयत्न भी नहीं करना चाहिये।’

माथुर साहब हँसते हुये बात टाल गये।

रमन ने सरला से चाय के लिये सकेत किया। यह कहते हुये रमन बोले—

‘नहीं माथुर साहब, मेरे परम मित्र मैकूलाल जी वास्तव में हृदय से समाज सेवक हैं। आप ने टॉप किया है। इन्हें अच्छी से अच्छी नौकरी मिल सकती है इस समय। और फिर यह बी० एस० सी०

अग्रीकल्चर में है। पर सरकारी नौकरी करने के आप पक्ष में नहीं हैं।

रमन के ऐसा कहने पर माथुर साहब मैकू मामा को ऊपर से नीचे तक देखने लगे। मैकू मामा शान्त भाव से अपने खादी के कुरते के दोनों छोरो को पकड़ते हुये उसको अपने घुटनों पर डाल रहे थे। रमन ने अपनी एक टाँग को दूसरे घुटने पर रखते हुए फिर से कहा—

‘अभी हाल में मैकूलाल जी ने अपनी जान जोखिम में डालकर मात्र मेले में भीषण आग से निकालते हुए एक पूरे परिवार की जान बचाई।’

रमानन्द माथुर साहब फिर से मैकू मामा की ओर देखकर बोले—  
‘तब तो सचमुच आप काबिले तारीफ हैं। आप भी नेहरू से कम नहीं हैं।’

मैकू मामा ने रमन के चेहरे की ओर देखते हुए कहा—  
‘मैं उनको धोवन भी नहीं हूँ। यह तो वैसे ही हुआ, जैसे आप किसी साधारण कवि की उपमा तुलसीदास अथवा मिल्टन से दे डालें।’  
सरला जी चाय के लिये नौकरानी से कहकर कुर्सी पर बैठ गई थी।

माथुर साहब अपनी टाई झुलाते हुये बोले—

‘आप चाहे इसे बुरा मानें या भला, मैं तो आपको नेहरू से कम नहीं समझता।’

सरला ने चाय बनाकर मैकू मामा की ओर बढ़ाते हुए, जिसे मैकू मामा ने रामानन्द जी की ओर रखते हुए कहा—

‘लीजिये वकील साहब प्रारम्भ कीजिये।’

वकील साहब चाय लेते हुए मैकू मामा की ओर ध्यान से देखते हुए बोले—

‘कहिये मैकूलाल जी आपका क्या विचार है कांग्रेस मुसलमानों को साथ लेकर चलने में कहाँ तक सफल हो सकेगी।’

मैकू मामा ने अपना चाय का प्याला निप करते हुए मेज पर रख दिया।

कुछ रुककर बोले—

‘मेरे विचार से मुसलमानों में ज़िमीदाराना ख्याल बसा हुआ है। उनमें पढ़े लिखे व्यक्ति अधिक नहीं हैं। इसे पंडित नेहरू भी स्वीकार करते हैं कि ‘शिक्षा में पचास वर्ष आगे बढ़े हुए, होने के कारण हिन्दू लोग सरकार की आलोचना खुशी से करते रहे हैं लेकिन मुसलमानों के कर्णधार सर सैय्यद भी ‘कोई ऐसा जल्दबाजी का कार्य नहीं करना चाहते थे जिसमें उन्हें इस मार्ग में जोखिम उठाना पड़े।’

कुछ रुक-रुक कर सोचते हुए मैकू मामा अपने माथे पर शिकने चढ़ाते हुए कहते गये। फिर एक बारगी रमानद जी की ओर देखते हुए बोले—

‘यह मैंने पंडित नेहरू के वाक्य उद्धृत किये हैं। उन्होंने अपनी अमकथा पुस्तक में इसका निर्देश किया है, इस प्रकार जब दोनों का ही दृष्टिकोण अलग-अलग रहा है पता नहीं आगे यह क्या रंग लाये।

रमान जो ध्यान से इन लीगों की बातों को सुन रहे थे, रमानद जी की ओर देखते हुए बोले—

‘गंदर के बाद से अब तक अज़रेजों की नीति तो यही रही है कि यह दोनों मिलकर न चले।’

रमानद जी सम्मलकर बैठते हुए बोले—

‘यह दोनों एक होकर रहेंगे, ऐसा ख्याल तो आज के नेतागणों का पूरी तरह से है पर इसमें मुझे गलती हिंदुओं की लगती है जो मुसलमानों को मिलाकर नहीं रखते।

रमान ने रमानद की ओर देखते हुए कहा—

‘इसमें हिन्दुओं की क्या गलती है, उनको न मिलाकर चलने में ।’

रमानंद ने अपना मत्था मिकोडते हुए कहा—

‘आप उन्हें बिधर्मी समझते हैं आपका उनके साथ खानपान नहीं है । उनके यहाँ वैवाहिक सबंध नहीं स्थापित करते ।’

सरला जी जो ध्यान से उनकी बातों को सुन रही थी, वकील साहब की ओर देखती हुई बोली—

‘वाह उनके यहाँ वैवाहिक सबंध कौन स्थापित करेगा । वह लोग गाय का मांस खाते हैं, जबकि गाय हमारे यहाँ पूजी जाती है ।’

मैकू मामा सरला जी की चूड़ियों की ओर देखते हुए बोले,—जो अपनी बात आगे बढ़ाकर अपनी चूड़ियों पर हाथ फेरने लगी थी ।

‘गाय पूजन की परिपाटी किसी विशेष महत्व से रखी गई थी । अधिक मक्खन, दूध, घी इत्यादि प्राप्त करने के लिये । अपनी अच्छी गाय कोई नहीं मारता, चाहे मुसलमान ही क्यों न हो । गाय के बेकार हो जाने पर जिसे खिलाना भी एक दुष्कर कार्य हो जाता है, यदि उसे मार दिया जाता है, उसके लिये उपद्रव मचाने की क्या आवश्यकता । आगा खॉं ऐसे लोग भी सन १९१४ से हिन्दू मुसलमानों को लडवाने की अङ्गरेजों की नीति को बुरा कहते आये हैं और उसे उनसे परित्याग करने के लिये कहते हैं । अलो बध, डा० मुख्तार अहमद असारी, मौलाना अबुल कलाम आजाद ऐसे ऊँची चोटी के नेतागण इस सकुचित मनोवृत्ति से कहीं दूर हैं और जभी गाँधी जी ने उन्हें अपने असहयोग आंदोलन में सम्मिलित कर लिया है ।

सब मैकू मामा की बातों को ध्यान से सुनते रहे । रमानंद ने मैकू मामा की बात का उत्तर देते हुए कहा—

‘इसमें अंगरेजों को दोष क्यों दिया जाता है । यह दोष हममें है, हम उस ओर क्यों नहीं ध्यान देते ।’

मैकू मामा मेज पर रखे हुए खाली प्याले को हाथ से घुमाते हुए बोले—

‘आपको पता है सन १९३४ में लन्दन में एक फिल्म दिखलाई गई जिसका उद्देश्य था मुसलमानों को अंग्रेजी शह-शाहियत के साथ सदैव के लिये घनिष्टता स्थापित कर लेना तथा उनके साथ अनन्य मैत्री स्थापित करना। कहा जाता है कि उसमें लार्ड लायड तथा आगा खाँ मेहमान बनकर गये थे।’

रमन ने रमानद की टाई की ओर देखते हुए कहा—

‘हमारे मैकूलाल जी बिना तथ्य के बात नहीं करते।’

पाम की मेहदी की झाड़ी से तीन-चार गिलहरियाँ फुदकती हुई इन लोगों के पास तक आ गई थी। नीचे गिरी हुई दालमोट टूंग रही थी। सरला जी उन्हें ध्यान से देखने लगी। एक मैना भी धीरे-धीरे बाग से होती हुई बरामदे में आने की हिम्मत करती हुई आगे बढ़ आई थी। किलो किलो करती हुई वह भी अपनी चोंच में एक आध टूंगने लगी। उसे दाना टूंगते हुए देखकर मैकू मामा ने दो-चार दाने धीरे से डाल दिये। मैं बड़े ध्यान से उस पक्षी तथा गिलहरियों की ओर देखने लगा। मैना के पास आने से गिलहरियाँ दूर हट जाती, फिर रेंगती हुई उसके साथ मैत्री स्थापित करने लगीं। सरला जी ने मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा—

‘देखिये अभी गिलहरियाँ भाग रही थी, कभी मैना गिलहरियों को देखकर फुदक कर दूर बैठ जाती थी। अब कैसी दोनों ही ने मैत्री स्थापित कर ली है।’

मैकू मामा ने सरला के कान के टाप्स पर दृष्टि डालते हुए फिर उसके ब्लाउज से चमकते हुए ग्रीवा के नीचे के भाग पर दृष्टि डालते हुए कहा—

‘भूख में सब मैत्री स्थापित कर लेते हैं। हिन्दू-मुसलमान दोनों ही इस समय अंग्रेजों द्वारा किये गये शोषण का अनुभव कर रहे हैं, इसलिये अवश्य ही मैत्री स्थापित करेंगे।’

सरला जी मैकू मामा के प्रत्येक वाक्य पर मुग्ध हो रही थी।

वह मैकू मामा के बोलने पर उनकी बात को उनसे आँखें मिलाकर ध्यान से सुनने के पश्चात बोली—

‘वाह, आपने पक्षियों और गिलहरियों के मेल को लेकर बड़ी सुन्दर बात कह डाली ।

यह कहकर मेरी ओर देखते हुए एकबारगी मेरी पीठ पर हाथ फेरते हुए बोली—

‘कहो चट्टू क्या गिलहरी का फुदकना देख रहे हो, इसकी दुम कितनी सुन्दर है । यहाँ एक प्रोफेसर साहब है । कहा जाता है जैसे ही वह अपने लॉन पर टहलने निकलते हैं, उनके बँगले की सारी गिलहरियाँ उन्हें घेर लेती हैं ।

रामानन्द जी कौतूहलपूर्ण मुद्रा बनाते हुए बोले ।

‘अच्छा, वह दृश्य तो बड़ा सुन्दर होगा । उन्होंने गिलहरियों को गिँधा लिया होगा खिला-खिलाकर ।

रमन ने सिर ऊँचा उठाते हुए कहा—

‘अरे भाई मेरे होस्टल में एक यूनियन का सेक्रेटरी है । जब वह चलता है उसके पीछे कम से कम पचास कुत्ते चलते हैं । वह नित्य एक रुपये की जलेबियाँ लेकर कुत्तों को खिला देता है । इस प्रकार वह सब कुत्ते उसकी पूरी रक्षा करते हैं ।

रामानन्द जी हँसते हुए बोले—

‘यो कहिये वह उसकी पूरी फौज है ।’

धूप पेड़ों की फुनगियों तक चढ़ गई थी । शीशम के पेड़ के सिरों पर धूप पड़ने से आधे धूमिल तथा आधे चमकदार होने से सुन्दर प्रतीत हो रहे थे । आसपास बगले के झाड़ू न लगने से शीशम की पत्तियाँ एकत्रित हो गई थी । गिलहरियाँ उन पत्तियों के ढेरों पर खड़खड़ाती हुई भाग रही थी । हल्की-हल्की बयार शरीर को अच्छी लग रही थी । रामानन्द वकील उठ गये । मैकू मामा तथा मै भी बिदा लेकर चला आया ।

एक दिन मैकू मामा मुझे तथा माखन मामा को लेकर एक ग्राम की ओर निकल गये। बीच में खेत पार करते हुए हम लोग बढ़ रहे थे। प्रातःकाल की मद बयार बह रही थी। खेतों में कटनई हो गई थी। खेतों में इधर उधर पौदों के ठूँठ लगे होने के कारण हम लोग बचा बचाकर आगे आगे बढ़ रहे थे। हम लोगों को दूर से आता देख कर ही गाँव के कुत्ते शोर करने लगे। मैकू मामा ने कहीं से हाथ में एक सेटी ले ली थी। माखन मामा ने भी खेत से अरहर की सूखी लकड़ी उठा ली थी। मैंने भी उन लोगों की देखादेखी खेत में पड़ा हुआ झाँखर उठाकर उसे नोचते हुए उसकी छोटी सी छड़ी बना ली। गाँव में प्रवेश करते ही कुत्तों ने और भी कोहराम मचा दिया। गाँव के पास ही एक नीम का पेड़ था। नीम के पेड़ के पास घूरे का अपार ढेर एकत्रित था। हम लोग गाँव के अन्दर हो गये। एक झोपड़े के मुख्य द्वार पर गदला पानी कच्ची नाली की सीमा को पार कर बाहर को फैलकर कई धाराये बनाकर बह रहा था।

मैकू मामा ने उस द्वार पर खड़े हुए मनुष्य की ओर सकेत करते हुए कहा—

‘कहो जी यह घर तुम्हारा है’ ?

वह व्यक्ति जिसके सूखे हुए बाल उसके जीवन के नैराश्य को प्रकट कर रहे थे तुरन्त उठते हुए बोला—

‘हाँ सरकार आप ही का है’ ।

मैकू मामा ने तुरन्त बात काटते हुए कहा ।

‘यह तो तुमने शिष्टतावश कहा है कि यह घर मेरा है, पर यदि तुम इस शिष्टता के शब्द को इसी प्रकार प्रयुक्त करना चाहते हो और मैं भी यह चाहता हूँ कि मैं यह कह सकूँ कि यह घर मेरा है अर्थात् तुम्हारा तो मेरे कहने के अनुसार इसे तुम्हें सुधारना होगा।’

वह मनुष्य अपने दाँत निपोरता हुआ बोला—

‘हाँ साहब, आप तो हमारा भलाई के लिये बात कहिहैं। हम सुनब काहे ना’।

मैकू मामा ने उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा—

‘देखो भइया, इस नाली का पानी कितना गदा होता है। इसमें कई दिन पानी पड़े रहने से सड़ने लगता है। कीड़े बिलबिलाने लगते हैं। यदि इसका पानी यहाँ से किसी टीन के डिब्बे से निकाल-निकाल कर दूर उस खेत की मेड़ के पार डाल दिया करो, तो तुम्हारे घर की सफाई भी रहेगी और साथ-साथ इस सड़े पानी का उपयोग खेत के लिये भी हो जायेगा’।

यह कहते हुए मैकू मामा ने उससे एक खराब बर्तन लाने को कहा, अथवा कोई टूटा डिब्बा लाने के लिये प्रार्थना की।

इतने में वहाँ कई गाँव के लोग एकत्र हो गये थे। वह लोग एक दूसरे को देख-देख मुस्करा रहे थे। कुछ स्त्रियाँ भी लम्बा घूँघट उठा-उठाकर दरवाजों के बाहर कनखियों से देख रही थी। उनके लहंगे इतने मटमैले थे, जो गाढ़े रंग में रंगे होने के कारण अपनी गदगी का आभास कम ही दे रहे थे पर उनके देखने से लगता था कि इनके धोने का शायद इन लोगों को अवकाश नहीं मिलता है, अथवा यह जानबूझ कर परिश्रम से दूर भागते हैं।

मैकू मामा के कहने पर भी कोई उस गंदे पानी को निकालने के लिये किसी प्रकार भी बर्तन लाने को तैयार न हुआ। अतत. मैकू मामा ने मुझसे माखन की ओर सकेत करते हुए कहा—

‘देखो तुम लोग उस घूरे में शायद कोई कुल्हड़ दिख रहा है, उसे उठा लाओ’ ।

मै तथा माखन मामा दोनों ही एक-एक मिट्टी लगा हुआ गदा कुल्हड़ वहाँ से उठा लाये । मैंने तथा माखन मामा ने उस नाली के सड़े गदे जल को निकाल-निकालकर घूरे के पास वाले खेन की मेड़ के पार डालना प्रारम्भ कर दिया ।

मैकू मामा ने मेरे हाथ में कुल्हड़ लेते हुए कई बार वही में दूर को घूरे के पास धार फेकते हुए उलीचना प्रारम्भ कर दिया ।

एक बूढ़ा गाँव वाला बोल पड़ा—

‘अरे सवलिया तनी सरम नहीं लगत है, बाबू लोग तोहार गदगी की सफाई करत है, और तीन तू लोग खडा देखत हौ’ ।

यह कहते हुए उस आदमी ने दो-तीन लोगो की बुलाते हुए कहा—

‘देखौ यह लोग गान्धी बाबा के सेवक जनाय पडत है । चलो लाओ कौनो वर्तन । डब्बा लै ‘आवौ डब्बा’ ।

और इतने में ही तीन के पुराने डिब्बे आ गये और वह गदा जल मिनटो में वहाँ से हटा दिया गया ।

मैकू मामा इसके पश्चात् गाँव का चक्कर लगाने लगे । माखन मामा तथा मै कभी पीछे तथा कभी उनके साथ कदम मिलाकर चलने लगते । पीछे-पीछे गाँव के आठ-दस बच्चे चल रहे थे । कहीं किसी के गाय बैल बँधे थे । किसी झोपड़ी में कोई आदमी अपने बैलो के लिये करबी काट रहा था । किसी स्थान पर धान कुट रहा था । गाँव के प्रत्येक मोड़ पर पचास-पचास गज की दूरी पर कच्चे मकान से गलियारे के पास वाली मुंडेर तक जहाँ से खेत प्रारम्भ हो जाते थे, नावदान बने हुए थे, जिनसे गदा जल उन्हीं में सूखकर सड़ाध उत्पन्न कर रहा था । कोई बूढ़ा व्यक्ति एक चरखी की साह्यता से सन की रस्मी बट रहा था । किसी झोपड़े के सामने कई स्त्रियाँ अपने बाल खोलकर माफ़ करने के लिये सुलझा रही थी । हम लोगो को देख उन लोगो ने

अपनी ओढ़नी से मिर ढक लिये, तथा अनोखी मुद्रा बनाकर खड़ी होकर देख रही थी ।

मैकू मामा ने मन बनाने वाले की ओर सकेत करते हुए माखन मामा से कहा—

‘देखते हो माखन यह लोग कैसे परिश्रमी होते हैं । यह अपना समय व्यर्थ में नष्ट नहीं करते’ ।

माखन मामा ने चलते चलते अपना कुरता जिस पर धूल पड़ गई थी झाड़ते हुए कहा—

‘पर भइया यह गाँव गदा कितना है । इसकी सफाई रखना क्या यह लोग नहीं जानते’ ।

मैकू मामा माखन मामा की पीठ पर हाथ रखकर उन्हें आगे बढ़ाते हुए बोले ।

‘यही तो इन लोगो को सिखाना है । गाँव की दशा यदि सुधार दी जाय, और उन लोगो के उद्योग धंधो का विकास कर दिया जाय तो हमारे गाँव ही धरा पर स्वर्ग का रूप दे सकते हैं ।

किसी मकान से चक्की चलाने की आवाज आ रही थी, जहाँ कुछ स्त्रियाँ गाती हुई मिलजुलकर आटा पीस रही थी’ ।

मैकू मामा मेरी ओर देखते हुए बोले—

‘देखो चट्ट गाँव में हाथ का आटा खाने से ही लोगो का स्वास्थ्य अच्छा रहता है । यहाँ की स्त्रियाँ कितनी हृष्ट-पुष्ट होती हैं । पर धीरे-धीरे कहीं मशीन की चक्कियो का रोग जो शहरो में बढ़ रहा है, कहीं गाँवों में भी न फैल जाय’ ।

मैंने मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा—

‘पर मामा जी, मशीन से तो बड़ी जल्दी कार्य हो जाता है’ ।

मैकू मामा कुछ सोचते हुए बोले—

‘हाँ चट्ट मैं भी पहले कुछ ऐसा ही सोचता था, सोचता था योरोप का ट्रैक्टर से हमारा भला होगा । यह कुछ मेरी कालेज की शिक्षा का

प्रभाव था, जहाँ हम लोगो के मस्तिष्क में यह जमा दिया जाता है, कि पश्चिमी शिक्षा ही हमारा भला कर सकती है, पर वहाँ से हटकर व्यावहारिक शिक्षा के द्वारा मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मशीनो का भूत हमें निष्क्रिय बनाता जा रहा है' ।

खेतो के उस पार सरसो लहलहा रही थी । वायु के एक झोके से गेहूँ के खेत में जिनकी बालियाँ पक रही थी, एक ज्वारभाटा सा आ जाता था । खेतो के बीच से पक्षी उड़ते हुए हल बैल की खेती की प्रशंसा कर रहे थे । चने-मटर के खेत भी गाढ़े हरे रंग के हो चले थे । किन्हीं-किन्हीं खेतों में सफेद बैजनी मटर के सुंदर फूल अपना क्षणिक सौंदर्य प्रदान कर परोपकारवश फलियों में परिवर्तित हो रहे थे । वह मुरझाते हुए भी प्रकृति के अंश होने के नाते उसके जीव-जन्तुओं की सेवा में अपने प्राण उत्सर्ग कर रहे थे । दूर तक दृष्टि डालने से कहीं हल्का हरा कहीं गाढ़े हरे मखमली कालीनों-सा दृश्य उपस्थित हो रहा था जिनमें रंग-विरंगे फूल बेल बूटे में लग रहे थे ।

माखन मामा मैकू मामा से चल्ते-चलने बोले—

‘भइया गाँधी जी गाँवों को स्वर्ग बनाना चाहते हैं, यहाँ के खेत तो ऐसे ही स्वर्ग का आभास दे रहे हैं’ ।

मैकू मामा हाँथ उठाते हुए बोले—

‘गाँव वाले पश्चिमी होते हैं, केवल इनमें इनके कार्यों का उच्चन रूप से विकास करने की आवश्यकता है ।

हम लोग बातें करते-करते गाँव के बाहर हो गये थे । आठ-दस बच्चे जो हम लोगो के पीछे हो लिये थे, वह लौट गये ।

दूसरे रविवार को हम लोगो के साथ रमन सरला जी तथा बीना भी गाँव को आई थी । मैकू मामा ने इन ‘सब’ को अपनी कार्य समिति में सम्मिलित कर लिया था । वह लोग अपने सुइटर बुनने की मलाइयाँ किरोशिया वाली बड़ी सुई इत्यादि भी अपने साथ लाई थी ।

मैकू मामा गाँव में प्रवेश करते ही, जो बच्चे उनके साथ हो लिये थे, उनसे बोले—

‘अच्छा देखे तुम लोग कितनी तेज हँस सकते हो’ ।

बच्चे एक दूसरे को देखने लगे । किसी की आँख में कीचड़ था । किसी के बाल भालू जैसे लग रहे थे । कोई फटी कमीज तथा ऊँची लँगोटी कसे थे’ ।

मैकू मामा फिर बोले इस बार वह स्वयं ठहाका मारकर हँस पड़े । हँसते हुये कहते गये ।

‘देखो जी मैं इतनी तेज हँस सकता हूँ, तुम लोग हँस भी नहीं सकते’ एकबारगी सब बच्चे ठहाका मारकर हँस दिये, गाँव में एक कोहराम-सा मच गया’ ।

मैकू मामा एक पीपल के पेड़ के पास खड़े हो गये । इस पेड़ के नीचे एक बड़ा-सा चबूतरा था । उस पर वह तथा हम सब खड़े थे । बच्चों को हँसता देख गाँव के बच्चे उधर ही भागते हुये आ गये थे । मैकू मामा ने मुझसे तथा माखन मामा से उन्ही लोगों के बीच में खड़े होने को कहा । हम लोग भी उन बच्चों के बीच में हो गये ।

मैकू मामा हँसते हुये बोले—

‘अच्छा देखो जी, तुम लोग फिर हँसो । अभी ठीक से नहीं हँसे । दबी हँसी में हँसे थे’ ।

बच्चे फिर से ठहाका लगा कर हँस पड़े जिनका शब्द गाँव भर में पहुँच जाने से, कुछ बड़े लोग तथा स्त्रियाँ भी वहाँ एकत्रित हो गये । मैकू मामा चबूतरे पर से खड़े-खड़े बोले—

‘अच्छा देखो बच्चों जब मैं कान पकड़ूँ तब तुम लोग नाक पकड़ना, तथा जब मैं नाक पकड़ूँ तब तुम लोग कान पकड़ना ।’

सरला तथा बीना एक दूसरे को देखकर हल्की हँसी में मुस्करा रही थी । रमन प्रत्येक बात को ध्यान से ‘देख रहे थे । बच्चे मुँह बना-कर एक दूसरे को ढकेलने लगे ।

मैकू मामा रमन जी को सकेत करते हुए बोले—

‘भाई आप जरा इन लडकों की सहायता करे । इनकी एक लाइन बनवा दीजिये ।’ फिर मेरी ओर देखते हुए बोले—

‘चढ़ू तुम एक लाइन बनाकर खड़े हो, तथा माखन तुम पीछे की लाइन में खड़े हो । छोटे बच्चे आगे होंगे तथा बड़े बच्चे पीछे होंगे ।’

मैकू मामा आगे बोले ।

‘देखो जी यह खेल बहुत बढ़िया है । जो लोग गलत नाक-कान पकड़ेंगे वह बाहर होने जायेंगे । अतः मे जो मही रूप में पकड़ते रहेंगे, उन्हें इनाम मिलेगा ।’

खेल प्रारम्भ हो गया और अतः मे पाँच लडके बच रहे जो बिल्कुल सही रूप में अपना कार्य कर रहे थे । मैकू मामा ने तुरन्त उन पाँचों लडकों को एक एक पेंसिल सरला जी के थैले से लेते हुए दी जो वह अपने साथ लाये थे ।

लडकों में उत्साह उत्पन्न हो गया था । वह लोग हर्ष से कूदने लगे । इसके पश्चात् मैकू मामा तथा रमन जी आगे आगे तथा हम लोग पीछे पीछे गाँव की ओर बढ़ चले ।

मैकू मामा ने सरला तथा बीना जी से कहा ।

‘देखो तुम लोगों को स्त्रियों को उनके घर में जा जाकर सफाई की शिक्षा देनी होगी । बिना हिचक के उनके ड्योटी पर जाते ही उनकी आज्ञा से घर में चली जाना । गाँव वाले इस मामले में सज्जन होते हैं ।’

बीना जी कुछ स्त्रियों के झुंड में बतला रही थी ।

‘देखो तुम लोगों के पास बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ हैं मुझे मालूम है पर परिश्रम करने से यह कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं । नित्य नहाने से शरीर स्वच्छ रहता है ।’

एक बूढ़ी स्त्री आगे बढ़ते हुए बोली ।

‘अरे तौन हियाँ एक पक्का कुआँ बनवाय देओ । सफाई सफाई कहत है । केहका साफ रहत अच्छा नाही लागत ।’

बीना जी ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया ।

हाँ, हाँ वह प्रबन्ध हो जायेगा । पर यह कार्य धीरे धीरे हो तो होगा । अपने घर का गदा पानी बजाय अपने घर के अन्दर के नाबदान में डालने के, घर से दूर फेक दिया करो । कूड़ा इत्यादि, खाने पीने की जूठन घर के नाबदान में मड़ने से किड़वे उत्पन्न होते हैं । अपने कपड़े कुएँ पर जाकर दो चार ईंटे रख ली, उन्हीं पर नित्य फीच डाला करो ।’

एक जवान स्त्री अपनी ओढ़नी को अपने मुख पर से अच्छी हटाती हुई बोली ।

‘हाँ ठीक तो कहत है । सब लोग मिलके जो यह काम करे तो यहिमा कोई कठिन थोरै है, सब सफा रहन लगै । अच्छी बान तो सीखै का चाही ।’

सरला जी दूसरे गिरोह में बुनना सिखा रही थी । वह कहती जा रही थी । ‘गाँव वाले तो स्वयं बड़े परिश्रमी होते हैं । हमें तो तुम लोगो से शिक्षा लेनी चाहिये । तुम लोगो के पुरुष, तुम लोग कभी खाली नहीं बैठते । कोई सन की रस्सी बटता है, कोई चक्की चलाता है । कोई छोटी-छोटी बल्लो की डलिया बनाता है । यह देखो बिनने का काम है । अपने खाली बैठे हैं । घर वालो के लिये ऊन से जडावर ही बिन डाली । जिनके घर में खाने को पर्याप्त है, उनकी स्त्रियाँ खाली समय में रूमाल, गिलाफ को हाथ से काढकर तैयार कर सकती हैं वह बिनती हुई तथा किरौशिया किसी लडकी के हाथ में देकर बतला रही थी यह कहते हुए—

‘हाँ हाँ तुम देखो । कोई कठिन थोड़ी है । सब कर सकते हैं । हमने भी तो किसी से सीखा ही है ।’

इस प्रकार गाँव में खलबली मच गई । सभी बहुत प्रसन्न थे ।

मैकू मामा रमन जी के साथ गाँव वालों को खेती के विषय में बतला रहे थे ।

‘देखो तुम लोग गोबर को एक गड्ढा खोदकर एकत्रित कर लिया करो । गोबर के कड़े अधिक बनाकर उसे नष्ट नहीं करना चाहिये । गोबर की खाद सबसे अच्छी होती है । गाँव के बाहर गड्ढा खोदकर पत्तियाँ भी एकत्रित करनी चाहिये । इसकी खाद भी बहुत लाभदायक होती है । पत्तियों को गाय भैस के पेशाब से सड़ा दिया जाय तो और भी अच्छा है । कूड़े का ढेर बजाय गाँव के अन्दर लगाने के गाँव से दूर एकत्रित कर उसे जला दिया जाय ।’

एक गाँव वाला बोला ।

‘सरकार यह सब लोग मिलकर काम करे तो इससे सुन्दर कोई काम नहीं हो सकता ।’

गाँव वाले ने अपनी गदेली पर दूसरे हाथ की मुट्ठी पटकते हुए कहा ।

रमन जी आगे बढ़ते हुए बोले ।

‘यह तो भाई तुम्हारे अच्छे के लिये बात बतलाई जा रही है । सब लोगो को ही इस कार्य में सहयोग देना चाहिये ।’

एक बूढ़ा आदमी जिसके सिर पर गाँधी मैली टोपी थी, दो-तीन बार धीरे-धीरे सिर हिलाता हुआ बोला—

‘ठीक तो कहन है आप । नहीं, अब हम इन सबसे कहेंगे । सब लोग थोड़ा थोड़ा नित्य काम करै । यह कूड़ा गाँव से दूर हटवाकर हम जलवा देंगे ।’

आगे वह बूढ़ा ललकारता हुआ बोला—

‘देखो, सुन लेओ । हर घर से रोजीना एक एक करके सब लोग गाँव के बाहर गड्ढा खोदे मैं सहायता करेगा । और हुबई हम लोग गोबर डाला करै । फिर सब लोग खाद बराबरी से बाँट लेयेंगे । यह लोग ठीक सलाह देते हैं ।

मब लोग उस दिन का कार्य पूर्ण कर गाँव के बाहर आ गये थे। सरला तथा वीना जी साथ-साथ चल रही थी। मैकू मामा तथा रमन बाबू कभी आगे हो लेते, कभी पीछे। मै तथा माखन मामा सबसे पीछे थे। सूर्य सामने चमक रहा था। हवा में कुछ ठंड थी, पर सूर्य की तेजी से हवा अच्छी लग रही थी। सरला जी की सारी हवा से उड़ रही थी। वीना ने भी सरला के समान अपनी सारी को कसकर लपेट कर वक्ष के पास बांधे हाथ की बगल में दबा लिया था। रमन बाबू अपने पतलून के बकसुए कसते हुए बोले—

‘आज बड़ी हवा चल रही है।’

सरला जी वीना की ओर देखकर बोली—

‘मैकू बाबू ने गाँव को बहुत अच्छा सम्हाला है।’

वीना ने चलते हुए अपनी चप्पल सम्हालकर कहा जिसमें चलने से मिट्टी की ककरी फँस गई थी।

‘इसमें कोई शक नहीं। गाँव की स्त्रियों में सीखने की उत्सुकता है। केवल उन्हें मार्ग पर लाने की आवश्यकता है।’

मैकू मामा ने उसकी बात सुन ली थी। अतः उनका उत्तर देते हुए बोले—‘अंग्रेज बहादुरों ने हमारे गाँवों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया है। यह तो शहर की आबादी में लगे हुए गाँव हैं। यदि शहर से दूर के गाँव देखे जायँ तो वह लोग निराले जानवरों का जीवन व्यतीत करते दिखेंगे।’

रमन ने अपना हँट सम्हालते हुए कहा, जो उन्होंने धूप से बचने के लिये लगा रखा था।

‘और यह गाँव किन जानवरों से कम है। गदगी की भी सीमा होती है। बच्चे कितने घिनौने। कोई महीनो से नहाया नहीं है। आँखों में कीचड़ भरी दिखती है मानो कोई खुला हुवा घाव हो। हाथ-पैरों के नाखून बढ जाने से भेड़िये जैसे दिखते हैं। मुझे तो इन लोगों को

देखकर बड़ी घृणा हुई। यहाँ आने की भी फिर से इच्छा नहीं होती। मुझे तो मैकूलाल अपना गाँव दिखाने घसीट लाये थे।’

मैकू मामा ने रमन की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा—

‘अजी वकील साहब, फिर आप वकालत क्या करेंगे। इन्हीं गाँव वालों के बदौलत ही तो वकीलों की जेबें भरती हैं।’

रमन ने अपनी सफेद कमीज का कालर ठीक करते हुए उत्तर दिया—

गाँव वाले मेरे घर पर आयेगे कि मैं कोई उनके घर-घर की धूल छानता फिहूँगा।’

मैकू मामा सरला की ओर देखकर जो उनके वगल में ही चल रही थी फिर सामने मुँह करते हुए बोले—

‘क्यों मुकदमा मुआएना के लिये जाना होता है, फिर जिन लोगों से आपका सम्पर्क बराबर रहता है, उससे अथवा उसके जीवन से घृणा तो नहीं करनी चाहिये।’

रमन ने हँसते हुए उत्तर दिया—

‘नहीं मैं घृणा तो नहीं करता। यह तो तुम्हारा कहना ठीक है कि वकील का सम्पर्क इन लोगों से ही अधिक होता है। पर वास्तविकता यही है, कि इन गंदे लोगों को आप कितना ही सिखाये यह गंदे ही रहेंगे।’

मैकू मामा ने सरला जी की प्रशंसा करते हुए कहा—

‘सरला तथा बीना जी इन गाव की स्त्रियों को सिखा रही थी, वह लोग कितने चाव से सीख रही थी। ऐसे ही गाँव वाले हम लोगों की बातों को भी बड़े ध्यान से सुन रहे थे। उन लोगों को कोई सिखाने वाला नहीं है, अन्यथा वह लोग हम आप से कहीं अधिक योग्य निकल सकते हैं। उनके जीवन को सम्हालने के लिये हम लोगों को अपना जीवन बलिदान करना होगा।’

रमन ने बीना की ओर देखते हुए मुस्कराकर कहा—

‘यहाँ तो भाई अपना आराम चाहिये । पहले अपना आराम सोचा जाय कि दूसरो को सम्हालता फिर्लूँ ।’

मैकू मामा अपने मिर पर हाथ फेरते हुए बोले—

‘वकील साहब आराम के आगे तो कोई चारा ही नहीं है । यदि मारौ दुनियाँ स्वार्थी हा जाय तो ससार एक पग आगे नहीं बढ़ सकता ।’

रमन ने मैकू मामा की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा—

‘मैकू जी मैं आपके कार्य को नहीं बुरा कहता । आप विपदजनक कार्यों में भी अपने को डाल देते हैं । इसकी मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ । पर सब तो ऐसे नहीं हो सकते । मैं तो समझता हूँ । अजी खाओ पियो मौज उडाओ । यह जीवन का स्लोगन होना चाहिये । कहाँ की ग्राम सेवा और कहाँ यह गाँधी जी का ढकोसले का आदोलन ।’

वीना जो देर से चुप थी, रमन की बातों पर हँसती जा रही थी सरला को धक्का देती हुई बोली—

‘आपका सिद्धान्त सबसे ठीक ‘अपना मन चगा तो कठौती में गगा’ सरला हल्की मुस्कान लाते हुए बोली—

‘रमन भइया तो सदैव से ही आरामतलबी का जीवन पसंद करते आये हैं ।’

मैकू मामा हँसते हुए बोले—

‘मेरे साथ रहकर जब इन्हे पाँच-पाँच दस-दस मील चलना होगा उस समय मैं इनकी आरामतलबी दूर कर दूँगा ।’

वीना जी अपने उड़ते बालों को सम्हालती हुई बोली—

‘आज आनंद तो खूब आया मुझे तो सरला ले आई । ऐसा सुंदर ग्रामीण जीवन देखने को कहाँ मिलता । व्यायाम भी हो गया अच्छा खाशा ।

मैकू मामा कुछ तिरछे होकर वीना जी की ओर देखते हुए बोले, सब लोग पक्ति में ही चल रहे थे ।

‘तो वीना और सरला ग्राम सेविका की सूची में रख ली गईं ।’

रमन ने हँसते हुए कहा—

‘और तुम लोग मुझे रिपोर्ट दिया करना नित्य, कि तुम लोगो ने कितनी उन्नति की अपने कार्य में ।’

मैकू मामा ने लम्बे डग रखते हुए कहा—

‘ठीक तो है, एक मनुष्य हमें ऐसा भी तो चाहिये, जो इसका रिकार्ड रखता चले कि हम लोगो ने कितना कार्य किया जिससे हम लोग अपने पिछले कार्य को देखकर आगे अधिक कार्य कर सकें ।’

बीना जी ने मैकू मामा की ओर दृष्टि करते हुए कहा—

‘अभी आप इस ग्राम में क्या-क्या कार्य करेंगे ?’

मैकू मामा अपने पग धीमे करते हुए बोले जिसमें सभी लोग धीमे चलने लगे थे ।

‘अभी यहाँ कार्य ही क्या हुआ है । इन लोगो के लिये एक पाठशाला का प्रबन्ध करना होगा । एक छोटा वाचनालय खोलना होगा । चर्खा देगल, कोल्हू इत्यादि का प्रबन्ध । एक छोटी-मोटी सुदर सी हाट जिसमें यह लोग स्वयं उत्पादन कर सकें तथा उससे अपनी जीविका बसर कर सकें ।’

सरला जी ने अपने सिर पर सारी का पल्लू रखते हुए कहा—

‘आपकी योजनायें तो बहुत सुन्दर हैं ।’

मैकू मामा हँसते हुए अपने उडते हुए कुरते को सम्हालते हुए बोले—

‘कार्यकर्ता जब सुन्दर मिल जायें, ( कुछ रुक कर ) मेरा आशय आप लोगो की सुन्दरता से नहीं है, कार्य से है, तो कार्य की पूर्ति में विलम्ब नहीं हुआ करता ।’

रमन हँसते हुए बोले—

‘यदि कार्यकर्ताओं में रूप सौंदर्य हो तो कार्य और भी अच्छा होगा यह तो विलकुल सही है’

बीना तथा सरला एक दूसरे को देखकर मुस्कराने लगी ।

धूप की तेजी से हवा में भी कुछ गरमी आ गई थी। गाँव के झोपड़े पार कर हम लोग शहर में आ गये थे। एक ओर खेतों में तम्बाकू बोई हुई थी। बीना जी सरला जी से तम्बाकू के खेतों की ओर सकेत करते हुए बोली—

‘सरला यह लम्बे-लम्बे इतने बड़े पत्ते किस चीज के हैं।’

सरला जी भी उत्तर न दे सकी, मैकू मामा बीना जी के साथ कदम मिलाते हुए बोले—

‘इसे तम्बाकू कहते हैं।

इस बीच रमन जी ने कौतूहलता से प्रश्न किया—

‘भाई मैकू बाबू तुम तो अग्रीकल्चर ग्रेजुएट हो। यह बतलाइये यह तम्बाकू इतनी अधिक लोग क्यों बोने लगे हैं।

पास के आम के बाग में पेड़ों में बौर लदा हुआ था। उसकी भीनी सुगन्ध सबको मुग्ध कर रही थी। मैकू मामा ने जी भर कर साँस खींचते हुए कहा—

‘बात यह है, लोग परिश्रम से मुख मोड़ रहे हैं। तम्बाकू की खेती में अधिक कार्य नहीं करना होता है। इसके पौधों को एक बार लगा दीजिये, यह पनपते रहते हैं। फिर पैसे भी चौगुने मिलते हैं।’

कुछ रुककर आम के बौरों की ओर सकेत करते हुए—

‘इस आम के बाग में कैसी सुगन्ध आ रही है। इच्छा होती है, यही बैठा जाँय थोड़ी देर।’

रमन बाबू ने मैकू मामा की पिछली बात को जोड़ते हुए कहा—

‘इसके अर्थ हैं कि लोग गेहूँ की खेती न करके तम्बाकू अधिक पैदा करेंगे।’

मैकू मामा ने रमन जी की बात का उत्तर देते हुए कहा—

‘यही तो हो रहा है, लोग अकर्मण्य होते जा रहे हैं। लोग सरसो, मूँगफली, आलू इत्यादि इसीलिए अधिक बोते हैं, क्योंकि उसमें अधिक

परिश्रम न करके पैसा अधिक मिल जाता है। इससे हमारा भविष्य अन्धकार में ही है।'।

शहर की मोटरे तथा ताँगे सड़क पर चलते हुए दीखने लगे। वकील साहब का बँगला भी निकट आ गया था। अधिक दूरी होने के कारण रमन बाबू को उनके निवास स्थान तक पहुँचाकर सबने अपने अपने घर की विदा ली।

हल्की गरम वायु चलने लगी थी। नीम के पेड़ की पत्तियाँ उड़ उड़कर सड़क पर फैल रही थी। कोलतार की सड़के हल्की हल्की गीली होने लगी थी। सूर्य ठीक सिर के ऊपर आकर पश्चिम की ओर ढलने लगा था।

मैं कालेज में पढ़ने लगा। माखन मामा डाक्टरी पढ़ने लखनऊ चले गये थे। राखन मामा अपनी खेती में जी-जान से लगे हुए थे। वह ही माखन मामा को पढ़ने का खर्च भेजते थे।

मेरा कालेज बहुत बड़े मैदान में था। आसपास दूर पर खेत थे। एक दिन मास्टर साहब क्लास में यह पत्तियाँ पढ़ा रहे थे।

बड़ा न जानै पाइहै साहिब के दरबार।

द्वारे ही सूँ लागिहै 'सहजो' मोटी मार।'।

मास्टर साहब हाथ फैलाकर अपना लेक्चर दे रहे थे।

'ईश्वर धनी व्यक्तियों को नहीं प्राप्त होता। ईश्वर दीनों का रक्षक है जो लोग धन से प्रेम करते हैं, वह स्वार्थी हो जाते हैं। वह जनहित की चिन्ता न कर अपने स्वार्थ की चिन्ता करते हैं।'।

एक विद्यार्थी जो धनी परिवारा का था खड़ा होकर बोला—

'मास्टर साहब यदि ईश्वर धनी व्यक्तियों को प्राप्त ही नहीं हो सकता फिर ऐसे ईश्वर की आराधना करने की आवश्यकता ही क्या है।'।

मास्टर साहब ने हँसते हुए अपना चश्मा मेज पर उतार कर रख दिया। वह समझाते हुए बोले—

जो जल बाढ़े नाव मे, घर मे बाढ़ै दाम ।

दोऊ हाथ उलीचिये यह सज्जन को काम ॥

सत कबीर का यह दोहा है । अधिक धन मनुष्य को विक्षिप्त बना देता है । इसीलिये लक्ष्मी का वाहन उल्लू बनाया गया है । धनी व्यक्ति का मस्तिष्क भी स्मशान मे बैठे उल्लू के समान ही हो जाता है । सरस्वती का वाहन हंस कहा गया है । विद्या का उपासक हंस के समान केवल सार वस्तु को ग्रहण करना सीख जाता है, जिस प्रकार हंस जल मिश्रित दूध से केवल दूध ही ग्रहण करके जल छोड़ देता है । ईश्वर के अर्थ क्या है ? उन्होंने मेज पर मुट्ठी पटकते हुए कहा—

इसके पश्चात् स्वयं ही सिर को झटका देकर उत्तर देते हुए बोले—

‘ईश्वर के अर्थ है सत्य । सत्य पर आचरण करने वाला मनुष्य कभी धनी नहीं हो सकता । तुमने स्वयं ही अपना उत्तर दे दिया है । धनी व्यक्ति सत्य की खोज नहीं करता उसने समाज को किसी न किसी प्रकार धोखा देकर धन एकत्रित किया है ।’

मास्टर साहब की यह ईश्वर की व्याख्या मेरे मस्तिष्क मे बैठ गई । मैं उस दिन से धनी व्यक्तियों से घृणा करने लगा । मैं उस दिन से मनन करने लगा ।

‘धन के अभाव मे तो जीवन भी दुर्लभ हो जायेगा ।’

मैंने मास्टर साहब से एक दिन फिर पूछा—

‘मास्टर साहब आप कह रहे थे धन से घृणा करना चाहिये, पर धन के अभाव मे तो हम एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकते ?’

मास्टर साहब ने फिर से हाथ चला चला कर समझाते हुए बतलाया—

‘धन से घृणा करने को नहीं कहा गया है । धन का एकत्रीकरण खराब है ।’

मैंने फिर से उठकर पूछा—

‘मास्टर साहब प० मोतीलाल नेहरू तो बहुत बड़े धनवान हैं ।’

मास्टर साहब ने फिर से अपना चश्मा उतारकर मेज पर रख दिया। मेरी ओर गौर से देखते हुए बोले।

‘वास्तव में प० मोतीलाल बकालत के पेशे में अपने तर्क-वितर्क से असत्य सत्य करके तथा अधिक धनराशि लेकर ही धनी हुए, पर जिस दिन उनके ज्ञान-चक्षु खल गये उन्होंने उस धन को ही क्या, अपना सर्वस्व ही जनहित के लिये लुटा दिया। धन खोकर प्रतिष्ठा मिलती है तथा प्रतिष्ठा खोकर धन प्राप्त होता है।

मेरे पिता जी एक साप्ताहिक पत्र निकालने लगे थे। मैकू मामा समाज-सेवा, अस्पृश्य समस्या तथा समाज में नारियों का स्थान विषयक लेख लिखा करते थे। मेरे यहाँ से पत्र निकलने के कारण मुझसे कालेज में सभी मित्रता रखने को उत्सुक रहते। एक जज साहब के सुपुत्र मेरे सहपाठी थे। वह बग्घी पर आया करते थे। कालेज के सामने ही सड़क पर एक पीपल के वृक्ष की साया में बग्घी खड़ी हो जाती। बग्घी में ही दो-चार धनीमानी परिवार के अन्य विद्यार्थी खाली घटो में बैठकर गप्पे लड़ाते रहते। पास ही पान की दुकान थी, जिससे यह विद्यार्थी पान सिगरेट लेकर बग्घी के अन्दर धूम्रपान किया करते। मुझसे जज साहब के सुपुत्र त्रिभुवन ने सिगरेट पीने का आग्रह किया। मैं बारबार मना करता रहा। इस पर बलपूर्वक दो विद्यार्थियों ने मुझे पकड़कर मेरे मुख में लगा दी और मुझे दो कश खींचने को बाध्य कर दिया।

त्रिभुवन बोला—‘हर बात को जानना चाहिये। सिगरेट और पान जिसने खाना न सीखा वह पूरा बलियाटिक होता है।’

इतने में पान की दुकान पर एक अगरेज गोरा जिन्हें लोग टामी कहकर पुकारा करते थे, उस पान की दुकान पर पान वाले से एक आइसक्रीम की बोतल पीकर अपनी साइकिल पर सवार होकर सड़क पर भागने लगा। पान वाले ने आवाज दी—

‘भइया हमारा पैसा नहीं दिहेन हैं। भागा जात है।’

हम लोगो का दूसरा साथी रामनिवास बग्घी पर से कूद पड़ा। उसने वही के एक लड़के की साइकिल पकड़कर गोरे का पीछा करके उसे गिरा लिया। हम सब दौड़ पड़े। उसको उसी की साइकिल से दबा दिया गया। उसकी मरम्मत कर दी।

दूसरे दिन कोर्ट से एक शिकायत आई, जिसके फलस्वरूप हम लोगो को प्रिंसपल द्वारा फटकार मिली तथा उसी के साथ वारनिंग दी गई।

हम लोग बग्घी में बैठे उस विषय को लेकर चर्चा कर रहे थे। त्रिलोकी ने अपनी पुस्तक पर जो उसकी जाँघ पर रखी थी। हाथ पटकते हुए कहा—

‘मेरे डैडी कहते हैं विलायत में कोई चोरी नहीं करता। वहाँ के लोग बेईमान नहीं होते। क्या यह गोरा विलायत का नहीं है। इसने पान वाले से आइसक्रीम पी और बिना पैसे दिये चम्पत हो गया।

मैंने त्रिभुवन की ओर देखते हुए कहा।

‘अजी उसकी जेब में पैसे थे ही नहीं। मैंने जब उसकी जेब पकड़ कर पैसे रखने को अगरेजी में कहा। उसने इंगलिश में ही उत्तर दिया।

‘मेरे पास कुछ नहीं है।’

रामनिवास बीच ही में बोल पड़ा।

यह अगरेज महाबेईमान होते हैं। ठग विद्या ही से तो हमारे भारत पर अधिकार जमाया है।’

त्रिभुवन रूमाल से अपना मुँह पोछते हुए बोला—

‘चोर तथा बेईमान सभी कही होते हैं पर यह कहना कि विलायत में सब सत्यवादी ही हैं, उचित नहीं है। यह अपने अपने सस्कारों पर निर्भर करता है।’

हवा सर्राटे से बह रही थी। मार्च के अन्तिम सप्ताह में वृक्षों की

सूखी पत्तियाँ सड़क पर भाग रही थी। गरम वायु का झोका बह जाता। पत्तियों की खड़खड़ के पश्चात् एक बारगी शांति छा गई।

त्रिभुवन ने ही आगे बात बढ़ाते हुए कहा—

‘मेरे डैडी एक और विलायत का किस्सा सुनाते हैं कि एक बार उन्होंने किसी अखबार बेचने वाले की दुकान पर उस दुकानदार को यह कहते हुए सुना कि उसकी दुकान पर से कोई अखबार गायब हो गया है। उसने अखबार ले जाने वाले को तो देखा नहीं। वहाँ दुकानों पर लोग बैठते कम हैं। वस्तु लेने वाला कैश बाक्स में पैसा डालकर वस्तु ले लेता है। वह कह रहा था कि अवश्य ही अखबार ले जाने वाला कोई हिन्दुस्तानी है।

मैंने टोकते हुए कहा—

‘उस अखबार वाले को यह कैसे अवगन हुआ कि अखबार ले जाने वाला हिन्दुस्तानी ही है, जबकि उसने उसे ले जाते हुए नहीं देखा।’

त्रिभुवन ने सिर को लटका देते हुए उत्तर दिया।

‘यही तो प्रश्न उठता है। उन लोगो की दृष्टि में हम भारतवासी इतने गिरे हुए हैं कि हम लोग वहाँ चोर समझे जाते हैं।’

रामनिवास जो चुपचाप हम लोगो के सामने वाली सीट पर बैठा था त्रिलोकी की ओर देखता हुआ बोला—

‘और तुम्हारे डैडी ने उसे टोका नहीं कि उसे कैसे मालूम कि किसी भारतवासी ने ही लिया है।’

त्रिभुवन ने मुख ऊपर करते हुए जोर देते हुए कहा।

‘वह कहते हैं उन्होंने यही कहा कि तुम्हें कैसे मालूम कि हिन्दुस्तानी ने ही यह कार्य किया है, इस पर अखबार वाले ने दृढ़ता से कहा—

‘हम ब्रिटेन वाले सत्यवादी होते हैं। यह केवल हिन्दुस्तानी का ही कार्य है।’

त्रिभुवन एक और पेरिस का किस्सा सुनाने लगा जो उसके डैडी ने बतलाया था। वह बोला—

‘मेरे डैडी पेरिस में एक बस से यात्रा कर रहे थे, जैसे ही वह बस से उतरे। उन्होंने अपना हैडी एटैची ढूँढा जो लापता था। उसमें उनका कैमरा तथा कुछ आवश्यक पत्र थे। ले जाने वाला समझता था कि उस छोटे से एटैची में कैश होगा।’

मैने रामनिवास की ओर देखते हुए उत्तर दिया।

‘देखा यह भी वहाँ की चोरी का उदाहरण है। अच्छे और बुरे पुरुष सभी जगह होते हैं। यह कहना कि केवल हिन्दुस्तानी ही चोर होते हैं अथवा अगरेज जाति बेईमान है उचित नहीं।’

एक दिन मैं बग्घी पर ही त्रिभुवन के साथ उसके घर पहुँचा। उसका बँगला वहाँ की सिविल लाइन्स में सुन्दर स्थान पर था। उसके लान तथा बाग बगीचे देखने योग्य थे। एक साइड के लान पर चम्पा का वृक्ष था। उसकी डाल पर एक लाल वर्ण का काकातूआ बैठा रहता। शायद उसके पजे को पतली जजीर से बाधा गया था। किसी के प्रवेश करते ही वह अपनी भाषा में आगन्तुक का स्वागत करता। बगले के साइड के बरामदे में शीशे की लम्बी-लम्बी बाक्स तुम भेजे थी जिनके भीतर रंग-बिरंगी चिड़ियाँ पली हुई थी। त्रिभुवन के एकांत में पढ़ने के लिये फाटक से लगकर एक क्वार्टर बना था। दिन को वह अपने मित्रों को वही बैठाता। हम लोगों के पहुँचते ही कुछ देर तक इधर-उधर की गप्पे होती रही। थोड़ी देर पश्चात् ही बँगले के सामने ही एक पान की दुकान थी, जहाँ से मूल्यवान सिगरेट तथा पान भँग-वाये गये।

एक युवा छोकरी पान लेकर आ गई।

त्रिभुवन ने उससे पान लेते हुए, उससे अश्लील मजाक किया। वह तिरछी दृष्टि डालकर मुस्करा दी। वह तथा रामनिवास उससे अश्लीलता से पेश आने लगे। मुझे उन लोगों को ऐसा करते देख राखन मामा तथा उनके मित्रों की याद आ गई। मैं उस कांड को न देख सका। मुझे उन लोगों के साथ आने का असीम दुख हो रहा था।

त्रिलोकी ने मेरे सिर को झकझोरते हुए कहा—

‘तुम बिल्कुल बलिभाटिक हो । बुद्धू हो’ ।

मैं क्रुद्ध होकर वहाँ से भाग निकला तथा अपने घर की राह ली मुझे कर पहुँचने में देर हो गई थी । मैं जैसे ही घर पहुँचा, मैकू मामा ने प्रश्न किया ।

‘चटू आज कहाँ रह गये थे । इतनी देर कहाँ कर दी’ ।

मैं कुछ देर अवाक् रहा ।

मैकू मामा ने फिर कुछ तेज भाषा में कहा—

‘बोलते क्यों नहीं चटू । मैं क्या पूछ रहा हूँ ?’

मैंने धीमे से उत्तर दिया ।

‘एक जज साहब के लडके त्रिभुवन मेरे मित्र हैं, वह मुझे अपने घर लिवा ले गये थे । पर मामा मैं उनकी मित्रता में बड़ा निराश हो गया’ ।

मैकू मामा शान्तपूर्वक सुनते रहे । मेरे अंतिम वाक्य ने उनकी उत्सुकता को बढ़ा दिया । मत्थे पर शिकने चढ़ाते हुये बोले ।

‘क्यों क्या बात हुई ?’ ।

‘कुछ नहीं । धनी लोग छोटे लोगो जैसा ही बुरा कार्य करते हैं पर लोग उनको कुछ नहीं कहते । राखन मामा तथा उनके मित्रो को लोग खराब कहते थे । कही कुछ बातें मैंने इन लोगो में पाई ।’

मैकू मामा भोहे सिकोड़े हुए नथुने फुलाये सुनते रहे । फिर धीमे से बोले ‘क्या बुरा कार्य कैसा’ ?

मैंने कुछ कहना चाहा । मेरे गाल लाल हो गये । धीमे से पृथ्वी की ओर देखते हुए बोले अनायाम ही फूट पड़ा ।

‘एक पान वाली लडकी से पान सिगरेट मँगवाकर छुप-छुप कर पान सिगरेट पीते हैं’ ।

मैंने इतना ही कहा । मुझसे आगे वाक्य नहीं निकला ।

मैकू मामा ने मुझे अपने पास धीमे से बसीट लिया । समझाते हुए

बोले 'चढ़ इस ससार में सब तरह के व्यक्ति हैं। यहाँ प्रकाश भी है, अधकार भी। इसी प्रकार जहाँ सद्प्रवृत्ति वाले मनुष्य हैं वहाँ दुष्प्रवृत्ति वाले प्राणी भी।

साधू ऐसा चाहिये, जैसे सूप सुहाय।

सार सार गहि रहे, थोथा देय उडाय ॥

कुछ रुक कर बोले।

'तुमने सिगरेट पी'

मैंने डरते हुए कहा—

'मुझे वाध्य कर दो फूक दिलवाये'।

मैकू मामा मेरी पीठ थपथपाते हुए बोले।

'तुम्हे कैसी लगी'।

मैंने उनकी ओर देखकर फिर नीचे देखते हुए कहा—

'मुझे कतई नहीं पसंद आई।'।

मैकू मामा बतलाने लगे।

'यह सब वस्तुएँ अच्छी लगने के लिये लोग जबरदस्ती स्वाद बताते हैं। सिगरेट से फेफड़ों का रोग 'कैंसर' हो जाता है। एक डिब्बे में बद मछली आती हैं जिसे कहते हैं 'सारडीन' उसमें बड़ी दुर्गन्ध आती है, पर जो लोग स्वाद बना लेते हैं वह उसे ऐसे ही स्वाद लेकर चटकारी मारते हैं, जैसे गिद्ध सड़ी लोथ को'।

पिता जी इधर कुछ बीमार रहने लगे। मैकू मामा तथा मैं दोनों ही उनकी सेवा सुश्रूषा में लगा रहता। उनकी आयु भी काफी हो चली थी। मैकू मामा प्रेस का कार्य देखने में लगे रहते। मुझे फलों का रस तथा हरी सब्जियों को उबालकर छानने के पश्चात् उसका रस पिता जी के लिये नित्य तैयार करना पड़ता। उनका आमाशय कमजोर हो गया था। इधर रमन बैरिस्ट्री पढ़ने विलायत चले गये थे। सरला जी भी अपने घर ही पर थी। रमानद वकील साहब मैकू मामा के पास आ जाते। एक दिन वह तथा हम दोनों पिता जी के पलंग के पास

बैठे थे। पिता जी के पैरों में सूजन आ गई थी। उनकी रात्रि बड़ी कठिनाई से व्यतीत होती। रमजान के दिन थे। पिता जी ने धीमे से करवट बदलते हुए कहा—

‘मैंकू मेरी रीढ़ इन सुबह के नगाड़े से खुल जाती है। यह नगड़ा एक-एककर ढग ढग, ठग-ठगकर ऐसा बजता है कि सीधे कानों का चोट पहुँचाता है। दो-ढाई बजे बजता है। घंटे भर तक टनटनाया जाता है। फिर से चार साढ़े चार बजे वैसे ही लपटाया जाता है।’

मैंकू मामा ने उत्तर देते हुए कहा—

‘मेरा समझ में नहीं आता, आज के इस वैज्ञानिक युग में इसकी आवश्यकता ही क्या है। जिसे रोज़ा रखने का शौक है, वह अपने घर पर एलार्म घड़ी रखे। अन्यथा कोई और प्रबन्ध करे।’

रमानन्द जी सिर हिलाते हुये बोले—

हाँ ह ना तां यही चाहिए।

मैंकू मामा फिर से बीच में बोल पड़े।

‘नहीं यह तो समझने की बात है। कोई बीमार पड़ा है। कोई विद्यार्थी अपनी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त है। अपने स्वार्थ के आगे हम दूसरे पड़ोसियों को क्यों अज्ञान कण्ट पहुँचायें।’

रमानन्द जी पैर हिलाते हुए बोले।

‘इंग्लैंड इत्यादि में तो कहा जाता है एक निश्चित समय के पश्चात् वहाँ सिनेमा, डान्सिङ्ग हाउसेज सब बंद हो जाते हैं।’

मैंकू मामा ने सिर ऊपर करते हुए कहा—

‘पर यहाँ तो सिविक सेंस नहीं है। मैं तो उन हिन्दुओं के भी खिलाफ हूँ जो रात भर घंटे बजा बजाकर लाउडस्पीकों पर अखंड कीर्तन करते हैं। आपको कीर्तन का शौक है, एक निश्चित समय तक कीजिये। रात्रि में सभी सोते हैं, क्यों दूसरों की रात खराब की जाती है।’

पिता जी ने खॉमते हुए धीमे से कहा—

‘मैं तो इसी सोच में चिंतित रहता हूँ। यह नगाडा महीने भर तक चलेगा, कैसे क्या होगा।’

रमानंद जी ने गला साफ करते हुए कहा —

‘ऐसे ही दफ्तरो में, स्कूलों में शुक्र की नमाज के लिये अवश्य छुट्टी माँगी जाती है, यद्यपि वह भी समझते हैं कि ‘मग़ा असली रोज़ा नमाज़ ता जुब्य का कार्य है। इन्सान रोज़ा नमाज़ से नहीं पहचाना जाता, वह तो अपने फेल से पहचाना जाता है।’

मैकू मामा ने अपनी ठुड्डी पर हाथ फेरते हुए कहा—

‘उच्चतर अर्थों में हिन्दू और मुसलमान दोनों ही एक ही धर्म का पालन करते हैं। एक ही दिव्य-शक्ति को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं। त्यागमय जीवन की सभी प्रशंसा करते हैं। यह तो धर्म की रूढ़ियाँ हैं, जिनके लिये दोनों ही लड़ते हैं।’

रमानंद अपनी नाक की ऊँचाई पर उँगलियाँ फेरते हुए बोले—

‘दोनों को एक करने का प्रयास तो बहुत दिनों से हो रहा है। कबीर, रहीम और अकबर समाप्त हो गये। देखिये गाँधी जी लगे हुये हैं पर इन्हें भी सफलता मिलती नहीं दिखती।’

पिता जी ने हल्के से अपना पैर सीधा करते हुए कहा—

‘देखो मैकू यह पैर सूजता आ रहा है। इसमें मकोय के पत्ते बांधने को बताया है, एक ने। शायद वही लाभ कर जाय। लिबर इजेक्शन्स तो इतने लगवा डाले उससे कोई लाभ नहीं हुआ। उल्टे सूजन बढ़ रही है।’

जीजा जी इजेक्शन्स का प्रचार बहुत बढ़ रहा है। गाँधी जी तो इसको पसंद नहीं करते। यह इजेक्शन्स अल्प समय के लिये भले ही लाभप्रद हो पर इनसे जड़ से बीमारी नहीं जाती।

रमानंद जी कुरसी पर सम्हलकर बैठते हुये बोले, जो एक ठब से बैठे-बैठे थक गये थे।

‘आजकल अग्रेजी दवाइयो का प्रचार बहुत अधिक बढ़ गया है। हम अपना वैद्यिक इलाज भूलते जा रहे हैं। यह कितना सस्ता होता था, तथा सभी घराने मोटे-मोटे नुस्खो से परिचित थे। इस अग्रेजियत ने ऐसा जामा पहनाया है कि हमको अपनी ही वस्तुओं से घृणा होने लगी है।’

मैकू मामा ने पिता जी के पैर पर हल्के से हाथ सुहलाते हुए कहा—

‘जीजा जी कल मैं मकोय तथा कासनी के पत्ते लाऊँगा और दोनों ही को बाँधकर देखा जाय जैसा कि वैद्य जी बतला रहे थे। मुझे तो लगता है, उससे अवश्य लाभ होगा।’

फिर से अपने मोड़े पर बैठते हुए मैकू मामा बोले—

‘बात यह है। अग्रेज जाति ही कृत्रिमता से परिपूर्ण है। उसकी प्रत्येक वस्तु ऊपर से मुलम्मा चढ़ी हुई नेल पोलिशड होती है। अदर से वह जैसी भी हो। प्रथम दृष्टि पर तो आकर्षित कर ही लेती है। हमारी प्रत्येक जड़ी-बूटी के रस को सफेद टेबलेट्स के रूप में आपके सामने प्रस्तुत करने में वह दक्ष है।’

रमानंद जी ने जुम्हाई भरते हुए कहा—

‘नहीं कोई कोई तो बड़े अच्छे इलाज उन्होंने निकाले हैं। पर उनके इलाज खर्चीले बहुत हैं। वैसे उनके यहाँ सबसे अच्छी सरजरी है। भयकर रोगों को भी वह चीडफाड के द्वारा अच्छा कर लेते हैं।’

मैकू मामा सिर हिलाते हुए बोले—

‘यह तो ठीक है, पर इसे अपने पुराने वैद्यिक इलाज को भी प्रोत्साहन मिलना चाहिये। इसी प्रकार होम्योपैथिक को लोग महत्व नहीं देते। उसमें भी बहुत अच्छी दवाये हैं। जीजा जी वैसे तो शायद आपको मकोय के पत्ते ही लाभ कर जाये अन्यथा आपको मैं किसी होम्योपैथ को दिखलाऊँगा।’

पिता जी सिर के नीचे हाथ रखे छत की ओर देख रहे थे। वह बोले कुछ नहीं।

उन्होंने मुझे पुकारते हुए कहा—

‘चटू, केशव मे पूछना कि इस सप्ताह के पत्र का सस्करण सबको पहुँच गया ।’

मैकू मामा ने पिता जी के निकट अपना मोटा ले जाते हुए कहा—

‘जोजा जी आप चिन्ता न करे । केशव की प्रतीक्षा आज भी की थी, वह आया नहीं । कल मैं और चटू स्वयं यह कार्य करेंगे । लोगो के घर मे पहुँचा आऊँगा ।’

दूसरे दिन मैंने तथा मैकू मामा ने साइकिल पर बैठकर सबके घर उस सप्ताह का सस्करण शीघ्र ही पहुँचाया, अन्यथा अखबार पुराना हो जाने से ग्राहक लेने से मना कर देते ।

पिता जी रोगग्रस्त थे । पर उन्हें अपने मशीन मैन, कम्पोजिटर तथा प्रूफ रीडिङ्ग की सदैव चिन्ता रहती । मैकू मामा लेख लिखने मे व्यस्त रहते । मैं पिता जी के रस निकालने से जो भी समय मिलता, उसमे मैकू मामा की सहायता करता । अगले सप्ताह के लिये मैकू मामा ने मुझसे भी ममाज सेवा पर एक लेख लिखवाया । पिता जी को मेरा लेख देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई । कालेज के विद्यार्थियो ने मेरे लेख को पढा । किसी ने कहा—‘मैंने अपने मैकू मामा अथवा पिता जी से लिखवाया होगा, तथा किसी किसी ने मेरी प्रशंसा भी की ।’

मुझे अदर ही अदर से प्रसन्नता होती थी कि मैं लेख लिख लेने लगा । मुझसे मैकू मामा बीसियो लेख लिखवाकर फडवा देते । इस प्रकार मेरा अभ्यास पढता गया और मैं मैकू मामा के साथ के अनुभवो को बड़ी दक्षता के साथ लिखने लगा ।

अब मुझे ही नौकर का कार्य करना पड़ता । पिता जी की सृजन ठीक हो जाती पर थोड़ी सी भी बदपरहेजी से उनका रोग उभर आता । मैं प्रातः अपने अखबार साइकिल के कैरियर मे बाँधकर निकल जाता । कोई कोई कुत्ते मेरा पीछा कर लेते । कठिनाई से उनका पीछा छूटा पाता ।

एक दिन एक बँगले की नवयुवती जो यह जानती थी कि मैं लिखना हूँ। उसने मेरा लेख पढ़कर मेरी प्रशंसा की। मैं फूला न समाया। मैंने उसकी प्रशंसा पर अपना सिर नीचा कर लिया वह बोली—

‘आपका लेख बहुत सुन्दर था। मुझे उसकी शैली में नवीनता दृष्टिगत हुई। विशेषकर आप समाज सेवा पर जो लेख लिखते हैं, क्या वह आपके अनुभव हैं, और यह मैकूलाल जी कौन सज्जन हैं?’

मैंने सुस्कराहट झिपाकर नीचे का होठ जो मैं अपने ऊपर के दानों से दबाए था, छोड़ते हुए कहा—

‘जी वह मेरे मामा हैं’।

उसने ऊपर नीचे सिर हिलाते हुए कहा—

‘अच्छा तो घर भर समाज-सेवक तथा लेखक हैं।’

मैं कुछ न बोला तथा वहाँ से फाटक तक पैदल ही आया। मेरे मस्तिष्क में बहुत सी बातें एक साथ आईं।

मेरी साइकिल के पहिये घूम रहे थे। पिता जी की बीमारी पर बहुत व्यय हो रहा था। अखबार से आय भी इतनी न थी। कालेज की पढाई इत्यादि का व्यय। इतना परिश्रम करने पर भी धन का अभाव। जहाँ भी अखबार ले जाता, उनके सुसज्जित बगले। उनका उच्च स्तर का रहन-सहन। मैं सोचता ‘अवश्य ही उन्हें मुझसे कहीं अधिक परिश्रम करना पड़ता होगा’ किसी बगले से रेडियो के गाने प्रातः साढ़े छ. से सुनने को मिलने लगते। कहीं बराम्दे में ही मूल्यवान् क्रोकरी सेट्स में चाय तथा कॉफी के दौर दिखते। दूसरी ओर मुझे मैकूलाल मामा के दयनीय जीवन की झाँकी दिखती। वह दिन-रात परिश्रम करते। रात-रात को उठकर वह लिखते रहते। फिर भी अखबार की आय इतनी नहीं थी कि हम लोगो का जीवन सुविधापूर्वक चल सकता।

एक स्थान पर मैं नया ब्राह्मक बनाने के लिये गया। पोर्टिको में कार खड़ी थी। नौकर झाड़न से मोटरगाड़ी साफ कर रहा था।

साहब बहादुर गरमी के दिनों में सूती गाउन पहने पोर्टिको के पास ही अपने पुष्प उद्यान में टहल रहे थे। मैंने साइकिल स्टैंड पर खड़ी कर उनकी ओर अपना साप्ताहिक देते हुये कहा—

‘साहब यह साप्ताहिक बहुत सुन्दर है। इसमें अःदर्शमूलक साहित्य का अवलोकन आप कर सकेंगे’।

साहब ने जो थे पूरे हिन्दुस्तानी, भारत की मटमैली मिट्टी के ही पुतले, पर ऐंग्लोइंडियन हिन्दुस्तानी में बोले—

‘यह हिन्दी भाषा का आदर्श साहित्य क्या होगा। यह आइडियलिज्म का जमाना नहीं है। हम रियलिज्म में रहता है। तुम अपना अखबार का सफलता चाहता है, तो इसके कवर पेज पर किसी सिनेमा स्टार का चित्र दो।’

कुछ रुककर अखबार के दो-चार पन्नों पर विहगम दृष्टि डालते हुए बोले—

‘यह समाज-सेवा’ ‘निरक्षरता के प्रति स्त्रियों का कर्तव्य’ ‘अस्पृश्यता निवारण’।

यह सब ढोंग है। यह गाँधी बुढ़ा हम सबको चौपट कर देगा। सब समाज-सेवा करेगा। पहले अपना सेवा करे। गाँधी स्वयं अपने लडका पर काबू नहीं कर पाया। मेहतर को ऊँचा उठा दिया। ठीक से बात नहीं करता नोकर लोग’।

मैं चुपचाप सुनता रहा। जैसे ही उन्होंने मेरे हाथ में अखबार रखा। मैंने उनकी ओर देखते हुए कहा—

‘आप अखबार न ले, पर यह आदर्श की बुराई। गाँधी नीति की भर्त्सना से क्या लाभ’।

वह महाशय मुझ पर अकारण अकड़ गये।

‘हम क्या बोला। ठीक बोला। अच्छा बाबा जाओ यहाँ से। हम को तुम्हारा हिन्दी अखबार नहीं चाहिये’।

यह कहते हुए वह अपनी गाउन की मिलकेन डोरें कमते हुए अपने दोनो हाथों को दोनो जेबों में डालकर टहलने लगे।

मै लज्जित-सा पर आत्माभिमानपूर्वक अनोखी दृष्टि में माहब की ओर देखता हुआ उनके फाटक के बाहर हो लिया।

घर लौट कर मैकू मामा से मैने सारी कथा कह सुनाई।

मैकू मामा किसी लेख के लिखने में व्यस्त थे।

जैसे ही मैने कहा 'माहब कह रहे थे यदि अपने अखबार की सफलता चाहते हो तो कवर पेज पर आकर्षक चित्र दो। सिनेमा स्टारों के फोटो दो।'।

मैकू मामा ने अपना कलम मेज पर रख दिया। मेरी ओर देखते हुये बोले—

‘चढ़, तुम कहाँ गये थे। वह कौन माहब है जो ऐसा कहते हैं।

मैने बताया, ‘जार्ज टाउन में उनका बगना है। जार्ज टाउन में मुख्य सड़क पर शायद द्वाग-तीनरा बगना है’।

मैकू मामा ने सिर हिलाने हुए कहा—

‘अच्छा वह एक धनी महाराष्ट्री व्यक्ति है। उनके कई केमिस्ट शॉप्स हैं। वह उन सबका प्रोप्राइटर हैं। उन्हें बकने दो। हमें समाज को गंदा कर धनी नहीं बनना है। डाक्टर का कार्य होता है जन सेवा करना। जिस दिन डाक्टर पैसा बटोरने को सोचने लगता है, उन्ही दिन से वह डाक्टर नहीं रहता, वह एक मोटे तौल वाला सेठ हो जाता है, जो अपनी ऊँची अट्टालिका को देखकर ऐसा ही प्रसन्न होता है जैसे कोई कुत्ता अपने आगे दूध में लबालब भरे हुए किसी टब को। वह महाराष्ट्री अपने आगे डाक्टर भी लिखता है। ऐसे व्यक्ति की उपाधि छीन लेनी चाहिये।’

फिर रुक कर अपना कलम हाथ में लेते हुए बोले—

‘और क्या कह रहा था। इसके कवर पेज पर सिनेमा स्टार की तस्वीर दी जाय।’

मैंने मुस्कराने हुए आगे कहा—

‘और कह रहा था। यह आइडियलिज्म का जमाना नहीं है। रियलिज्म का युग है।’

मामा नथुने फुलाते हुए बोले—

‘वह बेवकूफ है। उत्कृष्ट साहित्य सदैव जीवित रहता है। मनोरजनार्थ लिखा हुआ साहित्य क्षणभंगुर होता है। तुलसीदास, मिल्टन तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर सदैव जीवित रहेंगे। तुलसी के समय में भी रीतकालीन रूढ़िवादी अश्लील साहित्य की भरमार थी, पर उन्होंने जनहित का ध्यान करके उन सबमें मेल न खाने वाले साहित्य का ही सृजन किया।’

मैंकू मामा गला माफ करते हुए आगे बोले—

‘मैं गरीबी से रह लूँगा। धन कमाने के लिये मैं समाज के सम्मुख अश्लील आकर्षक तथा नग्न चित्र नहीं प्रस्तुत करना चाहता। गाँधी जी सत्य की रक्षा के लिये अपने जीवन की आहुति दे रहे हैं। मैं क्या इतना भी नहीं कर सकता कि कम से कम समाज में बुरी भावनाओं का प्रसार न होने देंगा, यदि मैं उनके रचनात्मक कार्यों में सहयोग नहीं दे सकता।’

मैं मैंकू मामा के वाक्यों को गम्भीरता से शांतपूर्वक सुनता रहा। इतने में पिता जी ने खॉसते हुए पानी माँगा। मैं उन्हें पानी देने चला गया। मैंकू मामा जो कभी कलम की कैप को बन्द कर देते। कभी खोलकर ऊपर लगा लेते। फिर से कलम की कैप खोलकर कुछ सोचने में व्यस्त हो गये।

राखन मामा जी-जान से अपनी खेती कर रहे थे। इधर वह आये हुए थे। पिता जी धीरे-धीरे स्वस्थ हो रहे थे। उन्हें मकोय तथा कासनी के पत्ते लाभप्रद सिद्ध हुए। लिवर के इन्जेक्शन बन्द कर दिये गये थे। उससे उनके हृदय पर व्याघात पहुँचा था उन्होंने केवल फल तथा हरी सब्जियों के रस पर रहकर अपना स्वास्थ्य सम्हाल लिया

था। अभी वह पूर्ण विश्राम ही किया करते थे। राखन मामा तथा मैकू मामा उनके पास बैठे थे। मै पिता जी के लिये मुमम्मी का रस निकाल रहा था। राखन मामा ने मैकू मामा से धीमे ने कहा—

‘भइया मेरे विचार से बिटन्ना अब काफी मयानी हो गयी है। उसने इटरमीडियट परीक्षा भी पास कर ली है। उसका विवाह हो ही जाना चाहिये। अबकी फसल अच्छी हुई है। उस धन को मैं उसके विवाह में लगा देना चाहता हूँ, जैसा कि मैंने वादा किया था।’

पिता जी ने अपनी दो मोटी तकियों के सहारे अपनी पीठ टिकाने हुए राखन मामा की ओर देखते हुए कहा—

‘बहुत अच्छे हो राखन तुम। मैं जितनी कल्पना भी नहीं कर सकता था, उसमें कहीं अधिक अच्छे निकले तुम। एक डिग्री कालेज के अध्यापक हैं। मैं उनसे बात करूँगा। मैं उनके पिता जी को भी जानता हूँ। वह मुझे बहुत मानते हैं। बात पक्की हो जायगी।’

मैकू मामा ने पिता जी को ओर देखते हुए कहा—

‘आपका मनझा हुआ लडका है फिर हम लोगो के लिये आप ही नव कुछ है। इस विवाह को शीघ्र तय ही कर दीजिये।’

पिता जी ने स्वस्थ होने पर विवाह की तैयारी करवा दी और प्रोफेसर विनोद कुमार के साथ बिटन्ना मोसी का विवाह नुनम्पन्न हो गया। उन्होंने विवाह में एक पैसा भी दहेज नहीं लिया। लोग उनकी इस बात की बड़ी प्रशंसा कर रहे थे। विवाह पिता जी के घर से ही हुआ। मिट्ठन मामा इत्यादि सभी ने सम्मिलित होकर धूमधाम से विवाह कर विदाई कर दी।

मैं विश्वविद्यालय की एम० ए० फाइनल कक्षा में धीरे-धीरे पहुँच गया। मेरे सभी प्रकार के मित्र बने। कोई उनमें साहित्यिक था, तो कोई धनी विद्यार्थी अपने पैसे व्यय कर विश्वविद्यालय के क्लब नुमा जीवन का आनन्द लेता दीखता। एक दिन एक धनी मारवाडी साहब

सुपुत्र ने अपने यहाँ खाने का न्यौता दिया। उनके यहाँ बहुधा जाने का अवसर होता था। उनकी कोठी का चौड़ा सा बराम्दा था। उनके पिता जी बीच बराम्दे में पड़े हुए तखत पर बैठकर सध्या समय अपने कर्मचारियों को लेकर दिन भर का लेखा-जोखा कर रहे थे। उनका सुपुत्र दीनानाथ जो मेरा सहपाठी था, मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मैं उचित समय पर पहुँच गया। उसका कमरा बराम्दे के एक किनारे पर था। बँगले के सामने चौड़ा पोटिको था, जहाँ पालिश चढ़ी हुई पुरानी मोटरकार खड़ी रहती थी। दीनानाथ के ड्राइंग रूम में जिस प्रकार पुराने पालिश चढ़े हुए सोफे रखे हुए थे, उसी प्रकार दीनानाथ के कमरे में भी पुराना पालिश किया हुआ फर्नीचर था। सेठ जी की गाड़ी कमाई को विश्वविद्यालय में पढ़ा हुआ विद्यार्थी अपने ऊपर व्यय करने में कोई कमर नहीं रख रहा था। दीनानाथ ने अपने कमरे का नवीनीकरण करने के लिये एक आलमारी के अन्दर एक दर्जन नये सूट सिलवाकर रख छोड़े थे। उसने चमड़े का नया सूटकेस डेढ़ सौ रुपए का खरीदा था, जिसे उसने अपने कमरे की ड्रेसिंग आलमारी के पास ही डाल रखा था। उसके कमरे के फर्श पर दरी के ऊपर श्वेत चादर बिछी रहती और उसके मिलने वाले फर्श पर ही बैठा करते। उसने गांव तकियों पर मखमली गिलाफ चढ़वा रखे थे। उस छोटे कमरे के बीचोबीच में बिजली का पखा घूमता रहता। दिवाल के दो कोनों में तिकोने ड्रेसिंग शीशे की ड्राटे थी। किनारे की दीवाल पर दो टेनिस रैकेट भी टँगे रहते। वह अच्छा खिलाडी तो न था, पर टेनिस का खेल सभ्य समाज का द्योतक होने के कारण उसने उससे रुचि रख छोड़ी थी। कमरे के बाहर जूट मैटिंग डालकर वही उसने एक पिता के दिये हुए पुराने स्प्रिंगदार सोफे को ठीक करवा कर रख छोड़ा था। कोने की एक टेबिल पर कागज के सुन्दर रंग बिरंगे फूल मुरादाबादी नक्काशीदार फूलदानों में रखे थे। सोफे की सामने की मेज पर नये ताजे अपने बाग के फूलों से गुलदस्ता सजा रखा था।

मैं कमरे में बैठा हुआ था इतने में दीनानाथ अन्दर से आया ।  
आते ही बोला—

‘हलो चंदू, आ गये । मैं तो तुम्हारी प्रतीक्षा ही कर रहा था ।  
अच्छा सुनो मैंने एक और मित्र को बुलाया है । मैं अभी आता हूँ,  
तुम बैठो ।’

वह मुझे छोड़कर चला गया । मैं कुछ देर तक प्रतीक्षा करते हुए  
थक गया था । अतः उठकर बाहर जाकर झाँकने लगा । दीनानाथ अपने  
पिता जी के सामने से होता हुआ अपने मित्र के साथ आ गया । मैं  
उसे देखते ही कमरे के अन्दर हो लिया । पिताजी अपनी मारवाड़ी  
टोपी लगाये अपने कर्मचारियों से उलझ रहे थे । उन्होंने एक बार अपने  
सुपुत्र तथा उनके साथ के मित्र को देखा और अपने मुनीम से कहते  
हुए बोले—

‘अच्छा भइया ने अपने मित्रों का भोजन किया है और फिर वह  
चश्मे के अन्दर अपनी आँखें चलाते हुए मसनद को नमहालते हुए  
बैठ गए ।’

मुनीम ने जो सामने काठ की कुरसी पर बैठा था, जिसके हत्ये  
टीन की पत्तियों के टूटे होने के कारण कील ठोक कर जोड़ दिये गये  
थे, उस ओर अपनी कुरसी से मुड़कर एक बार देखा फिर अपने काम में  
वह वैसे ही व्यस्त हो गया ।

जैसे ही वह मित्र महाशय कमरे में प्रविष्ट हुए मैं उठ खड़ा हुआ ।  
दीनानाथ ने तुरन्त मुस्कराते हुए कहा—

‘अरे बैठो यार ।’

उसने यह कहते ही नये मित्र जी का हैट उतारकर कोने में डाल  
दिया । उसका डबल ट्रेस्ट का कोट स्वयं उतारने लगे । मित्र महाशय  
के सामने से लम्बे बालों के मैंने दर्शन किए । जैसे ही उसने उसका कोट  
उतारकर सामने खूँटी पर टाँग दिया । मित्र की लम्बी चुटिया चमक  
उठी । मैं ध्यान से उसकी ओर देखने लगा । मित्र लज्जा से नतमुख

था। मुझे समझने में आश्चर्य हो रहा था। मैंने सोचा हो न हो यह फैंसी ड्रेस का शायद कोई कार्यक्रम हो रहा है। दीनानाथ ने बाहर जाकर धीरे से दरवाजे बन्द कर दिये। तुरन्त ही अन्दर प्रवेश करते हुए बोला—

‘बैठिये खन्ना साहब आप शर्मा क्यों रहे हैं।’

फिर से मुस्कराना हुआ बोला—

‘आप मेरे मित्र हैं चट्ट जी।’

मैं खन्ना साहब के बैठने पर भी उनके उभरे हुए वक्ष को ध्यान से देखने लगा कि शायद खन्ना साहब को फैंसी शो के लिए स्त्री तथा पुरुष एक साथ बनाया गया है।

खन्ना साहब ने भिनभिनी भाषा में कहा—

‘मैं प्यासी हूँ। एक ग्लास पानी पिऊँगी।’

दीनानाथ ने अदा में हाथ हिलाते हुए उत्तर दिया—

‘अरे पानी क्या, आपके लिए तो जान हाजिर है।’

दीनानाथ पानी लेने चला गया।

मैंने खन्ना साहब से पूछा—

‘क्या आप भी विश्वविद्यालय में पढ़ते हैं। किस कक्षा में।’

दीनानाथ जैसे ही पानी के ग्लास के साथ प्रवेश करने लगा, उसने मेरी बात सुन ली थी। पानी की सुराही उसके बाहर वाले छोटे कमरे के सोफे के पास ही रखी थी। दीनानाथ ने मेरी बात का उत्तर देते हुये कहा—

‘अरे चट्ट तुम इनको पहचानते नहीं, यह बी० ए० फाइनल में पढ़ते हैं।’

खन्ना साहब भी शांत थे, पर धीमे से मुस्करा दिये और फिर सिर नीचे कर लिया।

दीनानाथ ने फिर से खन्ना साहब की पीठ पर हाथ मारते हुये कहा—

खन्ना साहब आप आराम से पतलून खोलकर बैठे, मैं आपको पाजामा दे दूँ।'

खन्ना साहब धीरे से अदा में उठे। जैसे ही उन्होंने अपनी पतलून उतारी। वह चूड़ीदार पाजामा पहने हुये थे। इसके साथ ही ऊपर उन्होंने कॉलरदार शर्ट पहन रखी थी। जैसे ही मैंने उनके पीछे मुड़ने पर उनकी चोटी के लम्बे बाल देख लिये मेरी कौतुहलता समाप्त हो गई। मैं समझ गया वह कोई युवतों की। चोटी गुँथा हुई, उभरे हुये वक्ष, तिनम्ब बाहर को स्पष्ट भरे हुये थे। मैं काँप गया। मैं ओठ दबा कर बैठा बैठा सोचने लगा। मुझे उसी समय जज माहब के लडके वाली घटना याद आ गई। मैं यहाँ भी 'बलियाटिक' ही बना हुआ था। मैंने उधर दृष्टि डाली। उसके रक्तिम वर्ण के कपोल थे। पतली ठुड्ढी आगे को निकल रही थी। माँग टेडी सँवारकर निकाली गई थी। उसके कोमल हाथों की छोटी उँगलियाँ तथा भरी हुई जाँघें आज भी याद कर 'माधव जी मिथियाँ' उपन्यास के गुनीसिंह यथा गन्नावेगम की स्मृति दिला देती है।

दीनानाथ ने उसकी पीठ ठोकते हुये कहा—

'आओ जी खन्ना जी। इनसे मत घबराइये। यह हमारे परम मित्र बहुत अच्छे कहानी लेखक है। पत्रकार तथा कहानी लेखक किसी से किमी का राज नहीं खोलने।'।

मैंने धीमे से उठते हुये कहा—

'दीनानाथ मैं अभी आता हूँ।'।

जैसे ही मैंने धीमे से दरवाजा खोला। शायद उसने स्वयं मेरे कहने के ढब से ताड़ लिया कि मैंने उसके उस कार्य को पसन्द नहीं किया था। उसने भी धीमे से दरवाजा बंद कर लिया। मैं वापस हो लिया। मैं चिन्तित-सा इस मसाली गोरखधन्ने को सोचना हुआ आगे बढ़ रहा था।

एक मन के कोने से इच्छा हो रही थी 'मैं क्यों लौट आया। फिर

से वापस चलूँ। बड़ा ही आनन्दमय दृश्य था, पर कोई उपचेतन से मेरे पैर वापस चलने से रोक रहा था, नहीं तुम्हारा मार्ग उधर नहीं है। मुझे नाना, पिता जो तथा विशेष रूप से मैकू मामा के वाक्य याद आ रहे थे। सब कुछ देखते चलो। जो उत्कृष्ट है उसे ही ग्रहण करो। अशोभनीय से दूर रहो।'।

मैं मैकू मामा से इस विषय पर कुछ न कह सका। दीनानाथ उनके बाद भी मुझे मिला। वह हँसकर बात टाल देता। न ही उस विषय पर मैंने अधिक छानबीन करने की चिन्ता की और दीनानाथ भी उस राज को खोलना न चाहता था।

मेरा साप्ताहिक चल रहा था। एक साहित्यिक गोष्ठी की जिसका मैं भी सदस्य था उसकी बैठक हो रही थी। एक उर्दू के प्रोफेसर जिन्हें हिन्दी में थोड़ी बहुत रुचि झमलिये थी कि वह केवल हिन्दी की दुर्बलताओं को जान सके और उसकी खिल्ली उड़ा सके। उनके साथ उनके दो-तीन समर्थक उनकी ओर से बोलने वाले अवश्य होते।

कमरे की फर्श पर सब लोग बैठे थे। फर्श के कालीन पर गाव तकिये पड़े थे। प्रमुख लोग गाव तकिये लगाकर करवट से आधे लेटे से थे। उर्दू वाले प्रोफेसर साहब जीवनराय एक बड़े गाव तकिये से सटकर बैठे थे। पास ही उनके हुक्का था। हुक्के के दो तीन कण खींचते हुये उन्होंने कहा—

‘अच्छा चट्टू साहब अपनी कहानी पढिये।’

सब लोग शान्तपूर्णक सुन रहे थे। जैसे ही मैं कहानी समाप्त कर चुका। प्रोफेसर साहब बोले—

‘भाई एक बात है। हिन्दी वाले मुहावरो का प्रयोग नहीं करते। भाषा में वह सलाहियत नहीं आ पाती। ठठाका मारकर बोल पड़े—

हिन्दी भाषा में ही कुछ पिनपनाहट सी होती है।’

प्रो० जीवनराय के यह कहते ही शमीम साहब जो प्रो० साहब

की हामी भरने वाले लोगों में थे, अपने दुबले चेहरे से दाँत दिखाते हुये बोले—

‘बात यह है साहब, हिन्दी वाले कुछ दखियानूसी खयाल के होते हैं। प्रेमचन्द को साहब हिन्दी वाले अपना मानते हैं पर अगर प्रेमचन्द उर्दू न पढ़ते तो उनकी ज़बान में वह निखारपन और लोच न आ पाता’ एक हिन्दी के प्रो० डॉ० मधुर जो बैठे अपने होठ दाँतों से दबा रहे थे, शमीम साहब की बातों को ध्यानपूर्वक सुनते हुये बोले—

‘हिन्दी वाले तो उर्दू से कुछ सीख भी रहे हैं, पर उर्दू वाले भी तो हिन्दी की अच्छाइयों को सीखें अथवा हिन्दी में सब कुछ निकृष्ट ही है।’

प्रो० जीवनराय ने सीधे होकर बैठते हुये कहा—

‘देखिये माफ कीजियेगा मधुर जी आप लोग जान बूझकर कड़े शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। पुछिये ‘निकृष्ट’ के स्थान पर आप ‘खराब’ कहें, जो सुनने में भी अच्छा लगता है।’

हाथ फैलाकर मुँह गोल कर दाँत दिखाते हुये बोले—

‘नि.....क.....र.....ष्ट.....’ पाँच सेकेंड तक उन्होंने इस शब्द को उच्चारित किया। फिर शमीम साहब की ओर मुँह दिखाते हुये बोले—

‘अरे साहब मेरे तो मुँह के सारे मसल्स हिल गए।’

अपने मुख की शिकनों को शांत करते हुए बड़ी सरलता से मुँह आगे बढ़ाते हुए कहा—

‘अरे साहब इसकी जगह आप कह दीजिये ‘खराब’। इस शब्द को उन्होंने बड़ी सरलता से एक सेकेंड के दसवें भाग में उच्चारित कर दिया।’ हँसकर ठहाका लगाते हुए बोले—

‘कैसी आसानी से आप तलपफुज कर गये।’

शमीम साहब के साथी अजमल साहब ने अपनी सफेद शेरबानी पर हाथ फेरते हुए अपनी जाँघों पर बैठते हुए कहा—

‘अरे साहब आपने दियासलाई की हिन्दी सुनी है।’

प्रो० जीवन राम ने एक सिगरेट सुलगाते हुए कहा । हुक्के की तम्बाकू रखे रखे जल चुकी थी अतः उन्हें सिगरेट सुलगानी पड़ी ।

‘हाँ साहब, बतलाइये ‘धू ‘अ ‘श ‘ला ‘खा’ और ऐसा कहते हुए वह ठहाका मारकर हँस पड़े ।

शमीम साहब भी एक सिगरेट सुलगाकर बोले—

‘अरे साहब वह लेटर बाक्स की हिंदी बड़ी मजेदार है ‘पत्र घुसेड़’ यह अल्फाज किसी मोहज्जब आदमी के सामने बोलने लायक है ।’

मैकू मामा भी मेरे पास आये थे । वह शातपूर्वक एक कोने में एक अंग्रेजी के प्रोफेसर ननखा तथा हिन्दी के एक मानी कवि जिनका हिन्दी कवियों में प्रमुख स्थान था, उनके पास बैठे हुए थे । मैकू मामा कुछ कहना चाहते थे पर कवि जी तुरत अपनी ग्रीवा ऊपर करते हुए बोले ।

‘अरे भाई यह ‘त-ल-फ-ज’ ज पर देर तक जोर देकर उच्चारण करते गये इसमें शायद सात सेकेड लग गये । और यह ‘बुरका’ तथा ‘मताला’ किस भले समाज में कहने योग्य है ।’

प्रो० मधुर तथा तनखा साहब मुस्कराकर हँसने लगे तथा मैकू मामा ने मुस्कराते मुस्कराते अपने नीचे के दाँतो से होठ दाब लिये और एकबारगी गंभीर हो गये ।

प्रो० जीदनराम जिनकी भौहे चढ़ गई थी अपने एक पैर की पिंडली पर सम्मलकर बैठते हुए बोले —

‘साहब हिन्दी वाले कितनी जल्दी चिढ़ते हैं । यदि यह कहा जाय कि हिन्दी की पुरानी कविता में सिवाय राधा कृष्ण की छेड़छाड़ के अतिरिक्त और क्या है, तो इसमें तो बुरा मानने की बात नहीं है ।’

शमीम तथा अजमल साहब जो कुछ बोलना चाहते थे पर उनकी बात को आगे बढ़ाने वाला एक प्रमुख व्यक्ति था ही इस कारण मुख से हे हे कहते हुए हँस पड़ते ।

प्रो० जीवनराय के बोल चुकने के पश्चात् ही प्रो० मधुर ने प्रत्युत्तर करते हुए कहा ।

‘और इस पर भी बुरा नहीं मानना चाहिये यदि यह कहा जाय कि उर्वू शायरी अधिकतर आशिकी और माशूकी से भरी हुई है ।’

प्रो० मधुर के यह कहने ही अजमल साहब बड़े अदाज से ठठाका मारते हुए बोले—‘वाह साहब हम तो आपकी इस बात पर ही आशिक है ।’

अजमल साहब ने जैसे ही उँगली नचाते हुए यह बात समझ की कि, प्रो० जीवनराय तथा शमीम साहब कहकह लग उठे ।

शमीम साहब बड़े अदाज से हुक्के की चिलम फूँककर हुक्के की नली मुँह से लगा ली और दो कश लेने के पश्चात् बोल पड़े—

‘इसका साहब कोई जवाब नहीं है ।’

कुछ रुककर सोचने हुए, जमीन पर पड़े हुए अपने घुटने पर हाथ रखते हुए बोले ‘यह जिदगी की बारीकियाँ हैं । जमीन आसमान पर आशिक है, आसमान जमीन पर आशिक है । मैं आप पे आशिक हूँ, आप मुझ पे आशिक हैं ।’ शमीम साहब के यह कहते ही सबलोग ठठाका मारकर हँस पड़े ।

अजमल साहब ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कही ।

‘अरे साहब इश्क हकीकी से ही इश्क मजाजी तक पहुँचा जाता है ।

प्रो० मधुर जो नीचे वाले होठ को ऊपर वाले दाँतो में दबाए हुए ध्यान से सुन रहे थे अपने होठ को छोड़ते हुए बोले—

‘बस इतना ही यदि आप लोग समझ लेते तो शायद आपको वाद-विवाद करने की आवश्यकता ही न पड़े । राधाकृष्ण जो देव रूप में प्रतिष्ठित थे वह कालान्तर में परिस्थितियों के प्रभाव के फलस्वरूप लौकिक प्राणी बन गये और मुगलकाल के कवियों ने अपने आश्रय-दानाओं की वाहवाही लेने के लिये उनके प्रतीक में अपनी हृदय-विलासिताओं को व्यक्त करना प्रारम्भ कर दिया ।’

शमीम साहब जो मुँह लम्बा कर मत्थे पर दो बल डाले हुए गौर में सुन रहे थे प्रो० मधुर के तुरत समाप्त करते ही अजमल साहब तथा प्रो० जीवनराय की ओर देखते हुए बोल उठे ।

‘अरे साहब आपने कहा क्या । मेरे तो कुछ भी पत्ते नहीं पडा ।’

मैकू मामा जो अब तक शांत बैठे थे अपनी आवाज आगे बढ़ाते हुए बोले—

‘बात यह है, जो कुछ भी मैं अपनी कम बुद्धि में समझ सका हूँ, शायद हिन्दी वाले उर्दू वालों को नहीं समझना चाहते तथा उर्दू वाले हिन्दी वालों को नहीं समझना चाहते । यद्यपि कहते सब वही है जो एक कहता है । किसी देश का विद्वान कोई भिन्न बात नहीं कहता । यह केवल शब्दों का झगडा है । भाषा किसी के बनाये नहीं बना करती । वह स्वयं अपना मार्ग तय कर लेती है । भाषा उस निर्झर के समान होनी चाहिये जिसमें अनेक छोटे-छोटे झरनों की शाखाएँ मिल जाती हैं और आगे चलकर वह एक विशालकाय यानी महान रूप धारण कर लेता है ।’

मैकू मामा की ओर सब ध्यान से देखने लगे । मैकू मामा ने खासते हुए आगे कहा—

‘यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे यहाँ अनेक जातियाँ आईं । भारतवर्ष ने उन सबके शब्दों को अपनाया । तुलसीदास तथा सूरदास ऐसे महान कवियों तक ने ‘जहाज’ तथा ‘गरीब नेवाज’ आदि शब्दों को अपना लिया फिर आज हम उस मसले को क्यों नहीं सुलझा सकते । प्रत्येक को उदार दृष्टिकोण रखना होगा ।’

अजमल साहब मैकूलाल जी की ओर देखते हुए बोले—

‘आप ठीक कहते हैं पर यह हिन्दी वाले खोज खोज कर संस्कृत के शब्द अपनी भाषा में रखते हैं । इसका क्या जवाब है ।’

प्रो०—मधुर ने गला साफ करने हुए प्रो० जीवनराय फिर अजमल साहब की ओर देखते हुए कहा—

‘और पूरे मुगलकाल में क्या होता रहा। क्या हिन्दी काव्य को ऐसा गिरना चाहिये था कि जहाँ हिन्दी में मलिक मोहम्मद जायसी रसखान तथा अब्दुल रहीम खानखाना ऐसे उत्कृष्ट कवि रचનાयें कर रहे थे। औरंगजेब के समय तक उसका ऐसा ऐसा अधःपतन हुआ कि हिन्दी में राधाकृष्ण की छेड़छाड़ के अतिरिक्त कुछ नहीं है कहकर उसका तिरस्कार किया गया।’

मैकू मामा जो फर्श पर पड़े हुए पैर पर हाथ की उँगली चलाते जा रहे थे पर ध्यान बातों की ओर था, सिर ऊपर उठाकर बोले—

‘खैर यह तो परिस्थितियाँ अपना प्रभाव डालती ही हैं। ‘यथा राजा तथा प्रजा’ वाली कहावत के अनुरूप। मुगल राज्य में उर्दू फारसी को प्रमुखता मिली हिन्दू राज्य में देववाणी संस्कृत, पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश को प्रमुखता मिली। अँग्रेजी राज्य में अँग्रेजी को मिली। यही बात आचार-विचार, रीति-रिवाज, खान-पान के विषय में भी कही जा सकती है।’

मैकू मामा के यह कह चुकते ही अँगरेजी के प्रो० तनखा ने हँसते हुए मुँह फैलाकर बात कही—

‘अरे भाई तुम दोनों हिन्दी उर्दू को चीख-चीख कर लड़ते दिखाई देते हो, क्यों नहीं इनसे अच्छा दोनों को समाप्त करो। सीधे अँगरेजी को अपना लो।’

प्रो० तनखा के यह कहते ही सब खिलखिलाकर हँस पड़े।

मैकू मामा इसको सहन न कर सके। तुरन्त कंधे उचकाते हुए बोले—

‘इससे अच्छा है हम लोग स्वतंत्रता आन्दोलन को ही समाप्त कर दें और अँगरेजों को राज्य करने दें। हम उनके गुलाम बने रहें।’

मैकू मामा की बात सुनकर सब आवाक् रहे। कुछ कहना खतरे से खाली नहीं था। ‘दीवालों के भी कान होते हैं’ शायद यह सोच कर

ही प्रो० जीवनराय ने तुरन्त चाय मँगवाई। चाय का दौर प्रारम्भ हो गया।'

अजमल माहब चाय का घूंट पीते हुए बोले—

‘नाहब अँगरेजी चाय का खूब परचार हो गया।’

मैकू मामा ने चाय का प्याला हाथ में लिये लिये मिर ऊपर करते हुए कहा—

‘यह किफायत का युग है। दूध का स्थान चाय ने मजबूर होकर लिया है। कम बोलिये, कम खाइये, कार्य कम कीजिए दिखाइये अधिक। शीघ्र ही ससार में रूच कर जाइये, औरों को भी स्थान दीजिए।

वातावरण शान्त हो गया। मैकू मामा के बोलने पर कोई न बोला। सब चाय की निप करते जाते थे। कोई ऊपर देखता कोई खिडकी के बाहर हेज की ओर। मैकू मामा ने चाय समाप्त करते ही वहाँ से उठने की आज्ञा माँगी। मै तथा मैकू मामा उठ गये।

मैकू मामा धीरे धीरे अँगरेजी राज्य के आलोचक के रूप में विख्यात हो गये थे। उन्होंने अपने साप्ताहिक में 'भारतीयों के प्रति अँगरेजी राज्य की अनीतियाँ सम्बन्धी लेख लिखा था, जिस पर हम लोगों का पत्र जब्त हो गया। मैकू मामा पर मुकदमा चला। कुछ दिन सिकचों में बन्द रहना पड़ा। पिता जी पर साप्ताहिक बन्द हो जाने पर से सदमा पड़ा और उनका शरीर धीरे-धीरे घुलने लगा। पुरषोत्तमदास टंडन पार्क में नित्य कांग्रेसी नेताओं के भाषणों के प्रभाव के फलस्वरूप मैं तथा मैकू मामा कोई भी सरकारी नौकरी करना नहीं चाहते थे। साधारण नौकरियों में भी अँगरेजी सरकार के पिटू अँगरेजों की आलोचना सुनना महान पाप समझते थे।

एक दिन पिता जी का दिल का दौरा हुआ और वह सदा के लिये इस संसार से कूच कर गये। एक ओर उनकी अर्थी की तैयारी हम लोग कर रहे थे, पास ही मोहल्ले के लोगों में विवाद चल रहा था।

एक सज्जन अपने फूले हुए गालों से कह रहे थे।

'क्या रखा है इस गाँधी की कांग्रेस में। गाँधी नवयुवकों को पथ-भ्रष्ट कर रहे हैं। यह लड़के भी बहक गये हैं। पढ़ाई में इतने अच्छे हैं कहीं अच्छी नौकरी पा सकते हैं, पर न जाने दिमाग में क्या फितूर भर गया है। प्रेस जब्त हो जायेगा तब अकल ठिकाने आयेगी।'।

यह सज्जन मेरे पड़ोसी ही थे। दूसरे पड़ोसी ने अपनी बात हाथ फँलाते हुए आगे बढ़ाई।

‘विश्वविद्यालय में नित्य यही बातें उठती हैं। कहीं मुस्लिम लोग अपना झंडा लगाना चाहती हैं, तो कहीं हिंदू सभाई अपना झंडा फहराना चाहते हैं। कांग्रेसी विद्यार्थी कांग्रेसी झंडा लहराना चाहते हैं। प्रत्येक घर नष्ट हो रहा है। विद्यार्थियों को राजनीति में पड़ने से क्या लाभ।’

एक तीसरे सज्जन जिम्मे अभी ही अपनी बात समाप्त की थी उनके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—

‘अरे कहाँ का यह टटा-बखेड़ा, मैं तो समझता हूँ भइया वह काम करो जिसमें अपना लाभ हो। देखो विश्वविद्यालय के वायसचांसलर एक ओर नित्य किंग्स वर्थ डे तथा न्यू इयर्स डे पर रेडियो खोलकर सुनते हैं कि शायद इस बार उन्हें ‘सर’ की उपाधि मिल जाय। साथ साथ वह कांग्रेसी झंडे को यूनीवर्सिटी बिल्डिंग पर फहराने की यदि हमी नहीं भरते तो यह भी नहीं कहते कि मत लहराओ।’

पिता जी का पार्थिव शरीर धुआँ बनकर आकाश की ओर चल दिया। रहा महा मिट्टी तथा जल ने अपने में खपा लिया। मैं आवाक खड़ा उन धुएँ के बादलों को देख अविरल अश्रुधार बहा रहा था। पास के खड़े लोगो में से किसी ने भीमे से दुहराया। ‘क्षित जल पावक गगन समीरा, पच तत्व रचित यह अवम शरीरा’ श्मशान घाट से लोग आपस में बातें करते वापस आ रहे थे।

‘क्या रखा है इस मायावी सत्तार में। व्यर्थ की ईर्ष्या, द्वेष। यह सब कुछ समझता हुआ भी मनुष्य भेड़ियों की सतान-सा आचरण करता है।’

किसी ने उच्चारित किया—

‘मनुष्य मनुष्य को खा रहा है। करुणा के बीज के स्थान पर विष का बीज बोया जाता है।’

किसी अन्य सज्जन ने कहा—

‘ऐसे ही समय केवल क्षण भर के लिये हम जीवन की क्षणभंगुरता पर

विचार कर लेते हैं। भीड़ में मिल जाने पर फिर से राग द्वेष में वैसे ही पड़ जाते हैं।' मेरे घर तक आकर लोग मुझ पर सहानुभूति प्रगट करते हुए अपने-अपने घर चले गये।

हम लोगों के प्रेस से एक पैम्फलेट निकला था जिसमें अंग्रेजी सरकार को लोगों से टैक्स न देने की अपील की गई थी। पुलिस द्वारा अचानक छापा मारा गया तथा प्रेस जब्त कर लिया गया। एक दिन मैं और मैकू मामा बैठे अपने मकान के सामने दो पिचकी हुई लोहे की कुरसियाँ डाले बैठे थे। रमन जी की बहन सरला जो कुछ दिन पूर्व ही अपने माता-पिता के साथ प्रयाग आई थी, उन्होंने हम लोगों को सूचना दी कि रमन जी दूसरे ही दिन आने वाले हैं। सरला जी के लिये एक बेत की कुरसी जिसके पाये सफ़ेद हो चले थे, मैं उठा लाया था। मैकू मामा के बहुत कहने पर भी वह उस पर न बैठों और अंत में मैकू मामा को ही उस पर बैठना पड़ा। उन्होंने मेरे पिता जी की मृत्यु पर सहानुभूति-पूर्ण वाक्य प्रकट किये। सिर पर की धोती सम्हालती हुई बोली—

‘आजकल आप लोगों का खाना कौन पकाता है?’

मैकू मामा ने अपने दोनों हाथ सिर के पीछे लगाते हुए एक पैर हिलाते हुए हल्की मुस्कान से कहा—

‘हम दोनों ही पकाते हैं।’

सरला जी ने ज़मीन की ओर देखते हुए फिर कनखियों से मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा—

‘मेरी सहायता यदि आपको मिल सकती; पर मैं वाक्य हूँ, इसका मुझे दुख है।’

मैकू मामा ने हँसते हुए कहा—

‘आपके इन सहानुभूतिपूर्ण वाक्यों से ही मुझे अत्यधिक हर्ष हुआ।’ इस निर्धन की कुटिया में तुम्हारे पकाने लायक भी तो कुछ नहीं है।’ होली के निकट की बयार चल रही थी। पास के वृक्षों की पत्तियाँ

पीली पड़ कर बयार के बहने से दूर तक उड़ जाती। कुछ एक पत्तियाँ बयार के बहने से सरला जी के सिर तथा हम लोगो के कंधो पर गिर पड़ी। सबने हल्के से अपने ऊपर की पत्तियाँ नीचे झार दी। हल्की बयार शरीर को सुख पहुँचा रही थी। मैकू मामा ने सामने पेड़ की ओर देखते हुए कहा—

‘चढ़ राखन के खेत पक गये। कटनई होने को है। कटनई के बाद ही राखन रुपया भेजेगा।’

मैकू मामा का इतना कहना ही था कि तुरत डाकिये ने आकर अप नी साइकिल पकड़े पकड़े एक चिट्ठी हाथ में लेकर मेरी ओर सकेत किया। मैं चिट्ठी लेने के लिये उठ गया। मैकू मामा ने चिट्ठी खोली। पढ़ने लगे—

‘भइया !

चरण स्पर्श। आपको यह विदित होकर अत्यधिक दुख होगा। लोगो ने ईर्षावश हमारे पके हुए खेतो में आग लगा दी। खेत सारे के सारे राख हो गये। मेरे खेतो के एक-एक दाने मेरे शरीर के एक-एक रक्त के बूंद थे। जब से मैं अलग रहने लगा हूँ, बड़के भइया को हमारी उन्नति अच्छी नहीं लगी। गाँव वालो तथा पड़ोसियो का कहना है, यह उन्ही की करामात है। हम लोगो का सब कुछ स्वाहा हो गया। मैं शीघ्र ही आने वाला हूँ। और क्या लिखूँ। शेष मिलने पर। चढ़ को आशीष।’

आपका भाई

राखन

मैकू मामा पत्र पढ़ते ही सन्न रह गये। मत्थे पर हाथ का अँगूठा तथा बीच की उँगली धीरे-धीरे चलाकर मत्थे के बीच में लाकर हाथ हटा लिया। पृथ्वी की ओर ध्यान से देखा; गहरी साँस भरकर मुख ऊपर कर सरला जी की ओर देखते हुए बाले—

‘बुरे दिनो का आगमन तीन दिशाओ से एक साथ हुआ करता है।

इसीलिये आजकल मैं अपने जूतो मे दो चार ककडियाँ डालकर चन्ता हूँ। कितना कष्ट मिलता है। मे अम्यस्त बन जाऊँगा। कष्ट मुझे नहीं मता सकते।'।

ऐसा कहते हुए मैकू मामा मेरी ओर देखने लगे। उन्होंने ऐसी मुद्रा बनाई जिससे आभास मिला कि उन्होंने बड़ी दृढ़ता से यह शब्द कहे।

सरला जी ने मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा—

‘आप मेरे रहते हुए चिंता न करे। मैं पिता जी से कहूँगी। वह अवश्य आपकी सहायता करेगे।’

मैकू मामा सरला जी की आँखों मे देखते हुए बोले—

‘नही सरला पिता जी मे कहने की आवश्यकता नहीं। मैं किसी की सहायता में विश्वास नहीं करता। मुझमे पौरुष है। मैं रेलवे स्टेशन पर कुलीगिरी भी कर सकता हूँ पर माँगे हुए धन मे अपना पेट नहीं पाल सकता।’

सरला जी ने बात को दूसरी ओर मोड़ते हुए कहा—

‘अच्छा चलिये आप लोग मेरे घर पर अभी।’

मैकू मामा ने राखन वाला पत्र जेब मे मोड़कर रखते हुए कहा—

‘हम दोनो तुम्हे केवल वहाँ तक पहुँचाने के लिये चलेगे। केवल तुम्हारे पिता जी से भेट कर वापस आयेगे। तुम अपने पिता जी से मेरी धन से सहायता करने की बात को कतई नहीं कहोगी।’

मैकू मामा तथा मैं सरला जी को पहुँचाकर घर लौट आया।

दूसरे ही दिन मैकू मामा के नाम गिरफ्तारी का वारंट आ पहुँचा और उन्हें फिर से तीन माह की कड़ी कैद सुना दी गई। सौ रुपया जुर्माना देने के अभाव मे एक माह की कैद और भी हो गई। रमन बाबू से मैकू मामा की भेट भी न हो पाई।

मैं अपने पुराने वाले गाँव मे नित्य जाता रहा। एक बालको की पाठशाला खुल गई। गाँव वालो ने सहायता की। हाथ से चटाई

बिनने का काम कुरसी बुनना तथा माँव की स्त्रियो मे मार्बजनिक रूप से एक स्थान पर बैठकर चर्खा कातना, बल्लो की छोटी बडी डलियाँ बिनना प्रारम्भ हो गया । रात्रि के समय वृद्धो की सभा मे रामायण के प्रतीक मे तत्कालीन सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक अवस्था के ज्ञान से अवगत कराना मेरा नित्य का कार्य हो गया । राखन मामा भी आ गये थे । वह गाँव वालो के साथ सन की रस्सी, चारपाइयो के बान इत्यादि बुना करते । कभी किसी सरसो पेरने वाले कोल्हू को बैल के स्थान पर स्वयं जुतकर चलाने लगते ।

मै एम० ए० पास कर चुका । स्वतंत्रता प्राप्त हो चुकी थी । भारत मे हर्ष की लहर फैल गई थी । लोग उज्ज्वल भारत की कल्पना करने मे लग गये । मत्रियो के गाँधी जी द्वारा निर्धारित किये गये पाँच सो रुपये वेतन पर लोगो मे उल्लास की लहर उत्पन्न हो गई । लोग समाजवादी युग की कल्पना करने लग गये । समाज मे प्रसन्नता फैल गई कि निम्न तथा उच्च वर्ग मे अधिक अन्तर न रहेगा । एक दिन मैकू मामा, सरला जी, माथुर वकील साहब तथा मै रमन बाबू के बैंगले पर इसी विषय को लेकर चर्चा कर रहे थे ।

रमन बाबू मैकू मामा की आदर्शवादिता से बहुत झुझलाते थे । उन्हो अपनी उन्नति पर गर्व था । उन्होने मैकू मामा को ऊपर से नीचे तक देखते हुये कहा—

‘भाई मैकू तुम जेल जा-जाकर अपना अमूल्य समय बर्बाद करते रहे । अखबार निकालते रहे । ब्रिटिश राज्य की आलोचना करते रहे । आखिर तुम्हे क्या मिला । आई० सी० एस० के कम्पटीशन मे बैठ जाते, अग्रेजी सरकार ही तुम्हे उच्च पद पर नियुक्त कर देती ।

माथुर वकील साहब भी अपनी टाई झुलाते हुए बोले—

‘भारत स्वतंत्र हुआ आखिर हुआ क्या । कुछ लोग मंत्री बन गये । कुछ राज्यपाल बने । जो लोग ब्रिटिश सरकार के चापलूस थे वह आज काँग्रेस सरकार के चापलूस हो गये । जो लोग उस समय ऊँचे पद पर

थे वह आज भी उन स्थान पर मुग्धोभित है। यह समाज-नेवा इत्यादि ढकोसला है।

मैकू मामा ने सामने पेड़ की ओर देखते हुए कहा—

‘आप लोग मेरी दशा पर चिंतित न हो। आप लोग पैसे को ईश्वर समझते हैं। धन को ईश्वर समझनेवाला स्वार्थी बन जाता है। वह अपने पेट के आगे कुछ नहीं देख सकता।’

रमन बाबू मम्हलकर बैठते हुए बाने—

‘भाई मैंने तो इंग्लैंड में देखा लोग धन पैदा करते हैं और उसे आनंद से खर्च करते हैं। हम लोग इसी में मरे जाते हैं। मादा पहनो, सादा खाओ। ऋषि बनो, आवश्यकताये कम करो। यही बातें तो भारतीयों को काहिल बनाती हैं।’

मैकू मामा मेरी ओर देखते हुए बोले—

‘इस सादगी के कारण आज भारतवर्ष का मिर अन्य राष्ट्रों में अग्रगणी है। साधारण जीवन उच्च विचार के कारण ही यहाँ बड़े बड़े नेता, स्वामी दयानंद, लाला लाजपत राय, प० मदन मोहन मालवीय, गोखले तथा गाँधी इत्यादि ससार में अपना नाम आलोकित कर सके।’

मैने भी उन लोगों के विवाद में अपनी बात आगे बढ़ाई।

‘मैकू मामा ठीक तो कहते हैं। आदिम जातियों में भी स्वार्थ की गंध नहीं थी। स्वार्थ की तिलाजलि देना ही दूसरों को स्वतंत्र देखना है। जब देव लोग असुरों के देश में आकर बसे। ये लोग खेती करते थे। नदियों से पानी देते थे। प्रारम्भिक अवस्था में मनुष्य नदियों के तीर पर ही खेती करता था। नील नदी मिस्र की प्रसिद्ध नदियों में से है। उसकी बाढ़ से नई मिट्टी नदी के किनारे छा जाती थी। उसी में बीज डालकर फसल उगाई जाने लगी। असुरों से ही देवों ने खेतीबाड़ी करना सीखा। वह इन फसल को पशुओं को खिलाता तथा स्वयं नब

मिलकर खाते। आज हम स्वार्थवश कुत्ते को दूर रहा अपने सगे भाई को भी अपने भाग का अल्पांश भी नहीं दे सकते।'

माथुर साहब ने हँसते हुए कहा—

‘भाई स्वार्थ तो रहेगा ही। स्वार्थ किसमें नहीं है। माँ स्वार्थी है, पिता स्वार्थी है। माता-पिता बच्चे को पालते हैं कि बड़ा होकर उनकी वृद्धावस्था में आराम पहुँचायेगा।

सरला जी कभी मैकू मामा कभी रमन जी तथा कभी माथुर साहब की ओर देखने लगती। हल्की-हल्की अक्तूबर माह की ठंड पड़ रही थी। सामने के वृक्ष शांत खड़े थे। बयार के न होते हुए भी वातावरण सुखद था। पाम की झाड़ी के पास सत पड़ये पक्षी झाड़ी की जड़ों में चोचे मार-मार कर अपना भोजन खोज रहे थे। एक पक्षी दूसरे पक्षी की चोच में दाना डाल रहा था। मेरी दृष्टि उस पर जा पड़ी। मैंने माथुर साहब की ओर देखते हुए कहा ‘देखिये इस पक्षी का क्या स्वार्थ है, अपने बच्चे की चोच में दाना डाल रहा है।’ ‘यह प्रकृति का नियम है। माँ का कार्य है बच्चे को बड़ा करना’।

माथुर साहब ने तपाक से अपनी ठोड़ी पर उँगलियाँ दौड़ाते हुए कहा—

मैंने एक कोए की ओर देखते हुए कहा जिसने बीच में आकर उन सतपड़ये पक्षियों को कूद-कूदकर भगा दिया था और वहाँ पर पड़े भीगे हुए चने के दानों को स्वयं खाने लगा था।

‘देखिये यह कौवा मित्र के उस कराऊन जैसा सम्राट है, जो ईश्वर समझा जाता था। इन्द्र अपने शत्रु का बध कर देता था। पराजित पुरुष का बध आवश्यक था’।

इतने में उस कोए ने अवसर पाकर उस नन्हे पक्षी के बच्चे पर झपट्टा मारा जो फुदक रहा था और अपनी चोच में दाबकर दूर वृक्ष की डाल पर बैठ गया। रमन बाबू की ओर जैसे ही मैंने सकेत किया वह तुरत बोल पड़े।

‘यह तो प्रकृति का नियम है, सबल ही को समार में रहने का अधिकार है।’ मैकू मामा ने कुरसी पर एक पैर उठाकर रखने हुए कहा—

‘जभी तो आप शायद दाम-प्रथा के समर्थक है।’

मैने मामा की बात को स्पष्ट करते हुए कहा—

‘मनुष्य जैसे-जैसे विकास करता गया दास-प्रथा का अन्त होता गया। प्रारम्भ में देव-समाज में दासों का कोई स्थान नहीं था। शत्रु का बंध कर दिया जाता था। देवों में संपत्ति सब की मानी जाती थी। समाज में बर्बरता दृष्टिगोचर होने लगी। व्यक्तिगत सम्पत्ति का जन्म नहीं हुआ था। व्यक्तिगत सम्पत्ति का उदय विष्णु कथा से प्रारम्भ होता है जिसने यज्ञफल को अपना बनाना चाहा था। यह कुरुक्षेत्र की घटना है।’

रमन बाबू अपनी कमीज के कफ को ऊपर करते हुए जिमके नीचे घड़ी छिपी हुई थी बोले—

‘यह इन्द्र, विष्णु वरुण के चक्कर में ही पड़कर तो हम लोग योरोप से इतना पिछड़ गये’।

मैने आंखें विस्फटित करते हुए कहा—

‘इनका इतिहास ही तो हमें समाजवाद, मार्क्सवाद एकतन्त्रवाद के समझने में सहायता देता है। कतिपय विद्वानों के मतानुसार बोलगा के निकट कहीं एक जनसमूह था, जो दो भागों में बंट गया। एक शक थे पश्चिम की ओर चले गये। दूसरे आर्य थे जो भारत की ओर आ गये। आर्य जाति के विषय में यदि हम मैक्समूलर तथा स्वामी दयानंद के दृष्टिकोण को दूर रखें तो हमें कहीं अधिक अच्छी मनोरंजक बातें अवगत होती हैं। झुंडों में सम्य द्रविड जिस समय पर्वतों में गाते हुए चरागाहों की खोज कर रहे थे उनकी ईरान की जाति में मेरे हुई जिसे उन लोगों ने असुर की सजा दी।

सरला जी, तथा माथुर साहब बड़े ध्यान से मेरी ओर मुख किये हुए सुन रहे थे ।

मैंने गला साफ करते हुए आगे कहा—

इन लोगो के पास कहा जाता है लोहा तथा घोड़ा भी था । अग्नि के विषय मे इनको जानकारी हो गई थी तथा उसकी रक्षा भी यह करने लगे थे । अग्नि को इन लोगो ने शमी वृक्ष मे पाया था । खाने पीने की सामग्री की कमी थी । यज्ञ इनके सार्वजनिक जीवन मे बिंध गया था । यह लोग मिलजुलकर तथा बाँटकर सामूहिक रूप मे अग्नि के चारो ओर बैठकर खाते थे । इसे आदिमयुग का साम्यवाद कहा जाता है । कोई किसी का शोषण नहीं कर सकता था । यज्ञ मे भाग लेने वाले सभी यज्ञकर्ता थे ।

सरला जी मैकू मामा की ओर देखते हुए अपने टॉप्स झुलाते हुए बोली—

‘यह तो बहुत अच्छा था । कोई भूखो नहीं मर सकता था । यज्ञ मे सब लोग अपनी सामग्री एक साथ एकत्रित कर रखते होगे, तब बटवारा होना होगा’ ।

मैंने सरला जी की ओर देखते हुए कहा—

‘बिल्कुल ऐसा ही था । यज्ञ मे भाग लेने वाले सभी यज्ञकर्ता होते थे । पुरुष, स्त्री तथा अग्नि आदिम ब्रह्म था । यथावश्यकता सब मे यज्ञफल वितरित होता था । यही दान कहा जाता था । सब एक साथ मिलकर सोमपान करते थे और सब सम्मिलित रूप मे एक होकर कार्य करने की प्रतिज्ञा करते थे । प्रतिज्ञा एक स्थान पर हाथ रखकर ली जाती थी । यज्ञ मे स्त्रियाँ भी जाग लेती थी । यह सब कहने का मेरा आशय है कि हम लोगो को आदिमयुग की उत्कृष्ट बातो को ग्रहण करना चाहिये । यदि समाज का विकास करना है तो योरोपीय स्वार्थान्धता को त्यागना होगा ।’

इतने में नौकर ने हम लोगों की मेज को ठोक करने हुए चाय लगा दी। एक प्लेट में केक तथा दूसरी में पेस्ट्रियाँ थीं।

रमन बाबू ने मैकू मामा की ओर सकेत करने हुए कहा—

‘प्रारम्भ करो जी मैकू! हम लोगों के घरों में तली हुई वस्तुओं का बहुत चलन है। यह पेट बिगाड़ती है। मैंने तली हुई वस्तुएं बनवाना बंद कर दिया है। इंग्लैंड में लोग मुझे भोजन के साथ सूप अधिक पसंद आया। दाल का सूप, मक्खियों का सूप स्वास्थ्यवर्धक होता है। हम भारतीय पेट भराऊ खाना खाते हैं।

रमन जी ऐसा कह कर सिगार के डब्बे को माथुर साहब की ओर बढ़ाते हुए कहा—

‘येस येस, यू स्मोक?’

माथुर साहब ने एक सिगार उठा लिया जो एक पार्चर्ड पेपर में लिपटा हुआ था, उस कागज के नोचने में कड़-कड़ की ध्वनि हुई। सिगार के ऊपरी सिरे में एक अगुल नीचे सुनहला कागज लिपटा था जिस पर काले अक्षरों से अंगरेजी में लिखा था ‘लदन कॉलिंग’। रमन जी ने मैकू मामा की ओर डिब्बा बढ़ाया, मैकू मामा ने मना कर दिया। रमन जी ने भी एक सिगार मुलगाकर गहरे कश लेना प्रारम्भ कर दिये जिससे धुँआ कलेजे की गहराई तक प्रवेश कर जाता और वह धीरे-धीरे मुख ऊपर कर धुँआ बाहर छोड़ते रहे।

इतने में सरला जी की मित्र बीना जी भी आती दिखी। सब लोग उठ खड़े हुए। उसने दूर ही से मुस्कराते हुए नमस्ते की। सबने मुस्कुराकर उत्तर दिया। नौकर दूसरी कुर्सी तुरत रख गया।

रमन बाबू ने सिर हिलाते हुए मुस्कराकर कहा—

‘बेरी लकी इडीड। आई मीन, अच्छे समय पर आई पर आपने ज्ञान भरा लेक्चर हमारे चट्टू जी का मिन कर दिया’।

बीना जी ने चट्टू की ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा—

‘तब तो वास्तव मे मुझे खेद है’ ऐसा कह कर वह अपने कंधे पर की सारी सम्हालने लगी ।

रमन जी ने बीना की ओर आकर्षित होते हुए कहा—

‘कहिये बीना जी आपने कितनी गाँव की स्त्रियो को अब तक साक्षर बनाया है ।’

बीना ने मैकू मामा तथा फिर मेरी ओर देखते हुए कहा—

‘मैं तो चट्ट के साथ बराबर गाव जाती रही । हम लोगो ने एक वाचनालय, बालिकाओ के लिए एक स्कूल तथा महिलाओ के लिये सिलाई-कताई का प्रवन्ध और वृद्धाओ के लिये भी सध्या समय मनो-रजक कार्यक्रमो का आयोजन कर दिया है । मैं वृद्धाओ को रामायण, महाभारत की उपयोगिता आज की बदली हुई परिस्थितियो से उन्हे परिचित कराना ऐसा ही कार्यक्रम हम लोगो का चल रहा है । इसी प्रकार यह कार्य अन्य ग्रामो मे भी विस्तृत करने का विचार है’ ।

माथुर साहब बीना की ओर ध्यान से देखते हुए उसकी बातो को सुन रहे थे । वह जैसे ही उनकी ओर देखने को होती वह अपनी दृष्टि हटा लेते । जब वह बात करते हुए इधर-उधर दृष्टि डालती, माथुर साहब उसकी ठोड़ी को बड़े ध्यान से देखते जो नीचे को नुकीली तथा जिसके ओठ तथा ठोड़ी के बीच गड्ढा था ।

रमन ने केक के पीस की ओर बोना जी को सकेत करते हुए कहा—

‘लीजिये, लीजिये, प्रारम्भ कीजिये’ ।

सरला जी बीना की ओर देखते हुए बोली—

‘आप तो वास्तव मे ग्राम सेविका बन गई’ ।

बीना मैकू मामा की ओर देखते हुए मुस्करा दी ।

सरला ने मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा—

आप लोग गाँधी जी को एक बार अपने ग्राम मे बुलाइये ।

मैकू मामा ने रमन जी की ओर देखते हुए कहा—

‘मैं निस्वार्थ सेवा में विश्वास रखता हूँ। मैं अपना प्रचार नहीं चाहता। कार्य इस लिये किया जाना है, जिससे किसी को वास्तविक लाभ हो। गाँधी जी ने हम लोगों के गाँव के बारे में सुन रखा है। वह आप लोगों के पीछे यहाँ आ भी चुके हैं। वह एक-एक गाँव का मचा-लन पचायतो को सौंपने के हिमायती है।’

रमन बाबू ने हँसते हुए कहा—

‘यह गाँव वाले क्या जाने न्याय करना। यह डडा लाठी लेकर लडने के अतिरिक्त क्या जानते हैं’।

मैकू मामा ने मरला जी की ओर फिर बीना की ओर दृष्टि फेरते हुए कहा—

‘गाँधी जी स्वावलम्बी शासन चाहते हैं। वह पार्लियामेण्टरी शासन कदापि नहीं चाहते। यह गुलामी का चिन्ह है। उनका कहना है “हिन्दुस्तान जैसे-जैसे अपने इन जनराज के लक्ष्य की तरफ बढ़ेगा वैसे-वैसे सिबिल यानी शहरी ताकत फौजों ताकत के ऊपर काबू पाने के लिये जरूर पूरी-पूरी टक्कर लेगी, राजकाजी पार्टियाँ और फिरकेबाराना सस्थाओं की लागडाट हिन्दुस्तान को तन्दुरुस्त नहीं रहने दे सकती, इनसे देश को बचाकर रखना ही होगा”।

ऐसा गाँधी जी ने कांग्रेस के सामने कहा है। यह उन्हीं के शब्द मैंने उद्धृत किये हैं।

माथुर साहब ने अपनी टाई झुलाते हुए सिगार हाथ में पकड़े हुए बीना की ओर देखते हुए कहा—

‘सारे योरोप में पार्लियामेण्टरी शासन धीरे-धीरे फैल रहा है। इ गलैड वालो का कहना है इससे अच्छा ढग शासन का नहीं हो सकता।’

मैकू मामा ने माथुर साहब की आँखों की ओर फिर सिगार के उठते हुए धुएँ की ओर देखते हुए कहा—

इंग्लैंड वाले क्यों न इसकी प्रशंसा करेंगे, इसका जन्म ही इंग्लैंड में हुआ। इंग्लैंड के सम्राट ने वहाँ की जनता पर अधिकार जमाने तथा उनसे अधिक से अधिक टैक्स वसूल करने के लिये उस देश में पार्लियामेन्ट्री राज्य चलाया था। पार्लियामेन्ट का बल बढ़ता गया, यहाँ तक कि उसने देश के राजा का स्थान ले लिया। धीरे-धीरे इंग्लैंड की देखा देखी इसकी हवा सारे योरोप में फैल गई।'

माथुर साहब मैकू मामा की ओर देखते हुए बोले—

‘वाह साहब यह तो जनता का राज्य होता है। जनता अपने प्रतिनिधि भेजती है। मैकू मामा माथुर साहब के चमकते हुए जूतों की ओर देखते हुए बोले—

‘माना लाखों मनुष्य अपना एक प्रतिनिधि चुनते हैं, इमलिये कि वह उनकी ओर में राज्य करे। इन लाखों पुरुषों में से पञ्चानवे प्रतिगत तो उसे जानते भी नहीं, न उसे पहचानते हैं। चुने जाने के बाद वह प्रतिनिधि तो उन्हें पूछता भी नहीं, न वह उन्हें कोई लाभ पहुँचा सकता है। वह तो इन तीन चार सौ प्रतिनिधियों में से एक होता है। इस प्रकार इन तीन चार सौ प्रतिनिधियों के रूप में दस-बीस सम्राट बन जाते हैं और जनता चेरी की चेरी रह जाती है। सरकारी नौकरो की गिनती जो अपने को तानाशाह समझते हैं बढ़ती जाती है और फिर भी यह कहलाता है जनता का राज्य।’

माथुर साहब ने सिगार की एक इन्च लम्बी मोर ऐश, ऐश ट्रे में धीमे से तोड़ते हुए कहा—

‘मैकू साहब यदि मिनिस्टर हो जायें जभी शायद यह गांधी जी की बातें कार्य रूप दर्शा सकते हैं।’

बीना जी ने सिगार की ऐश को ध्यान से देखते हुये कहा—

‘सुना जाता है कि सिगार की ऐश से दाँतों का पायरिया ठीक हो जाता है।’

बीना जी के कहते ही रमन बाबू ने हँसते हुए कहा—

‘हिन्दुस्तानी लोग तो सुना है कोयले से दाँत माफ करते हैं जिमसे उनका मुँह लगूरी बन्दर-मा दिखने लगता है। इंगलैंड में हर चीज को सफाई से किया जाता है। योरोप के चलाये हुए ब्रश और टूथ पेस्ट कितने अच्छे हैं इससे सफाई रहती है। सफेद वस्तु देखने में सुन्दर लगती ही है।’

मैकू मामा जिनका स्वभाव ही अपने देश की अच्छी बातों का विरोध करने वाले को मुहफट उत्तर देने का बन गया था, तुरन्त मत्थे पर शिकने डालते हुए मुँह मीच कर बोले—

‘रमन बाबू मेरे विचार से यदि आप प्रधान मंत्री बना दिये जायें तो शायद प्रत्येक वस्तु को अगरेजी पैटर्न पर परिवर्तित कर दें।’

रमन आँखें सिकोड़ते हुए मिर हिलाते हुए बोले—

‘मैं नवीनता की खोज को बुरा नहीं समझता। जो बात पुरानी हो चुकी है उसे नष्ट करा। मनुष्य जीवन ही परिवर्तनशील है। नवीनता की खोज ही मनुष्य को विकास की ओर ले जाता है।’

मैकू मामा सामने मेज पर के ऐश ट्रे को हाथ में घुमाते हुए बोले—

‘आप ठीक कह रहे हैं रमन बाबू। शायद भारत उमी ओर न चला जायें। हमारा रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान पान बर्तन-विडन के ढग, सोचने का दृष्टिकोण सभी पुराने पड चुके हैं। भारत का सब कुछ खराब था। योरोप का सब कुछ अच्छा है। अगरेज बहादुर गदे मुख से बेड टी पीते हैं। वह उचित है। चैन स्मोकिंग हॉमी ही चाहिये क्योंकि इसमें नवीनता है।’

मैंने मैकू मामा की ओर से बोलते हुए कहा—

यदि नवीनता ही लानी है तो योरोपीय बर्बरता के आगे पुराना भारतीय उच्छृंखलता को क्यों न स्थान दिया जाय।

मेरे बीच में बोल देने से सब मेरी ओर ध्यान में देखने लगे। बीना जी मुझ पर नीचे में ऊपर तक दृष्टि दौड़ाकर मेरे मुख की ओर

ध्यान से देखने लगी। मुझे भी उन युवतियों के बीच में अपना ज्ञान प्रदर्शन करने में आनंद आ रहा था। अतः मैंने कहा आप लोग क्षमा करें। प्रसंग लम्बा है।

माथुर साहब ने मिगार का धुआँ ऊपर फूँकते हुए कहा—

‘हाँ हाँ चट्ट साहब कहिये, कहिये।’

मैंने खामते हुए प्रारम्भ किया।

‘वरुण के मरणोपरान्त हमें इन्द्र के दर्शन होते हैं। इन्द्र उच्छृंखल सोमपान करने वाला है। भागवत के छठे स्कंध में कहा गया है कि ऋग्वेद के प्रारम्भ से इन्द्र अश्विद्वय तथा मरुतो के गौरव की दत्त कथाओं का अवलोकन करने से प्राचीन गौरव के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। गायो का चुराना, एक दूसरे की खेतीबाड़ी नष्ट करना उस समय के विद्वेष के मुख्य कारण थे। स्त्रियों का अपहरण होता था। उनके पीछे झगड़े होते थे। इन्द्र ने अपनी शक्ति स्थापित करके अपना स्वराज्य ग्रहण किया।

रमन बाबू ने बीच ही में टोकते हुए कहा—

चट्ट जी यह आपका दर्शन मेरे पल्ले नहीं पड़ा। इस सबका यहाँ बखान करने से तुम्हारा क्या मतलब है?’

मैंने तुरत उत्तर देते हुए कहा—

‘मेरे कहने का आशय यह है कि बिना सोचे समझे कि क्या त्याज्य है क्या अपनाने योग्य है, आप लोग नवीनता के नाम पर भारतवर्ष की पुरातन उच्छृंखलता का अनुकरण करने लगे क्योंकि उसमें भी तो परिवर्तन के दर्शन होंगे।’

मेरे कहते ही सब लोग हँस पड़े।

माथुर साहब ने ठाँका लगाते हुए कहा—

‘फिर क्या कोई किसी का पति न होगा, न कोई किसी की स्त्री होगी।’

मैंने अपनी बात को बढ़ाते हुए दृढ़ता से कहा—

‘बिलकुल ठीक ऐसा ही हमारे भारत में जब यज्ञ मार्वाज्जतिक जीवन का प्रतीक था अर्थात् जिसे हम आदिम साम्यवाद का युग कहते हैं, उस समाज में प्रत्येक स्त्री तथा प्रत्येक पुरुष एक दूसरे के पति पत्नी समझे जाते थे। हम क्यों न भारतीय बर्बरता तथा उच्छ्रिखलता के नाम पर परिवर्तन के लिये तथा नवीनता लाने के लिये उनका अनुकरण करें।’

सब लोग सिर हिलाते हुए गंभीर हो गये। सरला तथा बीना सिर नीचा किये हुए मेज के पायों की ओर देख लेनी फिर दूर बाग के वृक्षों की ओर दृष्टि फिराकर देखने लगती।

हल्की-हल्की अक्टूबर माह की ठंड पड़ने लगी। सध्या हो चली थी। मौसम सुहावना था। सूर्य की रश्मियाँ पेड़ों की फुतगियों पर पहुँच गई। धीरे-धीरे अंधेरा होने लगा। पक्षी आकाश में पक्ति बाधे हुए बसेरा लेने के लिये भाग रहे थे।

मैंकू मामा ने कहा—

‘अब देर हो रही है, अच्छा, अब चलना चाहिये। और यह कहते हुए हम लोग चल दिये।

गाँधी जी की मृत्यु का समाचार देश के एक कोने से दूसरे कोने तक बिजली की करेट के समान फैल गया। लोगो मे घोर नैराश्य की भावना छा गई। सत्य के पुजारी का अन्त हो गया। महात्मा बुद्ध के पश्चात् जिस सत्य ने हीरे की कण के समान धरती की गहराई मे वर्षों तपस्या करके मानवी रूप धारण किया था, उसकी राख सर्व भारत मे फैलाने के लिये सरिताओ मे सागर मे बिखेर दी गई। कलशो मे सत्य की राख विभिन्न स्थलो मे दफनाकर सुरक्षित रख दी गई। उनके गोली लगने से जो सत्य रुधिर रूप मे बह निकला उमका एक एक बूंद उठा लिया गया। सत्य ने जिस जिस वस्तु का स्पर्श भी किया था, सर्व सामग्री म्यूजियम मे सुरक्षित रख दी गई। रामचन्द्र, महात्मा बुद्ध तथा महात्मा ईशा के समान उनके चरण-चिन्ह जहाँ भी पडे थे, वह स्थल पूज्य ममज्ञा जाने लगा। स्मारक बनने लगे। लोग कहने लगे 'मैने सत्य के दर्शन किये है अत मै महान् हूँ।'

मै अपनी बिटना मौसी के यहाँ गया हुआ था। मौसा जी एक डिग्री कालेज मे प्रोफेसर थे। वह मुझे अपने कालेज लिवा ले गये। मै उनके कालेज की लायब्रेरी मे पुस्तक पढने लगा। उनके कालेज का इस्पेक्शन हो रहा था। पैनल के मेम्बर्स ने स्टाफ की एक मीटिंग बुलवाई जिसमे कि वह प्रत्येक लेक्चरर के दर्शन करना चाहते थे। मीटिंग लायब्रेरी के रीडिङ्ग रूम मे हो रही थी। उसी के दूसरी

आलमारियो का पार्टिशन देकर दूसरी ओर लायब्रेरियन का आफिस था। बड़ी सफाई से दो आलमारियो के बीच में किनारे में लायब्रेरियन के कार्यालय तथा रीडिंग रूम के बीच में एक दरवाजा लगाया गया था जिससे कार्यालय तथा रीडिंग रूम में आवागमन सुलभ हो सके। लायब्रेरियन के कार्यालय में चारों ओर पुस्तकों से भरी लम्बी लम्बी आलमारियाँ रखी थी। मीटिंग प्रारम्भ हो गई। पैनेल के मेम्बर्स में से किसी ने अध्यापकों की ओर आकर्षित होते हुए कहा—

‘हम लोग यहाँ एक परिवार के समान मिल रहे हैं। यदि आप लोगों की कोई कठिनाइयाँ हों तो आप लोग कहे, हम लोग उन्हें दूर करने का प्रयत्न करेंगे।

मेरे मौसा प्रोफेसर विनोद कुमार जो खादी की शेरवानी तथा पायजामा पहने हुए थे, उठ खड़े हुए। वह गला साफ करते हुए बोले—

चूँकि आपने कहा है कि यदि हम लोगों की कोई कठिनाइयाँ हों तो मैं आपके सम्मुख रखूँ। अब मैं कालेज की कुछ ऐसी बातें रखना चाहना हूँ, जो कम से कम शिक्षा के मंदिर में जहाँ हम मृत्यु बोलना सीखते हैं तथा सिखाते हैं नहीं होनी चाहिये। इस कालेज में शिक्षकों में गलत वेतन पर हस्ताक्षर करवाये जाते हैं। उन्हें जिस धनराशि पर हस्ताक्षर करने होते हैं वह उन्हें नहीं मिलती। यहाँ अध्यापकों को कई कई वर्ष तक मुस्तकिल नहीं किया जाता। उनसे एग्रीमेंट फार्म नहीं भरवाये जाते।

प्रो० विनोद कुमार जी की ओर नव ध्यान से देखने लगते हैं। प्रिंसिपल महोदय का मुख लाल हो रहा था। ‘मैं तो कुत्ता राम का, प्रतिभा मेरा नाम’ ऐसे नामधारी दुम हिलाने वाले कुत्ते विस्फारित नेत्रों से विनोदकुमार जी की ओर देख रहे थे।

इतने में प्रिंसिपल महोदय से न रहा गया और वह बैठे ही बैठे अपनी कुर्सी से बोल उठे—

‘यह सब झूठ है’ ऐसा उन्होंने तेज शब्दों में कहा।

यह बहस सुनकर लाइब्रेरियन तथा मैं बीच वाले दरवाजे की आड़ से इस दृश्य को देखने लगा ।

विनोदकुमार जी ने खड़े होकर प्रिंसिपल की बात को काटते हुए कहा—

‘श्रीमान यदि यह झूठ हो तो तलवार से मेरी गर्दन उड़ा दी जाय । यदि एक अध्यापक झूठ बोल सकता है, मैं समझता हूँ उसे शिक्षा के मन्दिर में प्रवेश करने का अधिकार नहीं होना चाहिये । यदि अध्यापक झूठ बोलता है तो वह विद्यार्थियों को फिर एक उच्च शिक्षालय में शिक्षा देने योग्य नहीं है ।’

हाल में चित्र के रूप में सत्य के पुजारी जिसकी राख घरती के नीचे की तह तक धीरे धीरे पहुँच गई थी, यह सब दृश्य माथे पर फुरियाँ डाले हुए, हाथ में लाठी टेके हुए, ऊँची घुटने तक की धोती चढाये, कठ लँगोटी धारण किये हुए आधुनिक आर्टिफिशल, इमीटेशन, कृत्रिम वेशभूषा पहने हुए सत्य को अपनी नेकटई से कसकर उसको निगल कर जठराग्नि में भस्म कर लेने वाले लोगो को ध्यानपूर्वक विस्फारित नेत्रों से देख रहे थे ।

विनोद कुमार जी ने आगे कहा—

‘चूँकि प्रिंसिपल महोदय का कहना है कि मैं झूठ बोल रहा अतः मैं समझता हूँ कि झूठ बोलने वाले को शिक्षा देने का अधिकार नहीं है, अतः मेरा इस्तीफा स्वीकार किया जाये ।’

‘ऐसा कहते हुए श्री विनोद कुमार जी ने अपना इस्तीफा लिखकर प्रिंसिपल के आगे बढ़ा दिया ।

पैनल के सदस्यों में से एक ने उठकर कहा—

‘क्या आप उन लोगो के नाम ले सकते हैं, जिनको मुस्तकिल नहीं किया गया है, अथवा जिन लोगो को कई वर्ष हो गये हैं और उन्हें इनक्रीमेंट नहीं मिले है अथवा जिनसे गलत वेतन पर हस्ताक्षर करवाये जाते हैं ।



झूठ कह रहा हूँ। प्रिंसिपल तक ने कहा—‘यह सब झूठ है जबकि उसे भी उतना वेतन नहीं मिलता जिस पर वह हस्ताक्षर करता है।’

मौसी ने चूल्हे पर से कढ़ाई उतारकर नीचे रखते हुये कहा—

‘आज झूठ बोलने वाले ही पनप रहे हैं। आखिर आप ही सचाई के पीछे क्यों पड़ते रहते हैं। दूसरे कण्ट उठाये आपको क्या करना।’

‘यदि यही गाँधी जी सोच लेते तो शायद ब्रिटिश राज्य उन्हें भारत का सर्वानर तक बना देता पर उन्होंने अपना स्वार्थ नहीं सोचा।

मौसी ने दाल की पत्तीली में चमचा चलाते हुये कहा—

‘अच्छा आप भी दूसरो का भला सोचते हैं। रात-रात भर सोते नहीं स्वास्थ्य अपना खराब किये ले रहे हैं।’

मेरी ओर आकर्षित होते हुये मौसा जी ने लम्बी साँस भरते हुये कहा—

‘कल मुझसे प्रिंसिपल ने क्षमा-याचना लिखकर देने को कहा—पैनल के सदस्यों के जाने के बाद मुझ पर कुछ चार्जें लगाये हैं, कि मैंने कॉलेज के मैनेजमेंट के विरुद्ध जो बातें कही हैं उनका प्रमाण दूँ। प्रिंसिपल तथा उनके पिट्टुओ ने मुझे धमकाया कि आप जायेंगे कहाँ आखिर आपने कॉलेज के विरुद्ध बातें कही कैसे। टीचर्स ने मुझे हस्ताक्षर करके दे दिये हैं कि आपने जो कुछ भी कहा है वह सब झूठ है, आपको कोर्ट में प्रमाण देना होगा। आप मेरे कॉलेज को बदनाम करते हैं।’

मैंने मोढ़े पर झुकते हुये कहा—

‘मौसा जी आप सचाई पर अड़े रहे। विजय अन्त में सचाई की ही होगी। आप समझ सकते हैं, गाँधी जी कितने महान थे, उन्हें इस सचाई के लिये ब्रिटिश राज्य ने कितने-कितने कण्ट दिये पर वह सत्य से कदापि नहीं डिगे।’

मौसा जी ने दीर्घ साँस भरते हुये कहा—

‘मैं जिसके पास भी जाता हूँ, सब यही कहते हैं कि तुमको क्या

मतलब था, आनन्द से अपना वेतन लीजिये। आपको दूसरो में क्या प्रयोजन।'

मैंने मौसी जी की ओर देखते हुए कहा—जो मुझे सचाई की ओरी लेने के लिये ध्यान से देखने लगी।

'आपने वास्तव में एक महान कार्य किया है। झूठ बोलने वालों की सख्या अधिक है। ऐसा प्रत्येक पुरुष चाहता है कि सच बोलने वाला भी उसके गिरोह में सम्मिलित हो जाय। यदि सच बोलने वाला झूठ बोलने वालों का साथ नहीं देता तो उसे जीवन भर कठिनाइयाँ तो अवश्य झेलनी पड़ती है पर अन्त में विजय उसी की होती है।'

मौसा जी ने जिन्हें उस दुखद घटना के कारण रह-रह कर मिनट-मिनट में दीर्घ साँसे आ रही थी क्योंकि सत्य बोलने पर भी उनका खुले रूप में अपमान न किया गया था, गहरी साँस भरते हुये कहा—

'भइया अभी तुम्हें अनुभव नहीं है। गाँधी जी समाप्त हो गये। उनके साथ सचाई धरती के नीचे चली गई। मैं वायस चामलर तक से मिला। उन्होंने भी कहा कि मुझे सब अवगत हो चुका है। यह कहाँ नहीं होता पर तुम इस्तीफा मत देना।'

मौसा जी के आगे दूध में शहद मिलाकर मौसी शीशे का ग्लास बढाते हुए बोली।

'अच्छा आप सोचते बहुत हैं, लीजिये यह दूध पी लीजिये फिर आपको कुछ शक्ति आयेगी'।

मौसा जी दूध घूटते हुए बोले—

बेचारे विद्यार्थियों को किसी प्रकार यह सारी घटना अवगत हो गयी। उन लोगों ने मुझे घेर लिया। विद्यार्थी कह रहे थे'।

'मास्टर साहब स्कूल कालेजो में जहाँ हमें सत्य बोलने की शिक्षा दी जाती है, यह कालेज के प्रोफेसर्स गलत कार्य करते हैं। हमारे पालि-टक्स के प्रोफेसर तो बड़े सत्यवादी बनते हैं। बड़े धार्मिक हैं फिर भी झूठ बोले। जिस दिन हम विद्यार्थी भी झूठ बोलकर गलत कार्य करना

सीख लेगे, समाज क्या रह जायगा । अराजकता तथा उच्छृंखलता का बोलबाला हो जायगा' ।

मौसा जी आगे बोले—

मैंने विद्यार्थियों से कहा, भाई तुम लोगो का कार्य है पढना । तुम लोग अपना मन पढने में लगाओ । इन बातों से तुम्हें कोई सरोकार नहीं होना चाहिये इस पर विद्यार्थी बोले । मुझे ऐसी पढाई नहीं पढनी है । बड़े-बड़े धुरधुर प्रोफेसर जो अपने को स्कालरर्स कहते हैं, झूठ बोलते हैं, वह हम लोगो को शिक्षा क्या देंगे ?

इतने में मौसा जी एक पुरानी शिक्षार्थिनी यह घटना सुनकर उनसे मिलने आ गई थी जो एम० ए० पालिटिक्स में करके एक इटर कालेज में अध्यापिका हो गई थी । उसने एम० ए० में फर्स्ट डिवीजन पाया था तथा वह एन० टी० भी थी ।

उसके आते ही हम सब मौसा जी के छोटें से ड्राइङ्ग रूम में बैठ गये । गरमी के दिन होने से मौसा जी का रिवालविङ्ग टेबुल फैन चलने लगा ।

मौसा जी की ओर आकर्षित होते हुए बड़ी नम्रता से मिस्ट्रेस माया जी ने कहा—

‘मुझे आप ऐसे आदर्शवादी प्रोफेसर से बड़ी सहानुभूति है । आपने सत्य के लिये इतनी परेशानी सही । सारे शहर में यह घटना फैल गई पर पता नहीं क्यों शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं देता । प्रोफेसर साहब मेरे कालेज में भी हम लोगो को एक सौ बीस रुपये पर हस्ताक्षर करने पड़ते हैं और हम लोगो को केवल सौ रुपये दिये जाते हैं ।

मौसा जी ने माया जी की ओर देखते हुए कहा—

‘क्या कहूँ, पता नहीं सरकार इन इन्सटीट्यूशन्स को अपने हाथ में क्यों नहीं ले लेती । सरकार का कहना है कि सरकारी व्यय बढ़ जायेगा । उसका यह भ्रम ही है । मैनेजमेन्ट्स अपने पास से पैसा नहीं लगाते । चदा आज के युग में उन्हें कोई नहीं देता । स्कूल खोलना एक

व्यवसाय समझ लिया गया है। स्कूल, कालेजों के चपरामी मैनेजमेन्ट के सदस्यों के घरों में काम करते हैं। मैनेजर साहब कालेज का फर्नीचर दूसरों को देकर उनसे अपने दूसरे निजी कार्य पूरे करवाते हैं। एक स्कूल में लायब्रेरी के नाम में पुस्तकें तो नहीं मँगाई गईं पर गलत बाउचर्स चढ़े हुए थे। इम्पेक्शन वाले दिन पुस्तकें इधर-उधर में एकत्रित करके लायब्रेरी सजा दी गई। सारा कार्य गडबडी में होता है। मेरे विद्यार्थी जो विभिन्न स्कूलों में अध्यापक हो गये हैं वह सब कुछ बनला जाते हैं। गेम्स के मामले में भी ठीक यही होता है। इम्पेक्शन वाले दिन दुकानों से किराये पर गेम्स का सामान लेकर मजा दिया जाता है। इस कार्य में कानेज का क्लर्क तथा प्रिंसिपल कालेज के प्रेसीडेंट से मिला रहता है, और इस प्रकार उनका भडा नहीं फूटने पाता। माया जी ने जो चश्मा लगाये हुए थी, तथा अपने प्रोफेसर साहब को बड़े सम्मान की दृष्टि से देख रही थी, कमरे की कार्निश पर रखे हुए एक पीतल के लम्बे मारस की ओर देखते हुए कहा—

‘हम लोगों के यहाँ तो एक मिस्ट्रेस जिन्होंने एम० ए० में कहा जाता है, टॉप किया है, वह एसिस्टेंट प्रिंसिपल है, वह तथा प्रिंसिपल मैनेजर साहब के सिर में तेल ठोकती है। मैनेजर साहब की बहू के बच्चे खिलाती है।’

माया जी ने हँसते हुए आगे बढ़ाते हुए बात कही ‘बल्कि मेरे यहाँ एक साधारण पुरानी अध्यापिका है जो केवल ग्रेजुएट है। यद्यपि वह तृतीय श्रेणी वाली अध्यापिका है। वह पढाती बहुत अच्छा है। लड़कियाँ उनसे बेहद प्रसन्न रहती हैं। उन्होंने आप ही की तरह एक बार इम्पेक्टेस से शिकायत कर दी, क्योंकि उनके कुछ पहले इन्क्विमेंट न देकर उनसे हस्ताक्षर करवा के रुपये ले लिये। उनके शिकायत करने पर उनको बाद में इतना परेशान किया, उनसे इतने इक्विलेनेसन्स काल किये कि अब बेचारी कुछ नहीं बोलती। गृहस्थी का भार उन्हीं पर है। उनके हस्बैंड फ़ैक्टरी में किसी साधारण पोस्ट पर है।’

इतने में दरवाजा खटका ।

मौसा जी ने उठते हुए बढकर कहा—

‘आइये चले आइये ।’

उनके कहते ही पास के डाक्टर साहब मौसा जी पर सहानुभूति प्रकट करने के लिये अदर आ गये ।’

डाक्टर शम्भूनाथ ने बैठते ही उच्चारित किया—

‘प्रोफेसर साहब सुना आपने कालेज वालो का भडा फोड दिया । यह सब हमारी सरकार की खराबी है । हम स्वतत्र हो गये है । जो चाहे करे सब कुछ उचित समझा जाता है ।’

मौसा जी ने सामने गांधी जी के चित्र की ओर सकेत करते हुए कहा—‘देखिये उस गांधी जी के चित्र की ओर, इस सत्य के पुजारी स्वतंत्रता के अग्रदूत का चित्र प्रत्येक अदालत खाने, पुलिस विभाग, नेताओ के घरों, विधान सभाओ से लेकर पान की दुकानों तक में सुशो-भित है, लोग सचाई के अग्रदूत का चित्र दिखाकर इसका प्रमाण दे देते है कि हम सच्चे है । कागज पर प्रमाण होना चाहिये कि आप सच कह रहे है फिर आप कितना ही झूठ बोलते रहे । आप सचाई का किसी से जिकर भी करे आपको सुनने को मिलेगा । सचाई तो केवल पुस्तको में है । सचाई महात्मा बुद्ध तथा गाँधी ऐसे लोग अपने साथ लेकर आते है और फिर दूसरे लोग उनके आवरण में लाभ उठाते है । सचाई फिर से वर्षों के लिये धरती के अन्दर चली जाती है जब तक कि फिर से कोई महान नेता अपने जीवन की बलि देकर इस धरती पर न अवतरित हो जाय ।’

डाक्टर साहब जो बड़े ध्यान से मौसा जी की बातों को सुन रहे थे बीच में बार बार बोलना चाहते थे पर मौसा जी जिन पर यह सब कुछ घटित हो चुका था आवेश में बोलते ही जा रहे थे । मौसा जी की छोटी लड़की एक ट्रे में तीन ग्लास शर्बत ले आई थी । मैंने उठकर

उससे ट्रे ले ली। मैं सबकी ओर एक एक ग्लास बढ़ाते हुए मौसा जी को जैसे ही देने को हुआ उन्होंने शर्बत लेने से मना कर दिया।

डाक्टर साहब शर्बत का एक घूंट पीते हुए बोले—

‘वास्तविक बात यह है कि हम लोगों का नैतिक पतन हो गया है। धर्म इत्यादि को कोई मानता नहीं। कहीं शिकायत कीजिये कोई सुनता नहीं। सबके एसोशिएशन्स बन गये हैं। मैं अपने यहाँ की बात बतलाता हूँ। मेरी डिसपेंसरी के कम्पाउंडर्स इंजेक्शन्स बेच लेते हैं। अपने रिश्तेदारों को दे देते हैं। मैं अपनी बुराई स्वयं बतलाता हूँ। मैं अपने रिश्तेदारों को प्रसन्न करने के लिये मूल्यवान् इंजेक्शन्स पहले दे दूंगा। परिणाम होता है, निर्धन जनता उनका लाभ नहीं उठा पाती। जब दूसरे लाभ उठाते हैं फिर मैं ही क्यों रह जाऊँ।’

मैंने डाक्टर साहब की ओर, जो शर्बत पीते जा रहे थे देखते हुए कहा—

‘आप कम्पाउंडर्स की शिकायत नहीं करते।’

डाक्टर साहब ने अपने नेत्र विस्फारित करते हुए कहा—

‘शिकायत किससे करूँ। मेरे अस्पताल में एक एकसरे मशीन है। वह बिगाड़ दी गई है। सिविल सर्जन साहब उसकी बनवाई के लिये पैसा सैक्शन नहीं करते। उनका नगर के एक लखपती डाक्टर से कमीशन बँधा हुआ है। नगर के डाक्टर साहब अपने एकसरे प्लांट द्वारा निर्धन देहातियों को प्रत्येक छोटी से छोटी बीमारी के लिये एकसरे रिकमेंड कर बुरी तरह से ठगते हैं। साहब को आधा कमीशन मिलता है। शिकायत किससे की जाय कम्पाउंडर सब मिलकर उल्टे मेरी शिकायत कर दें। इससे मैं भी समझता हूँ चलो भाई बहती गंगा में हाथ धोते चलो।’

मैंने डाक्टर साहब की ओर ध्यान से देखते हुए कहा—

‘साहब मैं अपनी छोटी बुद्धि से यदि समझ सका हूँ तो शायद इसका कारण है विलास-पूर्ण जीवन की आकांक्षा तथा

उसकी ओर आकर्षण । लोग उच्च स्तर, उच्च स्तर के जीवन की जहाँ पुकार करते हैं, उसके परिणामस्वरूप जीवन में असंतोष फैला हुआ है । क्या समाज का ऊँचा से ऊँचा मनुष्य तथा निम्न से निम्न वर्ग तक का मनुष्य अपने में उच्चतर जीवन के लिये ऐसा उत्सुक रहता है कि वह बेईमानी करके भी बढ़ना चाहता है । अपने समाज में उसे वह सम्मान प्राप्त नहीं होता यदि उसके पास वह विलासिता की वस्तुएँ नहीं जो उससे ऊँचे स्तर वाले मनुष्य के पास हैं । उसकी आय के साधन सीमित हैं, अतः उसे बेईमानी की शरण लेनी पड़ती है । फिर जब वह शिक्षा में ही प्रारम्भ में अनैतिकता देखता हुआ आगे बढ़ता है, उसे बेईमानी करने में कोई हिचक नहीं होती ।’

डाक्टर साहब ने शर्बत का ग्लास मेज पर रखते हुए मौसा जी से कहा ‘मेरे विचार में आप शांत हो जायें । जब सभी ऊपर से नीचे तक बेईमान हो गये हैं, आप अकेले कुछ न कर सकेंगे ।’

मौसा जी एकटक मेज पर रखी हुई ऐशट्रे को देखते रहे । कुछ देर सभी शांत रहे । माया जी ने शांति भंग करते हुए कहा—

‘प्रोफेसर साहब अब चलूंगी, आज्ञा दीजिये’ ।

माया जी के जाने के तुरंत बाद ही डाक्टर साहब भी विदा लेकर चल दिये ।

मौसा जी को उनके कालेज वालों ने बहुत परेशान किया । उनको छोटी सी छोटी बात में परेशान किया जाने लगा । भय के कारण कोई टीचर उनसे न बोलता, कालेज के बाहर चुपके से एक आधा टीचर उनसे बोल लेते, उनसे सहानुभूति प्रकट करते, पर कालेज के अंदर प्रिंसिपल महोदय के भय से उनसे सब कतराते ।

एक दिन मौसा जी मौसी जी से कह कर अपना मन हल्का कर रहे थे । मौसी जी मशीन पर सिलाई कर रही थी । मौसा तखत के पाम कुरसी डालकर पैर उठाये बैठे थे । सामने आँगन में लगी हुई बेल की ओर देखते हुए बोले—

‘सरकार समझती थी कि तृतीय श्रेणी वाले ही चाटकार होते हैं, अतः इन्हीं लोगों के कारण विभिन्न विभागों में गड़बड़ियाँ फैलती हैं। शिक्षा का प्रसार होने से प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी वालों की भरमार हो गई और बेरोजगारी की समस्या के कारण प्रथम श्रेणी वाले भी अपने अफसरो के नामने ऐसे दुम हिलाते रहने हैं जैसा कोई श्रुद्धा में पीड़ित कुत्ता रसीली आँखों में रोटों के टुकड़े के लिये दुम हिलाता है।’

मैंने मौसा जी की बात का उत्तर देने हुए कहा—

‘मौसा जी इनमें प्रथम श्रेणी तथा तृतीय या द्वितीय श्रेणी की बात नहीं है, यह तो धन के अभाव में परिस्थितियाँ सब कुछ करवा लेती हैं। आज के युग का ईश्वर पैसा है, यह बात क्या निम्न क्या उच्च वर्ग सबकी समझ में आ गई है। कुछ पुराने लोग नैतिकता पर चलने वाले रह गये हैं, अन्यथा नैतिकता का लोप हो गया है। लोग तो यहाँ तक कहने लग गये हैं कि युग के अनुरूप ही सत्य की परिभाषा बदल जाया करती है।’

मौसा जी आँगन की बेल में खिले हुये फूलों पर मधुमक्खियाँ किन प्रकार रस लेकर उड़ती जा रही थी, ध्यान से देखने लगे। धूप तेज हो रही थी। उन्होंने दीर्घ श्वास खींची और उठकर बराम्दे में टहलने लगे।

कालेज वालों ने उन्हें बहुत दिक् किया और उन्हें अतः स्वयं, अपने हाथ से स्तीफा लिखकर दे देना पड़ा और वह एक पुस्तक की दुकान खोलकर अपने व्यवसाय में लग गये।

इधर रमन ने झूठी गहादतो के बल पर कई कतल के मुकदमे जीत कर असली अपराधियों को छुड़वा लिया था, अतः वह सम्पत्तिशाली बन गये। उनका सम्मान समाज में बढ़ता गया। रमन का विवाह भी एक धनाढ्य घराने में तय हो गया। एक व्यापारी के यहाँ जिसकी पैतीस फैक्ट्रियाँ चलती थी, बरात चल दी।

एक माह पूर्व से लडकी वाले का बगला बिजली की रोशनी से जगमगाने लगा। बँगले के प्रत्येक वृक्ष की फुनगी तक बिजली के बल्व प्रकाश करते रहते। दिन के तीन बजे से ही बिजलियाँ दमकने लगती। पेडैस्टल फैंस लान में चार बजे से जब वहाँ केवल बेले तथा जुही के पेड ही अकेले झूम-झूम कर आनंद लेते, शायद दिन भर की धूप में तपने के कारण उनको ठढक पहुँचायी जाती। बँगले के तीन ओर के लॉन्स में मूल्यवान सोफा सेट्स किसी लॉन में केवल लाल रंग के सोफे, किसी में केवल पीले वर्ण के, तो किसी में केवल सफेद वर्ण के सोफे सुशोभित थे। जिस वर्ण के परिधान जो स्त्री पहने रहती उससे मैच करते हुए लॉन की ओर ही वह चल देती। बीच-बीच में स्टैंड रखकर उन पर जालीदार सुन्दर पिंजड़ों में रंग-बिरंगे पक्षी झूलते दिख रहे थे। प्रत्येक दिन सध्या से ही विख्यात सगीतज्ञ हल्के तथा शास्त्रीय गानों से नित्य आने वाले नवागन्तुकों को बारह बजे रात्रि तक मुग्ध करते रहते। बारात आने के दिन से जब तक बरात ठहरी, नित्य सारा बँगला

विशेष रूप से पोर्टिको तथा बँगले के तीन ओर कारनिगो से लम्बी-लम्बी लटकती हुई फूल मालाओ से ढूँह के मौर के समान सजाया जाना। प्रथम दिवस पीले फूलों से, दूसरे दिन केवल श्वेत वर्ण के पुष्पों से तथा तीसरे दिन केवल लाल वर्ण के सुमनों से बँगला सुगन्धित किया गया।

नगर के सभी धनी मानी सेठ, विद्वान नागरिक, मन्त्रीगण, एम० पी० इत्यादि सभी उपस्थित थे। दहेज प्रथा की समाज में आलोचना हो रही थी। लडकी वाले ने पचास हजार रुपया छुपाकर रमन के पिता को दे दिया था जब विवाह निश्चय हुआ था। विवाह के समय मज्जनों की सभा में एक रुपया देकर विवाह सम्पन्न हुआ। दैनिक समाचारों में इसकी बड़ी प्रगमा निकली कि विवाह केवल एक रुपये से हुआ इतने बड़े धनी व्यक्ति ने इस प्रकार दहेज प्रथा का बहिष्कार किया है। दिल्ली नगर में जो मुगल बादशाहों की राजधानी रही, जहाँ सदैव ही पैमा जल की भाँति बहाया गया है, लोग उस व्यापारी विशेष की प्रशंसा कर रहे थे कि पैसे का सही उपयोग हुआ है। इस प्रकार पैसे का फैलाव तो हुआ। फूल वालों को पैसा गया। बिजली के पावर हाउस के मजदूरों की नहायता हुई। मोटरे दाड़ी, पेट्रोल के मालिकों तक पैसा पहुँचा। संगीतज्ञों, कलाकारों को धन प्राप्त हुआ। एक लदन को डिग्री वाले वैजिस्ट ने केवल एक रुपया लेकर एक धनाढ्य के घर विवाह किया। बात छुपी नहीं। बात फैल गई। पचास हजार रुपया नगद दिया गया। विवाह के प्रेजेन्ट्स इत्यादि अलग। लाखों रुपयों के प्रेजेन्ट्स मित्रों द्वारा दिये गये। नवयुवकों में उल्लाम की लहर दौड़ गई। आपस में विश्वविद्यालय के नवयुवक बातें करने लगे 'मैं भी विलायत जाने का व्यय, सारी पढ़ाई का खर्च लिये बिना विवाह नहीं करूँगा। रमन जिस समय अपनी पत्नी मौलश्री की विदा करा रहे थे। जैसे ही उनकी कार पोर्टिको के बाहर होती हुई बँगले के गेट के बाहर हो गई उसी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी ने जो हाल ही में आई० ए०

एम० के सेलेक्शन में आ गया तथा जिमकी तुरत पोस्टिङ्ग होने वाली थी, चीख कर बोल उठा ।

‘इससे बढ़िया विवाह मैं न करूँ तो मेरा नाम नहीं’ ।

रमन ने अपना हनीमून काश्मीर में मनाया । एक ओर से हवाई जहाज से जाने का निश्चय हुआ दूसरी ओर से मार्ग का आनंद लेने के लिए पठानकोट तक एअरकंडीशंड डिब्बे में तथा उसके आगे अपनी कार द्वारा । जाते समय वह सड़क से गये । जम्मू के डाक बँगले में दिन के एक बजे लच किया । रात्रि ननिहाल में व्यतीत की । प्रातः ननिहाल के पास बहती हुई सरिता के पास भ्रमण करते हुए उस पार के हरे-भरे जंगल का आनंद लेकर, डडल पर्वत होते हुए श्री नगर की घाटी में प्रवेश कर गये । उल लेक के हाऊस बोट में नवदम्पति के अठखेलियों का एक पखवारा व्यतीत हो गया । प्रातः उठते ही हाउस बोट के तिमझले वाली छत पर चाय पीते । अपने छोटे मोटे कार्यों की म्हायता के लिये वह मुझे साथ ले गये थे । मैं बहुधा अपनी टाँगों पर झेलम नदी के किनारे-किनारे वहाँ के जन-जीवन का अध्ययन करने के लिये निकल जाता ।

झेलम नदी पर पड़े हुए हाउस बोट सस्ते थे । अमीराकदल के आगे हवा कदल, रानी कदल इत्यादि स्थानों पर जहाँ झेलम नदी पर काठ के बहुत पुराने जर्जर अवस्था में पुल दिखते, वहाँ के हाउस बोटों में श्री नगर की गदगी देखने को दृष्टिगत होती । नावों पर बरोसियों में लोग मछली भूनते दिखते, रोटी से मछली खाकर अपने पेट की तृप्ति करते । स्त्रियाँ पुरानी ब्रिटिश वेशभूषा से मिलती-जुलती लम्बा पृथ्वी से छूता हुआ घेघरा नुमा लबादा पहने अपने सारे कार्य निपटा लेती । शीत के दिनों में अपने गले में लटकी हुई अँगोठी तक को उसमें छिपा कर अपनी ठिठुरन दूर करती । बच्चे फटे मैल कुचैले वस्त्रों में ऐसे सुशोभित मानों काँटों में गुलाब के पुष्प खिले हो ।

मैं मौलश्री को मामी कहने लगा । एक बार मैंने उन दोनों से

श्लेम नदी के सातों पुलों के देख लेने का आग्रह किया। वह लॉग मेरे साथ गये। शिकारे पर हम सब बैठे। उन दरिद्रों के दयनीय जीवन को देख कर मौलीश्री बोली—

‘कहाँ आप इस गंदी जगह ले आये।’ मैं बड़ा अपमानित-सा हुआ मुझसे अनायास ही निकल गया।

‘मामी ये ही स्थल हैं जहाँ आपको वास्तविक जीवन देखने को मिलेगा यह दरिद्र इन गंदे हाउस बोटों में हाथ से रेशमी वस्त्रों पर कशीदे का कार्य करते हैं। जो गाउन आप पहन कर प्रातःकालीन चाय पीती हैं उन पर किया हुआ कशीदा इन्हीं का है। जिस अखरोट की लकड़ी वाले अपने बराबर लम्बे टेबिल लैप से आप संध्या समय पार्टियों का आनंद लेती हैं उस पर इन बेचारे निर्धन पर कर्मठ व्यक्तियों की ही उँगलियाँ दौड़ी हैं। जो चटाई का बुना हुआ चौड़ा टोप पहनकर आप ऊँची चोटियों पर चढ़ती हैं उन पर इन्होंने ही अपने नेत्र रात्रि को जाग-जाग कर गड़ोये हैं। जिन उल लेक के हाउस बोटों में हम आप रह-रहे हैं वह इन्होंने ही जोड़ कर खड़े किये हैं जो हमें सुख प्रदान करने वाला है, उसके जीवन पर तो हम आप दृष्टिपात कर लें’।

मौलीश्री जी श्लेम के किनारे बने हुए मकानों की ओर तथा घाट नुमा सीढ़ियों की ओर देखती हुई शिकार पर चली जा रही थी, एक बार मेरी ओर क्षण भर में ऊपर से नीचे तक अपने नेत्र चलाकर श्रीध्र ही अपनी ग्रीवा मोड़ ली और राजा के महल की ओर देखने लगी जो शायद अब कार्यालय में परिणत कर दिया गया था। महल का प्रतिबिम्ब देखकर बोलीं—

‘देखिये, यह कितना सुन्दर लग रहा है। इसकी हिलती-डुलती छाया का आनंद उन रानियों ने भी लिया होगा जो इसमें रहा करती होंगी’।

रमन बाबू ने मुस्कुराते हुए कहा—

‘और तुम भी तो रानी ही हो, तुम क्या उन लोगो से कम हो’ ।

मौलश्री जी दौन खोलकर मुस्करा दी और ऐसा करते हुए उन्होंने अपनी गर्दन दूसरी ओर फेर ली । उनकी दृष्टि एक इमारत पर जा पड़ी जहाँ बहुत से छोटे-छोटे बालक दुमजले भवन पर शिक्षा ले रहे थे ।

एक दिन हम लोग चश्माशाही, निशातबाग तथा शालीमार बाग देखने को गये । डल झील के किनारे-किनारे ताँगा भागता गया । निशात बाग के पास में एक ऊँचे वृक्ष से पृथ्वी पर गिरे हुए छोटे-छोटे शहतूत जिन्हें कालातूत कहते थे, वह देखने में बिल्कुल काले तथा चार सूत से अधिक बड़े न थे । खाने में अत्यन्त स्वादिष्ट थे । मैंने मौलश्री जी को उठाकर दिये । उन्होंने हाथ में लेकर अवश्य देखा पर मुख बिदकाती हुई उन्हें फेंक दिया ‘यह कोई साधारण फल है, पता नहीं विष न हो’ ।

आस-पास चेंरी के लहलाते हुए बगीचे दिखने लगे । पवन के बहने से ऊँची झाड़ी जैसे पेड़ हवा का अभिवादन करके उसके चरणों में लाल लाल घुघुचियों के समान लदी हुई चेंरी की डालों को नीचे झुका देते । मार्ग में सड़क के दानों ओर जल की पतली-पतली धाराये कल-कल करती हुई वक्र गति में भागती चली जाती । इधर-उधर बेतस के हरे-भरे जंगल अत्यंत ही सुहावना दृश्य उपस्थित करते ।

जैसे ही हम लोग शालीमार की सीढियों पर चढ़े । इधर-उधर के हरे-भरे लॉन्स जो सेब के पेड़ों से सजाये गये थे । शालीमार की बारादरी तक बीचोबीच से होकर फुहारों से सजा हुआ सीधा रास्ता जाता है । फुहारों का जल मार्ग में चलने वाले नवदम्पतियों के शरीर में सिहरन उत्पन्न करता । मे बहुधा रमन तथा मौलश्री जी को छोड़कर इधर-उधर का आनंद लेने लगता । मौलश्री जी बहुधा जो भी स्त्रियाँ अत्यधिक मृत्युदान परिधानों में सजी होतीं उन्हीं पर आकर्षित होती । वह उनके पुरुषों के पहनावे, किसी की टाई तथा उनके पिकनिक की सामग्री की प्रशंसा रमन से करती । रमन को सुनकर यह कुछ अच्छा

न लगता। यद्यपि मौलश्री के मूल्यवान वस्त्र भी किसी प्रकार कम न थे पर धन की होड़ में तो सब फीका हो सकता है, उस अबोध को यह कुछ अवगत न था। एक पोटेक नई कार से एक अत्यंत सुन्दर दम्पति उतरे। उनके वस्त्र जरी के कामों से झलमला रहे थे। उसका नलवार तथा कुरता हल्के चेरी के रंग का था जिस पर असली सोने का काम था। हाथ की उँगलियाँ पन्ना तथा हीरे की अँगूठियों से भरी हुई थीं। ठीक यही दशा उसके पुरुष की थी। वह मूल्यवान शाहतूश वस्त्र का सूट पहने हुए थे। उनके पीछे चपरासी लोग वायनाकुलर्स, मूल्यवान कैमरे तथा अन्य खाने पीने का सामान जो एटैची में तथा अन्य सुन्दर काश्मीरी बेत की टोकरियों में लाये थे; लेकर चल रहे थे। वह दोनों वास्तव में देखने में नूरजहाँ तथा जहाँगीर से ही दिख रहे थे। मौलश्री ने उनके चपरासियों को देखते ही अपने पति की ओर आर्काषित होते हुए कहा—

‘मैं आप से कह रही थी कि अपने साथ दो नौकरों को लेकर चलिये। आपने कहा—श्री नगर में मिल जायेंगे। यहाँ के ये गंदे कुली हम लोगों का सामान ढोने में शोभा नहीं देते।’

रमन ने उन चपरासियों को देखकर तुरंत मौलश्री की बात को टालते हुए कहा—

‘देखिये वह छोटे-छोटे सेब के वृक्षों में यह पके हुए सेब कितने सुन्दर लग रहे हैं।’

मौलश्री ने एकबार उन वृक्षों पर दृष्टि डाली फिर से वह उस युगल की चालढाल उनकी तड़क-भड़क को ही देखती रही। बारादरी के बीचोबीच खड़े होकर उसके चारों ओर के चलते हुए फुहारों का आनंद लेना वहाँ के प्रत्येक युगल का कार्य था, और वहाँ खड़ा होकर निर्धन व्यक्ति भी अपने जोड़े के साथ अपने को जहाँगीर तथा नूरजहाँ ही समझ लेता था। ऐसा ही रमन ने किया। मैं उनके पास से कतरा कर और पीछे को चला गया जहाँ शालीमार समाप्त होता था। पीछे

को एक दीवाल थी। उसके पाम ही एक दरवाजा था। मैं उसके पीछे से होकर गया। दीवाल के पीछे से एक पहाड़ी झरना बहता हुआ दूर ऊँचाई से कल-कल करता हुआ आ रहा था। मुगल बादशाह ने इसी झरने को सजाकर भव्य भवन ऊँचाई पर खड़ाकर उसे शालीमार का रूप दे दिया था। वह मुमज्जित दम्पति एक स्थान पर परशियन चमकता हुआ कारपेट बिछाकर बैठ गये थे। मूल्यवान् अपर क्रीम की कोटिङ्ग से फूल पत्तियाँ बनी हुईं केक तथा पेस्ट्रियाँ, चेरी स्ट्रावेरीज तथा बड़ी-बड़ी एक-एक पाव डेढ़ पाव वाली ताज्जी खुवानियो और चमकते हुए लाल सेवो पर जुट गये। खा चुकने के बाद स्त्री ने एक दिवाल से लगे हुए झाड़ी की आड़ में जो शायद चहरदीवारी से लगकर था अपना दूसरा हल्के बदामी रंग का सूट बदल लिया। मौलश्री ने उसके दर्शन करते हुए कहा—

‘अमली जीवन तो यही है।’

रमन के मुख से अनायास निकल पड़ा।

‘यदि खाना खाने के लिये वस्त्र दिखलाने के लिये ही यह लोग आये थे, तो वर पर यही कार्य कर सकते थे। क्षण भर के लिये रमन के नेत्र उड़े उड़े से लगे और उनकी मुखाकृति से ऐसा लगता था जैसे वह अपने पास किसी को मौलश्री का उत्तर देने के लिये खोज रहे हो। मुझे ऐमा लगा शायद वह मैकू मामा की याद कर रहे थे क्योंकि ऐसे अवसर पर वह साधारण जीवन की व्याख्या कर उनको इस परिस्थिति पर विजय दिलवा देते। मैंने अपनी साधारण मोटी ऊनी खादी की शेरवानी तथा खादी के पाजामे की ओर देखा पर मुझ में रमन जी से छोटा होने के कारण उनसे कुछ कह सकने का सामर्थ्य न था।

रमन उस दिन खोये-खोये से रहे। अपने हाउस बोट पर वापस आकर अपनी कानून की पुस्तको की किन्ही प्रोसीडिंग्स पर आँखे गडोए रहे। फर्श पर का बिछा हुआ परशियन करमेट, सोफे पर कड़े हुए मखमली तकिये, कोने पर का लम्बा अखरोट की लकड़ी के ऊपर

काश्मीर के दृश्यों से सुसज्जित छतरी नुमा टेबिल लैम्प उनकी ओर घूरता हुआ दिख रहा था। उन्होंने अपना पाइप सुलगाया, और सेंटर टेबिल को पास घसीट कर उस पर धारीदार स्लीपिंग सूट पहने हुए तथा ऊपर से सुन्दर गाउन चढ़ाये हुए रमन ने अपने दोनों पैर एक के ऊपर एक रख लिये और पाइप के कश के कश बाहर फेंकने लगे। उनके पैर हिलते जा रहे थे। बोट हाउस के ड्राइंग रूम की छत की नक्काशी को वह ध्यान से देख रहे थे। पास के चिनार के घने वृक्षों से मंद पवन ड्राइंग रूम के वातायनों से होकर अंदर आ रहा था। वह इधर-उधर उसकी प्रियतमा मौलश्री को खोजता हुआ निराश दूसरे साइड वाले ड्रेसिंग रूम में प्रवेश कर चक्कर काटता हुआ निकल जाता। मौलश्री बाथ रूम में किसी गाने को गुनगुनाती हुई अपने शरीर की सफ़ाई में तल्लीन थी। ह्याडी क्लोन तथा इवनिंग इन पेरिस की सुगंध से हाउस बोट से थपेड़े लेती हुई उल्लेक की लहरें आनंद ले रही थीं।

श्रीनगर के जीवन से ऊब कर सब लोग पहलगाम के लिये प्रस्थान कर गये। पहलगाम के मार्ग के रमणीक दृश्य धन की देवी लक्ष्मी को लज्जित कर रहे थे पर लक्ष्मी विभिन्न रूपों में वहाँ बिखरी हुई थी। कोई प्राकृतिक दृश्यों में लक्ष्मी के दर्शन कर लेता कोई वहाँ की सारी श्री सम्पदा को कहीं घरती के गह्वरों से कहीं केसर के खेतों तथा फलों तथा बगीचों से एकत्रित कर अपनी निधि समझकर अपना एक मात्र अधिकार समझना चाहता था वहीं लक्ष्मी उसे विक्षिप्त बनाकर छोड़ देती।

पहलगाम के मार्ग के किनारे कहीं सरिता विशाल काय रूप धारण कर जंगलों के बीच से कई धारों में प्रवाहित हो रही थी। बीच-बीच में सफेदा तथा चिनाब के वृक्ष अपनी रमणीयता से पहलगाम के आस-पास के हरे भरे मैदानों को और भी सुन्दर बना रहे थे।

एक दिन दो घोड़ों पर सवार होकर पिकनिक की सारी सामग्रियाँ

सहित रमन तथा मौलश्री चदनवाडी का आनद लेने के लिये चल दिये । रमन ने स्वेट की जरकिन तथा ब्रिचेस चढाई । मौलश्री ने भी ढील। ब्लाउज तथा जीनसाफ लो । घोडे चल दिये । मौलश्री के गले तक के वाल घोडे के दौडने से उछलते हुए अपनी छटा बिखेर रहे थे । कही पथरीली चट्टानो पर से घोडे धीमे-धीमे उतरते तो कही चढाई पर पीछे से दौडने वाले कुली घोडो को चढने मे सहारा देते । वैसे तो चदनवाडी तक का मार्ग अत्यंत सरल है पर बीच-बीच मे कही-कही पथरीलो चढाई के दर्शन होते । आसपास भीमकाय पथरीले पहाड राक्षसी रूप धारण किये अपने रहस्य को जान लेने के लिये मनुष्य जाति के ओत्मुख्य को और भी जागृत करते । उन पथरीले पर्वतो के उग पार घने जंगल की हरियाली जीवन मे कष्ट तथा सुख के समिश्रण का सुन्दर आभास देने । पास ही कलकल करती हुई सरिता अपने मे मदमस्त चली जाती । उसे किसी के क्लेश तथा सुख की चिन्ता न थी । इस प्रकार सम्पूर्ण जीवन का अध्ययन कर लेने के लिये यह वनस्थली पर्याप्त थी । कहाँ क्लेश है, क्यो है, कहाँ सुख है, सौदर्य है, लावण्य है, क्यो है, इसका कोई परिभाषा नहीं । सब कोइ भीमकाय पर्वत शिखर लुडकता हुआ किमके सौदर्य को क्यो नष्ट कर देता है इसके रहस्य का अध्ययन कर लेने के लिये मनुष्य जाति आदिम युग से प्रयत्न करती आ रही है पर वह असफल ही रहती है ।

चदनवाडी के बर्फीले पर्वतो पर मौलश्री छलांग लगाने लगे । दूर बर्फ के नीचे से सरिता कलकल करती हुई ऊँचे बर्फीले पहाड से दिखती ।

मैं पीछे-पीछे कभी-कभी तेज चाल कभी धीमी चाल से फ्लीट जूते पहने हुए पहुँच गया । मार्ग मे बनजारो की टोलियाँ अपने टट्टुओ पर मिली । उनसे उनका जीवन पूछता हुआ उनके उस साधारण जीवन के उल्लास का आनद लेता हुआ आगे बढ़ आया था । घोडो पर उनके छोटे बच्चे होते । स्वयं स्त्री-पुरुष नवयुवक और युवतियाँ

पैदल पीछे-पीछे चलतीं। उनके चमड़े के आगे चौंच-सी उठी हुई लम्बे जूते ऊँचे घँघरे। विलोचियों जैसे सिरों में रंगीन रूमाल बाँधे आकर्षण प्रदान कर रही थीं। उनके गुलाब से चेहरे मौलश्री को एकबार उनकी ओर देखने को बाध्य करते और वह उनकी ओर एकबार नुस्कराकर देखती हुई आगे बढ़ जाती।

चंदनवाड़ी मे सरिता के टीले के ऊपर एक ऊँची पथरील शिला पर हम लोगों ने भोजन किया, चाय पी, मुझे कुछ बिस्कुट के टुकड़े तथा टूटी हुई मार्ग में हिलने-डुलने से पिस जाने वाली केक के चूरे खाने को मिल गये पर उनमें मुझे वह स्वाद न मिला जो एक बंजारे ने मार्ग में मुझे कुछ भुने हुये बड़े-बड़े लोबिये खाने को दिए थे, जिसे मैं एक बनजारिन नवयुवती से उसके रहन-सहन तथा आस-पास के गाँव के जन-जीवन की बातें करता हुआ आगे बढ़ आया था। वह मार्ग से ही एक ऊँचे पहाड़ी मार्ग पर कतरा गए थे। धीरे-धीरे उनके टट्टुओं की टप-टप की ध्वनि उस घने वन में विलीन हो गई थी और फिर किसी नवयुवती के पहाड़ी गाने की सुमधुर ध्वनि मंद-मंद सरिता की कल-कल के साथ सुनाई दे रही थी। मैं पास के वन का चाय के घूंट लेता हुआ आनंद तो ले रहा था। ध्यान मेरा उस नवयुवती पर था। जिससे मैंने बातें करते हुये अपना रास्ता तय किया था। उसकी सैकड़ों महीन-महीन लटें कैसे सैकड़ों चोटियों में गूँथी गई थी। उन पर साधारण धातु तथा मामूली पत्थरों के आभूषण कैसे पिरोये गये थे। मेरा ध्यान उसी में था। मैं सोच रहा था कि मौलश्री से कहीं सुंदर-मय उसका जीवन था उसके साधारण प्राकृतिक सौंदर्य में अधिक आकर्षण था। मेरे पास ही मौलश्री का मूल्यवान कैमरा रखा था, अचानक मेरा हाथ पड़ जाने से कैमरा नीचे सरिता में लुढ़कता हुआ निकल गया, और वह लहरों में गोते लेता हुआ बीच गहराई में पहुँच गया।

मौलश्री मुझे ध्यान से देखने लगी। उसकी भूकुटियां टेढ़ी हो गईं। उसने रमन की ओर देखा। आखें चढ़ाते हुये बोली—

‘यह एक हजार रुपये का भी कैमरा इस समय नहीं मिलेगा। यह पिता जी के एक मित्र अमेरिका से लाये थे। कितनी गजब की हानि हो गई। अब तो खरीदा भी नहीं जा सकता।’

रमन जी मेरी ओर देखते हुये बोले—

‘चट्ट तम क्या खोये-खोये से रहते हो। आखिर कैसे बैठे थे। देखना चाहिये, तुम्हारे आसपास क्या रखा है।’

मैंने अपनी शेरवानी बटोरते हुए कहा—

‘मैंने जानबूझकर तो कैमरा गिराया नहीं। मामी जी को कैमरा ऐसे स्थान पर रखना नहीं चाहिये था। कैमरा चट्टान पर तो रखने का स्थान नहीं है।’

मौलश्री जी की भ्रुकुटिया और भी चढ़ गई, वह अपना चमकता हुआ चाँदी का टिफिन बद करते हुये बोली—

‘कैमरा भी मैंने खोया उस पर दोष भी मैं ही सहन करूँ। खूब।’

मैं शान्त हो गया। पास के वन से मद पवन शरीर में सिहरन उत्पन्न करने के स्थान पर मुझे चुभन-सी उत्पन्न करने लगा। मैं पछता रहा था इन धनीमानियों के साथ आया ही क्यों।

मैं पैदल चलकर आया था। मिडिलियो में दर्द हो रहा था। मैं उठकर दूर टहलने लगा। मैंने मौलश्री जी की मद बोली सुनी—

‘मुझे तो यह पूरा देहाती हूश लगता है। चूहे मारने वालों की पोशाक खादी पहनना है। मुझे तो इसकी शकल जैकाल सी लगती है।’

मैं ध्यान से दूसरी चट्टान पर से सरिता के कल-कल को सुनता रहा। मुझे लहरों की कल-कल कहती हुई प्रतीत हो रही थी।

‘अहिमा कर पुजारी चला गया। सत्य धरती में खो गया। गाँधी बूढ़ा सबको चूहे वाली पोशाक पहना गया, पर खादी का स्वेत वर्ण सरिता के लहरों जैसा ही है, वह कल-कल करती हुई बहती जाती है। कोई कुछ भी कहता रहे। उज्ज्वल हृदय, निष्कपट व्यवहार में ही शान्ति है।’

वह लोग वहाँ से लौटकर गुलमर्ग, टुनमर्ग, खिलनमर्ग, कुकरनाग, बेरीनाग स्थानों का भ्रमण करते रहे। मैं वहाँ के गाँव में दरिद्र जीवन में जो सारल्य है, उसका अध्ययन करता रहा। कुलियों से ये धनी दो चार आने में कितना अधिक कार्य ले लेते हैं और अपने पैसे बचाकर मूल्यवान रुज तथा कीमती कॉसमेटिक्स में व्यय करते हैं। बोरे के बस्त्र ओढ़े हुए कुली किस प्रकार एक एक बोड़ी की भिक्षा माँगते हैं। एक अँगूठी के सहारे शीत की पूरी रात काट देते हैं। धनी व्यक्ति मूल्यवान भोजन उनके सामने करते रहते हैं, पर वह एक बार भी उनकी ओर नहीं देखते। उनकी पत्थर और लकड़ी की छोटी-छोटी छतें हैं, उनमें उनका चाय का सनोवर तैयार रहता है। किसी अतिथि के आ जाते ही शब्द फूट पड़ते हैं, 'चा पियेगा'। उनकी उस मुस्कान में जितना सम्मान होता है उतना चाय के दो घूट पीने में भी नहीं आता।

एक दिन पहलगाम में ही लिदार नदी के उस पार वाली पहाड़ी पर मैं पैदल चढ़ गया। ऊपर बर्फ जमी थी। रमन तथा मौलश्री घोड़ों पर पीछे-पीछे आ रहे थे। मैं इन लंगों से अलग पाइन के वृक्षों से गिरी हुई पत्तियों पर से सरपट भागता हुआ, ऊपर चट्टानी शिलाओं पर चढ़ गया। बर्फ पर चढ़ने को हुआ, कि वहाँ के ही एक गड़रिये ने मना किया। 'नीचे झरना बह रहा है, यदि बर्फ की पर्त पतली हुई कि नीचे चले जायेंगे।' मेरे रोंगटे खड़े हो गये। वहाँ आस-पास उसके अतिरिक्त कोई न था। उसकी पृथ्वी से छूते हुए बड़े-बड़े बालों वाली बकरियाँ, मुझे भालू जैसी बड़ी सुन्दर लगीं। उन लोगों ने मुझे अपने कठोरे में ताजा दूध दुह कर पिलाया। उनकी एक छोटी सी बालिका हाथ में लट्ठी लिए हुए, ऊपर की शिला पर चीखती हुई, वृक्षों के बीच में पहाड़ी गान अलाप रही थी। झरने से मोटे पाइन के तने लुढ़क-लुढ़क कर नीचे की धीमे-धीमे सरक रहे थे। मेरे उनसे पूछने पर कि तुम लोग कौन हो। उन्होंने उत्तर दिया, 'बकरबाल'।

वह बकरियों की ओर 'शी-शी' करता हुआ बोला, जिससे बकरियाँ चट्टानों

के नीचे से निकल-निकल एक स्थान पर एकत्र हो गई ।

‘हम लोग यही रहते हैं, कहीं एक माह में एकाध बार चले जाते हैं ।’

मैं इस पहाड़ी का दृश्य देखने के पश्चात् जैसे ही छलांग धारता हुआ नीचे को उतर रहा था, बहुत नीचे रमन तथा मौलश्री, जिनके घोड़े ऊपर चढ़ भी नहीं सकते थे, घोड़े वालों ने उनके पास खोल दिये थे । वह लोग एक पिकनिक कारपेट डालकर उनपर पड़े हुए थे । घोड़े वाले कहीं दूर चले गये थे । मैंने जैसे ही आवाज लगाई, ‘रमन भइया’ वह उठ बैठे ।

मेरी ओर देखते हुए बोले ।

‘कहाँ हो आये चन्द्र’ ।

मैंने मुँह फँलाते हुए कहा—

‘ऊपर बड़ा ही रमणीक दृश्य है, मैंने बकरवालों के जीवन को देखा । उनका सुमधुर संगीत सुना । बर्फीले स्थान पर बकरी का दूध पिया’ ।

मौलश्री मुह बिदका कर हँसती हुई बोल पड़ी ।

‘और क्या होगा ऊपर, बकरी का दूध’ ।

इतने में एक युगल घोड़ों पर से वही उतर पड़ा । वह हाफ रहे थे । उन्होंने पूछा ‘ऊपर क्या है’ ।

रमन बाबू ने खड़े होकर कमर पर से पतलून ऊपर खींचते हुए उत्तर दिया—

‘कुछ नहीं है साहब, केवल चढाई है । यह ऊपर गये थे । कह रहे हैं, बकरियाँ हैं । उनका दूध पीना हो, तो ऊपर जा सकते हैं ।’

उन सज्जन की पत्नी, जो मूल्यवान मखमली ब्रिचस तथा काले मखमल का ढीला ब्लाउज पहने थी, हँसती हुई बोली—

‘ओ बकरी का दूध, वो तो गाधी बाबा पीता था’ ।

मौलश्री जी चट्ट की ओर देखती हुई बोली—

‘इन्होंने पिया है, कहते हैं बड़ा आनन्द आया । बहुत स्वादिष्ट था’ ।

उस स्त्री ने हँसी करते हुए, अपने हाथ की बन्दूक नीचे रख दी और अपने ब्लाउज को सँभालती हुई बोली —

‘यह खादी भी पहने हैं, गांधी का चेला है । तुम चना खाता है, घोड़े वाला ।’

मौलश्री खूब हँसी, रमन बाबू तथा दूसरे सज्जन मुस्कराते रहे’ ।

मुझे क्रांघ आ गया था । मैंने उनकी वेश-भूषा की ओर देखते हुए कहा —

‘आपकी इस भेड़ियों ऐसी वेश-भूषा से यह खादी कहीं अच्छी है । इसका पहनने वाला गरीब जनता के साथ सहानुभूति तो रखता है । भेड़ियों को अपने स्वार्थ के आगे कुछ नहीं सूझना । आपके केक तथा पेस्ट्रियों में ईर्ष्या भरी है । आप एक पीस यदि किसी को देंगे, तो उसके बदले में दस पीस चाहेंगे । आपका केक पीस खाने वाला आपके पास तभी आयेगा, जब उसके पास भी, वैसा ही पीस खिलाने की सामर्थ्य होगी । हमारा चार दाने चने खाने वाला निःसंकोच फिर से आवश्यकता पड़ने पर चने माँग लेगा ।’

रमन बाबू मेरी ओर देखते हुए कुछ तेज शब्दों में बोले —

‘चन्दू क्या बात है ।’

मेरी बात सुनकर रमन जी को छंड़कर सब खिलखिलाकर हँस पड़े । मैं शान्त हो गया । मौलश्री जी उस स्त्री से बड़ी आकर्षित हुई, उसका पता पूछने लगीं । पूछने पर पता चला, वह बम्बई के किसी सेठ की बहू थीं । मौलश्री बार-बार उस युवक के घुंघराले केशों की ओर देखतीं । उनके गले से लटकते हुए रिबालवर पर के चमकते हुए चमड़े को देखकर उसके कीमती चमचमाते हुए जूते निहार रही थीं ।

उस स्त्री ने कहा —

‘मुझसे चढ़ाई नहीं चढ़ी जाती । हम लोग तो आराम के लिये

आये है। चढाई म थकन होनी है। ऊपर ढोडे नही जा सकते। वापस चलिए।'

इस प्रकार मभी वहाँ से वापस हो लिए।

इस प्रकार एक माह तक हनीमून मनाकर रमन बाबू वापस आ गये थे। मौलश्री भी अपने पिता के घर चली गई थी। रमन बाबू दिन रात पैसे की चिंता मे रहने लगे। उनका छोटा भाई चमन भी डाक्टर हो गया था।

चमन के पिता जी पुगने विचारो के व्यक्ति थे। वह अग्रवाल थे। उनकी इच्छा थी कि उनके सुपुत्र अपनी ही जाति-विरादरी मे विवाह करे। रमन ने धन के लोभ मे अपनी ही जाति मे विवाह किया था। पर चमन का प्रेमालाप किसी ब्राह्मण परिवार की महिला से चल रहा था जो उनकी सहपाटिनी थी।

चमन मेरी आयु का होने के कारण, उसने मुझमे अपनी बात बतला रखी थी। इस बात को अभी तक उसके पिता जी और न ही रमन बाबू जानते थे। मैने एक बार चमन से रमन बाबू की श्रीनगर वाली घटना बतला दी। मैने कहा, 'चमन मुझे विवाह के पश्चात् रमन बाबू मे बडा अन्तर अवगत हुआ है। माना किसी की वस्तु खोने पर उसे अपार दुख होना है, पर तुम्हारी भाभी मौलश्री जी इतने धनी परिवार की होते हुए भी, मैने उनके अन्तर्गमन धन की इतनी अधिक लालसा देखी कि वह धन ही को सब कुछ समझ बैठी है। आचरण, व्यवहार इत्यादि सब कुछ धन के आगे खो गया है।'

चमन ने कौतूहलता से मेरी ओर देखते हुए कहा

'क्यो क्या बात हुई चट्ट'

मैं भौंहे दबाते हुए बोला

'कुछ नही मैने एक सामान्य बात कही। उनका कोई मूल्यवान कैमरा जिसे उन्होंने ही गलती से ऐसे स्थान पर रखा था जो शायद

हल्के झटके से भी, कहीं का कहीं जाना । उमके लुढ़क जाने का अकस्मात कारण मे ही बन गया । बस मुझे जो उनके अनजाने में मृत्तना पड़ा, उससे मुझे धन के उपासको मे घृणा हा गई है'

चमन ने पृथ्वी की ओर देखते हुए कहा ।

'हाँ भाभी से सुना तो मैंने भी था । उनके कथन से तो ऐसा ही अवगत हो रहा था, कि वह तुम्हारी लापरवाह से मिर गया । शायद वह उनके पिता जी के किसी अनन्य मित्र की भेट थी, जो उसे अमेरिका से लाये थे' ।

मैं चमन की ओर देखना हुआ बोला—

'मुझे जाने की भी क्या पड़ी थी । मैं तो स्वयं उन लागा से बहुधा अलग ही अलग घूमता रहा । मेरे पिता जी की एक निशानी, उनका फाउनटेन पेन, जो बहुत ही साधारण था । मैं समझता हूँ, उसका मूल्य मेरे लिये किसी की अपार धनराशि की जितनी भी कल्पना की जा सकती है, उससे कहीं अधिक था । एक दिन मौलथ्री भाभी ने कहीं लिखते लिखते रख दिया । वह खो गया । मैंने उमका किसी से जिकर तक नहीं किया । और तुमसे भी आशा करता हूँ, कि इस बात का तुम रमन भड़या से भी जिकर नहीं करोगे ।'

चमन चौकते हुए एकबारगी बोले—

'अच्छा और तुमने भाभी से नहीं कहा'

मैं सामने वृक्ष की ओर देखता हुए बोला

'मैंने उनसे पूछा था, भाभी मेरा कलम आपने कहाँ रखा है, जिससे आप लिख रही थी'

उन्होंने लापरवाही से उत्तर दिया ।

'यही होगा, मैंने मेटर टेबुल पर रख दिया था' फिर मैंने उमका जिकर करना उचित नहीं समझा ।

चमन की आँखों की पुनर्निर्माण अपने परिवार की आलोचना के

फलितार्थ आने अन्त करण पर अंकित चित्र की झाँकी को देख रही थी। मैंने चमन का भाव ताड़ते हुए कहा।

‘चमन अच्छा छाड़ा तुम क्या सोचने लग गये। अपनी प्रियसी का हाल सुनाओ।’

मेरे विचारे से जब तुमने उसमे प्रेमालाप किया है, तो उसे धोखा नहीं देना चाहिये। उससे विवाह कर उसका साथ देना चाहिये।

चमन ने जो अन्त करण के मनोरञ्जक चलचित्र को देख कर मुस्करा दिया थे, हँसते हुए दाँत खोल कर कहा।

‘भाई पिता जी से क्या कह कर हिम्मत करूँ।’

मैंने गम्भीर होकर अपने कुरते के ऊपर वाले बटन पर हाथ फेरते हुए कहा, ‘मैं तो, ऐसे विवाह को समझता हूँ, प्रत्येक व्यक्ति आपको प्रोत्साहन देगा’, चमन बालों पर हाथ फेरते हुए बोले।

लडकी का घराना गरीब है। लोग विवाहो मे स्टैण्डर्ड की ओर अधिक ध्यान देने लगे है। पिता जी तथा रमन भइया भी यही चाहेंगे। हम लाग कम्पनी बाग के लान पर पाम ही फुलवारी की एक क्यारी के पास बैठे हुए बातें कर रहे थे। मैंने एक फूल ताड़ते हुए कहा, ‘भाई यदि ऊपरी कृत्रिम विलासी आनंद चाहते हो, तो घन के पीछे जाओ। अमरीकी जीवन का अनुकरण करो। अपने से उच्च स्तर व ले जीवन के लिये सघर्ष करते रहो और यदि वह सब कुछ न उपलब्ध हो, तो निराश पूर्ण जीवन, उम नौकर के समान व्यतीत करा, जो अपने हाथ से मूल्यवान तथा स्वादिष्ट भोजन दूसरो को परासता रहता है, पर स्वयं उसे सूखी बेझड की राटियाँ तथा सूखी कड़ पडी हुई दाल खाने को मिलती है।

चमन मेरी ओर ध्यान से देखते हुए सुनते जा रहे थे। अपनी सिल्क की कमीज, जिस पर पास के फूलों का एक रंग विरगा पखो वाला कीड़ा चढ़ आया था, झारते हुए बोले।

‘क्या कुरू भाई, तुम समझते नहीं, यदि यह सब वस्तुएँ नहीं हाती है, यथा यदि मेरे पास माटर गाडी नहीं है, बढिया रेडियो सेट नहीं है, डामेट क्रोवरी नहीं है, अच्छा बगला नहीं है, तो मेरी डाक्टरी की ओर भी लोग आकर्षित नहीं होंगे । मैं विवाह अवश्य रोमिल से करूँगा । धन अर्जित करूँगा । ठाठ में रहूँगा ।

मेरे मन न अपने से ही कहा ।

‘चमन से, जो एक उच्च परिवार में ही पला है, जिसे एक बार पैसे का चम्का मिल गया है, उसमें साधारण जीवन की बान करना भी व्यर्थ है और यह सोचते हुए मैं उस स्वतः वर्ण के साधारण फूलों की बयारी की ओर देखने लगा, जहाँ केवल एक आध व्यक्ति ही बैठा दार्शनिक बना हुआ आनन्द ले रहा था । अधिकतर रंग विरगें फूलों वाली क्या रियों के निकट ही लॉन पर बैठकर लोग आनन्द ले रहे थे ।

मौलश्री मामी अपने घर से आ गई थी । एक दिन उन्होंने रमन से कहा, ‘यदि आप अलग रहे, तो सब से अच्छा है । मेरे पिता जी कहते हैं, यदि आप देहली में प्रैक्टिस प्रारम्भ कर दें, तो बहुत अच्छी चलेगी । उनके कारण आपको, जितने भी कड़े मुकदमें हैं, मिल जायें करेंगे । चमन तथा सरला की देखभाल के लिये, माता तथा पिता जी हैं ही । फिर उन्का ब्रुदापे में शान्ति भी चाहिये । अधिक सदस्यों का एक घर में रहना भी अच्छा नहीं लगता । चमन के विवाह के बाद वही समस्या उठेगी । इससे अच्छा है, ऐसी परिस्थिति उठने ही न दी जाय ।

रमन ने अपने सोफे पर टांगे फश पर फैलाते हुए, हाथ गर्दन पर रख, अँगड ईं लेते हुए, जम्हाई भरी, पर मुख में कुछ न बोले । ऐसा लगा, उनकी मुद्रा से, जैसे वह किसी सोव में पड़ गये । मुझसे चमन ने यह सब कुछ एक दिन बैठकर बतलाया । वह अपने ही घर के बाहर वाले कमरे में बैठा हुआ आगे बोला ।

‘चदू एक गजब हो गया है। रोमिल का एक पत्र मौलश्री भाभी के हाथ लग गया है। जब उसका पत्र मुझे नहीं मिला, मैंने दूसरा पत्र मँगवाया। अब मैं विड। हिलीवरी ही ले लेता हूँ। उसने उस पत्र में लिखा था।

‘तुम शीघ्र ही निश्चय करा। मेरी मा अकेली है। उनका इच्छा है, मैं शीघ्र ही उनके जीवन में विवाह कर लूँ। मैंने उनसे अपने तुम्हारे सबध के विषय में बतला दिया है। उन्हें उस विवाह में कोई आपत्ति नहीं है। कभी कभी वह कहा करती है, धनी व्यक्तियों के चगुल में न पडना। वह स्वार्थी होते हैं। मेरा मतलब तुम से नहीं है। तुम तो उदार हृदयी हो। बुरा मन मानना, तुम्हें छोटी सी छाटा बात तुरन्त लग जाती है।’ मेरा पत्र भाभी के हाथ पड गया, यह तो तुमने गजब कर दिया।’

मैं उत्सुकता से अपनी कुरसी पर उसकी ओर झुका हुआ उसकी बातें सुनता रहा। उसी के समान बड़ी ही धीमी आवाज में मैं बोला।

‘फिर क्या, अब भय काहे का चमन। यह तो अच्छा ही हुआ। अब स्पष्ट रूप से पिता जी से भी कह दो कि तुम किसी गरीबनी का उद्धार कर रहे हो।

चमन कुछ सोचते हुए, पास की एक छोटी नीची टेबिल पर पैर रखते हुए बोले—‘भाभी कह रही थी ‘चमन मनमानी करना चाहते हैं, करने दीजिये। यह विवाह बारात सजाकर तो नहीं हो सकता। मेरे घर वाले भी इसे पसंद नहीं करेंगे। जब अपनी विरादरी में एक से एक अच्छी लडकियाँ हैं, फिर दूसरी जाति में विवाह क्यों किया जाय।’

मैंने चमन की कुरसी के हथिये पर हाथ पटकते हुए कहा।

‘अजी भाभी का बकन दा। भाभी तो चाहती है, कि चमन को अच्छे अच्छे प्रेमेन्ट्स, जो उन्होंने पाये हैं, न दूसरों में मिलने पाये और न उन्हें देने पडे।

चमन ने हल्की मुस्कान दर्शाते हुए फिर अचानक गम्भीर होकर उत्तर दिया ।

‘हाँ चढ़ बात तो कुछ ऐसी ही है, जभी वह ऐसा कहती होगी’ जिससे हम लोग बाध्य होकर कोर्ट मैरेज करे । मेरे पिता जी के कान भी उन्होंने काफी भर दिये हैं ।

मैंने अपने होठ दबाने हुए उसकी आँखों में देखकर कहा ।

‘अजी तुम प्रेसेन्ट्स की चिन्ता मत करो । मैं तुमसे फिर कहूँगा, साधारण जीवन में अधिक आनन्द है । मस्तिष्क की उलझनों से दूर रहोगे । मैंने मैकू मामा से भी जिकर कर दिया है । कोई नहीं साथ देगा तो हम लोग तो कहीं गये नहीं ।’

चमन ने मुँह फैलाकर आश्चर्यजनक मुद्रा बना कर कहा—

‘अरे तुमने मैकू मामा से क्यों कहा जी । तुम मुझे कहीं का नहीं रखोगे’ । मैंने उसका कँधा ठोकते हुए कहा ।

‘अजी तुम शांत रहो । सब ठीक हो जायेगा । मैकू मामा बहुत सुलझे हुए व्यक्ति है ।’

मुझे किसी कार्य वश जाना था, अतः मैं चमन को उसी मुद्रा में मत्थे पर हाथ रखे हुए, अकेला छोड़कर चला गया ।

मैकू मामा तथा मै अपने प्रेम के कार्य से दिल्ली आ गये थे । रमन बाबू भी दिल्ली में ही अपनी समुदाय में रहने लगे थे । अभी उन्होंने प्रैक्टिस आरम्भ नहीं की थी । उसी की योजना बना रहे थे । मैकू मामा तथा मै एक दिन पहाड़गज की ओर टहलते हुए जा रहे थे कि एक पहाड़ी जो डाइनामाइट से उड़ाई जा रही थी, उसकी धमाके की आवाज से हम लोग वहीं खड़े हो गये । दूर से हम लंगो को बाबू की माँ का मा आभास हुआ । हम लोग आगे बढ़े । वास्तव में बाबू की माँ ही थी, जो बैठी ककड़ कूट रही थी । उसने हम लोगों को खड़े होकर बड़े सम्मान से हँसती हुई नमस्ते करते हुए कहा ।

‘बाबू जी आप यहाँ कैसे’

मैकू मामा उसकी फटी मैली धोती को ध्यान से देखने हुए बोले

‘हम लोगो ने अपना काम यहाँ शुरू कर दिया है’

मैकू मामा ने उसके उलझे हुए केशों की ओर दृष्टि डालते हुए पूछा ‘और बाबू तथा भुलवा कहाँ है’ ।

बाबू की माँ बड़ी ही प्रसन्न मुद्रा में बोल ।

‘है वो भी हियई’ है’ और यह कहते हुए उसने आवाज लगाई ।

‘अरे बाबू, ओ बाबू’ चारों ओर के लोग हम लोगों को देखने लग गये, विशेष कर उन मजदूरों की दृष्टि हम लोगों की ओर फिर गई थी जो वहाँ काम कर रहे थे ।

बाबू तथा भुलू दोनों दौड़कर आ गये थे । हम लोगों को देखते

ही उन लोगो ने मैकू माना के पैर छूए । मेरी ओर बड़ी आत्मीयता से दृष्टि डालकर हँसते हुए अपनी तहमत सम्हालते हुए कहा—

‘कहो चट्ट अच्छे रहे ।’

बाबू की माँ बोली —

‘चलिये बाबू जी हमारी झोपड़ियो मे थोड़ी देर बैठ ले ।’

हम लोग उधर को चल दिये । आगे-आगे बाबू की माँ थी, हम लोगो के पीछे बाबू तथा भुल्लू थे ।

बाबू सिल्क की मैली कमीज तथा मैला अच्छे कपडे का धारीदार पाजामा पहने था । भुल्लू की तहमत भी लिनेन की चारखानेदार काफी गदी थी ।

इधर-उधर मजदूर पहाड़ी पर पत्थर ताड रहे थे । ऊँचाई से बीमियो बार उजड़ी और बसी दिल्ली अपना घूँट उठाये लक्ष्मी की प्रतिमा के समान देख रही थी जिसकी ओर सभी आकर्षित होते है पर किसी को भी वह सदैव के लिये अपना बनाकर नहीं रखती । वह अपने पर ही मुग्ध हो रही थी कि उसे किस प्रकार से मजाया सँवारा जा रहा है । अन्न करण मे वह ढलकी मुस्कान मे हँस रही थी । कोन मेरी फिननी सज्जा करने वाला है । मेरी सज्जा कोई कर ही नहीं सकता । मेरी एक नृत्य की पद चाप पर फिर से मेरी वही नैर्गिक शाभा लौट आयेगी ।’

बाबू की माँ चारो ओर कटे पत्थर रखकर तीन ओर मे छोटी दीवाल बनाकर ऊपर मे फूम के छप्पर वाली झोपडी से एक छोटी सी बानो की खटोलिया उठा लाई और एक दीवाल से लगकर जिस ओर छाँह थी, वही डाल दी । बाबू की माँ जो बहुत प्रसन्न थी । पाम के एक मजदूर की ओर देखते हुए बोली जो ऊँची कुछ साफ धोती और जेब वाली आधी आस्तीन की बड़ी पहने था ।

‘ये हमारे बाबू जी हे, बहुत अच्छे लोग यह कहती हुई वह हँसती

जा रही थी उसके मसूड़े चमकते जा रहे थे। उसकी प्रसन्न मुद्रा के हाव-भाव के कारण उसके पैर एक स्थान पर नहीं पड रहे थे।

मैकू मामा ने खटोले पर बैठे हुए कहा—

‘तुम लोग मजे मे हो।’

बाबू और भुल्लू कभी नीचे कभी ऊपर देखता हुआ मुस्कराता जाता। बाबू की माँ कुछ गभीर होकर बोली—

‘बाबू जी मजे मे क्या। हम लोग बड़ी परेशानी मे रहे।’

यह कहते हुए उसने एक, हाथ से सिर खुजलाते हुए आगे कहा— भुल्लू की ओर देखकर ‘यह भुल्लू तो गिरिफतार हो गया था। बड़ा पैसा खर्च हुआ इसे छुड़ाने मे, जैसा ही उसने यह कहा उसके गभीर होने से उसकी आँखें गड्ढे मे चमकने लगी और उनकी वास्तविक मुद्रा स्पष्ट हो गई जो यह दशां रही थी कि वह अपने जीवन से प्रसन्न न थी।’ कुछ रुककर आगे बोली—

‘यह समझिये बाबू जी भुल्लू की शादी नहीं होती थी। हमारे लोगो मे तो लडके वाले को लडकी लेने के लिये पैसा देना पडता है, सो तो आप जानते ही है। हमने पाँच सौ रुपये लडकी वाले को भरा। पता नहीं क्या हुआ। शादी के महीने बाद ही उसकी औरत ने जाने जहर खा लिया या किसी ने खिला दिया।’

यह कहती हुई वह कभी झोपड़ियो की ओर देख लेती, कभी सिर पर हाथ रखे हुए खड़ी-खड़ी अपने पैर चलाती जाती। कुछ रुककर आगे बोली—

‘सो बाबू जी उसको उल्टी हुई। पुलिस आई। मिट्टी मे पडी कै ले गई। पोसमाटम हुआ। समसुद्दीन दरोगा दौड-दौड कर आता था। हमने दो सौ दिये। घर पर फेक गया। पूरे पाँच सौ दिये तब जाके बचे। सो भी पंद्रह दिन भुलवा जेहल मे पडा रहा।’

मैकू मामा ने कौतूहलतापूर्वक पूछा—

‘जहर क्यों खाया उसने। आखिर मिला कहाँ से?’

बाबू की मा ने पीछे निहारते हुए अपने पिचके हुए गालों में और भी गहरा गड्ढा लाते हुए बोली—

‘बाबू जी जहर तो उसने खाया । उसकी उल्टी में जहर निकला । वह तो दरोगा ने अपनी रपट में लिख दिया कि बाबू बाहर गया था नहीं तो मुसीबत हो जाती । भुलवा भी सुबह से नहीं था ।’

मैकू मामा ने बाबू की माँ की आँखों में देखते हुए कहा—

‘देखो, मुझे सब मालूम रहता है । आजकल खोजबीन करके सरकार भी जानती है कि तुम लोग गाय, भैंसों को गुड इत्यादि में विष मिलाकर पशुओं को खिला देते हो उसकी खाल बेच लेते हो । किसानों की पाँच सौ रुपये की भैंस केवल अपने चालीस-पचास रुपये के लाभ के लिये मारने में तुम्हें क्या लाभ मिलता है । मुझे ठीक-ठीक बताओ तुम्हारे घर में विष रहा होगा ।’

बाबू की माँ ने इधर-उधर देखते हुए धीमे में सिर हिलाते हुए कहा—

‘हाँ बाबू जी । पर वह बहुत ऊँचे ताल पर रखा था । उस ससुरी को कहाँ से मिल गया । हमें लगता है उसने अपने आप खा लिया ।’

मैकू मामा गला साफ करते हुए बोले—

आखिर बेकार को खा लेगी । तुम लोग उसे तकलीफ देते होगे ।’  
मैकू मामा भुलुआ की तरफ देखते हुए आगे बोले—

‘क्यों रे भुलुआ, उसे तकलीफ देता था । पैसा नहीं देता होगा उसे’  
भुलुआ अपनी माँ की ओर देखता हुआ दाँत खोलता हुआ बोला—  
‘नहीं बाबू जी, कोई अपनी मंत्री को तकलीफ देगा ।’

बाबू की माँ ने बीच ही में कहा—

‘सो तो उसे भुलुआ बहुत चाहता था । कितनी मुश्किल से तो इसका ब्याह हुआ था, हमें भी एक बहू मिली थी । हमें बड़ा आराम था । अब तक जब से इसका ब्याह भी नहीं हो पाया ।’

बीच ही में भुलुआ की तरफ देखती हुई बोली—

‘जा भुलुवा देखता क्या है, बाबू जी के लिये सामने वाली दुकान से दो लमनेड बरफ डालकर जल्दी से ले आ । दौड़ कर जा ।’

मैकू मामा तथा मै तुरत ही उसकी ओर देखते हुए बोले—

‘बाबू की माँ यह क्या कर रही है ।’ मैकू मामा भुलुवा की ओर देखते हुए आगे बोले—

‘भुलुवा रहने दे’

भुलुवा हम लोगो की ओर देखता हुआ बोला—

‘ये कैसे हो सकता है बाबू जी, आप हमारे घर आये और आप हमारा रूखा सूखा स्वीकार नहीं करेगे ।’

‘अरे यह रूखा सूखा है लैमनेट रे ।’

बाबू दोनो टॉगे कैची नुमा रखता हुआ बोला—

‘और क्या बाबू जी । यह कहते हुए दोनो हँसते हुए दुकान की ओर चल दिये ।’

बाबू की माँ दोनो हाथ सिर पर रखती हुई आगे बोली—

‘असल बात यह है बाबू जी उसको लोगो ने बहुत भर दिया । उसकी छोटी बहन से बाबू की सादी तय हो रही थी । किसी ने भड़काया कि हम लोगो के घर खराब काम होता है । भुलुवा शराब पीता है, जुआँ खेलता है । चोरी करता है, जेब काटता है । जाने क्या क्या कहा । उसकी माँ उसे बुलाती थी । हम लोगो ने उसे भेजा नहीं डर के मारे कि फिर से वह नहीं भेजेगी और यह ब्याह छूट जायेगा ।’

मैकू मामा ने उससे कहते हुए कि ‘बाबू की माँ बैठ जाओ’ आगे उसकी भाव भंगिमा ताडते हुए कि वह खुले हृदय से अपने रहस्य बतलाये दे रही है उससे बोले—

‘आखिर मैकू की माँ, तुम लोग यह धधा क्यों करते हो । सोचो तुमको कितना कष्ट उठाना पडता है इस जीवन मे । अपने रूखा-सूखा

खाओ साधारण जीवन बिताओ। दिमाग शांत रहेगा, चैन की नींद सोओगे।’

मैकू की माँ हम लोगो से दो गज दूर मिट्टी पर ही बैठती हुई बोली—

वह जमीन पर ही देख रही थी।

‘सो बाबू जी हम लोगो को पुलिस मजबूर करती है चोरी गिरह-कटी करने को। किसको यह सब धधा अच्छा लगता है। हमें झूठे झगड़े फसादो में फँसा दिया जाता है। हम सड़क के रहने वाले पर कोई भी दया नहीं दिखाता। किसी के घर चोरी हुई हमी लोग पकड़े जाते हैं। फिर पुलिस हमें छोड़ने के लिये हमें रुपये लेती है। मजबूर होकर हम उसे भरते हैं। चोरी के बजाय यह भुलुआ जुआँ खेलते हैं, कही जानवर मारते थे। सो अब हमने वह भी छोड़ दिया।’

मैकू मामा ने उसकी झोपड़ी की ओर देखते हुए कहा—

‘यह क्या तुम्हारी है, और बाबू वगैरा क्या करते हैं, यहाँ अब प्रसन्न हो?’

बाबू की माँ अपने सिर पर की धोती सँहालती हुई बोली—

‘प्रसन्न अप्रसन्न क्या। यहाँ दिल्ली के बड़े खर्चे हैं। आखिर हमारे लोगो के भी दिल है। हम पत्थर तोड़ते हैं। यह लोग मजूरी कर लाते हैं। मंडी में भैसे वाली गाड़ी में खुद जुतकर बोझा ढो लेते हैं। हियाँ सिनेमा है, बसे है। खाने की बढ़िया चीजे दिखती हैं। हमारी भी इच्छा होती है। हमारा खर्चा नहीं चलता। हम फिर से अपनी सिरकियो का धधा सुरू करने वाले हैं।’

भुलुआ लैमनेट के दो ग्लास करफ पड़े हुए ले आया था।

मैकू मामा ने हँसते हुए भुलुआ की ओर देखकर कहा—

‘क्यो रे यह तेरी चोरी की कमाई का तो नहीं है।’

भुलुआ हँसता हुआ बोला—

‘नहीं बाबू जी’ और बाबू भी हँसता हुआ दूसरी ओर देखने लगा।

मैने बाबू की ओर देखते हुए लैमनेट का एक घूंट लेते हुए कहा—

‘बाबू तू क्या कर रहा है ।’

‘मै मोटर रिक्शा चलाता हूँ ।’

बाबू की माँ हँसती हुई बोली—

‘हाँ यह कभी कभी स्कूटर चलाता है, किराये पर लेकर सो उसमे भी बडी जोखिम मे जान रहती है’ अपनी सिर पर की धोती सम्हालती हुई बोली जो ढवा से हट जाती थी ।

‘सो बाबू जी पुलिन वाले हम लोगो को बहुत तग करते है । झूठमूठ स्कूटर का चालान कर देते है और पाँच-दस रुपया ऐठ लेते है । बडा अँधेरे हे इहाँ । बात यह है तब के खरचे बहुत बढे हुए है । किसी का पूरा नही पडता । इसीलिये सब बेइमानी करते है ।’

मैकू मामा लैमनेट समाप्त करते हुए बोले

‘बेइमानी करते है । अरे यह ता मत्रियो की जगह है ।’

भुलुवा अपनी दोनो टाँगो के बीच मे अपनी तहमत दबाता हुआ हँसकर बोला—

‘अरे बाबू जी आप हम लोगो से कहते थे खहर पहनो । सो यहाँ देखिये सादे कपडो से सब घिरना करते है’ हँसते हुए आगे बोला

‘कनार पलेम मे तमासा देखिये । साहब बाबू लोग बडे-बडे होटलो मे अङ्गरेजी सराब पीते है । हमारे स्कूटर पर चढने के पूरे पैसे नही देते । डैमिट कह के भाग जाते है ।’ यह कहते हुए हँस दिया ।

बाबू हँसता हुआ बोला —

‘सो एक दिन तो एक साहब साब पीके स्कूटर पर बैठे । पैसे नही दे रहे थे । भुलुवा ने टाई पकड ली । फिर पूरे पैसे दिये ।’

मैने उसे टोकते हुए कहा—

‘तुम्हारी माँ कह रही थी कि तुम ठेला जोतते हो ।’

बाबू का माँ बीच ही मे मुँह टेढा करते हुए हँसकर बोली—

‘सो एक काम थोडी, जो भी मिल जाय ।’ आगे बोली—

‘सो एक दिन तो स्कूटर पर दो डाकू मिल गये । मजनू को टीले की तरफ जंगल में ले गये । बाबू ने पैसा माँगा तो चाकू दिखाकर भाग गये । बाबू चुपचाप भाग आया ।’

‘आजकल क्या करते हो बाबू ?’

मैने बाबू की ओर देखते हुए पूछा । बाबू ने हँसते हुए टाँगे टेढ़ी करते हुए सिर पर दोनों हाथ रखकर उत्तर दिया—

‘आजकल हम लोग यह बड़े-बड़े पत्थर ढोते हैं ।’

मैकू मामा ने पूछा तो इस काम से प्रसन्न हो ।’

बाबू की माँ जिम्मे मनार को बहुत पढ़ रखा था । गंभीर होती हुई बोली—

‘बाबू जी वैसे तो मजदूरी अच्छी मिल जाय । यह ठेकेदार लोग बीच में खा लेते हैं । सच्चाई और ईमान चला गया । यह कलयुग लगा है । हमारे मे कहते हैं अब सच बोलने वाला नहीं पनप सकता । हमसे कागज पर गलत दस्खत लिये जाते हैं । हम दस्खत नहीं करते तो दूसरे दिन हमें काम नहीं मिलता । ठेकेदार कहता है । हमें अजीनर साहब को देना पड़ता है । गरमी के दिनों में उसे ठंडे बक्स में आम खाने को चाहिये ।’

‘हँसती हुई आगे बोली—

‘एक खेल होता है बैडिन्टन, उसकी मेम सझा को लैट जला के खेलती है’ यह कहते हुए उसने अपनी टाँगे लम्बी लम्बी फैला दी और हँसने लगी ।

मैने कहा—‘क्या खेल बैडमिंटन ।’

बाबू की माँ दोनों हाथ ममलती हुई घुटनों को सिकोड़ती हुई बोली—

‘हाँ हाँ बही, यही लोग बतलाते हैं । ऐसी गजब की बेसरमी हमने कही नहीं देखो । चिपकी भई सलवार, उस पर चिपका चिपका कुरता । सब कुछ देख लो । इहाँ कालिज की लड़कियाँ हाथ में किताब

लेके बड़ा फैन दिखाती चलती है। इसी सबकी हवा हमारे सबके मे भी लग गई। कोई घर का काम करने को तैयार नहीं होती।’

बीचे मे वही अपनी माँ के पास बैठता हुआ भुलुवा बोला—

‘बाबू जी आप कहते है हम लोग प्रसन्न है। सो करुड आयल का धुँआ सूँघते सूँघते बीमार न पडने वाला बीमार पड जाये। हम लोग इतनी मसक्कत करते है। लू चलती रहती है, हम सब काम मे जुटे रहते है। एक प्याला दूध के पैमे भी नहीं बचते। हम सबके बाप कैमे हट्टे-कट्टे थे। ऊपर की चमक झमक जरूर है। उमिर घटनी जाती है। आप लोगो मे तो बच्चे चस्मा लगाते है, वह पढते है, सो हम लोगो मे भी चस्मा चल गया। आँखो की रोसनी चली गई।’

मैकू मामा ने खटोले पर दूसरे ढबसे बैठते हुए कहा—

‘यह क्या कम है कि मिनट भर मे तुम बस पर बैठकर सारा शहर देख आते हो। हवाई जहाज, रेडियो स्टेशन, चिडियाघर, बड़ी बड़ी नई मशीने जो बाहर से मँगाई जाती है, यहाँ की नुमाइश, कोनार प्लेस की रगीन जीवनी।’

मैकू मामा एक साँस मे कहते जा रहे थे कि बाबू की माँ बीच ही मे बोल उठी—

‘अरे बाबू जी सो हम इसे देखकर क्या करे। जब शरीर इस जोग नहीं होगा तो हम यह सब देख के क्या करेगे। यह हमारे लडके चार, चार गिलास दूध चढाते थे अपने बचपन मे। इसका बाप चार भैसे पालता था। सो अब गाय, भैस की कोई सकल नहीं देखना चाहता कि उसमे खटराग है।’

मैकू मामा ने भुलुवा की ओर देखकर कहा—

‘तो भुल्लू तुम सिल्क की कमीज तो पहने हो, कहते हो अच्छी कमाई नहीं होती।’

भुल्लू हँमते हुए बोला—

‘बाबू जी आप हँसेंगे । यहाँ नये पुराने चोरी के कपडे मिलते है वह हमे मस्ते मिल जाते है । हमारे बीच मे वह लोग बेच जाते है ।’

मैकू मामा आश्चर्यपूर्ण मुद्रा बनाते हुए बोले—

‘तब तो तुम चोरो को जानते हो । बतलाओ उनके नाम ! इसमे तो समाज का बड़ा उद्धार होगा ।’

बाबू की माँ अपने पोपले गालो से जिम पर बड़ी हुई मुतली के समान बालों की लटे पड़ी थी तुरन्त बोल उठी—

‘बाबू जी, जानते तो पुलिस वाले भी है । किमका नाम नहीं जानते है । सच बोलने वाला आदमी जिन्दगी भर तज़लीफ उठाता है । आप अपना हाल देखिये । आप लोगो जैसे बाबू लोग इन्हीं कोठियो मे रहते है । मोटरो पर चढे चढे घूमते है । कभी हवाई जहाज की सैर करते है । बड़ी बढियाँ बढिया दावते खाते है ।’

मैने बाबू की ओर उसको ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा—

‘और बाबू तुम तो आगे पढ लेते तो आज कुछ आदमी बनते ।’

बाबू मेरी ओर देखकर हँसता हुआ बोला—

बाबू जी हम लोग भी तो आदमी है । हमारे बग़वर आप भारी बोझ नहीं उठा सकते । हमारे शरीरो मे ही यह दिल्ली की बड़ी-बड़ी इमारते खड़ी है । इनमे काम करने वाले बाबू लोग भी तो चोरी करते है । सरकारी माल की चोरी करते है । आप जैसे मच्चे भी है वह जिन्दगी भर थैला नुमा पतलून सटकाते हुए सड़को पर पैरो से चलते दिखते है । हमारा चचा बड़े मंत्री के दफ़्तर मे है । वह सब बतलाता है इन साहबो और बाबुओ के हाल ।’

मुझे आश्चर्य यह हो रहा था । मै मैकू मामा की ओर देखता । वह साकेतिक भाषा मे चुप्पी माघने का ही सकेत करते । आश्चर्य यह हो रहा था कि उन्होंने दुनियाँ को किस कोण से देखा है । त्रिभुज के तीनों कोण भले ही भिन्न अंश के हो पर तीनों मिलाकर तो दो समकोणों से अधिक नहीं हो सकते इसलिये उन लोगो के दृष्टिकोण को भी

जानना ही है और उमका ससार में मूल्य भी है क्योंकि आबादी में बहुलता भी उनकी है ।’

मैकू मामा ने अपनी चप्पल जमीन पर दो बार फटफाटने हुए कहा—

‘तो तुम लोगों की राय में बेइमानी सब करते हैं ।’

इतने में हम लोगों को बातें करते देख वहाँ तीन-चार मजदूर और आकर बैठ गये ।

एक अपना साफा सम्हालता हुआ बोला—

‘क्या है, बाबू की माँ, क्या बात है ?’

बाबू की माँ मुस्कराती हुई पैर हिलाती हुई अपने दोनों हाथों से पैरों को लपेटती हुई बोली—

‘कुछ नहीं हमारे बाबू लोग पुगने मुलाकाती हैं, ऐसे ही बातचीत चल गई कि आजकल बेइमान आदमी ही फलता है । सच्चा जिदगी भर रोता रोता मर जाता है । गाँधी बाबा मर गये, अब लोग उन्हीं का नाम ले ले के बेइमानी करते हैं । हमारा देवर एक मंत्री के हियों चपरासी है, सब बतलाना है कैसे-कैसे साहब लोग अपने घूमने के लिये झूठ-मूठ का भत्ता बना लेते हैं । बताता है, कागद पर नहीं होता चाहिये बाकी कुछ भी करते रहो । कहता है आपस में साहब लोग कहते हैं ‘सचाई का झडा गंधी बाबा के साथ धरती में चला गया ।’ उम साफे वाले आदमी ने अपना साफा उतारकर खटोले पर रख दिया । अपनी बिटिया को आवाज लगाई । पास की दूसरी झोपड़ी से एक मैला सलवार और लम्बा चपका कुरता पहने हुये एक लडकी निकली ।

‘अरे बिलसिया चिलम दै जा ।’

और दो मिनट में ही बिलसिया चिलम ले आई । बाबू उसको आर मेरी आँख बचाकर देखता रहा । वह जैसे ही थोड़ी दूर गई कि उसने भी मुड़कर अपने पिता की आँख बचाकर बाबू की ओर देख

लिया और बाबू मन ही मन प्रसन्न होकर मेरी ओर देखता हुआ बोला—

‘बाबू जी मेइमानी सब कही होती है। बस खुलने न पाये। चाहे जो कुछ करते रहो।’

बिलसिया ने एक बार झोपड़ी पर एक फटे चिथड़े को हटाने के बहाने फिर से बाबू की ओर निहार लिया।

साफे वाले आदमी ने एक चिलम का कश खींचते हुये कहा—

‘छोटा आदमी बेइमानी करता है तो गब पकड़ने को तयार हो जाते है। बड़े आदमी की बेईमानी कोई नहीं देखता। पहले जमाने मे बेईमानी करने की जरूरत ही नहीं होती थी। मजे मे सब खेती करते थे। सब के घर गाय, भैंसे पलती थी। मसक्कत करते थे। मजे मे पूरा परिवार रहता था। गाँव भर मे दूध फेका-फेका फिरता था। सौ-सौ बरिस जीते थे आनन्द से।’

फिर एक कश खींचकर हवा मे धीमे-धीमे धुँआ फेंकता हुआ खामकर बोला—

आप कहेगे मैं चिलम क्यों पीता हूँ? इस तपती धूप मे। क्या करूँ, कोई दूध पिलायेगा। यह असटरेलियन गेहूँ जिमसे बढिया गेहूँ की शराब खींच ली जाती है, इससे हमारा पेट क्या भरे। इससे बढिया तो हमारा कोदो सर्वा था। यह मक्खन निकाले हुये दूध के डिब्बे जिमसे जमरोका अपना नाम कमाता है, इसके लिये भी सुना है बाबू लोग जान देते है, बेईमानी कर मार ले जाते है घरों मे।’

मैकू मामा तथा मैं बारी-बारी से सिर हिलाते हुये उसकी बातों को सुन रहे थे। फिर खामकर बोला—

‘मैंने अपनी आँखों देखा है, बाबू लोग दम पर बैठकर झूठ बोलते है। जहाँ से चढते है, टिकट नहीं खरीदते। मजबूर हो गये तो जहाँ उतरे पिछले बस स्टॉप का नाम लेकर खरीद लिया। आखिर वह सब मजबूरी ही तो है। घर का खर्च कैसे पूरा करे। उनके सामने बढिया

बढिया पोशाक, खाना-पीना, बिजली का ठडा करने वाला बकम, मिनेमा मेला—ठेला सब तो होता रहता है। उनके भी तो दिल है। गलत क्या करते हैं।’

भुल्लू उसको बात को आगे बढ़ाते हुये बोले—

‘अरे हमने देखा चाँदनी चौक में। बाबू लोग सामान दुकान से उठाकर हाथ में खड़े रहते हैं। दूकानदार की आँख बचाई और आगे बिना पैसा दिये चलते बनते हैं।’

बूढ़े साफे वाले आदमी ने अपनी चिलम की आग पर फूँक मारते हुये कहा—

‘बही दुकानदार चौगुने दाम बतला बतलाकर पूरा कर लेते हैं। अरे और किसकी कहो। हमारा ठेकेदार हमसे गलत दस्तखत कराता है। कोई से कहो कि क्यों करते हैं, तो क्या भूखो मरे। हम भी कही कसर निकालेंगे ही, अरे यह चोरी करने वाले हमी लोग तो हैं।’

यह कहकर भुल्लू तथा बाबू की ओर देखते हुये—

‘अरे हम न सही हमारा भाई सही। है तो हम ही लोग—

‘जब हमारा खरचा नहीं पूरा होगा तो हम क्या करेंगे। नहीं तो यह टीमटाम हमसे दूर रखो। हमें दिखाओगे तो हमें भी इसमें शामिल करो।’

मैकू मामा फिर से अपनी चप्पल जमीन पर फट-फट करते हुए अपने पैर पर ही दृष्टि डाले हुये बोले—

‘अजीब समस्या गंभीर है’ और बाबू की माँ की ओर देखते हुये बोले—

‘अच्छा बाबू की माँ हम लोग चलेंगे,’ यह कहते हुए उन्होंने जब से एक रुपये का नोट निकालकर देते हुये कहा—

‘देखो यह लेमनेट का पैसा उसे दे आओ और तुम भी अपने लिये एक बीड़ी का बडल ले लेना।’

बाबू की माँ बहुत मना करती रही पर मैकू मामा न माने और

अन मे भुज्जु को पैमे तरीकार करने पडे । लू तेज हो रही थी । पास की झोड़ियों पर पडे हुए चीथड उड-उड कर विभिन्न झडो के फहराने का रूा ले रहे थे । तेज हवा के चलने से पहाड़ी के पत्थरो के काटने से जो गड्ढे बन गये थे, उन चट्टानी गड्ढो मे हवा सूँ सूँ कर थोड़ी देर तक आँख मिचौनी खेलने लगती । किसी का छप्पर ऊँचे उड उड कर फिर अपने स्थान पर बैठ जाता, क्योंकि उसे टूटे हुए लोहे तथा पत्थर के टुकडो से कही कही दबा दिया गया था ।

बाबू ने मैकू मामा से घर का पना पूछा । मैने बनना दिया और हम लोग रमन की मसुराल की ओर चल दिये । हम लोगो ने प्याम लगने के कारण उस पाने वाले के यहाँ पानी पिया । कुछ पैसे उममे देने पडे । मैकू मामा की जेब मे केवन वही एक रुपया था । उन लोगो को माननगर तक जाना था, क्योंकि हम लाग रमन बाबू के यहाँ ही ठहरे थे । उस लू मे हमारे पैर आगे बढ़ने लगे ।

मैने अपना रूमाल निकालकर कनपटी मे बाँध लिया । मैकू मामा ने अपनी खादी की धोती निर के ऊपर डाल ली । मेरा पाजामा हवा मे उडता हुआ, बिरला मन्दिर के द्वार मे ही, पट के अदर वन्द पडे हुए, सगमरमर की छत मे विश्राम कर रहे भगवान से, हम सोगो की दशा पर दया प्रकट करने की विनती कर रहा था । बिडला मंदिर से जैन मंदिर की ओर छाँह मे ठढाने के लिये हम लोग कुछ देर रुक गये । एक ठेले वाले से एक सज्जन अपना गला ठडा करने के लिये आइसक्रीम की बोनल पी रहे थे । उन्होने बातल वैसे ही रखी कि पास ही एक चमकती पतलून धारी व्यक्ति अपने कुछ पैसे इन बाबू के पास गिराते हुए बोला, 'देखिये आप के पैमे गिर गये ।' जैव ही वह सज्जन नीचे पैसे की ओर देखने को हुए कि उनके कुरते का जेब साफ हो गई और जेबकतरा पतलून धारी, पाम खडी हुई वन द्वारा एक दो तीन हो गया । जैसे ही उन्होने पैसे देने को बटुआ टटोला, उनका बटुआ साफ था । वह पास ही खडे पुलिस मैन से कहने गये ।

‘देखिये मेरा बटुआ किमी ने मार लिया। यहाँ जेबकतरे रहते है, आप इसकी खबर नहीं रखते।’

पुलिसमैन हँसता हुआ बोला।

‘अरे बाबू जी आपको अपनी खबर नहीं है, तां मैं इनको खबर कहाँ तक रखूँ। मैं किसको कहूँ।’

उन सज्जन ने मैकू मामा का ओर सकेत करते हुए कहा।

‘यह साहब कहते है, कि गाल मार्केट की ओर जाने वाला बप पर अभी आदमी गया है’

पुलिस जाने ने अपनी माइफ़िल दीडाई। हम तीनों को पुलिस मोटर पर बैठाल पुलिस स्टेशन ले गया। वहाँ मैकडो तस्वीरे गिरहकटो की दिखाई गई। मैकू मामा ने एक को पहचाना। हम दानो ने ही उमके लिये हामी भर दी। हम लोग कोनाट प्लेम होते हुए इन्डिया गेट की ओर मे मान नगर की ओर बढ़ गये।

मैकू मामा ने काउ सिल हाउस की ओर सकेत करते हुए कहा।

‘यह विधानसभा भवन है। यही पर गरीब अमीरो की समस्याओ पर वाद-विवाद होते हैं। सबसे ममता स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है। सत्य का यहाँ हनन नहीं होने दिया जाता। ईश्वर सत्य का प्रतीक है। यदि इसे सत्य भवन कहा जाय तो कही अधिक अच्छा हो।’

मैंने तेज लू से बचने के लिये पास के पत्थर के ऊँचे गोलाद्ध मे भरे हुए जल तथा ऊपर मे चलते हुए फुहारे की आड ली। मैंने अपनी कनपटी का रूमाल म्हालने हुए कहा।

‘मामा जी सत्य का नाम देने मे ही क्या हो जायेगा। ब्रिडना मन्दिर मे तो सत्य के पुजार’ महात्मा बुद्ध की प्रतिमा के सामने गिरह कटी होती है, फिर इसे सत्य भवन नाम देने से ही क्या, यहाँ के सभामद स्वार्थ-लोलुपता से विलग हो जायेंगे।’

आगे महात्मा गाँधी के परम शिष्य सत्य के पुजारी प्रथम राष्ट्रगति श्री राजेन्द्र प्रसाद की सफेद मूछो जैसा तिरगे झंडे का उज्ज्वल। ग

राष्ट्रपति भवन पर लहराता हुआ आकाश की ओर उम परम आध्यात्मिक शक्ति की प्रतिक्षण स्मृति दिला रहा था। उसका हरा वर्ण प्रथम प्रान्त मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू की शपथ की याद दिला रहा था कि भारत वर्ष लहलहाते हुए हरे भरे खेतों में परिपूर्ण रहेगा। प्रत्येक प्राणी को भारतवर्ष में हरियाली लाने के लिये सहयोग देना होगा। कोई भी देश तब तक समृद्धिशाली नहीं हो सकता, जब तक वह अन्न के उत्पादन में आत्म निर्भर नहीं हो जाता। स्वतन्त्रता संग्राम के अन्त्य में नानी जा इन दोनों का भारतवर्ष का सरसब्ज बनाने में सहयोग दे रहे थे, उस तिरगे झंडे के पीले वर्ण पर ध्यान आकर्षित कर रहे थे कि वह सब बमत के समान भारत की जनता के मध्य खुशियाली बिखेरने में महायत्ना प्रदान करेंगे। भारतीयों ने जलियाँ वाला बाग के खूनी घब्रों के छ्छींटों से बने हुए लाल नीले यूनियन जैक को उखाड़ फेंका था। भारतीयों को धोखा देने वाले, भारत देश को दूसरों के हाथ बेचने वाले उन प्रवक् सैनिकों की स्मृति में जो इन्डिया गेट बनाया गया था, उनकी नीली धमनियों का फीका वर्ण जिसने यूनियन जैक पर स्थान पाया था, तथा अंग्रेज शासकों के क्रोधपूर्ण मादक नेत्रों के लाल धागे जैसा ब्रिटानियाँ ध्वजा का लाल वर्ण दोनों ही द्रुतिगति में समुद्र पार चले गये थे।

तिरगे झंडे का श्वेत वर्ण देखकर मुझे अपने बचपन के मास्टर साहब की सफेद भूँछे याद आ गई, जिन्होंने मिखाया था।

‘बच्चों सफेद रंग देखने में अच्छा लगता है। ऐसे ही अपने मन को सफेद रखना। किसी बुरी आदत में मन पड़ना। किसी को गाली मत देना। अपने से बड़ों का कहना मानना। दूसरों का काम पहले करना, अपना बाद में। ऐसा करने से तुम्हारा मन भी सफेद रहेगा और सब लोग ऐसे बच्चों को इतने ही ध्यान से देखेंगे, जैसे तुम सफेद बगुनों का डम समय देख रहे हो।’

मुझे झंडे का श्वेत वर्ण देखकर राष्ट्रपति की सफेद भूँछे याद आ

रही थी जो महात्मा गाँधी के समान ही अपनी नाम में राम ब्रावणकृत ने खते है ।

अंग्रेजो ने ग्रीक स्थापत्य कला के मकान जहाँ इन्धन उधर बनवाये थे, वही अमरीकी स्थापत्य कला के भवन राष्ट्रपति भवन के आस पास दिख रहे थे । भारतवर्ष समन्वय वादी देश रहा है । उसने दूसरो के बनवाये हुए भवन नहीं तोडे । दूसरो की सम्प्रदाय का स्वागत किया । दूसरो की संस्कृति अपने मे खपा ली, भले ही दूसरे अपनी संस्कृति कन्याकुमारी से हिमाचल तक प्रसारित करने की छद्म वेणी चाले चलते रहे । भारतीयों के उज्ज्वल हृदय की प्रतीकात्मक इडिया गेट के दोनों ओर लम्बी झीले बह रही थी । हम लोग राष्ट्रपति भवन से इन्डिया गेट तक जाने वाली बीच की सड़क से जा रहे थे जहा मृत्यु के पुजारी ने उज्ज्वल घुटनो से ऊँची कृष्ण वेश भूषा मे जार्ज पंचम मे पैदल चलकर भेट की थी ।

इडिया गेट से होते हुए हम लोग पहुँच गये थे । मैकू मामा ने रमन बाबू से वह घटना कह सुनाई । रमन बाबू का मैकू मामा का उस जेबकतरे को पहचानकर पुलिस को बतलाना पसंद नहीं आया । उन्होने कहा ।

‘आपको बोलना नहीं चाहिए था । यही पुलिस वाले उस आदमी से आपकी हलिया बतला देंगे और वह आदमी आपको जान के पीछे पड सकता है । मेरा दिन रात ऐसे ही केसेज करता रहता हूँ । पुलिस का इनसे हिस्सा बँधा रहता है । जो कुछ हो रहा है, होने दीजिये । आप काहे को इन बातों मे पडे रहते है । यह ससार ही बेइमानी पर टिका हुआ है । चोरिया, डकैतियाँ, कतल आप कहाँ तक इन्हे रोक सकते है । यह कागजी सरकार के खेल है । किसी बात का सबूत देना सरल कार्य नहीं होता ।’

मैकू मामा शांत थे । वह रसन की विचारधारा से सहमत न थे, अतः उन्होने वादविवाद को अधिक बढ़ाना उचित न समझा ।

रमन बाबू कुछ दिन तक तो अपनी ससुराल रहे। वहाँ उन्हें स्वतंत्रता न मिली। उनकी पत्नी उनको अपना खरीदा हुआ ममझती। वैभव में पली हुई केवल वैभव के स्वप्न देखती। जग सी भी खरोच खाई हुई मोटर गाड़ी को वह रखना हैय समझती और तुरन्त उसका स्थान नई गाड़ी को लेना चाहिए, ऐसा उसका विश्वास बन गया था। बँगला फूल पत्तियों से, सजा हुआ लॉन तथा हेजेज मशीन से कटी छँटी होनी चाहिए। हेजेज की एक भी इधर उधर निकली हुई शाख उन वि 'पत' के 'बॉसो का झुरमुट' के समान प्रतीत होता, जिसे नै-गिक शोभा में विश्वास न था। वह सध्या के झुरमुट में चिड़ियों का टी, बी, टी टुट मुनने की अभ्यस्त न थी। उसे किसी चम्पा पुष्प के वृक्ष की शाखा में, लकड़ी के बन्द लटके हुए पिंजड़े को देखने में अधिक आनन्द आता था। कमरे में बन्द शीशे के जार में तैरती हुई रंग विरगी मछलियाँ और छोटे कछुए तथा अन्य जापान से लाए विभिन्न पानी के जन्तु देखने में वह अधिक उल्लसित होती, इसी प्रकार स्वयं को भी वह वायु अनुकूलित कमरो, रेस्ट्रॉ तथा होटलो में ही बन्द देखना चाहती थी। रमन को अपनी पत्नी की अहमन्यता रुचिकर न थी। अभी तक रमन अपने को अपने छोटे नगर का प्रतिष्ठित धनवान व्यक्ति समझते थे। वह अपनी पत्नी को अपने सामने ही कभी किसी सफेद, कभी मिले जुले वर्ण की हवाई जहाज के आकृति की कार में किसी पर पुरुष के साथ किसी विशेष कार्य वश आता जाता देखकर मन मसोस कर रह जाते।

एक दिन रमन ने मौलश्री से पूछा।

‘आज कहाँ गई थी। मुझे बतलाया नहीं, वह कौन साहब थे’

मौलश्री ने अपने कंधे तक के बालों को झुलाते हुए उत्तर दिया

‘मेरी सहेली ने अशोक होटल में अपने जन्म दिवस के उपलक्ष में केवल लेडीज़ की पार्टी दी थी। उसके पति, जो कई विख्यात होटेलस के प्रोप्राइटर है, मुझे पहुँचा गये। आपका मेरी गतिविधि पर शक क्यों होने लगता है।’

एना बरते हुए वह अपनी सफेद सिल्क की मूल्यवान सारी से अपनी ठोड़ी को ढककर, मोफे पर अपने पैर हिलाते हुए, गभीर मुद्रा बनाकर साँचने लगी।

रमन ने उनका पैर के नीचे पटशियन कार्पेट के एक मखमली उभरे हुए लाल वर्ण के फूल पर दृष्टि डालते हुए कहा।

‘मौलश्री, मैंने सोचा है, मैं एक अलग कॉटेज लेकर अपना कार्य प्रारम्भ करूँ। यहाँ मरों तबियत नहीं लगती’

मौलश्री ठोड़ी पर से सारी हटाते हुए, कारपेट के फूल पर अपना पैर थपथपाती रही। रमन कारपेट पर सफेद मखमल के उभरे हुए सारस की ओर देखते रहे जो कारपेट के बीचोबीच में बना हुआ था। यह रमन का बेडरूम था। एक किनारे पर मसहरी थी। दूसरी साइड में दो सिंगिल काचेज पड़े थे जिन पर शिनील की कवर्किंग थी। कुछ सोचती हुई मौलश्री बोली।

‘आखिर आपने यह निर्णय क्यों किया। आपको पिताजी के घर पर क्या कष्ट है। उनके कारण आपको बड़ी से बड़ी कम्प्लेंट मिल जाती है। जीवन की सुख सुविधा के लिए अभी सामग्री आपको उपलब्ध है’

रमन कारपेट के सारस की लाल चौच पर दृष्टि डालते हुए बोले, ‘मैं अपनी मानसिक शांति भग नहीं होने देना चाहता, इसके अतिरिक्त मैं अधिक कुछ नहीं कहना चाहता।’

मौलश्री ने रमन की ओर देखते हुए कहा, जो मसहरी पर बैठे हुए एक पैर पर दूसरा पैर रखकर हिला रहे थे, पर उनकी दृष्टि मौलश्री पर न थी।

‘आप बिना डैडी की आज्ञा के कोई निर्णय न लें।’

रमन उठकर बाथरूम से होते हुए पीछे के दरवाजे से निकल कर लॉन पर टहलने लगे थे।

सामने एक पिजड़े में बन्द लाल अमरीकी तोता दुम नीची कर

‘क्रे आओ’ कर चीख उठा। उसके पिंजड़े में एक केला रखा हुआ था। रमन की विचारधारा बह निकली।

‘क्या इस तोते को इन मीठे फलों में वह आनंद प्राप्त होता होगा, जो उसे खुले आकाश में स्वतंत्र होने पर उपलब्ध होता। इसका सुन्दर पिंजड़ा जिस पर सुनहरी पालिश है, उसके जीवन को स्वर्णिम बनाने में कहाँ तक सहायता प्रदान करता होगा। इसे बबूल की कटीली डालों पर बैठने में जो आनंद आता होगा वह इसको इस सुनहले भवन में स्वादिष्ट फलों के चखने में क्या प्राप्त होगा? उसे नीम की कड़वी निमकौरियाँ खुतरने में जो आनंद आता होगा वह इसे इस कृत्रिम वातावरण में कहाँ मिलने का।’

यह सोचते हुए रमन जैसे ही उसकी चोंच के पास अपनी उँगली ले गये, वह चोंच फैलाकर उनकी ओर धूर कर उँगली कुतरने दौड़ा। रमन ने तुरत अपनी उँगली वहाँ से हटा ली। लॉन की ईज के किनारे किनारे वह टहलते हुए बँगले के पीछे की ओर निकल गये।

चमन की कोर्टमैरेज हो गई। किसी ने उनका साथ न दिया। चमन ने एक दावत दी जिसमें मैं तथा मैकू मामा भी सम्मिलित थे। चमन ने लखनऊ नगर में एक छोटा सा स्टोर खोल लिया था। दुकान पतली सी थी। उम गैलरी में ही दोनों पति-पत्नी बैठते थे। रोमिल लेडी डाक्टरनी थी ही, वह स्त्रियों को देखती तथा चमन पुरुषों को इक्जामिन करते। दोनों ही मरीजों की अच्छी प्रकार देखभाल करते। पैसे का लोभ न करते। गरीब मरीज यदि पैसा न दे सकते तो रोमिल चिता न करती।

एक दिन चमन ने घर पर रोमिल से अपने आले की रबर दबाते हुए कहा ‘रोमिल यदि इसी प्रकार हम लोग मुफ्त सेवा मरीजों की करते रहे तब तो हम लोगों का दिवाला निकल जायेगा। जो भी जान लेता है कि डाक्टर डाक्टरनी फ्री इलाज करते हैं, अधिकतर लोग मुफ्त-खोर बने चले आते हैं।’

रोमिल अपनी सफेद कोटी की पाकेट से हाथ निकालते हुए सामने टेबिल पर रखी काल बेल को घुमाती हुई बोली—

‘देखिये पैसा ही ससार मे सब कुछ नहीं है। हम लोगो को दूसरे डाक्टरो के समान चार आने के नुस्खे के स्थान पर बीस आने नहीं लेना चाहिए। हम आठ आने मे वही चीज देगे। सच पूछिये तो बहुत से नुस्खो मे तो हमलोग दो आने के बीस आने लेते है। मेरा ध्येय मोटर कार तथा बँगला बनवाने का नहीं है। मै भी अन्य सासारिक मनुष्यो के समान हूँ। डाक्टरी पेशा तो बहुत बडे समाज सेवियो का पेशा है। मेरा कार्य तो जोन आफ आर्क के समान है। मै तो निस्वार्थ सेवा मै विश्वास करती हूँ। केवल मेरे साधारण व्यय के लिये मुझे धन मिलता रहे’।

चमन रोमिल की मुखाकृति को, उसके बोलने के ढब को तथा उसके भोलेपन को ध्यान से देख रहे थे। उससे आँख मिलाते हुए अपना सिर तीन बार ऊपर नीचे करते हुए बोले—

‘और रोमिल फिर न ही मौलश्री भाभी कभी तुम्हारे घर झाँकने आयेगी और न ही कभी रमन भइया हम लोगो से बात करने के। डाक्टरी पेशा पैसा पैदा करने का सुनहरा प्रोफेशन है। हम लोगो के यहाँ बहुत मरीज आते है। हम लोग केवल दो वर्ष मे धनी हो सकते है। पता नहीं आगे हम लोगो की प्रैक्टिस अच्छी न चले, इसलिए अवसर को हाथ से जाने नहीं देना चाहिये। मेरे विचार से एकसरे प्लाट शीघ्र ही खरीद कर लगा लिया जाये और इस प्रकार हम लोग प्रत्येक मरीज से पहले एकसरे करवाने को कह सकेंगे, और फिर हमारे प्रत्येक मरीज से सोलह रुपये कही नहीं गये’।

रोमिल ने अपनी सफेद सैडिल जमीन पर तीन बार थपथपाते हुए तथा अपनी नाक पर अपने फाउन्टेन पेन का सिरा हल्के से चलाते हुए कहा—

‘आप धन से प्रेम करते है अथवा मनुष्य से। धन किसी की याद

नहीं करता। मनुष्य सदैव अच्छे कार्य के लिये याद करता है। धनी डाक्टर की कोठी को देखकर लोग प्रसन्न नहीं होते। सब समझते हैं कि यह उन्हीं का पैसा उन्हें धोखा देकर लूटा गया है, क्योंकि जिस समय मरीज अपने जीवन से जूझता है, उससे डाक्टर कितना भी रख-वाले वह बाध्य होकर तो दे देता है पर इच्छा उसकी यही होती है कि उसके ऐसे ही सब मिलकर डाक्टर की जाल फरेब की कमाई से बनाई गई कोठी तथा गाड़ी आग में फूक दे। धनी सब नहीं हो सकते। समानता अधिकतर मनुष्यों में लाई जा सकती है। ऐसा मेरा विश्वास है। रहा रमन भाई साहब तथा मौलश्री भाभी का आना। यदि उनमें वास्तविक प्रेम है तो वह हम लोगों से निर्जन स्थान में मरीजों की सेवा करते हुए मेरी साधारण अवस्था में भी मिल सकते हैं।'

इस प्रकार चमन तथा रोमिल नगर भर में विख्यात हो गये। घर-घर उनके सेवा भाव की प्रशंसा होती। लोग अच्छे होने पर चमन को धन देते। रोमिल कहती—'यह अतिरिक्त धन अलग रखा जायगा। इसका हम एक फ्री अस्पताल बनवायेंगे। उसमें केवल सेवा भाव से आये हुए डाक्टर तथा कम्पाउंडर कार्य करेंगे।'

चमन को धीरे-धीरे यश मिलने लगा। रोमिल का स्वप्न पूरा हुआ। उसने योजना बनाई कि प्रत्येक मोहल्ले में इसी प्रकार की फ्री सर्विस होनी चाहिये। प्रत्येक नागरिक से कुछ धन प्रति माह लिया जाया करे और उसे अस्पताल से फ्री इलाज करवाने की सुविधा रहेगी।

मैकू मामा तथा मै दिल्ली में ही रहकर अखबार निकालने लगे थे। मैकू मामा ने जो रिपोर्ट पुलिस को की थी उस घटना के कुछ ही दिन बाद एक दिन हम दोनों दो बजे दिन को इडिया गेट पास से जा रहे थे, किसी ने पीछे से छुरे से मैकू मामा पर आक्रमण किया। मैं जैसे ही मैकू मामा को बचाने को झपटा, मेरे भी एक घाव पड़ गया। वह मिनटों में ही कहीं लापता हो गया। दूर एक मोटर उसे बिठाकर ले गई। उसने कोशिश की थी मैकू मामा की कमर के ऊपर पसली के पास छूरा भोकने की, पर वह उछल कर अपने बचाने के प्रयत्न में जाँघ तथा हाथ में लगा था। मेरे भी पखौरे में चोट आई थी। मैंने तुरंत मैकू मामा की घोंती फाड़ कर जाँघ में बाँध दी। गरम हवा बह रही थी। कृत्रिम जलाशय के पास मैं मैकू मामा को पकड़ा कर ले गया। उनके रुधिर बहुत निकल चुका था। घोंती पानी से भिगोकर उनके सिर को तर किया। उधर से एक स्कूटर बड़ी देर पश्चात निकला। मैंने तेज शब्दों में उसे रुकने को कहा और हम लोग अस्पताल पहुँच गये। रमन सूचना मिलते ही आ गये थे। उन्हें भी उस दिन की घटना पर ही शक था कि मारने वाला उसी के गिरोह का साथी हो सकता है। रमन तथा वहाँ के डाक्टरों ने मैकू मामा से अपना स्टेटमेंट देने को कहा। मैकू मामा अपनी जाँघ सम्हालते हुए बोले—

‘पुलिस को रिपोर्ट देने से क्या लाभ। यदि मैं अपनी जान से

हाथ धोना चाहूँ जब रिपोर्ट कर भी दूँ। आज के युग का सत्य यही है कि चोरी, डकैती तथा बेईमानी को सहायता दो क्योंकि जीवन का स्तर ऊँचा हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अपने से ऊँचे वाले स्तर के मनुष्य को देखकर उससे ईर्ष्या करता है। आखिर वह भी तो हमारे आपके बोच का प्राणी है। गलत शिक्षा ने उसके अहम् को जागृत कर दिया है। शिक्षा का ध्येय बलिदान नहीं रह गया है, शिक्षा का ध्येय केवल धन एकत्रित करके अपने जीवन को सुखी बनाना रह गया है।'

वहाँ के डाक्टर जो एक मूल्यवान् स्वेत वस्त्र का सूट पहने हुए थे मैकू मामा की ओर देखने हुए बोले—

‘कृपया शांत रहे। यह राजनीतिक स्थान नहीं है। यह आपकी इच्छा पर डिपेंड ( निर्भर ) करना है। आप चाहे रिपोर्ट दे अथवा न दे। मुझे तो अपनी रिपोर्ट देनी ही होगी। फोन द्वारा किसी ने पुलिस को सूचना दे दी। डी वाई एस. पी साहब एक सब इसपेक्टर तथा एक कान्सटेबिल के साथ उपस्थित हो गये। जिस प्रकार डाक्टर साहब के बोलने के ढग में अपनी कुरसी की अहमन्यता थी, डी वाई एस पी. साहब की खाकी पैट की क्रीज, उनकी सीधी गर्दन से निकलते हुए शब्द मुँह तक आकर ब्रिटिश लाल फीता शाही के लहजे का आभास दे रहे थे, जिन्होंने प्रारम्भिक पाठशालाओं में गले के नीचे उतार दिया था ‘रूल ब्रिटानियाँ रूल द वेवज, ब्रिटेन्स शैल नेवर बो स्लेवज’ आज वही दूसरे रूप में अपनी सस्कृति के प्रचार के फलस्वरूप सागर के पार बैठे भारत के स्वतंत्र हो जाने के बाद भी बौद्धिक शासन कर रहे थे।

पुलिस इसपेक्टर विस्तार से पूछ रहे थे। घटना कहाँ हुई कैसे हुई। कौन था ? उसकी वेशभूषा कैसी थी ? क्या वह वही गिरहकट था जिसकी आपने रिपोर्ट लिखवाई थी। उसका रंग कैसा था, बाल कैसे थे। कितना लम्बा था। इडिया गेट से कितनी दूर था। किधर

गया। दौड़ा अथवा धीरे-धीरे गया। मोटर का रंग कैसा था। इत्यादि इत्यादि।

प्रश्नो तथा उत्तरो की फाइल थीसिस तैयार करने के लिये लिखी जाने लगी। मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिये पुलिस नवजवानों के लिये साकोलाजिकल व्यूरोज की लायब्रेरी में एक वाल्यूम और बढ जाने की प्रसन्नता हो रही थी।

मुझे जितना हो सका, मैं बतलाता गया। स्थिति पूछने पर मुझे राष्ट्रपति भवन पर उस समय लहराता हुआ तिरंगा झंडा स्मरण हो रहा था, जिस पर मैंने उस घटना के घटित होने के समय अपनी दृष्टि डाली थी। मुझे राष्ट्रपति की स्वेत मूँछें याद आई थी, उनका शांत मुख, उनकी साधारण विचारधारा, अपनी परिपक्व विचारधारा को शायद अपनी लम्बी मूँछें करके वह बरबस अपने होठों को ढक लेना चाहते थे क्योंकि समुद्र पार वाली शिक्षा पाये हुए नेताओं के समक्ष उनको होठ बंद कर लेने पड़ते थे। वह अधिक बोलने में विश्वास न रखते थे। वह गाँधीजी का शांति का पाठ सीखे हुए थे। शायद उनका विश्वास था कि कालांतर में लोग स्वयं अपनी दूषित शिक्षा को अवगत् करेगे। इन दोषों का कारण हमारी नींव थी जिसमें आधुनिक स्थापत्य कला के प्रेमियों ने ऊपरी चमक-दमक के द्वारा सुन्दर भवन का निर्माण अवश्य कर दिया था, पर नींव में बालू की मिलावट अधिक दे दी थी।

रमन बाबू एक स्टूल पर मैकू मामा के पलग के सिराने बैठे कह रहे थे—

‘मेरे विचार से इसका मुकदमा चलना चाहिये।’

सब इस्पेक्टर ने उनको देखते हुए कहा—

‘आप मुकदमा किस पर चलायेंगे, जब उसकी आप शिनाख्त नहीं कर सके। यह क्या प्रमाण कि मारने वाला वही व्यक्ति था जिसकी आपने रिपोर्ट की थी। यद्यपि मैं भी उस पर शक करता हूँ, पर केवल शक से तो काम नहीं चलता।’

मैकू मामा ने हाथ से सकेंत करते हुए उत्तर दिया ।

‘मान लिया जाय आप लोगो ने बाध्य होकर मेरे साथ महानुभूति दिखाते हुए एक केस पकड़ भी लिया, इससे क्या होता है, जबकि नित्य समाचार-पत्र ऐसी घटनाओ से भरे रहते है । न जाने कितने अपनी जान-माल सब कुछ गवाँ देते है ।’

सब इसपेक्टर ने बीच ही मे अपने काले जूतो की ओर दृष्टि डालते हुए कहा—

‘आप अपनी भलाई देखिये । कहाँ क्या होता हे इसमे आपको क्या सरोकार ।’

मैकू मामा ने केवल सिर हिला दिया । वह कुछ न बोले । पुलिस वाले अपनी कागजी कारवाई करके चले गये ।

रमन अपने ससुर से अलग रहने की आज्ञा लेना चाहते थे । एक दिन वह सामने के लान मे कुरसी डाले बैठे थे । झाडियो के बीच मे चिडियाँ फुदक रही थी । रमन ने उनके पास आकर दूसरी कुरसी पर बैठते हुए कहा—

‘बाबू जी मेरी इच्छा है, मैं एक दूसरी काटेज मे अपना काम प्रारम्भ करूँ ।’

मौलश्री के पिता ने टाँगें लम्बी करते हुए कहा—

‘क्यो आखिर तुम्हे ऐसा सोचने की क्या आवश्यकता हुई । वहाँ मौलश्री को तुम इतना आराम न दे सकोगे और न तुम ही इतने सुखी रह सकोगे ।’

रमन नीचे की हरी घास पर फिर उनकी ओर देखते हुए बोले—

‘वहाँ मैं अपने परिवार को बुला सकूँगा । पिता जी बहुत बूढ़े हो गये है । माता जी की भी यही इच्छा है कि वह यहाँ आकर रहे ।’

मौलश्री के पिता रमन के मुख की ओर देखते हुए बोले—

‘मेरे विचार से तो शायद मौलश्री वहाँ रहना पसंद नही करेगी । तुम मौलश्री से पूछो वह क्या कहती है ।’

रमन अपने पतलून की क्रीज पर उँगलियाँ चलाते हुए बोले—

‘मैंने मौलश्री से पूछा था, वह कहती है, डैडी जाने, आप कहते हैं मौलश्री जाने। मैंने तो निश्चय कर लिया है, सिविल लाइन्स में एक कॉटेज ले रहा हूँ।’

बाबू जी कुछ देर शान्त रहे। स्वयं शान्ति भग करते हुए बोले—

‘तुम्हारे मित्र मैकू का क्या हाल है?’

रमन ने बाबू जी को ओर देखते हुए कहा—

‘वह ठीक हो रहे हैं।’

बाबू जी को ऐसा भ्रम था कि शायद उनका मित्र मैकू ही उन्हें अलग रहने का परामर्श देता हो। उन्होंने जिस मुद्रा से पूछा कि ‘वह कहाँ रहेंगे?’ उससे ऐसा ही अवगत हुआ।

रमन बाबू ने कुरसी के हथिये पर हाथ फेरते हुए कहा—

‘वह लोग दरियागज में रहेंगे।’

यह सुनकर मौलश्री के पिता जी कुछ सोचने लगे। कुछ देर पश्चात् सामने के एक छोटे से इक्लिप्टस वृक्ष की ओर देखते हुए बोले—

मेरी समझ में यह बात नहीं आई, एकबारगी यह निर्णय क्यों ले लिया। घर पर बाबू जी तथा अपनी माँ की देखभाल के लिये नौकर रख सकते हो। यहाँ बुलाकर सिवाय परेशानी मोल लेने के और कुछ न होगा।’

‘पर मैं पिता जी को भी लिख चुका हूँ’ रमन ने नीचे ही देखते हुए उत्तर दिया। रमन के ससुर कुरसी पर जो नीचे को टाँगें लम्बी किए हुए थे, टाँगें सिकोड़ते हुए बोले—

‘उनको अब भी समझाया जा सकता है। दिल्ली में चोर-डाकुओं की कमी नहीं है। दिन दहाड़े चोरियाँ हो जाती हैं। मौलश्री अकेले कैसे रह सकेगी। यहाँ तो इतने नौकर-चाकर, चौकीदार इत्यादि रहते हैं, जिस कारण किसी की हिम्मत नहीं होती।’

रमन बाबू जो केवल कमीज पर टाई लगाये हुए थे, टाई झुलाते हुए बोले—

‘मौलश्री रहे अथवा न रहे, मैंने तो यह निश्चय कर लिया है।’

रमन के यह कहते ही मौलश्री के पिता जी अपनी कुरसी की पीठ से अपने शरीर को ऊपर उठाते हुए सीधे बैठ गये। लान के कोने के पास का अमरीकन लाल तोता अपने सुनहरे पिंजरे से दुम दबाकर ‘क्रेओ’ चीख उठा। मौलश्री के पिता श्री अम्बिकादत्त अपनी आँखें विस्फारित करते हुए धीमे से बोले—

‘क्या कहते हो, मौलश्री से तुम अलग रहना चाहते हो? मेरी भोली मौलश्री ने क्या तुम्हें नाराज कर दिया है? मुझे इस बात पर विश्वास नहीं हो सकना। वह कितनी सज्जन लडकी है। क्या कुछ विलायत जाने का प्रभाव हो गया है?’

मौलश्री के पिता कहते जा रहे थे। प्रातःकाल का मद समीर उनके सिर के सफेद बालों को बिखेर रहा था। इतना कहकर वह उठकर टहलने लगे। उनके यह कहने पर कि ‘विलायत जाने का प्रभाव हो गया है’ रमन बाबू के मस्तिष्क के स्नायु तन गये और उनके मुख से धीमे से अनायास ही निकल गया।

‘विलायत के अच्छे परिवारों में स्त्रियाँ उच्छृङ्खल नहीं होती। उनको केवल बदनाम कर दिया गया है।’

मौलश्री के पिता जी केवल दो ही कदम आगे चले थे कि रुकते हुए बोले। रमन भी उनके उठ खड़े होने से खड़े हो गये थे और अपने दोनों हाथों की उँगलियों से एक घास के लम्बे तिनके को नोचने लगे।

‘अच्छा तो शायद तुम्हें मौलश्री से कोई शिकायत हो गई है। मैं मौलश्री से भी जानना चाहूँगा।’

रमन बाबू ने अपने पैर दूसरी ओर मोड़ लिये और वह लॉन के किनारे किनारे टहलते हुए बँगले के बाहर सड़क पर निकल गये।

रमन बाबू सिविल लाइन्स में एक कॉटेज लेकर अलग रहने लगे थे। उनके माता-पिता तथा सरला भी आ गई थी। मैकू मामा अभी अस्पताल में ही थे। घाव गहरे होने के कारण उन्हें अस्पताल में करीब दो महीने लग गये।

एक दिन अस्पताल में मैकू मामा एक किनारे के बेड पर पड़े हुए थे। दूसरे बेड खाली थे। उस बड़े कमरे में छः बेड्स थे। सबों में पर्दे डालकर पार्टिशन कर दिए गए थे। ऊपर के रोशनदान कबूतरो की बीट से गंदे पड़े थे। कमरे की छत की ऊपर कोनो पर मकड़ियो ने जाले तान रखे थे। बाहर गैलरी में एक किनारे पर मरीजों के पेशाब पाखानों के लिये कुछ पाट्स पड़े थे। किन्ही किन्ही में ऊपर धूल जमी थी। कोई कोई पाट्स भी गंदे थे।

सरला जी मेरे साथ मैकू मामा से मिलने अस्पताल आई थी। मैकू मामा पहले से काफी स्वस्थ थे। सरला ने आते ही नमस्ते की। मैकू मामा ठठकर पल्लंग की तकिए के सहारे बैठ गए थे। जाँघ पर फिर से प्लास्टर चढ़ाया गया था। सरला स्टूल पर बैठ गई। मैं पल्लंग के किनारे बैठा था। मैंने मैकू मामा से कहा—

‘मामा जी यहाँ अस्पताल के मरीजों के पाट्स की ठीक से सफाई भी नहीं होती।’

मैकू मामा ने ऊपर छत की ओर सकेत करते हुए उत्तर दिया—

‘यह ऊपर छत पर तो देखो। मरीजों के सिर पर जाला तना

हुआ है। जो बेड्स खाली पड़े हुए हैं, उनकी दशा पर ध्यान दो। किन्हीं पर धूल है। कहीं कबूतर बीट कर रहे हैं। यह वातायन तो मरीजों को आनन्द देने के लिए चिड़ियों और कबूतरों के अजायबघर बन गए हैं। इतने में किसी कबूतर की बीट ठीक मैकू मामा के कंधे पर गिरी और उन्होंने हल्के से पास ही झार दी।'

सरला ने मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा—

कहिये आप तो अजीब मुसीबत में पड़ गये। अब घाव तो ठीक हो रहे होंगे। मैकू मामा सरला के सिर पर देखते हुये बोले—जहाँ दानों ओर ऐछे हुये काले बालों के बीच में स्वेत रेखा आकाश गंगा सी प्रतीत हो रही थी।

‘हाँ अब तो काफी ठीक हो रहा हूँ। मुसीबत क्या, यह तो जीवन-चक्र है। कहिये आप कैसी रही?’

सरला जी मुस्कुराकर मैकू मामा से आँखें मिलाते हुये बोली—

‘आपके साथ चार अच्छी-अच्छी बातें सीखने को मिलती थी। आपके वहाँ से चले आने पर ग्राम सेवा इत्यादि से भी विमुख हो गई।

मैंने बीच में ही बोलते हुए कहा—

‘अब आप यहाँ आ गई। हम लोग मिलकर सेवा करेंगे। इस अस्पताल की गंदगी को दूर करना भी एक सेवा होगी। आइये सरला जी, मैकू मामा जी को ठीक होने दीजिए, हम लोग मिलकर इस अस्पताल की सफाई कर डालेंगे।’

सरला जी मुस्कुराते हुये बोली—

‘रोमिल भाभी भी अपनी जीविका चलाते हुये नगर निवासियों की सेवा कर रही हैं। उनकी ऐसी स्त्रियों को अस्पताल की देख-भाल करने की आवश्यकता है।’

मैंने ऊपर चल रहे पखों की खडर-खडर ध्वनि की ओर आकर्षित होते हुए कहा—

सार्वजनिक लाभ की वस्तुओं से हम अपनत्व नहीं दिखाते, यदि कहीं कोई गड़बड़ी है तो उसे हम स्वयं ठीक करने का प्रयत्न करें यदि हमारी सामर्थ्य में है पर उसका प्रचार न करें। आज तो सेवा भी लोग अपना नाम कमाने के उद्देश्य से करते हैं।'

एक डाक्टर साहब आ गये थे। उन्होंने टेम्प्रेचर लिया मैकू मामा का। दो-चार प्रश्न किये और चले गये।

सरला जी उनके जाते ही मैकू मामा की टाँग की ओर देखते हुए बोली—

‘यहाँ के डाक्टर तो अच्छे स्वभाव के हैं। मरीज से सहानुभूति-पूर्ण बातें करते हैं।’

मैंने सरला जी की चोटी की ओर देखते हुए कहा—जो साधारण काले फीते से गुँथी गई थी।

‘सब मनुष्य तो खराब नहीं होते। ऊपर से इन सबका व्यवहार अच्छा होता है। क्योंकि इन बातों से इनके सम्पर्क में आने वाला मनुष्य प्रसन्न होता है। मैंने तो यहाँ के हाल देखे। यहाँ के मरीजों से पूछिये।’

सरला जी ने कौतूहलता से पूछा—

‘क्यों क्या ठीक सेवा नहीं होती।’

मैंने सरला जी के हाथ में बँधी हुई घड़ी की ओर देखते हुये कहा—

‘सेवा तो जिस दिन यहाँ कोई मिनिस्टर इत्यादि आने वाला हो, उस दिन देखिये। सारे वह यत्र जो कभी निकाले नहीं जाते, एक दिन

सारे औजार खीलते जल में डाल दिये गये। सारे अस्पताल की सफाई हो गई। उनके जाते ही फिर से धूल लोटने लगी।'

सरला जी ने हँसते हुये कहा—

फिर क्या यदि यह लोग बतलाकर न आया करे। अचानक दौरे किया करे, देखिये सारा कार्य कितने ढग से होता है।'

मैने मैकू मामा की ओर देखते हुये उत्तर दिया।

'अरे मामा जी यहाँ के स्टोर कीपर का क्लर्क मालामाल रहता है। मरीजों के खाने के सतरे स्वयं अपने घर भेजता है। मरीजों को दूध पानी मिला हुआ मिलता है। ऐसे स्थान पर जहाँ डाक्टर प्रत्येक चीज की परीक्षा ले सकते हैं। वही यह जनता के धन का अपव्यय होता है। अकेले स्टोर इन्चार्ज नहीं ले सकता जब तक कि उसमें ऊपर के अफसर भी सम्मिलित नहीं होते।'

मैकू मामा गम्भीरता से सुनते हुए बोले —

'मैने तो उसका कारण यही सोचा है कि यह सब आज के जीवन में अपने से उच्च जीवन की आकांक्षा ही है। लोगों का कथन है कि समाजवादी जीवन का प्रचार करने के लिए काम बढ़ाने की आवश्यकता है। अपनी आवश्यकताये बढ़ाईए, काम बढ़ेगा। आवश्यकताये बढ़ाने से मस्तिष्क विकसित सा रहता है।'

इतने में मैकू मामा के लिए ग्लास में दूध तथा दो शतरे अस्पताल का आदमी रख गया। मैकू मामा ने दूध देखते हुए उत्तर दिया—

'अजी यह दूध है, अथवा पानी।'

वह व्यक्ति तुरत सकपकाकर बोल पड़ा—

'जब अस्पताल के साहब तथा बाबुओं के घर दूध यही से जायेगा तो दूध कह से मिलेगा। अस्पताल भी तो बड़े आदमियों के आराम करने की जगह बताई गई है। वास्तविक गरीब रह जाता है, बने हुये गरीब यहाँ स्थान पा जाते हैं।

मैकू मामा, सरला जी तथा मैं कौतूहलता से उसकी ओर देखने

लगे। उस व्यक्ति ने पास ही के बेड की मसहरी पर बैठे कबूतर को भगाते हुए कहा—

‘साहब आपको क्या-क्या बताऊँ। हम गरीब लोग तो बदनाम होते हैं। हम लोग कितनी बेइमानी कर लेंगे। बहुत होगा एक समय का भोजन खा लेंगे। पाउडर वाला दूध बेच-बेचकर बाबुओं ने कोठियाँ खड़ी कर ली। यहाँ की दवाइयाँ तक दुकानों में प्राइवेट डाक्टर लोग खरीदकर अपने मरीजों के खुले इजेक्शन लगाते हैं। बद पूरी शीशी नहीं बेचते कि पकड़ जायेंगे। ग्लूकोस गायब होता ही है।’

मैकू मामा ने अपनी टाँग हल्के से ऊपर करते हुये कहा—

‘ठीक कहते हो जो।’

वह व्यक्ति हल्के से दूसरे कमरे में चला गया।

मै बाथरूम की ओर चला गया। सरला जी सकोचपूर्वक अपनी घड़ी पर हाथ फेरती हुई मैकू मामा की ओर देखकर नीचे अपनी चप्पल पर दृष्टि डालती हुई बोली—

‘आप इतनी परेशानी उठाते हैं। आप विवाह क्यों नहीं कर डालते?’

मैकू मामा ने मुस्कराते हुये कहा—

‘क्या विवाह? मैं विवाह तो नहीं करूँगा।’

मैकू मामा उसकी ओर देखते हुये बोले—

‘तुम्हारे घर दोनों भाई विवाह कर चुके, अब तो तुम्हारी बारी होनी चाहिये।’ सरला जो अभी तक नीचे ही देख रही थी, दीर्घ साँस भरती हुई बोली—‘मैं भी विवाह नहीं करूँगी।’

मैंने जैसे ही कमरे में प्रवेश किया, सरला के स्पष्ट शब्द मैंने सुने जो कह रही थी।

‘मैं भी विवाह नहीं करूँगी। एक भइया ने विवाह किया है। मौलश्री मामी के आपने हाल सुने ही होंगे’।

ऐसा मुनते ही मैंने ऐसा आभास दिया मानो मैं पीछे कुछ भूल

आया हूँ और मैं पीछे को लौट कर बराम्दे के किनारे जहाँ दूर पर कुछ गमले रखे हुए थे निहारने लगा ।

मैकू मामा पलग की तकिया से अपनी पीठ सम्हालते हुए बोले—  
‘क्या तुम किसी विशेष व्यक्ति से विवाह करना चाहती हो । मैं उसका प्रबध करने का प्रयत्न करूँ’ ।

सरला की श्वास तेज हो गयी थी । ऊपर वातायन पर एक कबूतर तथा कबूतरी पास ही बैठे चोचे मिला रहे थे । मैकू मामा की दृष्टि उस ओर जा पड़ी । सरला जी ने मैकू मामा के यह कहते ही मैकू मामा की ओर फिर देखा और लज्जित होकर दृष्टि नीची कर ली मानो साकेतिक भाषा में उसने सब कुछ कह दिया हो ।

मैकू मामा गभीर हो गये । उन्होंने भी एक बार दीर्घ विश्वास भरी और सरला की ओर एक टॉग सिकोड़ते हुए उसकी ओर देखकर बोले—

‘मेरा एक भिक्षुक का जीवन है । आज वही व्यक्ति सुखोपभोग करता है जिसके पास धन है । मैं तो बबूल के कटीले वृक्ष के समान हूँ जिसमें केवल काँटे ही काँटे हैं । उसकी पत्तियों से किसी को छाया भी नहीं मिल सकती’ ।

सरला ने अपनी घड़ी की चैन पर हाथ फेरते हुए कहा—

‘मैं उसकी शाखाओं में पीली बौड़ी मजरी सी छाई हुई उसके काँटों से अपने शरीर को भेदने में ही सुख का अनुभव करूँगी ।’

मैकू मामा अपने दोनों हाथ अपनी छाती ढकते हुए बोले ‘दूसरो के दुख दैन्य को दूर करना ही मेरा काम है । चोरी, झूठ, बेइमानी, दिन दहाड़े किसी का वध करना इत्यादि अपनी पराकाष्ठा को पहुँच चुके हैं । हमारे ऐसे नवयुवको पर ही इसका उन्नरदायिन्त्र है । हमें ऐसा पाश-विक ससार नहीं बढ़ने देना है । मनुष्य को मनुष्य बनाना है यदि वह पुरुष की सतान है ।’

मैं शीशे की बड़ी खिडकी से बराम्दे के बाहर उन दोनों को देखता

रहा। जैसे ही मैं अन्दर प्रवेश करते हुए उसी स्थान पर बैठ गया मैंकू मामा वैसे ही कहे जा रहे थे।

‘आज हमारे बीच भेड़ियो की सतानो का बाहुल्य हो गया है। इन भेड़ियो की सतानो पर अकुश लगाना होगा। आज के युग का घृणित वैवाहिक जीवन अभिशाप है’।

मैंकू मामा ने बात दूसरी ओर मोड़ते हुए कहा —

‘और मौलश्री जी का क्या हाल है ? वह रमन के साथ आ गई ?’

सरला ने गभीरता से मेरी ओर देखते हुए बोली—

‘जी नहीं, उनका कहना है कि रमन भइया उन्ही के साथ रहे। उनके डैडी भी यही चाहते हैं।’

सरला जी को वापस जाना था। देर हो चुकी थी अतः सरला जी ने मैंकू मामा से आज्ञा माँगी। मैं भी उन्हें पहुँचाने के लिये उनके साथ हो लिया। सरला जी नमस्ते करते हुए उठ खड़ी हुई। मैंकू मामा हम लोगो की ओर देखते रहे। एक बार दरवाजे के बाहर जाने के पूर्व सरला जी ने मुड़कर देखा। कमरे की खिड़की के शीशे से मैंकू मामा हम लोगो की ओर ही ध्यान लगाये थे।

बाबू की माँ को बहुत दिनो उपरात सूचना मिली कि मैंकू मामा को किसी ने घायल कर दिया है। वह भुलवा तथा बाबू को लेकर अस्पताल आई थी।

वह कमरे मे आकर जमीन पर बैठ गई। पूछा—

‘बाबू जी यह सब कब और कैसे हुआ। हम लोगो को खबर भँ नहीं हुई। हम लोग उसकी जान ले लेगे’।

बाबू की माँ अपने पिचके गालो तथा गाल की उठी हुई हड्डिय को चलाते हुए धीमे-धीमे कह गई।

बाबू और भुलवा ने अपनी सफेद जालीदार बनियाइन के ऊप बाँह की माँसपेशियो पर हाथ चलाते हुए कहा—

‘कौन अपने को बदमाश समझता है हमारे बाबू जी पर छूरा चलाने वाले की पसली-पसली मैं चिथड़े न कर दू तो मेरा नाम नहीं’ ।

मैकू मामा जो अब पलग पर बैठने लगे थे, बैठते हुए बोले—

‘नहीं शात रहो जी । जो अपनी हानि करे, उसका बुरा मत चाहो । बुराई से बुराई बढ़ती है’ ।

बाबू की माँ सिर की मैली धोती सम्हालती हुई बोली—

बस बाबू जी आपकी इन्ही बातों से अपनी यह दशा हुई । नहीं मजाल पड़ी थी, कोई बोल तो ले । मैं एक-एक को जानती हूँ । मैं तो पता लगा ही लूंगी’ ।

उसने बाबू की ओर दबी आवाज में देखते हुए कहा—

‘अरे वह होगा करिमुवा रे । उसने जेब कतरा ली थी, विरला मदिर के पास । ऊ सारा जायेगा कहाँ । मैं तो उसकी हड्डी नोच खाऊँगी । वह थी गँवार पर उसका स्वर रानी लक्ष्मीबाई की याद दिलाता था । उसने अपनी काँख में छिपी हुई करौली निकालते हुए कहा—

‘बाबू जी हम लोग साधारण आदमी नहीं हैं । यह करौली हमारे सूप के ताँतो के काम आती है । इसी से अपने दुश्मन की पसली हम बाहर निकाल लेते हैं । हम सड़क पर रहने वाले ऐसे न रहे तो हम एक दिन भी नहीं चल सकते’ ।

बाबू खड़ा-खड़ा जो कभी अपनी नाक मसलता, कभी अपना नया धारी दार जाँघिया और उस पर पहनी हुई केला सिल्क की कमीज सम्हालता बीच ही में बोला—

‘हाँ-हाँ अम्मा वही करिमुवा ही होगा । एक दिन कह रहा था, ‘एक पर हमला किया है, बच गया । अपनी किस्मत से अस्पताल में भी बच गया ।’

बाबू की माँ अपना सिर खुजलाते हुए बोली—

‘हमारी बहू-बेटियाँ सड़क पर रहती हैं । हम लोग चबूतरों पर सोते हैं । सड़क हमारा घर है । रात-रात हम चोरो को जाते देखते

है। पुलिस वाले उन्हें देख कतरा जाते हैं। सबका हिस्सा बँधा होता है।’

मैकू मामा तथा मै दोनों ही शातपूर्वक सब कुछ सुन रहे थे हम दोनों को आश्चर्य हो रहा था कि वास्तविक शिक्षा इन लोगो ने ही ली है। उन्हें अवगत है कि वह चोरी क्यों करते हैं। वह चोरो को जानते हैं। यदि उन्हें किसी में लगा लिया जाय तो वह लगन से कार्य कर सकते हैं। मनोविज्ञान उन्होंने पुस्तको में नहीं पढा है पर वह प्रत्येक मनुष्य की गतिविधि को परखने में बड़े दक्ष हैं।

भुलुवा अपना घुटना खुजलाता हुआ बोला—

‘बाबू जी आप अच्छे हो जाँय, मै पता तो लगा ही लूँगा। और आपके सामने ही उसकी पिटाई करूँगा। वैसे आप उसे पकडा भी सकते हैं। पकडाने से कोई मतलब नहीं हल होगा। उसके दूसरे साथी सारे खानदान को बिना खतम किये नहीं छोडते। ऐसे मजाल थोडे ही पडी है, खतम करना पर जब पुलिस साथ देती है फिर उन्हें काहे का डर।’

मेरे तथा मैकू मामा के यह सब मुनते ही रोगटे खडे हो गये।

बाबू की माँ अपनी बगल खुजलाती हुई सामने छाती पर की धोती सम्हालती हुई बोली—

‘यह छोटी-छोटी चाय की दुकानो पर इनका जमघट होता है। यह सब अखबार पढते हैं। कभी सफेद पतलून और कमीज पहनते हैं। बडे से होटल में खाना खाते हैं। अगरेजी भी बोल लेते हैं।’

मैकू मामा ने गर्दन तथा आँखें तिरछी करते हुए गर्दन हिला दी। मैं आँखें फाडे उन तीनों की ओर देख रहा था।

आगे सूखे ओठ फडकाती हुई बोली—

‘हम लोगो से बहुत घबराते हैं। हम तो जानवर की खाल नोचते ही हैं। हम उन्ही की खाल नोच डालें।’

ऐसा कहते हुए उसने अपनी करौली कमर में धोती के अंदर खोस ली । यह कहती हुई उठ खड़ी हुई ।

‘अच्छा बाबू जी आप ठीक हो जाँय फिर आये । मैं खबर लूंगी उसकी ।’

यह कहते हुए ‘नमस्ते’ कहकर वह तीनों चले गये ।

एक दिन मैं किसी सज्जन से मिलने के लिये मोडेल टाऊन से आगे जा रहा था मेरे पीछे एक मोटर आई। हल्के से मोटर रुक गई। मोटर से दो आदमियों ने उतरकर मुझे मोटर में बिठा लिया। मोटर जंगल की ओर निकल चली।

एक नीले पैट घारी व्यक्ति ने जिस पर वह सफेद कमीज पहने हुए था मोटी आवाज में मेरी ओर देखते हुए कहा—

‘तुम रमन को जानते हो।’

उस व्यक्ति के सिर पर नीला रेशमी रुमाल बँधा हुआ था। आँखों पर काला चश्मा चढ़ा था। दाढ़ी पर लाल रंग का कपड़ा दोनों कनपटियों से स्पर्श करता हुआ चाँद के ऊपर बँधा था। हाथों पर स्वेट लेदर के मूल्यवान दस्ताने थे। मैं घबराया हुआ था। मेरी हककी बँध गई। मुझसे बोल न फूटा।

दूसरा व्यक्ति जिसने सिल्क का पूरा कनटोप सा पहन रखा था, तथा जो स्टियरिंग पर था, मेरी ओर देखता हुआ बोला—

‘भक्कर करता है, गला घोट दो, नहीं इसके सीने पर रिवालवर तान दो।’

दूसरा मेरी ओर काले चश्मे से निहारता हुआ आगे बोला—

‘खबरदार जो तूने या तेरे मैकू ने मौलश्री के घर पैर भी रखा। तेरी लाश भी देखने को न मिलेगी।’

मोटर कार भागती जा रही थी। मुझमें कुछ भी बोलने की

सामर्थ्य न थी। मैं एकटक कार की छत की ओर फिर भागते हुए वृक्षों की ओर निहार रहा था। मुझे बाहर निहारता हुआ देख दूसरे व्यक्ति ने मेरी गर्दन नीचे को झुका दी। दूसरे व्यक्ति की आँखों पर नीले रंग का झलमलाता हुआ चश्मा था, जिस पर आँख नहीं ठहरती थी। उसने काली चपकी हुई पतलून तथा पीली सिल्केन बनियाइन पहन रखी थी।

मैं नीचे ही एकटक देखता हुआ चुप्पी साधे धुटनो के बीच सिर दबाये बैठा था। मेरा हृदय धक् धक् बहुत ही द्रुत गति से चल रहा था।

मुझे आवाज सुनाई दी।

‘अगर तूने किसी से हम लोगों की हुलिया या इस घटना का जिकर भी किया तो जिन्दा न छोड़ा जायेगा।’

दूसरे व्यक्ति ने मुझे झकझोरा। मेरी गर्दन ऊपर की। कार के शीशे दोनों ओर की खिडकियों के बंद थे। मेरा मुख सफेद पड़ चुका था। मुझे बेहोशी आ रही थी। हाथ-पैर सन्न हो गये थे। मेरे पसीना छूट रहा था। मेरा खादी का कुरता पीछे पीठ की ओर भीग गया था।

मुझे हल्की आवाज सुनाई दी।

‘अरे यह तो बेहोश हो रहा है। इसे कहाँ छोड़ा जाय। यह तो गजब हो गया।’

मुझे हल्का सा झटका लगा। शायद मोटर कार घूम गई थी।

रात्रि के समय मैंने अपने को विश्वविद्यालय के गेट के सामने चढ़ाई पर बने हुए रिज के किनारे वाले जंगल में पाया। मुझे चेत आया। मैंने चारों ओर निहारा। मोरो की एक साथ बोली म्याँ म्याँ सुनाई दी। एक साथ उनकी पूरी टोली पास की पहाड़ी के जंगल से शोर कर उठी। चारों ओर अँधेरा और सन्नाटा छाया था। मेरे चारों ओर बबूल तथा करील की झाड़ियाँ थी। एक झाड़ी से एक खरगोश कान खड़े किये हुए उछला। मैं घबराया, भेड़िया न हो। उसी समय

मुझे अँधेरे में उसके दूसरी ओर छलांग मारने की आहट मिली। सियारो की टोली खैबर पास के पास वाली पहाड़ी की ओर से चीख उठी। सन्नाटे में वृक्षों की हरहर सुनाई दे जाती। इस कारण मुझे समझने में विलम्ब न हुआ कि रात बहुत नहीं हुई है। मैं वहाँ से उठा। पत्थरों पर से चलता हुआ रिज की ओर बढ़ने लगा। रिज ऊँचाई पर मेरे सौ गज दूर पर था अतः मुझे उस स्थान को समझने में देर न लगी। मैं बहुत घबराया हुआ था। धीरे-धीरे रिज तक आकर जैसे ही मुझे काली सड़क चमकी, कुछ शान्ति मिली, पर चारों ओर का जंगल, घबराहट अब भी उत्पन्न किये हुए था। सड़क बिल्कुल नहीं चल रही थी। आगे बढ़ता हुआ मैं खैबर पास वाली पहाड़ी के नीचे उतरता हुआ सड़क पर हो लिया। करीब साढ़े ग्यारह बजा था। सामने की दुकान पर पूछने से पता चला। बसे चलना बद हो गई थी। एक्का दुक्का कारे हरहर करती दिख जाती। मैं धीरे-धीरे पैदल कश्मीरी गेट होता हुआ दरियागज आ गया।

मैंकू मामा अस्पताल से अच्छे होकर आ गये थे। मैंने मैंकू मामा से सारी कहानी सुनाई। वह मेरी बराबर प्रतीक्षा कर रहे थे। हम लोग रात भर नहीं सोये। जब मैंने कहा—

‘मामा जी, इन बदमाशों ने कहा है यदि किसी से भी मेरी हुलिया अथवा इस घटना का जिक्र भी किया तो तुम लोगो की लाश भी न मिलेगी।’

मैंकू मामा सोच में पड़ गये और हम दोनों की रात्रि ऐसे ही घबराहट में व्यतीत हो गई। अखबार में बराबर चार दिनों से एक न एक दिल्ली नगर के कतल की घटनाये निकल रही थी, अतः हम लोगो की किसी की भी हिम्मत पुलिस में रिपोर्ट करने की न हो रही थी।

इस घटना के कुछ ही दिन बाद हम लोग बाबू की माँ की ओर गये। प्रातःकाल का समय था। भुलुआ पड़ोस वाली छोकरी से चुहल कर रहा था। झोपड़ी पर एक चिथड़ा लटक रहा था। उसने उस

चिथड़े को झोपड़ी पर उलट दिया। अन्दर से वही खटोलिया उठा लाया। हवा बन्द थी, अतः नीचे पहाड़ी के पत्थरों के तोड़ने से जो धूल एकत्रित हो गई थी इस समय उड़ नहीं रही थी। बाबू एक पत्थर पर बैठा गुनगुना रहा था। हम लोगों को देखते ही उधर आ गया था। भुलुवा मैली तहमत तथा फटी बनियाइन पहने था। बाबू की आधी बाँह की कमीज बहुत गदी थी।

बाबू की माँ नीचे पैरों पर बैठते हुए बोली—

‘बाबू जी ठीक हो गये।’

मैकू मामा ने खड़े-खड़े उत्तर दिया—

‘हाँ ईश्वर की दया से अब चल फिर लेने लगा हूँ।’

बाबू की माँ घुटनों पर दोनों कोहनी रखकर आगे दोनों हाथ मिलाये हुए बोली—

‘अरे भुलुवा जा, बुला ला।’

उसके इतने ही संकेत से भुलुवा सब कुछ समझ गया। बाबू तथा भुलुवा आध घंटे पश्चात् साइकिल के पीछे एक गठरी में खाल बाँध कर लौटे। एक मैले कपड़े में भैसे की ताजी खाल रखी हुई थी।

भुलुवा अपनी तहमत सम्हालता हुआ अपनी माँ से बोला—

‘अम्मा करिमवा से उसकी खाल छीन लाया हूँ। उसने मेरे हल्के की खाल झुम्मन से छीनी है। वह कह रहा था कि यह उसकी खाल है। मुझे भल्ला ने बतलाया कि ‘तेरे हल्के का जनावर है। यह तेरी मजूरी है। यह कहीं से झपट लाया है।’

पीछे पीछे साइकिल पर ही करिमवा भागा आ रहा था। उसने साइकिल से उतरते ही कहा—‘भुलुवा मेरी खाल है, मैं कहता हूँ, दे दे। वरना ठीक न होगा।’

भुलुवा ने अपने लम्बे बाल कठोर चेहरे को किनारे हिलाता हुआ पीछे को फेकता हुआ बोला—

‘मेरे हल्के की मजूरी कौन ले सकता है।’

करिमवा अपनी चारखानेदार तहमत पर जालीदार बनियाइन पर हाथ फेरता हुआ साइकिल नीचे पटकता हुआ आगे बढ़ आया। उसने बढ़ते ही भुलुवा का कधा पकड़ लिया।

‘खाल मेरी है। हल्का-फल्का क्या होता है। मैंने पैसा देकर खरीदी है, पास के गाँव से।’

यह कहते हुए उसकी आँखें तन गई थी। उसका विकराल मुख फैल गया था। भुलुवा अपनी ओर सकेत करता हुआ बोला—

‘अम्मा खाल अन्दर ले जा। खाल नहीं मिलेगी।’

यह कहते हुए उसने फिर से अपने बाल पीछे को फटक दिये। इधर उधर देखता हुआ बोला—

‘जा जा, बहुत ताव मत दिखला।’

भुलुवा के यह कहते ही करिमवा ने उसे पीछे को ढकेल दिया। बाबू देखते ही आगे को दौड़ पड़ा। बाबू उसकी टाँगों से लिपट गया। बाबू की माँ जोरो से चीख पड़ी—

‘अरे बचाओ भुलुवा को मारे डारत है।’

हम लोग किनारे को खड़े थे। मैकू मामा ने जोरो से चीखते हुए कहा—

‘अरे क्यों लड़ते हो तुम लोग। चलो चलो अलग हो जाओ।’

बाबू की माँ ने मैकू मामा की ओर देखते हुए कहा—

‘आप बाबू जी चुप रहे। यह हमारा लोग का मामला आप नहीं जानते। मिनट भर में पंद्रह बीस आदमी बाबू की माँ की आवाज पर दौड़ आये।’

मैं उस व्यक्ति को बार बार ध्यान से देख रहा था। मुझे उसके डील-डौल से आभास होने लगा जैसे वह वही व्यक्ति था जिसने मैकू मामा पर आक्रमण किया था। मैंने उसे और भी ध्यान से देखा। उसकी वेशभूषा वह न थी, पर उसके चेहरे से मुझे लगा वह मैकू मामा पर छुरे से हमला करने वाला ही व्यक्ति था। मैंने मैकू मामा से कहा—

‘मामा जी यह वही व्यक्ति है जिसने हम लोगो पर छुरा चलाया था ।’

मैकू मामा ने भी उसे ध्यान से देखा । वह भी उसे पहचान गये ।  
बाबू की माँ ने अपनी छुरी निकाल ली । मैकू मामा दौड़ पड़े ।  
बाबू की माँ का हाथ पकड़ लिया । मैंने बाबू को अपनी ओर घसीटा ।

उन आदमियो ने भी करिमवा को पकड़ लिया ।

‘क्या बात है, क्या बात है । अभी फैसला हुआ जाता है ।’

बाबू की माँ कह रही थी चीख-चीख कर । उसकी मैली धोती  
मिर पर से खिसक गई थी । वह हॉफती हुई जल्दी जल्दी कहे जा  
रही थी ।

‘इस करिमवा की यही हरकत रहती है । सबको ऐसे ही परेशान  
करता है । इन बाबू पर इसी ने छुरी चलाई थी । आज हमारे बेटे के  
पीछे पड़ा है ।’

‘बाबू की माँ के यह कहते ही करिमवा ध्यान से हम लोगो की ओर  
देखने लगा । वह पहचानते ही मैकू मामा के पैर पर गिर पड़ा । वह  
तहमत सम्हालता हुआ खड़ा हो गया । मैकू मामा और फिर मेरी ओर  
देखकर नीचे देखता हुआ बोला—

बाबू जी आप आदमी नहीं देवता है । मुझे इसी छुरी से खतम  
कर दीजिये ।’

बाबू की माँ की छुरी अब भी मैकू मामा के हाथ में थी । मैकू  
मामा ने बाबू की माँ तथा उस भीड़ की ओर देखते हुए कहा—

‘तुम लोग जानवरो की खाल नोचते नोचते स्वयं भी जानवर  
बन गये हो । अपनी आवश्यकताये कम करो, तुम्हे छुरा चलाने की  
जरूरत नहीं होगी ।’

भुलुवा बीच ही में अपनी फटी बनियाइन पर हाथ फेरता  
हुआ बोला—

‘हमारे बाबू जी देवता है ।’ फिर करिमवा की ओर देखता हुआ बोला—

यह एक दिन किसी से कह रहा था कि इसने किमी पर छुरा चलाकर अकल ठिकाने लगा दी है । अभी मेरी माँ ही तुझे मजा चखा देती, बाबू जी ने ही तेरी जान बचाई ।

भुलुवा के साथी बाबू की माँ की बातों को कान लगाकर ध्यान से सुन रहे थे । बाबू की माँ धीरे धीरे अस्पताल की सारी गाथा सुना रही थी । वह सारे व्यक्ति क्रुद्ध होकर करिमवा की ओर लाल नेत्रों से देख रहे थे । उनमें से एक ने फिर से चिल्लाकर कहा—

‘मारो बदमाश को । यह माफी माँगना इसका जाल है । खतम कर दो इसे यही पर, बड़ा डाकू बनने चला है । छैला बना धूमता है । मैकू मामा ने फिर से यह कहते हुए उन सबको शान्त किया ।

‘शान्ति से काम लो तुम लोग । चोर बदमाश हमारा समाज ही पैदा करता है । तुम लोग अपने में ऊँचा ऊँचा देखते हो । उसको पाने की कोशिश करते हो । तुम्हें नहीं मिलता, तुम चोरी करते हो । चोरी पकड़ जाने पर कतल करने को बाध्य होते हो ।’

एक नाटे काले पुरुष ने आगे बढ़ते हुए कहा—

‘बाबू जी आप बिल्कुल ठीक कहते हैं । हमें सिखलाया गया है, हम सब बराबर हैं फिर इन कोठीवालों को ही क्या अधिकार है कि बढिया भोजन, अच्छा रहन-सहन इन्हीं का हो । हम भी मनुष्य हैं । हमें भी ऐश करना आता है ।’

मैकू मामा ने उन खुदी हुई पहाड़ियों की ओर संकेत करते हुए कहा—

‘यह ठीक है पर तुम्हें अपनी मेहनत को गलत मार्ग पर नहीं लगाना है । तुम्हारा खेतिहर जीवन अच्छा था । तुम्हें इतना ही परिश्रम अपने खेतों में करना चाहिये । पशु पालने में तुम्हारा जीवन सुधर संकता है ।

पर यह सब साधारण जीवन तथा आवश्यकताये कम करके ही किया जा सकता है ।’

करिमवा सिर नीचा किए हुए खड़ा था । सब लोग मैकू मामा की ओर देखते हुए सिर हिला रहे थे । बार-बार आपस में कह रहे थे—

‘बाबू नहीं सचमुच देवता है ।’

मैकू मामा ने उन लोगों की ओर देखते हुए कहा—

‘हमारे बापू का विश्वास था कि यदि गाँवों का संगठन इस प्रकार किया जाय कि प्रत्येक गाँव अपनी खेती और दस्तकारियों के द्वारा अपने पैरो पर स्वयं खड़ा हो तथा अपना काम स्वयं चला सके तो यह आज जो गड़बड़ियाँ बढ़ रही हैं यह न रहेगी ।’

आसपास के लोग एकत्रित होने लगे । अच्छी खासी भीड़ होने लगी । मैकू मामा ने सबसे बैठ जाने को कहा । सब लोग बैठ गये । मैकू मामा आगे बोले—

‘हम लोगों को गाँधी जी के बतलाये हुए त्याग का मार्ग पकड़ना होगा । गाँधी जी कहते थे कि जो व्यक्ति केवल अपने लिये चूल्हा जलाता है वह चोर है, यही उपदेश हमें गीता भी देती है । एक स्थान पर एकत्रित किये गये धन को देखकर उसे बाँटने के लिये सभी बेचैन होते हैं । हर उचित तथा अनुचित ढंग अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने का अपनाया जाता है । इसलिये अपने पास आवश्यकता से अधिक सामान बटोरना चोरी तथा बुराई है ।’

मैकू मामा ने रुमाल निकाल कर अपना मुँह पोछा और कुछ देर तक रुकते हुए आगे बोले—

इसी कारण राष्ट्र के अन्दर चोरी और डाकूओं के गिरोह बनते जा रहे हैं । नित्य नई चोरी तथा कत्तल सुनने में आते हैं ।

इधर उधर के अन्य लोग भी भीड़ देखकर वही एकत्रित हो गये । पड़े लिखे लोगों की अच्छी खासी भीड़ चारों ओर बढ़ गई ।

मैकू मामा ने एक ग्लास पानी माँगा । बाबू की माँ दौड़कर पानी ले आई । मैकू मामा पानी पीकर आगे समझाते हुए बोले—

‘तुम लोगो को एक इंग्लैंड का किस्सा सुनाये । बापू ने एक बार मावरमती के सत्याग्रह के आश्रम निवासियों को एकत्रित करके उनसे अपरिग्रह का व्रत लेने के लिये कहा जिससे हम स्वावलम्बी हो जावे और ससार की किसी वस्तु के हम मोहताज न रहे । अपरिग्रह का अर्थ है दुनियाँ की किसी भी छोटी बड़ी वस्तु पर भी अपना अधिकार न मानना । कोई भी आश्रम निवासी इसके लिये तयार न हुआ । तब बापू ने कहा—

‘मैं तुम पर जोर नहीं डालता पर मैं आज से अपरिग्रह बत लेता हूँ ।’

इस घटना के कई वर्ष पश्चात् इंग्लैंड के मैनचेस्टर नगर में बापू ने वहाँ के मजदूरों के समक्ष एक भाषण दिया जिसमें उन्होंने उनसे कहा था ‘मैं अपरिग्रह का व्रत ले चुका हूँ, फिर भी आप देखते हैं मैं यह चादर ओढ़े और लँगोटी पहने आपके सामने खड़ा हूँ, यह मेरी मजबूरी है । इतना जरूर है कि अगर आप मे से किसी को मेरे यह कपड़े पसन्द आ जावे और वह इन्हें ले भागे तो न मैं इसकी रपट लिखाऊँगा और न उस पर दावा करूँगा ।’

भीड़ के लोग आपस में पूछने लगे ‘यह कौन महाशय है’ ‘क्या मामला है’ कोई मैकू मामा की प्रशंसा करता जाता । कोई कहता ‘अरे चलो जी यह तो दुनियाँ है । कहाँ कहाँ क्या क्या देखोगे । अपनी चिन्ता करो ।’

करिमवा एक किनारे सिर झुकाये बैठा था । मजदूर लोग मैकू मामा की प्रशंसा कर रहे थे । मैकू मामा तथा मैं सबको शान्त कर वापस चल दिये । बाबू की माँ तथा उसके साथी काफी दूर तक पहुँचा गये ।

मैकू मामा की इन अच्छे गुणों की धीरे धीरे प्रशंसा होने लगी । उनके साथियों ने उन्हें लोक सभा के सदस्य बनने के लिये वाध्य किया । वह सदैव यही कह देते—

‘मैं निर्वाचन में भाग नहीं लेना चाहता । इसमें बेइमानी करके वोट खरीदे जाते हैं । निर्वाचन में जो जो हथकड़े देखने को मिलते हैं, उससे अन्य लोग भी बेईमानी तथा झूठ बोलना सीखते हैं । इस प्रकार समाज भ्रष्ट होता है ।’

इधर रमन बाबू से भी बहुत दिनों से मैकू मामा नहीं मिले । मेरी एक बार मार्ग में सरला जी से भेट हो गई । सरला जी ने मिलते ही पूछा—

‘कहो चटू आजकल बहुत दिनों से तुम दिखे नहीं । तुम्हारे मैकू मामा भी नहीं दिखे ।’ उसके पिता जी भी उसके साथ थे । वह अपने किन्हीं परिचित से बात करने लगे । उसने मुझसे फिर आग्रह किया—

‘आखिर क्या कारण है तुम लोग आते क्यों नहीं ।’

मेरे मुख से निकल गया—

‘रमन बाबू की ससुराल वाले हम लोगों का वहाँ आना उचित नहीं समझते ।’

मैंने केवल इतना ही कहा था कि उसका मुख तथा आँखें फैल गई । कुछ देर तक वह आँखों के अन्दर ही अन्दर देखती रही । एक-बारगी मेरी ओर देखती हुई बोली—

‘अच्छा, मेरी सब कुछ समझ में आ गया ।’

मैंने तुरन्त सरला जी की ओर देखते हुए कहा—

‘क्या ? कोई विशेष बात ।’

सरला जी मेरी ओर देखते हुए धीमे से बोली—

‘आजकल रमन भइया तथा मौलश्री भाभी की बहुत चल रही है ।

रमन भइया कहते हैं, मैं तलाक दे दूंगा । भाभी कहती है—आप तलाक नहीं दे सकते । मैं तो तयार नहीं हूँ तलाक देने को । एक ओर यह कहती है, दूसरी ओर वह तथा उनके डैडी यह नहीं चाहते कि रमन भइया अलग रहे । उनकी इच्छा है कि वह उनके साथ ही रहे और वह मनमानी करती रहे ।’

मैं सरला जी की बात को ध्यान से कभी नीचे तथा कभी उसकी ओर देखकर सुनता रहा ।

सरला जी ने हककर मेरी ओर देखते हुए फिर से पूछा—

‘चदू तुम लोगो से क्या किसी ने मना किया ।’

मैंने उसकी चूड़ियों की ओर दृष्टि डालते हुए कहा —

‘नहीं । मना किसी ने नहीं किया’ और यह कहते हुए मैंने बात दूसरी ओर मोड़ दी । इतने में सरला के वृद्ध पिता जी ने उन महाशय के विदा लेने पर पूछा—

‘कहो चदू ठीक हो । और मैकू का क्या हाल है ।’

मैंने उनसे ‘आपकी कृपा है, सब कुशल है’ कहते हुए बिदा ली ।

इस बीच में चुनाव प्रारम्भ होने वाले थे । मैकू मामा अपने जिले की ओर से लोक सभा के सदस्य के लिये खड़े कर दिये गये । उन्होंने कोई दौड़ घूंप नहीं की । उनके पास चुनाव में व्यय करने के लिये कतई धन न था । उनके साथी उनके लिये फिरते रहे । राखन मामा की खेती फिर से चालू हो गई थी, पर वह केवल नाममात्र को थी । मैकू मामा के घायल होने के कारण प्रेस का कार्य भी ठप ही पड़ा था । मैकू मामा का विश्वास था कि वास्तविक कार्यकर्ता को सामने आने

के लिये प्रचार की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये। निर्वाचन में भाग लेने वालों को कनवेसिङ्ग के लिये नहीं दौड़ना चाहिये। मैकू मामा मजदूर वर्ग में बहुत विख्यात हो चुके थे। भुलुवा तथा करिमवा ने अपने वर्ग में मैकू मामा की अच्छाईयों का गुणगान करने में कोई कसर न रखी। मैकू मामा बिना किसी कठिनाई के लोकसभा के सदस्य चुन लिये गये।

लोक सभा भवन में एक दिन केंद्रीकरण पर बहस हो रही थी। ऊपर की लॉबीज खचाखच भरी थी। सामने ऊँचे डायस पर स्पीकर महोदय बैठे थे। इधर-उधर लॉबीज में अफमरगुण शान्ति रखने के लिये चक्कर काट रहे थे। नीचे प्रत्येक द्वार पर अपनी सुसज्जित वेषभूषा में चपरासी यथास्थान खड़े थे तथा गर्व में बीच-बीच में अपनी पगड़ी सम्हाल लेते। नीचे फर्श पर बिछा हुआ हरी घास के वर्ण का कोमल तथा मोटा कालीन सुन्दर पालिश की हुई मेज कुरसियों के बीच में अपनी आभा बिखेर रहा था जिससे आभाय मिलता था कि मनुष्य अपने कृत्रिम जीवन में भी एकबार खेतों की हरियाली के दर्शन कर लेना चाहता है। स्पीकर के डायस के नीचे इधर-उधर मन्त्रि-गण थे। डायस के सामने एक ओर शासकीय तथा दूसरी ओर विरोधी दल के सदस्य यथास्थान आसीन थे।

एक सदस्य के यह प्रस्ताव रखने पर कि देश का केंद्रीकरण होना चाहिये, इससे हमारी केंद्र की सरकार बलवान होगी। केंद्र को बलवान बनाने से शासन करने में सुविधा होगी।

मैकू मामा अपने स्थान से उठते हुए बोलने लगे।

‘केंद्रीकरण का अर्थ है कि जहाँ तक हो सके देश की सारी शक्तियाँ और अधिकारों को केंद्र में जमा कर दिया जाये जिससे देश की केन्द्रीय सरकार खूब बलवान हो। विकेन्द्रीकरण का अर्थ है कि राज्य की ताकत तथा अधिकारों को दूर दूर तक अलग-अलग इलाकों में बाँट दिया जाय जिससे हर इलाके वालों को अपने यहाँ के सारे कामों में

अधिक से अधिक स्वतंत्रता हो। बापू का पूर्ण विश्वास था कि लोकराज से केन्द्रीकरण का कोई स्थान नहीं हो सकता। केन्द्रीकरण से देश का धन तथा ताकत केवल थोड़े से व्यक्तियों में ही जमा हो जाता है। लोकराज का अर्थ है कि सब चीजें अधिक से अधिक के नहीं अपितु जहाँ तक हो सके सब व्यक्तियों के हाथों में बराबर-बराबर पहुँच सके। इतिहास के प्रारम्भ से आज तक मनुष्य के सब समाजी तथा राजकाजी जीवन का झुकाव केन्द्रीकरण से विकेन्द्रीकरण की ओर रहा है।

(सदस्यों तथा मन्त्रिगणों की दृष्टि मैकू मामा की ओर ही लगी थी। मै लाँबीज में बैठा मैकू मामा की ओर ही देख रहा था)

वास्तविकता यह है कि सदैव लोग भ्रातृत्व भावना का प्रसार देखना चाहते रहे हैं। लोकराज तथा मानुषी भ्रातृत्व एक ही मचाई की दो सजाये हैं। सहस्त्रों वर्ष का अनुभव हमें यह बतलाता है यदि धन, बल तथा अधिकार किसी एक समूह में एकत्रित हो जाते हैं तो वह दल उन्हें निस्वार्थ तथा न्याय के साथ सब हकदारों तक कभी नहीं पहुँचा सकता। फिर यह हकदार अपना सगठन करके अपना अधिकार उस केन्द्रीय ताकत से छीन लेने के लिये हर प्रकार का प्रयत्न करते हैं। इसी कारण सारे ससार में अमानुषिकता फैलती है और यह पाश्विकता तब तक समाप्त नहीं हो सकती जब तक यह बटवारा न्यायपूर्ण नहीं होता।

(मैकू मामा अपना रुमाल निकाल कर मुँह पोछते हैं, तुरत कुछ रुककर गला साफ करते हुए आगे बोलने लगते हैं।)

इसे पूरा करने के दो ही ढंग हैं। एक तो वह दल जिसके हाथ में धन, बल तथा अधिकार है अपने को इतना ऊँचा सदाचारी बना ले कि वह जनता का निस्वार्थ तथा विनीत सेवक बन जाये। वह न ही अपने स्वार्थ के लिये कोई कार्य करे और न अपने द्वारा किसी को नाजायज लाभ पहुँचाने दे। इस प्रकार वह सारे बल तथा अधिकार जनता में न्यायपूर्वक बराबर-बराबर बाँट दे, पर यह देखा जा चुका

है कि कांग्रेस जैसा त्यागी दल भी जिसने तीस वर्ष तक त्याग तथा सदाचार का पाठ पढ़ा, फिर भी वह शासनारूढ होने पर उम उच्च तथा महान आदर्श को न निभा सकी। इस प्रकार हमें अवगत होता है कि यह मार्ग कठिन है, और ससार की यह मुसीबत केंद्रीकरण के द्वारा दूर नहीं हो सकती पीछे एक सदस्य जो बैठे ऊँघ रहे थे मैकू मामा ने जैसे ही अन्य सदस्यों की ओर मुख करते हुए अपनी बात पर आवाज में तेजी लाते हुए बल दिया, वह महाशय चौंक कर उनकी ओर देखने लगे।

बाहर हल्की वर्षा हो रही थी। हवा में नमी आ गई थी। एक-बारगी गरमी के बाद वर्षा होने में मौसम सुहावना हो गया था। मैकू मामा ने आगे प्रारम्भ किया।

दूसरा मार्ग यह है कि विकेंद्रीकरण ऐसी अंतिम सीढ़ी तक पहुँचा दिया जाय कि केंद्रीय शासन के हाथों में कम से कम धन, बल तथा अधिकार रह जाय तथा जनता में इतना सगठन, इतनी जागृति, आत्म-बल उत्पन्न हो जाय कि वह शासन को सदाचार के वसूलों पर चलने के लिये जनता को बाध्य कर सके। इसके लिये जनता को अहिंसा तथा सत्य का मार्ग अपनाना होगा। क्योंकि हिंसा के द्वारा हम न्याय तथा मनुष्यता खो देते हैं।

इस प्रकार हम जनता में लोकराज की भावना पैदा करते हुए यह विश्वास जमा दें कि ससार के धन, बल तथा अधिकार में सब का बराबर भाग है। इन चीजों का बटवारा अपनी आवश्यकताओं के बढ़ाने तथा होड़ में अपने पड़ोसियों से बढ़कर आरामतलबी का जीवन व्यतीत करने से पूरा नहीं हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति को हमें सगे भाई के समान समझते हुए कार्यरूप में लाना होगा। इस प्रकार अपने सगे भाई को भूखा तथा नगा रखते हुए हमें अपने पास उन वस्तुओं के रखने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये जो जीवन के लिए इतनी जरूरी नहीं हैं।

वर्षा तेज होने लगी। बाहर बादल की गडगडाहट हाल के अंदर तक बीच-बीच में सुनाई दे जाती। सामने के दरवाजे से हवा का तेज झोका अंदर को प्रवेश किया तथा हाल के सभी मनुष्यों में सिहरन उत्पन्न हो गई। बीच-बीच में हाल की लाइट कॉप-कॉप जाती थी। स्पीकर महोदय ने मैकू मामा की ओर सकेत करते हुए कहा—

‘मैं माननीय सदस्य से अनुरोध करूँगा कि वह अपना भाषण समय के अंदर समाप्त करने का प्रयत्न करें’।

मैकू मामा ने हाथ से सकेत करते हुए सिर हिलाते हुए आग्रह किया।

‘कृपया मुझे अपना भाषण पूरा करने का अवसर दिया जाय’।

पूरा हाउस मैकू मामा के भाषण को सुनने के लिये उत्सुक था। सारे हाल में पूर्ण शांति थी। किसी ओर से भी कोई सदस्य उनके विरोध करने का सकेत भी नहीं दे रहा था। स्पीकर महोदय ने वही अपने स्थान पर बैठे-बैठे आगे बढ़ने के लिये सकेत दिया और मैकू मामा फिर से रूमाल से मुख पोछते हुए बोलने लगे।

इस प्रकार हमें अपनी आवश्यकताओं को कम करना होगा। यदि हम ऐसा नहीं करते तो हमारी वस्तुओं को देख-देखकर दूसरे व्यक्ति जिनके पास वह वस्तुएँ नहीं हैं। हम से क्रोध तथा घृणा करने लगते हैं और यह स्वाभाविक भी है। वह लोग जिनकी सख्या बहुत अधिक है उन वस्तुओं को उपलब्ध करने के लिये अमानुषिक कार्य करते हैं। पुराने समय में वह ढग इस कारण चल सका क्योंकि उस समय इन्सान की भाईचारे और लोकराज का इतना जोर शोर न था। इन आदर्शों का प्रभाव केवल ख्याली दुनिया तक ही सीमित था अब दुनिया बदल गई है। अब लोग इन आदर्शों पर दूसरों से जबरदस्ती अमल कराना अपना अधिकार समझते हैं। इस प्रकार हम शासक और शासित मालिक तथा नौकर, अमीर और गरीब में कोई भेदभाव नहीं रख सकते। ऊँचा सदाचार वही है जिससे हर एक को दुनिया की अच्छी वस्तुओं में बराबर

का भाग प्राप्त हो सके । इस प्रकार हमें इस सिद्धांत को कि हर आदमी से उसकी शक्ति के अनुसार कार्य लेना चाहिए और जात्रड्यम्न'जे के अनुसार दुनियाँ की वस्तुएँ उपलब्ध होनी चाहिये । इसको कार्य रूप में प्रदान करने के लिए केन्द्रीकरण के मार्ग को छोड़कर विकेन्द्रीकरण के मार्ग को अपनाना चाहिये' ।

इस प्रकार मैकू मामा ने अपना व्याख्यान समाप्त किया । अन्य सदस्य भी बोले । सभा दूसरे दिन की बहस के लिए उठ गई ।

मैकू मामा को दिल्ली में लोक सभा का सदस्य होने के नाते राष्ट्र-पति भवन-के पीछे एक क्वार्टर सरकार की ओर से मिल गया था। मैकू मामा के सबसे छोटे भाई माखन एम० ए० द्वितीय वर्ष में थे। मैंने भी रूसी भाषा में डिप्लोमा कोर्स लिया था। मैं बहुत ही मैकू मामा से रूसी भाषा बोल-बोल कर उनको भी सिखलाता। मैकू मामा कहते तुम रूसी भाषा सीख लो, वहाँ जाकर वहाँ की कृषि-पद्धति को देखना। वहाँ काफी हद तक लोग समता लाने का प्रयत्न करते हैं। मैं मैकू मामा से कहता—

‘मामा जी जब मैं आपसे मिला कलूंगा आपसे नमस्ते के स्थान पर ज़्द्रास्तुयेते कहा कलूंगा। मैं आपसे जब कहा कलूँ ‘कक वी सेव्या चूस्त्वुयेते?’ उस समय आप उत्तर दिया कीजिये ‘ब्लगदर्यू बस, प्रेक्रा-स्ता’ पहले के अर्थ है ‘आप का स्वास्थ्य कैसा है’। तथा दूसरे का अर्थ है ‘धन्यवाद, मैं अच्छा हूँ’।

मैकू मामा खूब खिलखिलाकर हँसते।

मैकू मामा मुझसे कहा करते ‘मैं रूसी बोलना सीखना चाहता हूँ’ मैं तुरन्त चाय पीते हुए कहता।

‘मामा जी आप इसे यो कहिये ‘या हचू नउचीत्सा गवरीत पा रुष्कि’ तब मैं चाय की प्याली मेज पर रख देता और कहता।

‘या नेम्नोगा चितायु पा रुस्क’ जिसके अर्थ हैं मैं रूसी भाषा थोड़ी बहुत पढ़ता हूँ’।

मैं विश्वविद्यालय के सम्पर्क में रहने लगा। माखन की पढाई घर पर नहीं हो सकती थी क्योंकि वहाँ बहुधा मिलने वालों की भीड़ लगी रहती।

विद्यार्थियों में प्रथम श्रेणी पाने की होड़ लगी रहती। बेरोजगारी बेहद बढ़ रही थी। पढ़े-लिखे असतुष्ट घूमते दिखते। माखन पढ़ने में अच्छा था। उसके पड़ोस में दूसरा विद्यार्थी था। कभी माखन सर्वोत्तम अंक पाता, कभी उसका साथी रामप्रसाद। परीक्षा होने वाली थी। माखन ने एक विषय पर थीसिस तैयार की थी। उसके साथी ने उसके कमरे में उसका ताला खोलकर उसकी थीसिस गायब कर दी। माखन बहुत चिंतित था। उसने मैकू मामा से कहा—

‘भइया मैं परीक्षा नहीं दूँगा। मेरी थीसिस किसी विद्यार्थी ने मेरे कमरे से ताला खोलकर गायब कर दी है’।

मैकू मामा ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—

‘क्या शिक्षा चोरी करना भी सिखाती है’।

मैंने मैकू मामा से कहा—

‘मामा जी अब विश्वविद्यालय में क्या-क्या नहीं होता। अपने घर में धन अधिक से अधिक मात्रा में एकत्रित करने के लिये लोग प्रथम श्रेणी दिलवाने के लिये कैसे-कैसे दुष्कृत्य करते हैं। इसकी कहानियाँ आप मुझसे सुनें। विश्वविद्यालय में मैं यह सब देखता रहता हूँ। बड़े-बड़े रिसर्च स्कालर्स अपने प्रोफेसरो की ऐसी खुशामदे करते हैं कि कुत्ता भी एक रोटी के टुकड़े के लिये इतनी दुम नहीं हिलाता।

माखन ने खड़े-खड़े बड़ी मेज के कोने पर हाथ रखते हुए कहा—

‘भइया एक होस्टेल का किस्सा है कि दो विद्यार्थियों में वैमनस्य था। उसने अपने साथी को छुरा दिखलाकर परीक्षा भवन में पहुँचने से रोक दिया’।

मैकू मामा अपने कमरे में पड़े हुए तख्त पर बैठे हुए बोले—

‘मेरी समझ में जो शिक्षा बलिदान और त्याग करना नहीं सिखाती

वह शिक्षा ही दूषित है। यह प्रथम श्रेणी की दौड़ सिवाय चोरी डकैती के अतिरिक्त क्या सिखलाती है। शिक्षित व्यक्ति यदि ऐसा करे तो इससे अधिक खतरनाक क्या हो सकता है। बच्चों को केवल मस्तिष्क सबधी विद्या प्रदान करना तथा उन्हें साहित्य का विद्यार्थी बनाना उन्हें अशिक्षित रखने से कहीं बुरा है जब तक हम उनकी नींव नहीं ठीक करते। विद्यार्थी की नींव मनुष्यता तथा सदाचार पर खड़ी होनी चाहिये।'

इस प्रकार माखन परीक्षा न दे सका। उसका प्रतिद्वन्दी प्रथम आ गया। उसी वर्ष उसकी विश्वविद्यालय में लेक्चरर के रूप में नियुक्ति हो गई। रामप्रसाद साधारण परिवार का था पर उसे विश्वविद्यालय की चढक भडक तथा दूसरे लोगों के ऊँचे स्तर को देखकर ईर्ष्या होती। वह सदैव चिंतित रहता उसके पास मोटरगाड़ी नहीं है। तुरन्त उसे मोटरगाड़ी का प्रबन्ध करना है। उसके साथी प्रोफेसर मूल्यवान वस्त्र धारण करते। सिगरेट पीते, कोई पाइप पीता। रामप्रसाद के व्यय भी बढ़ते गये। एक दिन मैं उसके यहाँ पहुँच गया। उसके साथी अध्यापक उसके यहाँ उपस्थित थे।

कमरे के बीच में एक ऊनी कालीन बिछा था। उस पर चमड़े के तीन पीसेज सोफे के रखे थे। बीच में एक सेट्रल टेबिल थी। किनारे पर बड़ी मेज पड़ी थी जिस पर चुनी हुई अच्छे लेखकों की पुस्तकें थी। काफी का दौर चल रहा था। अपने सहयोगी अध्यापक 'राजू' से रामप्रसाद ने कहा—

'राजू भाई जब तक कार न हो दिल्ली का आनन्द नहीं मिल सकता।'

राजू ने जो केवल कमीज पर टाई लगाये हुए थे, अपनी सफेद शर्ट पर नीले पैट से मैच करती हुई फूलदार नीली टाई को नाट के पास एक हाथ से सम्हालते हुए कहा—

‘मेरे डैडी तो कहते हैं तुम अपनी थीसिस पूरी कर लो तुम्हारी रिडरशिप कही नहीं गई।’

राजू के पिता दूसरे विश्वविद्यालय में एक विभाग के अध्यक्ष थे। राजू का रहन सहन ऊँचे स्तर का था। उसने सिगार सुलगते हुए कहा—

रामप्रसाद तुमने मिसेज बरौनिया की गाड़ी देखी। क्या बढ़िया लगती है। जब वह ड्राइव करती है काले चमचमाते स्टियरिंग पर उसके गोरे हाथ ऐसे चमकते हैं मानो बादलों के बीच बिजली चमक रही हो। उसका हस्बैंड घोड़ा डाक्टर है। अभी तो वह अपने विभाग के अध्यक्ष के ड्राइंग रूम में जब तब गप लडाती दिखती है।’

मैं बराबर इन लोगों में मिलता रहता। अतः मेरे सम्मुख उन लोगों को खुलकर बात करने में कोई हिचक नहीं हो रही थी। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि मैं उन लोगों की बातों को उन लोगों तक ही रखता हूँ।

रामप्रसाद ने राजू की ओर देखते हुए कहा—

‘अरे तुम यह क्या कहते हो। आज मुझसे एक विभाग का चपरासी बतला रहा था कि एक विभाग के अध्यक्ष महोदय जिनका नाम मैं नहीं लूँगा। वह लडके से ही है, उन्होंने अपने विभाग में एक लेडी लेक्चरर की नियुक्ति की है। आज वह दोनों एक टैक्सी से एक साथ उतरे। चपरासी ने उन लोगों को दूर से ही टैक्सी से उतरते हुए देखा। वह महाशय नहीं देख सके चपरासी को। अध्यक्ष महोदय अपने कमरे की ओर चले गये और लेडी लेक्चर लायब्रेरी की ओर चली गई। राजू ने जो ध्यान से सुन रहे थे रामप्रसाद की ओर कान लगाते हुए ‘‘उसकी आँखों में देखते हुए आगे को गर्दन झुका कर कहा ‘फिर क्या हुआ?’’

रामप्रसाद ने हल्की मुस्कान में कहा—

अध्यक्ष महोदय चपरासी से तपाक से बोले—

‘क्यों जी आज मिस कमथान तो नहीं आई इधर ।’

चपरासी कह रहा था ‘मैने उत्तर दिया ।’

वह अभी अभी आपके साथ तो टैक्सी से उतरी है ।

उन्होंने चपरासी के कहते ही डाट लगा दी ।

‘हुश इडियट, मेरे साथ कौन उतरा ?’

राजू कौतूहलता से मुस्कराने लगे । मै भी झुककर ध्यान स सब कुछ सुन रहा था ।

‘फिर क्या हुआ’ राजू ने तुरन्त अपनी टाई झुलाते हुए अपने दोनों पैर एक दूसरे से दूर रखते हुए पूछा । पैर दूर रखने से राजू के काले जूते चमचमा उठे ।

रामप्रसाद दोनों हाथ से ताली पीटते हुए बोले—

‘फिर उसी चपरासी से उन्होंने अपने घर से कोई चाभी मँगवाई । उनकी मिसेज ने पूछा, साहब के साथ मिस कमथान तो नहीं थी । चपरासी बोला ‘सरकार मुझे कुछ नहीं मालूम ।’

राजू ने मेरी ओर मुस्कराते हुए आँख फैलाकर देखते हुए कहा—  
‘चपरासी बड़ा होशियार था ।’

रामप्रसाद तुरन्त हँसते हुए बोल उठे ‘चपरासी तो स्वयं यह कह रहा था साहब मै क्या उनकी मेम साहब से झगडा करवा देता । मेम साहब को खुद शक था जभी उन्होंने मुझसे ऐसा प्रश्न किया ।’

मेरे मुख से अनायास निकल गया ।

‘फिर साहब आप लोग लड़को को क्यों बुरा भला कहते हैं यदि वह लडके होने के नाते खुले आम ऐसे कृत्य करते हैं ।’

रामप्रसाद ने मेरी ओर देखकर हँसते हुए कहा—

‘भाई आडियलिज्म की बातें छोड़ो । उन्हें ताख पर रखो । इस ससार मे सब कुछ होता है यह मैटीरियलिस्टिक युग है, अर्थ ही इस ससार का ईश्वर है । यदि आप बुद्धू हैं तो आपको ससार से कूच कर जाना चाहिये ।’

इतने मे बाहर किसी ने खट-खट की ध्वनि की। मैं उठकर देखने गया। एक दुबला पतला काला व्यक्ति मुझे ही भ्रम से रामप्रसाद समझा। मुझसे तपाक से बोला—

‘साहब चार महीने हो गये अभी तक मेरे फरनीचर का किराया नहीं मिला है।’

मैं चुपचाप धीमे से अन्दर आया। मैंने प्रोफेसर रामप्रसाद की ओर देखते हुए कहा—

‘देखिये आपको कोई बुला रहा है।’

प्रोफेसर रामप्रसाद जैसे ही बाहर देखने गये, वह उस व्यक्ति से कह रहे थे—

‘भाई मैंने तुम्हारा चेक परसो ही काट कर दिया है।’

वह व्यक्ति तेज शब्दों में कह रहा था।

‘साहब मैं बैक गया। वहाँ आपका रुपया ही नहीं था।’

प्रो० रामप्रसाद कह रहे थे—

‘अच्छा तो अगले महीने पेमेट होगा।’

यह कहते हुए वह अन्दर आ गए। उनके मुख पर रूखापन था। फिर भी वह कृत्रिम हँसी लाते हुए बोले—

मैंने इससे कुछ अलमीरे तथा डायनिंग सेट्स तैयार करने को कहा था। कमबख्त अभी तक नहीं लाया। ऊपर से जान खाये हुए है एडवास पेमेट के लिए।’

राजू ने रामप्रसाद को ओर देखते हुए कहा—

‘तुम्हें पहले गाडी का प्रबन्ध करना चाहिए। मैं तो डैडी को लिख रहा हूँ। वह अपनी गाडी मुझे दे दे तथा अपने लिए वह दूसरी खरीद ले।’

रामप्रसाद हिलते हुए सामने के तखत पर बैठते हुए अपने दोनों हाथ तखत पर ही रखते हुए बोले—

‘हाँ भाई मिस कमथान से मित्रता करने के लिये गाडी पहले होनी चाहिये ।’

फिर मेरी ओर रामप्रसाद देखते हुए कह गये ।

कहिये चट्ट जी आप कहेंगे यह लोग प्रोफेसरी करते हैं कि रोमास लडाते हैं । यह हम लोगो की तफरीह की बातें हैं । तुमसे तो कहा तुम भी विश्वविद्यालय मे आ जाओ, बडा आनद रहेगा । अरे एक थोमिस पूरी कर डालो । मेरी तो करीब करीब तैयार हो रही है । अपने अध्यक्ष की लडकी की शादी मे वह दौड धूप करूंगा कि डिग्री कही गई नही ।’

रामप्रसाद औसत कद के थे । देखने मे अत्यंत सुन्दर । उनकी बडी आँखें घुंघराले बालो पर सभी आकर्षित हो जाते । कक्षा मे जब पढाते, लडकियाँ उनके व्याख्यान के बजाय उनके सौंदर्य की ओर निहारा करती । वह क्लास समाप्त कर जैसे ही अपने कमरे मे प्रविष्ट करते, लडकियाँ उनसे अगरेजी कवि कीट्स की पक्ति ‘एथिंग ऑफ वियूटी इज ए ज्वाय फॉर एवर’ जिसे वह बडी रुचि से पढाते बारबार समझने के लिये एकत्रित रहती । सध्या होते ही वह किसी सिनेमा हाउस में दिखते । सिनेमा देखने के वह इतने शौकीन थे कि उनसे कोई फिल्म न छूटती ।

मैं एक छोटा-सा साप्ताहिक निकालने लगा था । उसके लिये सामग्री एकत्रित करने के लिये काफी दौड धूप करनी पडती । एक दिन मैं छोटे से मोहल्ले की गली से निकल रहा था, मै वहाँ एक ब्लाक अपनी पत्रिका के लिये बनवाने गया था । मुझे एक जीने से चढते हुए राम प्रसाद जी दिखे । पहले तो मुझे विश्वास न हुआ कि रामप्रसाद वहाँ क्या करने आयेगे ।

मैंने ब्लाकमैन से मिलकर पूछा कि अमुक घर किसका है ? उसने कहा—

‘उसमे कोई वेश्या रहती है, जो छुपकर एक प्राइवेट हाउस मे दुष्कर्म करती है।’

मुझे यह अवगत होकर आश्चर्य हुआ तथा कौतूहलता भी जागृत हुई। मैं वही प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर पश्चात ही मेरी राम-प्रसाद से जैसे ही वह जीने से उतर कर सड़क पर आये थे, भेट हो गई। मैंने कौतूहलता से बढ़ते ही रामप्रसाद जी से पूछा—

‘कहिये आप इधर कैसे?’

रामप्रसाद सकपका गये। इधर-उधर देखते हुए अपने मुख का पान चबलाते हुए बोले—

‘यहाँ मैं जहाँ का रहने वाला हूँ, वहाँ की एक जान पहचान निकल आई। उन्ही का पता लेने आया था। और आप यहाँ कैसे?’

मैंने ब्लॉकमैन का घर दिखलाते हुए कहा—

‘मैं अपने अखबार के सबध मे आया था।’

इतना कहते ही रामप्रसाद आगे बढ़ गये यह कहते हुए।

‘अच्छा फिर मिलूंगा। एक आवश्यक कार्य है।’

मैं अपने रूसी भाषा पढाने वाले प्रोफेसर के यहाँ गया हुआ था। मैं विश्वविद्यालय के प्रमुख समाचारो को अपने साप्ताहिक मे भी स्थान दे दिया करता था। नगर मे आधुनिक शिक्षा के प्रभाव के फलस्वरूप विद्यार्थियो की अनुशासनहीनता, अराजकता तथा उच्छ्रलता की चर्चा चारो ओर थी। कुछ सीनियर प्रोफेसर एकत्रित थे। मुझसे मेरे प्रोफेसर ने कुछ देर पाम की गैलरी मे प्रतीक्षा करने के लिये कहा। उन लोगो मे विद्यार्थियो मे प्रचलित अनुशासनहीनता को लेकर ही विवाद छिडा हुआ था। एक बहुत वृद्ध प्रोफेसर जिनके बाल स्वेत हो चले थे। उनकी आँखो पर मोटा चश्मा था। वह अपने मुख की झुर्रियाँ हिलाते हुए कह रहे थे।

‘हम लोग विद्यार्थियो को व्यर्थ मे दोषी ठहराते है। यह हम लोगो की ही दुर्बलताये है जिस कारण आज विद्यार्थी हमारा सम्मान नही

करते । हम क्या नहीं करते । विद्यार्थियों के सामने धूम्रपान करते हैं । उनके साथ बैठकर हम गंदे फिल्म देखते हैं, फिर हम शिक्षा क्या देंगे ।’

दूसरे प्रोफेसर जिनके बाल तो सफेद न थे पर अघेड़ अवस्था पार कर रहे थे । अपनी कुर्सी पर सीधे बैठते हुए बोले—

‘मेरे विचार से शिक्षा प्रदान करने के लिये अनुभवी व्यक्ति रखने चाहिये जिन्होंने ससार देखा हो । आजकल हम लोग विद्यार्थियों की आयु के बराबर के अध्यापक रखते हैं, यह कहाँ तक उचित है । लड़के लेक्चरर होकर आते हैं, उनकी उमरें शांत नहीं होने पाती फिर आप उनको इतना बड़ा उत्तरदायित्व का कार्य सौंप देते हैं । परीक्षा में सर्व-प्रथम अग्ने वाला आवश्यक नहीं है कि वह अशोभनीय कार्य न करे । हमारे नये नये लेक्चररस शिक्षा के मंदिर को कैसे बदनाम करते हैं, यह बड़े दुख का विषय है ।’

एक तीसरे महाशय जो अघेड़ ही थे तथा स्थूल शरीर के थे । वह हँसोड़ बहुत थे । उन्होंने हँसते हुए कहा—

‘अरे भाई लड़के तो लड़के ही ठरे । बाज़-बाज़ बूढ़े भी लड़कों के कान काटते हैं । एक विश्वविद्यालय का नाम लेते हुए ‘क्या वहाँ ऐसा नहीं हुआ ।’

पहले वाले वृद्ध महोदय ने उनकी ओर देखते हुए उत्तर दिया—

‘बूढ़ों के लिये ऐसी हरकतों में पड़ना थोड़ा कम ही सुना जाता है । लोग बहुधा ऐसे लोगों को बदनाम कर देते हैं केवल अपने स्वार्थ के लिये । यदि ऐसा है, तो उस व्यक्ति विशेष का आचरण प्रारम्भ से ही खराब होगा ।’

दूसरे प्रोफेसर साहब जिनके चाद के बाल साफ हो चुके थे अपने बद कालर के कोट के बटन पर हाथ फेरते हुए बोले—

‘भाई सीधी बात है, आचरण पर तो अब कोई ध्यान भी नहीं देता । कालेज तो एक प्रकार के क्लब बनकर रह गये हैं । जिस प्रकार क्लब में चढ़ा देकर हम आप मनोरंजन के लिये जाते हैं, ऐसी ही यह

शिक्षा सस्थाये हमारे सेठ साहूकारों के बच्चों के लिये है। योरोपीय संस्कृति का नाम लेकर आजकल लोग सब कुछ मनमानी कर बैठते हैं। अनुशासनहीनता, अनुशासनहीनता सब चीखते हैं यह अवगुण हमारा ही उत्पन्न किया हुआ है। जब तक हम सदाचारी नहीं बनते, हम विद्यार्थियों से सदाचार की आशा नहीं रख सकते।'

मैं बैठा बैठा सोच रहा था शायद यह रामप्रसाद जी ही चर्चा का विषय हो। वह लोग नाम किसी का नहीं ले रहे थे पर मेरी समझ में आ गया कि शायद उन्हीं के समान आचरण वाले व्यक्तियों पर ही बौद्धारे हो रही थी। मैं काफी देर तक बैठा रहा। उन लोगों का विवाद चलता रहा। मैं पास खड़े हुए एक नौकर से यह कहते हुए कि 'साहब से कह देना कि मुझे आवश्यक कार्य था अतः मैं चला गया बिना उन्हें सूचित किये हुए, आशा है मुझे वह क्षमा करेंगे।' मैं चला आया।

मैकू मामा जिस कार्य में हाथ डालते, हृदय से करते। उनकी ख्याति बढ़ती गई। उनकी कार्य-कुशलता तथा निस्वार्थ सेवा की लोग प्रशंसा करते। उनके सहयोगियों ने उन्हें मन्त्रिपद स्वीकार करने के लिये विदेश कर दिया और मैकू मामा को एक विभाग का कार्य सौंप दिया गया।

मैकू मामा मोटी खादी प्रयोग में लाते। सरसो का तेल सिर में डालते। उनकी वेशभूषा कुरता पाजामा तथा सिंदरी थी। एक बार उन्हें किसी ग्रामोद्योग विकास के सम्बन्ध में किसी ग्राम में जाना था। जिस नगर में उन्हें उतरना था वहाँ के लोगों की भीड़ लग गई। उन्हें अवगत था कि मन्त्रियों का स्वागत करने के लिये जिन फूलमालाओं का प्रबंध किया जाता है वह साधारण वेतन पाने वाले क्लर्कों से चढ़े के रूप में एकत्रित होता है और उस पैसे का किस प्रकार ऊँचे अफसर पार्टी खाने में दुर्पयोग करते हैं। मैकू मामा ने एक दिन पूर्व ही जिला-धिकारी को सूचना दे दी थी कि मेरे लिए किसी प्रकार के स्वागत का प्रबंध नहीं होगा। फिर भी जैसे ही मैकू मामा स्टेशन पर पहुँचे लोगों ने उन्हें फूल मालाओं से लाद दिया। मैकू मामा ने फूल मालाएँ उतार लीं। पास खड़े एक आफिसर ने उनके हाथ से बड़ी सज्जनतापूर्वक ले ली। मैकू मामा उसी स्थल पर ठिठक कर खड़े हो गये। गरीबों के प्रति स्नेह, उनके कठोर परिश्रम के फलस्वरूप भी उनका न्यूनतम वेतन इत्यादि ऐसी भावनाएँ उनके हृदय को उद्दिग्ध कर रही थी। वह उन मालाओं के ढेर में से कुछ मालाएँ हाथ में लेते हुये बोले—

‘इन मालाओं ने मेरे हृदय में हर्षोल्लास उत्पन्न करने के स्थान पर विषाद उत्पन्न किया है। यह मेरे गले में शूल सी चुभ रही है। इनके बनवाने का भार उन निरीह गरीब व्यक्तियों पर पड़ा है जिनके घरों में केवल एक समय भोजन पकता है। सामने बदनवारे इत्यादि सजाई गई है। इनकी कोई आवश्यकता नहीं थी। आपका उपस्थित होना ही स्नेह को प्रकट करता है।’

पीछे एक क्लर्क अपने सहयोगी क्लर्क से कह रहे थे।

‘मन्त्री नहीं, महान व्यक्ति है। यह गरीबों की दशा को समझता है। ऐसे ही गरीब परिवारों के नेता गरीबों को कठिनाइयों को समझते हैं।’

दूसरे साथी ने जो भीड़ के पीछे थे उत्तर दिया—

‘इन्होंने तो बिल्कुल सही बात कही है। यह हमी लोगों से जोर करके चदा लिया गया है। यह तो ऐसे कह रहे हैं जैसे इन पर ऐसी ही बीत चुकी हो।’

एक उसी दफ्तर के इसपेक्टर ने अपनी सफेद सिल्क की बुशशर्ट पर हाथ फेरते हुये कहा—जिसका गला मक्खन का प्रयोग करने से काफी तर था।

‘अरे तो रोते क्यों हो। हम भी तो सेठों से ऐंठ लेते हैं। कौन मेरी जेब से जाता है।’

क्लर्क बाबू ने जो केवल कमीज पायजामा पहने था।

‘तुम ऐसा नहीं कहोगे तो कौन कहेगा। तुम्हारी जेब तो तर रहती है।’

इंसपेक्टर ने उसकी पीठ ठोकते हुये कहा—

‘और तुम्हारी जेब कौन सूखी रहती है। मुकदमों की फाइलों को देर सबेर करवाने में कौन पैसे ऐंठता है।’

मैंकू मामा अपनी बात समाप्त कर आगे बढ़ गये। भीड़ के प्रमुख लोगों में होड़ लगी थी कि कौन व्यक्ति उनके आगे पीछे चलना है।

मैकू मामा स्टेशन के बाहर हो गये। वह उस ग्राम में पहुँच गये। दूर-दूर पर कुटियाँ सजाई गई थी। किन्हीं में हाथ द्वारा बल्लो की बनी हुई ग्राम निवासियों द्वारा तैयार किये हुये नये प्रकार के हैड बैग, टोकरियों तथा बच्चों के खेलने के खिलौने इत्यादि सजाये गये थे। एक स्थान पर कोल्हू द्वारा सरसो तथा तिल का तेल पेरा जा रहा था। एक कुटिया में गाँव की वृद्धाओं तथा युवतियों द्वारा हाथ से कपड़ों पर जाली का काम किया गया दिखलाया गया था। एक कुटी में हाथ द्वारा बनाये गये लोहे के औजार रखे थे जिनमें हँसिये, छूरे, कुल्हाड़ियों, उस्तूरे, तमचे, गडासे इत्यादि सभी प्रकार के दैनिक कार्य में आने वाली वस्तुएँ थी। खेती के कार्य में काम आने वाले औजार यथा हल के फल, कुट्टी काटने की हाथ द्वारा बनाई गई मशीन, धान कूटने की ढेकली इत्यादि दूसरे कोने पर सजे थे। एक स्थान पर विभिन्न पैदावारों के नमूने रखे गये थे। सब्जी तथा विभिन्न प्रकार के नाजों की बालियाँ इत्यादि सभी वहाँ पर थी।

मैकू मामा ने उन सबको देखने के पश्चात् गाँवों वालों के बीच में एक व्याख्यान देना प्रारम्भ किया।

‘आप लोगो ने इस गाँव के आसपास बनने वाली वस्तुओं को जिस प्रकार एक स्थान पर एकत्रित किया है, इससे जनता को प्रोत्साहन मिलता है, और वह अपने आसपास के गाँवों में भी ऐसी ही नई-नई वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने में सहायता देते हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि हमारे अफसरों ने केवल अपने मंत्रियों को दिखलाने के लिये ही ऐसे आयोजन नहीं कर दिया करते अपितु वह स्वयं उनमें लगन से कार्य करते हुये उन्हें रचनात्मक रूप प्रदान करेंगे। जनता यदि असली राजा बनना चाहती है तो उसका सही तरीका बापू का स्वावलम्बन तथा असहयोग का तरीका है। जनता का असहयोग चाहे किसी देशी शासन से हो अथवा विदेशी से, इतनी बलवान शक्ति है जिससे कोई भी शासन टक्कर नहीं ले सकता, पर इस असहयोग का रूप रचनात्मक

होना चाहिए, हिंसात्मक नहीं। पुलिस और फौजो से मारकाट की टक्कर लेकर अथवा उन्हें अपने असहयोग से भूका मारकर हम शासन को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते, इससे तो हमें ही हानि होगी। असहयोग का रचनात्मक रूप स्वावलम्बन है अर्थात् यह कि हम अपने इलाको का सगठन इस प्रकार कर ले कि हम अपने झगड़ो को अपने आप निपटा ले अपनी रक्षा अपने आप कर सकें। यदि देश में शांति बनाये रखने का उत्तरदायित्व जनता अपने हाथ में ले ले तो देश में इतना बड़ा सगठन तैयार हो जाय, जनता में असहयोग करने की इतनी शक्ति आ जाय और उसके पास इतने साधन एकत्रित हो जाएँ कि इसके बाद ससार का कोई भी शासन अपनी पुलिस और फौजो की सहायता से अपना राज्य नहीं जमा सकता।

हमारे शासन के नेताओं ने अपने हृदय से रिश्तखोरी को रोकना चाहा, पर रिश्त खटने के स्थान पर नित्य बढ़ती चली जा रही है। यदि जनता अपने आप सगठन करके इसे नहीं रोकती तो दुनियाँ की कोई ताकत इसे नहीं रोक सकती।

मैकू मामा ने खाँसते हुये पानी माँगा। तुरन्त ग्लास पड़ा हुआ सतरे का रस उपस्थित किया गया। जैसे ही उन्होंने बिना उस ओर देखे ग्लास में मुँह लगाना चाहा उन्हें मीठा लगा। उन्होंने तुरन्त ग्लास वापस करते हुये कहा—

‘मुझे केवल जल चाहिए। हमारे गाँव वाले भूखो मर रहे हैं और मुझे सतरो का रस पिलाया जा रहा है।’

गाँव वाले शांत थे। एक दूसरे का मुख देखने लगे। एक पगड़ी बाँधे हुए गाँव वाला बोला—

‘यह मनुज नहीं देवता है। गाँव वालों की दशा को समझता है।’

मैकू मामा ने जल पीकर आगे कहना प्रारम्भ किया—

‘प्रत्येक कार्यकर्ता गाँव का इस प्रकार सगठन करेगा कि हर गाँव अपनी खेती और हाथ द्वारा बनी हुई चीजों के द्वारा अपने पैरो पर

स्वयं खड़ा हो सके और अपना कार्य अपने आप चला सके। प्रत्येक कार्यकर्ता गाँव के लोगो में सफाई से रहने की भावना उत्पन्न करेगा। वह उन्हें स्वस्थ रहने तथा रोगो को रोकने की योजनाये तैयार करेगा। हर कार्यकर्ता को अपने अपने हाथ से कते सूत की खादी अथवा आल-इंडिया चर्खा सघ की खादी पहनने का अभ्यास करना चाहिये।

इसके पश्चात् मैकू मामा स्वयं गाँव के ऐसे स्थलो की ओर गये जहाँ लोग आशा भी नहीं करते थे कि मन्त्री महोदय उस ओर भी जायेंगे। उन्हें अवगत हुआ कि दिखलाने के लिए केवल वह स्थान ही अच्छी प्रकार सजाया गया था। उस गाँव में निर्धनता, गदगी तथा वहाँ के दयनीय जीवन की झाँकी को देखकर उनका हृदय द्रवित हो उठा। एक स्थान पर उन्होंने एक गाँव वाले से फावड़ा माँगा, उसके न देने पर वह स्वयं उसके पयाल में घुस गये। फावड़े द्वारा घरो से लगी गदगी की सफाई करने लगे। लोग उनसे फावड़ा लेने लगे। उन्होंने फावड़ा नहीं दिया। अपनी बात पर अडते हुए कहा—

‘आप मुझे अपने बीच का समझिये। मन्त्री शब्द के लगने से मैं किसी दूसरे वर्ग का नहीं हो गया हूँ। हम लोग जबतक अपने पड़ोसी की सहायता करना नहीं सीखते, देश की निर्धनता, दुख तथा दैन्य दूर नहीं कर सकते’।

पीछे कुछ अफसरान आपस में कानाफूसी कर रहे थे।

‘अच्छा इसने सबको परेशान कर रखा है। लगता है किसी कजड़ परिवार का होगा। हम लोगो की आराम हराम कर रखी है। गाँधी का चेला बना घूमता है। एक गाँधी सुधार कर गये। अब यह करेगा, जो बातें संभव नहीं है। केवल भावनाओ में बहने से क्या लाभ’।

दूसरे अफसर साहब जो दिखलाने के लिये उस दिन विशेष रूप से खादी का कोट पहन कर आये थे अपनी चिकनी दाढ़ी पर क्रीम की कोटिङ्ग की सुगन्ध हाथो में लेते हुए नाक के पास हाथ ले जाकर बोले—

‘मेरे विचार से यदि इनको प्रधान मंत्री बना दिया जाय तब तो शायद यह भारतवर्ष को तपोवन-सा ही बनाकर छोड़ेगे। हम लोग आश्रम में डब बैठक लगाकर दूध पिया करेंगे। यह क्या जाने कला का विकास’।

संध्या समय नगर में एक पार्टी दी गयी। मैकू मामा से कुछ सज्जन कहने के लिये आये। हम लोगो के एक प्लानिङ्ग आफिसर साहब यहीं से रिटायर हो रहे हैं, इसके उपलक्ष में हम लोगो ने एक पार्टी दी है। आपकी भी बड़ी कृपा होगी यदि आप चले-चले।

मैकू मामा ने बड़े सरल भाव से तख्त पर बैठे-बैठे कहा—

‘भाई मुझे तो पार्टियों में तो विशेष रुचि नहीं है। मैं रूखा-सूखा खाने वाला एक कार्य-कर्ता हूँ’।

एक प्रमुख आफिसर साहब खड़े-खड़े नम्रतापूर्वक बोले—

‘आप बस चले चलिये। हम लोगो की प्रार्थना स्वीकार कर लीजिये। आपको कोई भी गरिष्ठ वस्तुएँ नहीं खिलाई जायेगी।

मैकू मामा बहुत आग्रह करने पर चले गये। नगर के सभी प्रमुख नागरिक वहाँ उपस्थित थे। आफिसरो से लेकर सेठ बनियो तक के वर्ग के लोग वहाँ मंत्री का स्वागत करने के लिये आये थे। मंत्री महोदय ने केवल एक चाय का प्याला तथा एक कलाकद खाया। लखनऊ से मँगवाई हुई प्रमुख दुकानो की मिठाइयाँ तथा मौसम में कठिनाई से मिलने वाले फल इत्यादि सभी जलपान की मेज पर उपस्थित थे। लोगो ने पेट भर जलपान किया। आफिसर तो ऐसे जुटे थे, मानो वह नित्य यही सब कुछ खाने के अभ्यस्त थे तथा शायद उनका जन्म ही मूल्यवान भोजन करने के लिए हुआ है। शैशवकाल में सरस्वती के वरदहस्त ने लोक सेवा आयोग में आने के लिये उन पर जो कृपा कर दी थी इस कारण शायद वही अब लक्ष्मी के सर्वाधिकारी बन गये थे, पर उन्हें उस देवी का सौम्य रूप तथा उसकी धनुषाकार भृकुटियो ने अपनी मादकता से इतना मदान्ध बना दिया था कि सरस्वती ने उन्हें

जो हँस की बुद्ध दी थी, वह नष्ट होकर उसने लक्ष्मी के वाहन का रूप ले लिया था ।

वह दावत मंत्री का नाम लेकर नगर के सेठ साहूकारो से चदा लिया गया था कि उनके नगर मे मंत्री महोदय पधार रहे है उनका उचित सम्मान होना चाहिए । प्लानिङ्ग आफिसर महोदय रिटायर तो हो ही रहे थे, लोग यही समझते थे कि यह दावत उनके उपलक्ष्य मे दी गई थी ।

एक सेठ जी अपनी सिल्क की वास्कट पर लगी हुई ऊपर की जेब पर हाथ रखे हुए दावत के प्रबधकर्ता से कह रहे थे ।

‘कहिये बाबू बिंदाप्रसाद दावत तो आपकी शानदार रही । मंत्री महोदय भी परसन्न हो गये होंगे’ ।

बाबू बिंदा प्रसाद जो नेताओ तथा आफिसरो के मध्य के व्यक्ति थे तथा जो इस प्रकार के प्रबध करके अपनी जीविका-निर्वाह करते थे हाथ जोडकर सेठ जी से गर्व से बोले —

‘देखिये आप लोगो के बीच मैने मंत्री महोदय को बुलवा दिया । आप लोगो से परिचय करवा दिया । आपने धन से काफी साह्यता की । बहुत-बहुत धन्यवाद’ ।

सेठ जी अपनी महीन धोती के अन्दर से झलकती हुई टांगे हिलाते हुए पान की तश्तरी से एक पान लेते हुए बोले—

‘अरे सो इसमे मेरी जेब से क्या गया । एक तरफ से दिया दूसरी तरफ से लिया । यह सब भार पडता तो जनता पर ही है । हम कोई अपनी जेब से देते है’ हल्के से कहते हुए धीरे से सेठ जी दाँत दिखाते हुए मुस्करा दिये ।

मैकू मामा इन सब बातों की जानकारी करने के लिये लोगो से छिपकर अचानक विलीन हो जाते । कई-कई दिन तक गायब रहते । वह विभिन्न वेशभूषा धारणकर साधारण व्यक्ति के रूप मे कभी सीमेट का परमिट कटवाने पहुँच जाते । कही दुकान, मकान एलॉट

करवाने के लिये मुझे आगे कर स्वाँग भरते । कही सेल्स तथा टैक्स के विभागों का रहस्य तथा कभी पुलिस की रिश्वतखोरी की जानकारी करने के लिये आगे रहते ।

हर विभाग में गाँधी जी का चित्र राष्ट्रपति तथा प्रधान मंत्री को दाये-बाये कर दृष्टिगत होता । दफतरो में बड़ा-बड़ा लिखकर अंकित रहता 'रिश्वत लेना व देना जुर्म है' ।

मैंकू मामा तथा मुझे कोई विभाग न मिला जहाँ उस लिखे हुए साइन बोर्ड के नीचे ही रिश्वत न ली जा रही हो । क्लर्क से अलग बातचीत करने पर वह स्पष्ट कहता ।

'क्या करे साहब मेरे भी तो बच्चे हैं । उन्हें ऊँची शिक्षा देता हूँ, घर का स्तर बनाना ही पड़ता है । मेरा व्यय कैसे पूरा हो । साहब के साथ भी यही परेशानी है । उनका एक लडका लखनऊ में एम० बी० बी० एस० में है । एक एम० एस० सी० में है । तीन लडकियाँ वह भी विश्वविद्यालय में हैं । कहाँ से वह अपना खर्च पूरा करे । हमी लोग पूरा करवाते हैं' ।

उस राशनिङ्ग आफिस के क्लर्क ने अपने मोटे चश्मे के भीतर से झाँकते हुए उत्तर दिया ।

मेरे एक जानकार का मुकदमा चल रहा था । वह उसमें केरायेदार के रूप में बरसों से रह रहे थे । एक धनी व्यापारी ने मकान खरीद लिया था । कागज पर कही उसको जायदाद नहीं दिखाई गई थी । उसके भाइयों के नाम कई-कई मकान थे । मेरे मित्र साधारण व्यक्ति थे । मुकदमे में अधिक पैसा व्यय न कर सकते थे । व्यापारी के वकील ने उनसे कहा—

आप मकान खाली कर दें । वह व्यापारी धनी व्यक्ति है । वह कभी भी आपको बीच बाजार में पिटवा देगा । आप कुछ न कर सकेंगे । वह पैसा साहब तथा बाबुओं को खिलाता है । मेरे वकील को भी उसने काफी पैसा खिलाकर तोड़ लिया । मेरे मित्र के वकील साहब ने भी

यही परामर्श दिया कि आप मकान खाली कर दें। उससे जीत न सकेंगे। वह बेहद पैसा खर्च कर सकता है। अतः मेरे मित्र को मकान खाली कर देना पड़ा।

एक बार मुझे देहली सेक्रेटेरियट के डिप्टी सेक्रेटरी महोदय के घर किसी कार्यवश जाने का अवसर मिला। उनका ड्राइंग रूम सुंदर कोचो तथा सोफा से सजा था। सामने एक तख्त था जिस पर फूलदार कलस था। वह इतने फूलते जा रहे थे कि उन्हें बिना गिरदो तथा तकियों के बैठने में कठिनाई होती थी। एक दूसरे उनके महयोगी सिल्केन बद् कालर का सूट पहने उनके पास ही बैठे थे उन्होंने अपने मित्र झारखंड से कहा—

‘भाई तुम हाथ अच्छा देख लेते हो। एक मंत्री का नाम लेते हुए कहा—उनका तुमने हाथ देखकर बतलाया था कि आप एक दिन बहुत ऊँचे पद पर आसीन होंगे और उन्होंने तुम्हें डिप्टी सेक्रेटरी बनवा दिया और अब तुम अडर सेक्रेटरी बनने जा रहे हो। मेरा हाथ देखकर बतलाओ भाई मुझे भी अडर सेक्रेटरी ज्वारेंट सेक्रेटरी इत्यादि बनने का कभी अवसर मिलेगा।’ झारखंड जी की मिसेज सामने ही बैठी थी उन्होंने उन लोगों की बात के बीच में बोलते हुए कहा—

‘कहिये मिस्टर सुंदरसन साहब आपने तो दूसरी नई गाड़ी खरीद ली, कितने, बीस हजार की खरीदी है?’

झारखंड साहब तुरत अपनी टांगों के बीच में गांव तकिया दबाते हुए अपना हाथ उस पर रखते हुए बोले—

‘अरे भाई इनकी मिनिस्ट्री ठाठदार है। टूअर तथा भत्तो की कमी थोड़ी है। इनका कमरा एक नया प्रोजेक्ट बनाने की आवश्यकता है। पैसे का इधर-उधर आदान प्रदान होना चाहिये, उसी में ठाठ हो जाते हैं।’

श्री झारखंड कोने पर रखे हुए स्टैंड में तैरती हुई रगबिरगी मछली की ओर देखते हुए बोले—

‘आप लोग तो सेक्रेटरी होने जा रहे हैं, एक ही आध वर्ष में, फिर क्या पचास हजार वाली गाडी लीजिये ।’

श्रीमती झारखडे अपनी मफेद सारी का पल्लू सम्हालती हुई बोली—

‘ऐसे भाग कहाँ है साहब । यहाँ अभी अपनी कोठी भी नहीं है । एक लाख रुपया हो तो कोठी बने ।’

श्री सुन्दरसन साहब अपने कोट के गले के हुक को सम्हालते हुए बोले—

‘अरे सो इसे ज्वायट सेक्रेटरी होने दीजिए । यह सब कर लेंगे ।’

श्री झारखडे अपने काले मुख के दाँत हँसते हुए दिखलाकर बोले—

‘अरे भाई हमारे विभाग में तो बडा यगमैन जमा हुआ है ।’

श्री सुन्दरसन उनकी आँखों से अपनी आँखें मिलाते हुए बोले—

‘अरे उसे खसकाओ कहीं । नहीं एक दिन उसे पार्टी देकर जुलाब पिला दो । नहीं मैं बताऊँ चाय में जमालगोटा दे दो ।’

श्री झारखडे ने श्री सुन्दरसन की ओर अपने तकिये के ऊपर बैठते हुए कहा—

‘अच्छा, तुमने सुना है उस ज्वायट सेक्रेटरी की फाइलें गायब करवाकर खूब किरकिरी कर दी । अब वह कहीं कान रहा । क्लर्क भी किसी देश के एम्बेसडर के हाथ फाइल को बेचकर मालामाल हो गया ।’

श्री सुन्दरसन ने सोफे के हथिये पर हाथ पटकते हुए कहा—

‘देखो किसी से जिक्र मत करना । क्लर्क कह रहा था । साहब मुझे जेल भी हो जाय तो क्या हुआ । जब काट लूँगा । मेरे बच्चे तो आनंद करेंगे । एक लाख रुपयों से मेरे बच्चों की ऊँची शिक्षा हो जायेगी । आखिर मेरे भी बच्चे मोटरो पर बैठने को तरसते हैं ।’

मैं बाहर गैलरी में जो उनके कमरे से लगकर थी बैठे-बैठे थक गया । मैंने चपरासी से फिर से कहा—

‘साहब से कह दो मुझे जल्दी का कार्य है ।’

चपरासी फिर से लौटकर आया ।

‘साहब गुसल करने चले गये अभी आ। धा घटा बाद मिलेगे ।’

इस प्रकार मैं वहाँ से वापस हो लिया ।

मैं मैकू मामा से यह सब कुछ कहता । वह शातपूर्वक सुनते फिर गंभीर हो जाते । वह अपने से ऊपरी जीवन में प्रवेश पाने की मनुष्य की प्रवृत्ति को तो स्वाभाविक समझते पर उसमें जितना आकर्षण है और मनुष्य उसे प्राप्त करने के लिये कैसे-कैसे साधन जुटाता है, कैसे अशोभनीय कृत्य करता है इस पर वह बटो मनन करते ।

मैं मैकू मामा के साथ जहाँ जाता, हम दोनों ही बहुरूपिया का रूप धारण करते । हम दोनों ही फल वालों की वेशभूषा में तृतीय श्रेणी के डिब्बे में रेल द्वारा यात्रा कर रहे थे । स्टेशन पर गाड़ी आ जाने के कारण गार्ड से गाड़ी पर बैठ जाने की आज्ञा माँगी । गार्ड साहब ने आज्ञा दे दी । दो-चार स्टेशन आगे आकर टी टी. महोदय ने हाफ हाफ का प्रलोभन देना चाहा । हम लोगों के कहने पर भी कि आप मुझे रसीद दे तथा पूरे पैसे ले । वह कहता गया ‘इसमें आप की हानि क्या है । आपके पैसे बचवा रहा हूँ । एक तो आपके साथ नेकी कर रहा हूँ ऊपर से आप उल्टे मुझे शिक्षा दे रहे हैं ।’

मैकू मामा दूसरे स्टेशन पर उतरते हुए फिर से बोले—

‘साहब आप मुझे रसीद दे दीजिये, अपना पैसा लीजिये ।’

गाड़ी विसिल देती हुई आगे बढ़ चली । मैकू मामा ने भागकर गाड़ी पकड़ी । अगले स्टेशन पर टी. टी ने गतव्य स्थान से दो स्टेशन से पूर्व का एक टिकट लाकर दे दिया और दस रुपये के नोट में से जो मैकू मामा ने उसे दिया था उसने हम दोनों के आधे पैसे चार्ज किये तथा बाकी पैसे मैकू मामा के हाथ में रखकर चला गया । मैकू मामा ने उससे फिर कहा—

‘सुनिये तो साहब’ पर वह गार्ड वाले डिब्बे की ओर शायद उसका भाग देने के लिये रवाना हो गया ।’

उस प्रमुख नगर पर जहाँ मैकू मामा उतरे, बेहद भीड़ थी । मैकू मामा ने गेट पर के टी सी. से यह सब कह सुनाया । उसने हम लोगो का टिकट लेते हुए कहा—

‘साहब आपके पास गार्ड का सर्तीफिकेट नहीं है । आप से तो लम्बा चार्ज किया जा सकता है । एक तो आपके साथ नेकी की गई । उल्टे आप बिगड रहे है ।’

एक एक कर कई टीटियो की भीड़ एकत्रित हो गई । सभी हम लोगो पर बाँछारे करने लगे ।

मैकू मामा ने उनके काले कोट की ओर निहारते हुए कहा—‘आप मुझसे जहाँ से चाहे चार्ज करे मै पूरा चार्ज देने को तैयार हूँ, पर यह रसीद मुझे उस स्टेशन से क्यों नहीं दी गई जहाँ से मै चढा हूँ और जबकि मैने गार्ड महोदय से इसकी सूचना दे दी थी ।

इतने मे कोई रेल के ही सज्जन चार व्यक्तियो को फाटक के बाहर निकलवाते हुए सकेत कर रहे थे गेट वाले टी टी से ।

‘यह अपने ही आदमी है तथा उनकी साकेतिक भाषा बतला रही थी कि उनसे उसने सौदा कर लिया है । गेट वाले टी सी. ने साकेतिक भाषा मे कहा—

‘हाँ हाँ ठीक है पैसा रखे रहो बाद मे बटवारा हो जायेगा ।

मैकू मामा ने उनकी ओर सकेत करते हुए कहा ।

‘जरा सुनिये साहब’

वह साहब सीढियो वाले पुल पर खडे कह रहे थे ।

‘पहले आप अपनी खबर करे मुझसे आप क्या कह रहे है ?’

मैकू मामा ने उन रेल के बाबू को भी पहचान लिया था जो सफेद वर्दी में थे तथा जिनके गोल चेहरे के मुख के कानो से पान की पीक फूट रही थी ।

मैकू मामा ने कहा —

‘अच्छा आप मेरे टिकट दे दीजिये मैं इसकी परिवाद पुस्तक मे शिकायत लिखूँगा ।’

रेलगाड़ी आध घंटा रुककर उस गाडं तथा टोटी को लेकर चली गई जो हम लोगो को लेकर आया था । कही कुली मुसाफिरो से उलझ रहे थे । मैंने आपसे तयकर लिया था । गाडी मे बैठलवाई दो रुपया लेगे । जाइये जिससे शिकायत करना हो करें जाकर । हमारी मजदूरी दे दीजिये चुपचाप वह साधारण मुसाफिर अपने सबधी को गाडी पर बिठालने को आया था । कुली ने बिठाल दिया था । मजदूरी हमने कहा था ‘मैं दूँगा । कुली आठ आने के स्थान पर द्वा रुपये वसूल रहा था ।

मैकू मामा ए. एस एम के कमरे मे कम्पलेट बुक माँगने गये । शिकायत की पुस्तक देने मे आनाकानी की जा रही थी । वह अड गये । असिस्टेंट स्टेशन मास्टर समझा रहे थे । अरे साहब जाने दीजिये, क्यों किसी की रोजी लेगे । मैकू मामा के न मानने पर दफतर के एक साहब कह रहे थे । अरे भाई लिखने दो, नही फाँसी पर चढवा देगे । रेल तो अपनी है । हम लोग भी देख लेगे । सभी का काम एक दूसरे से पडता है इस समार मे ।’

बडी कठिनाई से परिवाद पुस्तक दी गई । मैकू मामा ने अपनी राईटिंग मे एक कल्पित नाम से शिकायत लिख दी । बीच-बीच मे अपने छोटे हस्ताक्षर भी कर दिये ।’

मैकू मामा के पास एकमाह पश्चात लिखकर उस कल्पित नाम से चिट्ठी आई जिसे उन्होंने किसी साधारण आदमी के पते से मँगवाई थी । मैंने चिट्ठी लाकर मैकू मामा को दे दी थी । उसमे लिखा था ।

‘आपकी शिकायत अमुक डिवीज़न को भेज दी गई है, जिसमे वह नगर आता था ।’

तीन माह व्यतीत होने पर दूसरा पत्र आया ।

‘चूँकि कोई भी प्रमाण न मिल सका अतः आपकी शिकायत निराधार पाई गई तथा केस समाप्त किया जाता है।’

मैकू मामा ने एक मंत्री के रूप में सारा रहस्य खोल दिया। उसके पश्चात् सारे विभाग में जो कुछ भी होना चाहिये था उसके लिये छानबीन प्रारम्भ हो गई।

एक बार मैकू मामा साधारण ग्रामीण के रूप में एक कचहरी के इजलास में निकल गये। मैं उनके साथ उनके कपड़ों की गठरी तथा लोटा डोर थामे था। इजलास में डिप्टी साहब की मेज से लग कर करीब पचास व्यक्ति एक छोटे से कक्ष में कठघरे से लगकर खड़े थे। पास ही एक बैठने की बेच पड़ी थी जिस पर सेठ लोग जो समझते थे उन्होंने पेशकार को कुछ घूस देकर प्रसन्न कर लिया है, बैठने के अधिकारी बन गये थे। एक वकील साहब एक सज्जन से कह रहे थे 'यदि अपना मुकदमा जीतना है पेशकार साहब को खुश करो।'

डिप्टी साहब जल्दी-जल्दी पेशकार के बतलाये हुए स्थानों पर बिना सोचे बिचारे हस्ताक्षर करते जाते थे। वह जो भी कानून की धारा का अधिनियम निकालकर दिखला देता, वकील साहब की ओर सकेत करते हुए लिखवा देता तथा वकील द्वारा जिस पक्ष की भी रकम उसके तथा उसके साहब के लिये पर्याप्त होती उस अधिनियम में जान पड़ जाती तथा शाब्दिक व्यूह जाल द्वारा उसके पक्ष को बल मिल जाता ऊपर सामने कक्ष के महात्मा गाँधी का पूर्ण चित्र डिप्टी साहब के पीछे दीवाल पर सुशोभित था जहाँ लिखा था।

‘घूस लेना व देना अपराध है।’

डिप्टी साहब शातपूर्वक फाइलों पर नोट लिखते जाते थे। थोड़ी-थोड़ी देर में पेशकार अपने स्थान पर फिर से आ जाता। इस प्रकार

पेशकार पैसा ले-लेकर नोट करता जाता जिसका बटवारा सध्या समय हो जाया करता ।

मैकू मामा ने रगे हाथो पेशकार को पकड़ लिया । उससे पूछने पर उत्तर मिला ।

‘साहब मेरा इतना बड़ा परिवार है । एक मेरा लड़का एम बी. बी. एस में पढता है । एक इंजीनियरिंग पढ रहा है । कहाँ से खर्च पूरा करूँ । मैं अपने लिये थोड़े ही चोरी करता हूँ । यह बच्चे समाज के अंग हैं । इनका पालन-पोषण तो होना ही चाहिये ।’

मैकू मामा ने डिप्टी साहब की ओर देखते हुए कहा—

‘यह आपके सामने सब कुछ हो रहा है, आपको इसकी खबर भी नहीं ।’

डिप्टी साहब तपाक से बोले—

‘मेरे ज्ञान में तो कुछ भी नहीं है ।’

पेशकार नीचे देखता हुआ गिड़गिड़ाकर बोला—

‘और साहब मेम साहब को बीस-बीस चालीस रुपया नित्य मुझे पहुँचाना होता है । साहब के पाँच बच्चे ऊँची शिक्षा पा रहे हैं । पब्लिक स्कूलों का खर्च किस प्रकार पूरा हो । यह पैसा भी तो पढाई के कार्य में ही आ रहा है ।’

मैकू मामा ने धीमे से सिर हिलाते हुए कहा—

‘ठीक है ऐसी ही पढाई से हमारे भावी राष्ट्र का निर्माण होगा जहाँ शिक्षित चोर डाकुओं की सख्या में वृद्धि होगी ।’

कचहरी में खलभली मच गई । भीड़ एकत्र हो गई । मंत्री ने रंगे हाथो पेशकार तथा डिप्टी साहब को गिरफ्तार करवा दिया । नगर भर में चर्चा फैल गई । वकीलो तथा अफसरो के लिये मैकू मामा आलोचना के पात्र बन गये ।

घूसखूरो ने मंत्री महोदय पर व्यंग की बौछारें प्रारम्भ कर दी । दरिद्र जनता उन पर बहुत प्रसन्न हुई ।

मैकू मामा की साधारण बैठक में मंत्रियों की अनौपचारिक सभा थी। बैठक में दीवाल से लगकर एक तख्त था। सामने कारनिश पर महात्मा जी के तीनों 'बदर' रखे थे। एक अपने हाथ से मुख बंद किये था। दूसरे की आँखों पर उसके हाथ थे तथा तीसरा अपने दोनों कानों में उँगली लगाये था। उन्हीं के ऊपर दीवाल पर गाँधी जी का चित्र था। तख्त पर गद्दा बिछा था जिस पर रंगीन फूलदार बेड कवर पड़ा था। खादी के साधारण मोटे कपड़ों के परदे दरवाजों पर झूल रहे थे। कुछ बेत की साधारण कुर्सियाँ तथा मोटे जिन पर खादी मढी थी तख्त के आसपास पड़े थे। कमरा बड़ा था। कमरे के दूसरी साइड में भी इसी प्रकार का बड़ा तख्त था जिस पर काफी लोग बैठ सकते थे। तख्त पर हाथ द्वारा कढ़ी हुई फूल-पत्तियों से युक्त कुछ गद्दियाँ पड़ी थी। कमरे की दूसरी दीवाल पर लोकमान्य तिलक तथा लाला लाजपत राय के चित्र थे।

एक मंत्री महोदय अपने हाथ के नीचे तकिया रखे हुए अपनी एक जाँघ को टिकाते हुए बोले—

‘मैकू भाई आपने वास्तव में कमाल कर दिया। आपने कितने भ्रष्टाचार के मुकदमों में तैयार कर दिये इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। आपकी समाचार पत्रों में बेहद प्रशंसा हो रही है।’

दूसरे मंत्री महोदय ने अपनी टोपी उतार कर पास के मोटे पर रखते हुए कहा—

‘भाई जमना लाल जी (मैकू मामा की ओर सकेत करते हुए) क्षमा कीजियेगा मैकूलाल साहब मैं इसके खिलाफ हूँ। यह पकड़ धकड़ मेरी समझ में नहीं आती। किसी को चुपके से पकड़ लेना मैं बहादुरी नहीं समझता। आजकल कौन ऐसा है जो बेईमानी नहीं करता।’

मैं एक सोफे पर बैठा इन सबके वाद-विवाद को ध्यान से सुनता था।

जमना लाल जी आचार्य जी की ओर देखकर हँसते हुए बोले—

‘क्या है आचार्य जी ? क्या आपका कोई नया दृष्टिकोण है ? मैकूलाल जी के कार्य को आप खराब समझते हैं। अनैतिकता का उन्मूलन आप खराब समझते हैं। चोरी, घूसखोरी, अपहरण, बलात्कार, डाका-जनी इन सबका निराकरण नहीं होना चाहिये ?’

जमना लाल जी कहते-कहते गभीर हो गये तथा जोश में आकर आगे कहते गये, ‘इन बातों पर अकुशल न लगाने के कारण आज समाज मानो इन बातों को गर्व से करता है। आपने इन बातों को करने वालों के पक्ष के पहलू की ओर भी ध्यान दिया है। उनका कहना है आज समता का युग है। जितना आप व्यय करते हैं उतना ही मुझे व्यय करने का अधिकार है। आपकी परिस्थितियों ने इस योग्य बनाया है। इसमें आपकी क्या विशेषता है।’

आचार्य जी जो तख्त के किनारे बैठे थे एक तर्क पर हाथ रखते हुए बोले—

‘भाई मेरा आशय यह है कहने का कि यदि सबको धन अधिक से अधिक पहुँचा दिया जाय और सबकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहे तो चोरी करने की कोई इच्छा ही नहीं करेगा। किसी को खराब कार्य में हाथ डालना अच्छा नहीं लगता। उल्टे वह समाज में अपमानित होता है। यदि वह चोरी करता है, अपने परिवार के पालन-पोषण के लिये। हमें बुराई का कारण खोजना चाहिये न कि बुराई को देखे।

फोडा बनने ही न दिया जाय फिर उसके आपरेशन करने की आवश्यकता ही न रह जायेगी ।’

मैकू मामा सिर हिलाते हुए आचार्य जी की ओर देखकर अपने पैर की पिडली पकड़ते हुए बोले—

‘अमेरिका तो एक धनी प्रदेश है । उसने अपने यहाँ के लोगो का जीवन स्तर ऊँचा उठा दिया है । आवश्यकताओ की कोई सीमा नहीं हुआ करती । ऐसा कभी सम्भव नहीं हो सकता जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति को नवीन उपकरण प्राप्त हो जायँ । आवश्यकतायें हमारी इच्छा के अनुकूल बढा करती है । क्या अमरीका मे चोरी और हत्याये नहीं होती । इस बढते हुए जीवन स्तर की होड़ मे यहाँ के विश्व विद्यालय क नवयुवक भी घृणित कार्य करते हुए देखे जाते है । यह केवल अमेरिका की ही बात नहीं है । सभी धनी प्रदेशो मे ऐसा हो सकता है जहाँ भी आवश्यकताये बढाना सिखायेंगे । आवश्यकताओ के बढाने के स्थान पर हमे अपनी इच्छा-शक्ति का दमन करना होगा । अपनी आवश्यकताये घटानी होगी । इसी मे मानव जाति का हित है ।’

जमना लाल जी ने बेत की कुरसी पर बैठे हुए मधुसूदनदास जी की ओर देखते हुए कहा—

‘मधुसूदन भाई आप तो देखते ही है । यही के विश्वविद्यालय के बड़े घरानो के नवयुवक अपने उच्च स्तर के जीवन की पूर्ति के लिये क्या क्या नहीं करते । मैकूलाल जी का कथन अक्षरशः सही है । उच्च स्तर के जीवन की कोई सीमा नहीं है । यह उच्च स्तर के जीवन की पुकार के समर्थन में जहाँ लोग कहते है इससे कार्य बढता है, रोजगार मिलने की सुविधा होती है; वहाँ उसके दूसरे पहलू पर ध्यान देने से अवगत होता है कि इसकी होड़ मे बुराइयो का जन्म होता है । आज डाकाजनी, अपहरण इत्यादि के मामलो मे शिक्षित वर्ग भी सम्मिलित हो रहा है ।’

मैकू मामा ने लोकमान्य तिलक तथा लाजपतराय के चित्रों की ओर संकेत करते हुए कहा—

‘यह महापुरुष सरल जीवन का उपदेश देते रहे। इस सरल जीवन को अपनाने के कारण ही भारतवर्ष सदैव शान्ति का पाठ सीखता तथा सिखाता रहा है। सरलता का प्रभाव हृदय पर पडा करता है। उसके अनुरूप ही हमारे आचरण होते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा ही हमारी दोष-पूर्ण हो रही है। जब तक हम प्रारम्भ से ही आचरण सम्बन्धी बातों पर अधिक ध्यान नहीं दिलवाते हमारे देश की आज वैसी ही दुर्दशा होगी। आज के विद्यार्थी की आवश्यकतायें एक गृहस्थ की आवश्यकताओं से भी अधिक होती हैं जिसका भार उसके अभिभावक पर ही पडता है। अपने पडोसी के उच्चतम जीवन को देखकर वह भी वैसा ही जीवन का अनुकरण करने के लिये गलत मार्ग अपनाता है। क्योंकि यदि वह व्यक्ति किन्हीं प्रतियोगिता के नियमों के कारण उस आशु विशेष में उस उच्च स्तर के जीवन के अपनाने के योग्य नहीं समझा गया है तो वह व्यक्ति उससे सतुष्ट नहीं होता। कुछ ही समय पश्चात वह उस व्यक्ति विशेष से अपने को अच्छा ढाल लेता है पर तब तक राज्य के सेवा आयोग सम्बन्धी नियम उस पर लागू नहीं हो सकते। अतः वह जीवन से निराश होकर उस उच्च स्तर के जीवन की होड में गलत मार्ग अपनाने को बाध्य हो जाता है।’

आचार्य जी मैकू मामा की बातों को ध्यान से सुनते रहे। वह पीछे दोनों हाथों के सहारे कुछ थके हुए मैकू मामा की बातों की ओर ध्यान देते हुए धीमे-धीमे सिर हिलाते जाते थे। मैकू मामा के बात समाप्त करते ही बोले—

‘भाई यह विद्यार्थियों को समझाने की बातें हैं। कोरा आदर्शवाद कब ससार में सफल हुआ है। रामराज्य की कल्पना करते-करते युग व्यतीत हो गया। यथार्थ पर चलता हुआ पश्चिम प्रगति कर गया। अतिरिक्त की उडान करते हुये तारों तक पहुँचने का प्रयत्न कर रहा

है। सचाई अथवा मिथ्या की परिभाषा को समझे। परिस्थितियों के अनुरूप ही सचाई अथवा मिथ्या अपना स्वरूप बदल दिया करती है। किसी युग विशेष में जिसे आप सत्य कहकर स्वीकार करते हैं वही युग की परिस्थितियों के परिवर्तित होने पर मिथ्या बन जाया करता है। राजनीति में मिथ्या ही सत्य का रूप धारण करती है।'

मैकू मामा तथा मधुसूदन जी शान्तपूर्वक एक जाँघ के बल बैठे होने से थक जाने पर दूसरी जाँघ के बल पर बैठते हुये दूसरे हाथ से गद्दी की टेक लेते हुए सुनते रहे। मधुसूदन जी जो चश्मे के अदर से झाँक रहे थे बोल पड़े—

‘आचार्य जी आपने सत्य की परिभाषा भी खूब दे डाली। सत्य सदैव ही सत्य रहा करता है। राजनीति को भो क्या बच्चों का खिल-वाड़ समझ लिया गया है। सारी जनता की बाजी लगाकर राजनीतिज्ञ को आपने सत्य के अर्थ परिवर्तन का अधिकार दे डाला। अनादि काल से सत्य की परिभाषा में परिवर्तन नहीं हुआ है, न ही होगा। ईश्वर का रूप ही सत्य है। जिस दिन ससार उस सत्य को स्वीकार कर लेता है, उसी दिन ससार के सर्व प्राणियों में एकता स्थापित हो जायेगी तथा मनुष्य निस्वार्थ भाव से एक दूसरे पर सहा-नुभूति करना सीख जायेगे। ईश्वर ही सत्य है, जगत मिथ्या है इसे स्वीकार करने से द्वैत की भावना विनष्ट हो जाती है। इस प्रकार हम सभी सत्य की रक्षा के लिये एक होकर कार्य करें।’

आचार्य जी बीच में मुस्कराते हुए अपने हाथ को पीछे से उठाकर अपनी जाँघ पर रखते हुए बोले—

‘आप ससार से दूर होकर काल्पनिक जगत की बातें कर रहे हैं। इस ससार में हम आप रह रहे हैं। वास्तविकता की ओर ध्यान दें।’

मैकू मामा ने बीच में बोलते हुए कहा—

‘ठीक है आचार्य जी, मैं आपकी बात को समझ रहा हूँ। आपके कथनानुसार आज के बिगड़ते हुए युग में कोई दोष नहीं है। जो कुछ

कोई भी कर रहा है, वह उचित ही है। हमें बुराई को पनपने देना चाहिए क्योंकि आपके मत से बुराई भी सत्य ही है। हमारा ससार में जब जन्म हुआ है, रहना आवश्यक है। हम किसी भी प्रकार रहे। यही तो आप कहना चाहते हैं।

आचार्य जी ने मुट्ठी से हमारे हाथ की गदेली पर ठोकते हुए कहा—

‘यदि हम आप उन परिस्थितियों में हो तो वही कार्य करेंगे जो यह लोग करते हैं जिन्हें आप दोषी ठहराते हैं। केवल उस पर नियंत्रण लगाने की आवश्यकता है कि बुराई बढ़ने न पाये। बुराई, चोरी, हत्या किस युग में नहीं रही है। केवल इसकी बहुलता तथा कमी में अंतर हो जाया करता है।’

मैकू मामा ने सिर हिलाते हुए कहा—

‘फिर क्या बुराई में बिलासिता में आकर्षण है ही। इसको अपना-कर मनुष्य अपना जीवन सुख-चैन से व्यतीत कर सकता है। ठीक है जनसंख्या भी बढ़ रही है। हत्याये तथा डकैतियों से जनसंख्या में भी कमी होगी। केवल जो इस कला में प्रवीण होंगे उन्हें ही ससार में रहने का अधिकार होगा।’

मधुसूदन जी मैकू मामा की व्यंग्यात्मक भाषा को ताड़ रहे थे। वह मुस्कराते जाते थे। आचार्य जी भी समझते हुए जोर-जोर से अपनी ग्रीवा ऊँची नीची करते रहे। सब लोग शांत हो गये।

मधुसूदन जी ने मौसम की वार्ता प्रारम्भ कर दी। आकाश की ओर देखते हुए बोले—

‘ऐसे ही यदि वर्षा होनी रही तो कहीं इस वर्ष भी यमुना नदी में बाढ़ न आ जाय ! लगातार वर्षा एक माह से हो रही है। रुकती ही नहीं। बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए धन एकत्र होना आवश्यक है।’

मैकू मामा ने सिर हिलाते हुए पीछे से एक हाथ सामने रखते हुए कहा—

‘प्रकृति का प्रकोप भी दिल्ली को चैन न लेने देता । दिल्ली इतने नीचे स्तर पर है कि यहाँ शिमला तथा पंजाब का पानी एकत्र हो जाता है । प्रतिवर्ष लाखों रुपया वर्षा द्वारा क्षति पहुँचाई हुई बस्तियों पर लगाना पड़ता है । फिर भी हम दिल्ली के आस-पास की निचली जमीन पर आबादी बढ़ाते चले जा रहे हैं । अन्य अच्छे नगर भी हैं, जहाँ यह बड़े-बड़े कार्यालय पहुँचाये जा सकते हैं । दिल्ली ही को कयो आकर्षण का केन्द्र बनाया जा रहा है ।’

मधुसूदन जी ने तखत पर से उठकर पास पड़ी हुई कुर्सी पर एक टाँग रखते हुए कहा—

‘लोग भी कहाँ तक सहायता करे बाढ़ फड के लिए । जिससे कहिए लोग कहने लगते हैं हमारे दान में दिये हुये पैसे का दुर्पयोग होता है । अफसर लोग बीच में खा जाते हैं । खातो फाइलो पर चढ़ जाता है । चालीस प्रतिशत तो वितरित हो जाता है शेष साठ प्रतिशत अफसरों के पेटों में भर जाता है ।’

आचार्य जी पास की मेज़ पर हाथ पटकते हुए बोले—

‘भाई तुम लोगों का स्वभाव बुराई निकालने का हो गया है । कुछ तो कार्य होता है । न होने से जो कुछ भी हो रहा है उस पर ध्यान देना चाहिए । यदि हम सदैव दूसरे के कार्यों की मीनमेख निकालते रहेंगे, तो हम उन्नति नहीं कर सकते । हम स्वयं अपने अच्छे आचरण का प्रदर्शन करें । दूसरे क्या करते हैं इसकी चिन्ता न करें ।’

मैकू मामा ने फिर से आचार्य जी की ओर मुड़कर तखत पर से पैर नीचे लटकाते हुए कहा—

‘आचार्य जी ! वास्तविकता तो यह है हम बुराई को बुराई नहीं कहलाने देना चाहते इसी कारण उसको छिपाने के लिए भोंति-भोंति की दलीले खोजते हैं । हम नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों पर ध्यान

नहीं देते। हम लोगो को मानवता तथा शुचिता का विकास करना ही होगा। हमें केवल योग्य तथा समर्थ व्यक्तियों की ही आवश्यकता नहीं है। योग्यता की अपेक्षा ईमानदारी पर अधिक जोर देने की आवश्यकता जीवन की शुचिता हम को विस्मृत कर बैठे है। जब तक हम इन गुणों को विकसित नहीं होने देते हम सभ्यता से बहुत दूर रहेंगे और न ही हम अपने को सम्य राष्ट्र कहना सकते हैं।'

आचार्य जी मुस्कराते हुए खड़े हो गये थे। धीमे से बोले—

'यह सब भाषण देने की बातें हैं। पुस्तकों में लिखने की बातें हैं।'

मैकू मामा तखत पर बैठे, पैर हिलाते हुए बोले—

'फिर क्या इन फैलते हुए अनाचारों, भ्रष्टाचारों, तथा अनीतियों से संतुष्ट रहिये। इनकी ओर संकेत भी न कीजिये। यह सब कुछ होता रहता है। सदैव हुआ है और होता रहेगा। इन बुराइयों के बीच से जो लाभ उठा ले वह ही चतुर है जो मीन-मेख निकालता रहे बुराई की ओर संकेत करता रहे वह बुद्धू है। संसार में रहने के योग्य नहीं है।' आचार्य जी ने खड़े-खड़े कहा—

'ऐसा तो भाई सदैव हुआ करता है' यह कहते हुए वह बोले—

'अच्छा बुरा मत मानना भाई। बहस बहुत हो गई। आपके विचार अच्छे हैं। यह तो मानना ही होगा' कुछ रुक कर।

'अब चलना चाहिये समय काफी हो गया है।'

मधुसूदन जी भी थोड़ी देर बैठकर चले गये। जमना लाल जी जो बड़ी देर से शांतपूर्वक सब कुछ सुनते रहे थे, दीर्घ श्वास भरते हुए ऊपर हाथ उठाकर अपने कंधे सीधे करते हुए बोले—

'अजीब परिस्थिति है क्या किया जाय, यह संसार और मानव-समाज की अनोखी पहेली है। मनुष्य किसलिए अकाड ताडव करता रहता है। यह छीना झपटी, नोच घसोट किसके लिये। अपने भाई का गला घोट कर मनुष्य केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति करता है। यह है विधाता की विडम्बना। यह धन तथा पद का मोह मनुष्य को विक्षिप्त

बना देता है। वह अपने सत्व को नहीं समझता। मैकू लाल जी आप का मार्ग सही है। हमें कोरा भौतिकवादी नहीं बनना है।'

मैकू मामा इधर-उधर देखते हुए बोले। उनकी दृष्टि एकबारगी कारनिश पर रखे हुए तीन बदरो पर चली गई।

'भाई जमना लाल जी' मेरे रिपोर्ट किये हुए कैसो पर मुकदमे चले। कुछ को साधारण सजाये हुई। कुछ की धनी व्यक्तियों ने जमानतें ले ली। हमारे आपके बीच के लोगो ने ही कुछ एक गभीर अपराधियों को साधारण दंड जुरमाने के रूप में दिलवाकर छुड़वा दिया। मुझे बड़ी ठेस पहुँची है। सत्य का हनन खुले आम हो रहा है। मुझसे यह सहन नहीं होता। अपराधी को उचित दंड न मिलने से ममाज के कुकर्मियों को प्रोत्साहन मिलता है और वह अपराध में हाथ डालते हिचकते नहीं।'

जमना लाल जी उनकी ओर देखते रहे। कुछ रुककर सोचते हुए बोले—

'भाई मैकूलाल जी, मैं आप से बिल्कुल सहमत हूँ। हमें अपने आचारण को सम्हालना होगा। यह सब प्रभाव पाश्चात्य भौतिकवाद का है। हमारा आदर्श भले ही काल्पनिक था, पर महान था। हमारा आदर्श था क्षितिज, क्षितिज तक कभी पहुँचा नहीं जा सकता। जिस राम-राज्य की हम कल्पना करते रहे, भले ही वह सम्भव न हो पर हम सदैव सम्यता के सोपान पर अग्रसर होते रहे, यही विचार कर कि हम पूर्ण मानव नहीं बन सके हैं। नेतागिरी भी आदर्श व्यक्ति को ग्रहण करना चाहिये। यह पद विरक्त के लिए ही है। गाँधी जी के समय देश के लिये हम अपने जीवन को उत्सर्ग करते थे। आज स्वतंत्र होने पर हमारा कार्य और भी दुष्कर हो गया है। अपनी सुख सुविधाओं की तिलाजलि देकर जिन्हें वह सुविधायें प्राप्त नहीं हैं उन्हें अवसर देना होगा। जमनालाल जी ने मेरी ओर संकेत करते हुए कहा—

'कहो चट्ट तुम्हारा क्या विचार है। तुम तो आजकल के नवयुवक

हो । हम लोग तो पक चुके । पके हुए आम है । कब तक रहेंगे । कुछ तुम नवयुवको के भी विचार पता चले' ।

मैने इधर-उधर निहारते हुए ऊपर के टंगे हुए लाला लाजपतराय तथा मदनमोहन मालवीय के चित्रों को देखते हुए कहा—

‘पिछले युग ने मदैव आने वाले युग की आधार-शिला का कार्य किया है । नवीन रक्त की उच्छ्र खलता पर अनुभवी व्यक्ति ही अकुश लगाया करते हैं । आपके अनुभवों से ही हम नवयुवक आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं । पाश्चात्य सभ्यता ने हम नवयुवको पर अपने मशीनीकरण की छाप हमारे प्रत्येक पहलू पर छोड़ दी है । हम ऊपरी आवरण के चक्कर में अपने को विस्मृत कर बैठे हैं । हम अपने बेल से उत्पन्न की हुई रोटी से बैठे बिठाये दूसरों द्वारा प्राप्त हो जाने वाली चपाती अधिक प्रिय हो गई है । हम उसके चारों ओर के सूखे हुए कोरों को साफ कर उसकी काट छाँट में अधिक ध्यान देते हैं बनिस्वत इसके कि रोटी स्वयं हमारे द्वारा परिश्रम के बल पर प्राप्त होती चाहे उसके बनाने में वह ऊबड़-खाबड़ ही क्यों न होती पर उसे बड़ी रुचि से खाते तथा सतोष की साँस लेते’ ।

मैकू मामा ने मेरी ओर देखते हुए कहा—

‘चढ़ू मैने प्रत्येक कोना झाँक लिया है । मै इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ । हम लोगों को स्वयं अपने उद्देश्य को कार्य रूप में चरितार्थ करना होगा । भाषणों से कार्य न होगा । यदि देश को समुन्नत देखना है, उसकी दशा को सुधारना है तो हम लोगों को अपने जीवन की आहुति देनी होगी । मुझे यह मन्त्रिपद प्रिय नहीं है । हम लोगों को फिर से ग्रामीण जीवन को सुधारते हुए विकास करना होगा । भाई जमनालाल जी, यदि आप हम लोगों का माथ दे तो बहुत अच्छा हो । आप हमारे उद्देश्यों से सहमत हैं ही । हमें कर्मठ बनना होगा । हाथ से परिश्रम करना होगा । हमारे सुधरे हुए ग्रामों में कृत्रिमता का आवरण न होगा ।

प्रत्येक मनुष्य को कार्य करना होगा । बैठे बिठाये समय नष्ट न करना होगा ।

जमना लाल जी बाल गगाधर तिलक के चित्र की ओर सकेत करते हुए बोले—

‘यह सब भी तो साधारण जीवन व्यतीत करने वाले, कृत्रिमता से दूर रहने वाले सरल व्यक्ति ही तो थे । मैं सहमत हूँ ।’

मैकू मामा ने खड़े होकर एक बार गाँधी जी के चित्र के समक्ष प्रण किया ।

‘मैं आपके सरल जीवन, निष्कपटपूर्ण व्यवहार का अनुकरण करता हुआ प्रत्येक ग्रामवासी को कर्मठ बनाऊँगा । अपनी कृषी अपने हाथ द्वारा करना सिखाऊँगा । मुझे स्फूर्ति प्रदान कीजिए ।’

मैकू मामा के इस प्रण को सुनकर हम दोनों ही उनके पास खड़े हो गये । भाई जमनालाल जी ने मैकू मामा का हाथ अपने हाथ में भरते हुए कहा—

‘ऐसा ही होगा । क्या भारतवर्ष का प्राचीन जीवन अच्छा न था । यदि उसमें दोष प्रविष्ट हो गये थे । उन दोषों को दूर करना हमारा कर्त्तव्य था, न कि उसे नये सिरे से दूसरे रूप में ढालना हमारा ध्येय रह गया था जिस कारण आज हम अपनी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति के लिये दूसरों का मुख ताकते हैं । माना एक दिन हम भी मशीनें बनाने लगेंगे और छोटे राष्ट्रों को अपनी बनाई हुई मशीनें भेजना प्रारम्भ करेंगे । इसके अर्थ तो वही हुए कि हम भी रूस तथा अमरीका के समान एक दिन दूसरे राष्ट्रों से अपने स्वार्थ-पूर्ति के लिये चतुराई से भरी हुई सौदेबाजी प्रारम्भ करने लगेंगे तथा सदैव इसी प्रयत्न में लगे रहेंगे कि हमारी चतुराई खुलने न पाये ।’

मैंने भाई जमनालाल जी की ओर देखते हुए अपने मोढ़े पर सम्मल-कर बैठते हुए कहा—

‘आप बिल्कुल ठीक कहते हैं भाई जी । अधिक धन की लालसा

सदैव कलह का कारण होती है। चाहे वह गृह-कलह हो अथवा राष्ट्र। जितने भी धनी प्रदेश है, उनका आचरण ठीक धनिकों जैसा है जो सदैव अपने स्वार्थ की ही बात किया करते हैं, पर दूसरों को यही दर्शाते हैं कि उन्हें दूसरों की हित की चिंता में रातों नींद नहीं आती।'

मेरे कहने के पश्चात् वह दोनों व्यक्ति कुछ देर तक शान्त बैठे हुए सोचते रहे। भाई जमनालाल जी खड़े होकर अकड़कर हाथ सीधे करते हुए बोले—

‘अच्छा भाई मैकूलाल जी इस पर गभीरता से विचार करना होगा। मैं चल रहा हूँ।’

यह कहते हुए जमनालाल जी चले गये। मैकू मामा पास की कुर्सी पर बैठे हुए बड़ी देर तक सोचते रहे। मैं खाना ले आया। भोजन भी उन्होंने कम ही किया। किसी योजना के बनाने में उनका मस्तिष्क अन्दर ही अन्दर कार्य कर रहा था। एक ग्रास तोड़कर मुख में रखते, चबलाते रह जाते। दूसरा ग्रास तोड़ने की याद ही न रहती। मैं बोल उठा—

‘मामा जी भोजन कीजिये।’

‘फिर से वह ग्रास तोड़कर मुख में रख लेते। कभी कभी मुहँ भी न चलाते दो मिनट तक। एकबारगी मेरे कहने पर कि—

‘खाइये मामा जी, क्या सोच रहे हैं’ और फिर से उनका मुख चलने लगता।

मैकू मामा, जमनालाल तथा मधुसूदन जी ने अपने मन्त्रिपद से इस्तीफा दे दिया। एक स्थान को चुनकर उन्होंने उसे आदर्श ग्राम का रूप प्रदान कर दिया। प्रातःकाल उठकर ईश्वर वदना होती। ईश्वर वदना में साधारण शब्दों का प्रयोग होता यथा 'हे भगवान् हमें सद्बुद्धि दीजिये। हम दूसरों के प्रति सहानुभूति करना सीखें। हम शान्ति पूर्वक रहना सीखें। हमें परिश्रमी बनायें। हम आत्म निर्भर बनें।'।

प्रत्येक पुरुष दो-दो घंटे हल जोतने में अपना समय देता। ग्राम में एक स्थान पर गोशाला बन गई। मैकू मामा, जमना लाल जी मधुसूदन जी तथा मै हाथ से चारा, सानी, कुट्टी इत्यादि में सहायता करते। गाँव की उपज एक स्थान पर सुरक्षित रखी जाती। अपने खाने भर को सबको प्राप्त हो जाता। बची हुई सामग्री एक स्थान पर सुरक्षित रहती। ज्ञान मंदिर खुल गये। बालकों को सदाचार पूर्ण जीवन, सरल रहन सहन उच्च आदर्श की शिक्षा मिलने लगी। कृषी तथा दूध वाले पशुओं का पालन-पोषण में सबको दो घंटे के लिये हाथ बटाना पड़ता।

मैकू मामा जमनालाल जी तथा मधुसूदन भाई को फावड़ा लेकर गाँव की सड़क तैयार करने में बड़ा आनन्द आता। ग्रामीणों ने मिलकर अपने ग्राम की सड़क बना डाली। फलों के बाग आसपास लगा दिये गये। इन सबके लिये प्रत्येक पुरुष के लिये जिस कार्य से भी पृथ्वी की उर्वरा शक्ति से हम नीज संबंधी उत्पादन बढ़ा सकें कार्य करना

अवश्यक समझा गया। हाथ की कारीगरी प्रारम्भ हो गई। यथास्थान सबके योग्य कार्य प्रारम्भ हो गया।

चमन तथा रोमिल भी मैकू मामा के आदर्श ग्राम में आ गये थे। उनके साथ ही सरला जी भी आ गई थी। चमन तथा रोमिल ने ग्राम के एक किनारे अपना अस्पताल खोल लिया। लोगो को दवा-दारु की पूर्ण सुविधा प्राप्त हो गई। वह लोग ग्रामीणों को घरेलू नुस्खे बतला देते जिससे उनकी बीमारी में अधिक व्यय न होता। प्रत्येक शाखा की उचित तथा सस्ती औषधी को मान्यता दी गई। बच्चों को प्रारम्भिक पाठशाला में साधारण रोगों के निदान की विधिग्राँ समझाई जाने लगी। ग्रामवासियों ने ग्राम की सफाई रखने में सहयोग देना प्रारम्भ कर दिया।

सरला जी ग्रामीण स्त्रियों को हाथ की बुनाई, ऊन के स्वेटर, दस्ताने, मोजे इत्यादि बुनना सिखलाने लगी। एक दूर कोने पर हाथ कर्घा का कार्य ग्रामीण बड़े चाव से करते।

दूर दूर इस आदर्श ग्राम की प्रशंसा होने लगी। आसपास के ग्रामीण इस ग्राम में बसने के लिये व्यग्र होने लगे। मैकू मामा तथा उनके साथियों ने आधे मील के अन्तर में ही ठीक वैसे ही दूसरे ग्राम की स्थापना कर दी। बाबू, भुलवा, बाबू की माँ तथा करिमवा ममाचार पाते ही सब वहाँ पर पहुँचे। वह जी जान से कोल्हू द्वारा पेरे गये तेल के कार्य में लग गये। करिमवाँ दरियाँ तथा कालीन बुनने में बड़ा दक्ष था। उसे उस कार्य में लगा दिया गया।

किसी ग्राम में यदि किसी वस्तु की कमी हो जाती, वह तुरत दूसरे ग्राम से, जहाँ उसकी बहुलता होती, बिना किसी स्वार्थ के पहुँचा दी जाती। इस प्रकार किसी भी वस्तु पर किसी का अधिकार न रहा।

सब वस्तुएँ सबके लिये थी। वस्तुओं को कोई भी व्यर्थ में उपयोग में न लाता। घी, दूध, मक्खन का समुचित प्रबंध हो गया। गोशालाओं में पशुओं के पालने का प्रबंध हो गया। घी, दूध इत्यादि की बहुलता हो गयी।

राखन तथा माखन मामा भी आ गये थे। यह लोग डेरी के कार्य में लग गये। जैसे जैसे हम लोगों के आदर्श ग्राम की ख्याति बढ़ती गई। लोग हमारे ग्रामों की ओर आकर्षित होने लगे। छोटे-छोटे आश्रम बनते गये। शिक्षा का समुचित प्रबंध हो गया। कलाओं के विकास के लिये उचित प्रबंध किया गया। शिक्षा का ध्येय धनी बनना न समझा गया। विभिन्न कलाओं द्वारा अपने स्वार्थ का बलिदान करना सिखाया जाने लगा।

ग्राम पचायते बना दी गई। आपस के झगड़ों का निबटारा पचायतों द्वारा होने लगा। बड़े झगड़े ग्राम-सभा द्वारा निबटाये जाते। अस्पृश्यता के लिये कोई स्थान न था। कृषी की शिक्षा कार्यरूप में अनिवार्य समझी गई। करघों का कार्य ग्राम-ग्राम में फैल गया। हाथ की बनी वस्तुओं पर अधिक बल दिया जाने लगा जिससे सभी व्यक्ति कार्य में लग गये।

मैकू मामा ने मिट्ठन मामा को पत्र लिखकर उसी ग्राम में सहयोग देने का अनुरोध करते हुए बुलवा लिया। यहाँ के कार्य-कर्ता दूसरे ग्रामों को इसी उदाहरण पर बसाने के लिये निकल गये।

मैकू मामा नित्य पाँच बजे प्रातः उठ जाते। खेतों पर कार्य करने के लिये ग्रामवासी निकल जाते। बैलों की घंटियों का मधुर शब्द वातावरण को सुखद बनाता। हल्की प्रातःकाल की बयार शरीर में सिहरन उत्पन्न करती। मार्ग में तालाब के पक्षी हम लोगों को देखकर खेतों की ओर उड़ जाते। खेत के निकट ही प्रातःकालीन उदित

हुए सूर्य के समक्ष स्त्री पुरुष खड़े होकर बदना करते। स्त्रियो तथा पुरुषो द्वारा उच्चारित युगल बदना का स्वर वातावरण में गूँज उठता। सूर्य अपनी स्वर्णिम धूल बिखेर कर उनके चिरजीवी होने का आशीर्वाद देता। ऊषा अपने स्वर्णिम करो से उनके मुखो पर स्फूर्ति उत्पन्न कर देती। बदना समाप्त होते ही स्त्रियाँ गीत गाती हुई खेतो की निराई में लग जाती। पुरुष बुआई जुताई में लग जाते।

ग्राम में कहीं स्त्रियाँ मधुर गीतो पर बड़े बड़े मटको में मथानी द्वारा दूध बिलोती। उसके घरघर के शब्द को सुनने के लिये छोटे-छोटे दुधमुहे बालक खम्भे की आड़ में खड़े होकर माँ की दृष्टि बचाकर सुनते रहते। माँताये उन पर दृष्टि डालकर नौनिहाल 'हो' उठती। बच्चा देखते ही कि उसकी माँ ने उसे देख लिया है, भागकर पीछे से अपनी माँ के गले में हाथ डालकर लिपट जाता। माँ से मक्खन के लड्डू की रार करता। माँ उसके मुख में मक्खन डालकर उसके मुख का चुम्बन लेती हुई अपने कार्य में लग जाती। खेत से थके हुए व्यक्ति घर पर इन गीतो को सुनकर गद्गद् हो उठते। उनकी थकान उन गीत लहरियो में विलीन हो जाती।

कहीं स्त्री पुरुष साथ बैठे हुए चटाई बुनने का कार्य करते। स्त्री वर की लम्बी-लम्बी लच्छियाँ बनाती, पुरुष उनको मुस्कराता हुआ हाथ से ले लेता। बीच में शब्द फूट पड़ता।

'अरे रूपा एक गौनई हुई जाय।' उसके प्रारम्भ करते ही अन्य स्त्रियो भी उसका साथ देती और सामूहिक कार्य में स्फूर्ति आ जाती। पुरुषो की उँगलियाँ लोक गीतो पर झूमते हुए जल्दी-जल्दी चलने लगती।

रगधू चटाई पर उँगलियाँ चलाता हुआ बोल पड़ता।

'आश्रम और ग्राम सभा भवन को चटाई से पूरा सजा देना है। जल्दी जल्दी काम होय चाही। फिर इसी तरह एक-एक चटाई हर घर में पहुँच जाय तो क्या कहना।'।

संध्या समय युवक कबड्डी के खेलों में लग जाते । अखाडों में आधुनिक ढंग के व्यायाम होते रहते । ग्राम की ओर से युवक तथा युवतियों के लिये मनोरंजन तथा व्यायाम दोनों का ही प्रबंध रहता । संध्या समय नृत्य कीर्तन, भजन इत्यादि के समारोह होते ।

पारिवारिक तथा ग्राम के सभी वर्ग के लोगों के सम्मिलित भोजन की प्रथा चल निकली ।

वर्षा काल आ पहुँचा। चारो ओर घनघोर घटाये घिर उठी। अत्यधिक वृष्टि से गाँव के आसपास जल घिर गया। बाबू तथा भुलुवा की अध्यक्षता में जमना लाल तथा मधुसूदन जी ने गाँव के अंदर पानी न आने देने में रात-दिन लगाकर कार्य किया। मैकू मामा तथा मैं झाबो में मिट्टी भर-भरकर भुलुवा की सहायता से नदी के बहाव को जिसका जल गाँव के अंदर प्रविष्ट करता था, बाँध बनाकर रोके रहे।

पानी का भय कम हो गया। नीम की डालों में झूले पड़ गये। स्त्रियाँ लोक गीत गाती हुई लम्बी पैंगे भरने लगी। रोमिल तथा भुलुवा की माँ दोनों ओर झूले पर खड़ी होकर पैंगे भरती। झूले के पट्टे पर बैठी हुई अन्य स्त्रियाँ अपने सिर की सारी सम्हालती हुई ऊँचे नीचे स्वरो में गीत दुहराती।

‘वर्षा लागल मोरी गुइयाँ सइयाँ नाही आये मोर।

बादल गरजे विजली चमके छाई घटा घनघोर ॥ वर्षा.....

दादुर बोले पपीहा बोले कोयल मचावे शोर।

जाओ रे पपीहा पिया की सुध ले आओ, पइयाँ मै लागूँ तोर।

वर्षा लागल.....

नदिया किनारे सारस बोले मैं जान पिया मोर।’

पपीहे की ‘पी कहाँ’ वृक्ष की डाली से सुझई दे जाती। हल्की

फूहारे प्रारम्भ हो जाती पर गीत अपनी अनवरत ध्वनि पर चलता रहता। स्त्री पुरुष एक साथ सम्मिलित भोजन करते हुए समारोह का आनंद उठाते। बच्चे ताली पीटते हुए गद्गद् कंठ से कोई राष्ट्रीय गीत मिल जुलकर एक साथ अलाप उठते।

ग्राम पचायतो ने सब में सेवा भाव उत्पन्न कर दिया। निस्वार्थ त्याग अपने लिये कुछ नहीं, जो कुछ है ग्राम का ग्राम के लिये ऐसी भावना लोगो में उद्रेक हो गया। कोई भी झगडा उठता पंच मिलकर वही शांत कर देते। ग्राम-सभा तक जाने की आवश्यकता ही न पड़ती।

वर्षा काल में ग्रामीणों द्वारा लगाये गये बाग लहलहा उठे। धान रोपने में मिट्ठन मामा तथा मैने ग्रामीण जनो की सहायता से खेत तैयार कर दिये। लोग अच्छी फसल की सम्भावना में सध्या समय फसल सम्बन्धी लोकगीत गाते। धान रोपने की विधियाँ स्कूलों में बतलाई जाती। नाज पैदा करने में अधिक बल दिया जाता। तम्बाकू, गन्ना, मूँगफली, पोस्ता की बुआई नाज के अनुपात में बहुत ही कम मात्रा में बुआई जाती।

शीत ऋतु आ पहुँची। ऊनी वस्त्रों का कार्य प्रारंभ हो गया प्रमुख उद्योग धंधों को कार्य सभी को सीखना पड़ता। जब जैसा अवसर आ पड़े सभी सहायता देने को, कार्य में हाथ बटाने में मीन-मेख न करते क्योंकि ग्राम उनका था। सब में एक तथा एक में सब थे। ग्राम के भंडार से सब को जड़ावर प्राप्त हो जाती। भुलुवा करिमवा सबसे बूढ़े मैकू मामा की चर्चा करते 'यह खुसियाली मैकू मामा की बौदलत आ पहुँची। कैसा अच्छा प्रबन्ध है। सबको खुश देखके हमारा जी खुसी से नाचने लगता है'।

ग्राम के बीच स्थान में अलाव जलता। नवयुवतियाँ अलाव के चारों ओर गोलाकार में छोटी-छोटी बाँस की डडियाँ पीट-पीटकर घूमती हुई नृत्य करती। उनके पीछे कुछ दूर हट कर गोलाकार रूप में नवयुवक बाँसुरी बजाते हुए उसकी ध्वनि पर ही युवतियों के पद चाप

की गति पर सम मिलाते हुए उनके साथ ही प्रज्ज्वलित अग्नि के चारो ओर नृत्य करते। स्त्री पुरुष, वृद्ध, अघेड, तथा छोटे बालक दूर खड़े होकर उम सभा का आनंद उठाते। धान बुवाई, निराई तथा उनकी रखवाली तत्पश्चात् उनकी कटाई सबधी नृत्य में सभी ग्रामीण जन आनंद-विभोर हो जाते। बूढ़े मैकू मामा को वाध्य कर लोग उन्हें वहाँ बैसने, वह अब जीर्ण होते-जा रहे थे। अवस्था उन पर अपनी गहरी छाप छोड़ रही थी तथा वह अपनी झुर्रियों की चिन्ता न करते हुए भी वैसे ही कर्मठ बने हुए थे।

विवाह सबधी समस्याओं का समाधान भी ग्राम-निवासियों ने खोज निकाला था। कोई भी युगल ग्राम-सभा के समक्ष निश्चित निर्धारित अवस्था का होने पर शपथ ग्रहण कर वैवाहिक सबंध स्थापित कर सकता था। ग्राम सभा की ओर से विवाह सम्पन्न हो जाता। किसी अतिरिक्त समारोह की आवश्यकता ही न रह गई थी। इस प्रकार दहेज इत्यादि का प्रश्न ही न उठता। युगल ग्राम के थे, ग्राम उनका था।

ऋतु पूर्व बड़े समारोह पूर्वक ग्राम मनाये जाते। धान की कटनई पर सर्व ग्राम में उत्सव होते। विभिन्न आश्रमों के एक साथ भोजन पकते और इस प्रकार सोंरा ही ग्राम एक साथ उत्सव मनाते हुए नृत्य गायन के पश्चात् भोजन करते।

गेहूँ की बुआई हो चुकी थी। सभी को अनिवार्य रूप से खेतों पर जाना होता। कृषी सबधी शिक्षा सभी को अनिवार्य रूप से लेनी होती। कृषी के कार्य से कोई भी विमुख न हो सकता था। अपाङ्गों को छोड़ सभी इसमें सहयोग देते। प्राचीन खेती की पद्धति में समुचित सुधार किये गये। इस प्रकार पैदावार बढ़ाने के नवीनतम ढंग अपना लिये गये। उनके भूल सिद्धान्तों के प्राचारात्मक रूप पर ध्यान न देकर उनकी वास्तविकता तथा उनके प्रयोगात्मक रूप पर ही बल दिया गया। केवल यह समझकर उत्पादन के पाश्चात्य सिद्धान्त न अपनाये गये कि

पाश्चात्य का सब कुछ उत्कृष्ट ही है अतः उसे अपनाना ही है। प्राचीन भारतीय कृषि पद्धति में जिन परिवर्तनों की आवश्यकता थी, उनके दोषों को दूर कर भारतीय प्रणाली विकसित की गई।

गेहूँ की कटनई हो गई। जमना लाल तथा मधुसूदन जी जो मैकू मामा से तो आयु में छोटे थे पर वह भी छः दशाश के लगभग पहुँच चुके थे। वह खेतों के बीच में खड़े थे। गेहूँ की पीली दालें हम-मे लहराती हुई उनके चाँद के रूपहले बालों का अभिवादन कर रही थी। स्त्रियाँ तथा पुरुष युगल गान गाते हुए खेतों के बीच प्रवेश कर हँसिया चलाते जाते। कुछ व्यक्ति उनके गठ्ठर तैयार करते जाते। स्त्रियाँ उन्हें उठा-उठा कर एक स्थान पर एकत्रित करती जाती। पृथ्वी ने गेहूँ की बालों को अकुरित किया था। पवन ने उन्हें झुलाया-डुलाया था, जल ने उनके सूखे गले को तर किया था। उषा ने उनके ओस पड़े दुध मुहे मुख का चुम्बन लेकर प्यार किया था। अशमाली ने उन्हें कठोर परिस्थितियों में भी सघर्ष लेने योग्य शक्ति एवं स्फूर्ति प्रदान कर दी थी। आज वह प्रौढ़ होकर उन सबकी कृतज्ञता स्वीकार करते हुए, जिन्होंने उन्हें यह रूप प्रदान किया था, धराशायी पड़ी थी। उन्हें सतोष था वह जाते-जाते ~~परोपकार~~ के मंत्र को नहीं विस्मृत कर सकी है। मधुसूदन जी उन्हें देखते हुए किन्हीं विचारों में निमग्न थे। उनकी अवस्था भी गेहूँ की बालों जैसी ही निकट आ रही थी। उन्हें अचानक प्रेरणा मिली 'मनुष्य अपने को बड़ा बनाता है केवल परोपकार के लिये वह जीवित है केवल परमार्थ के लिये' एकबारगी चिड़ियों का एक झुंड कटे हुए खेतों के बीच से उड़ता हुआ उनके चारों ओर चक्कर काट कर दूसरे स्थान पर बैठ गया।

मैकू मामा अत्यधिक जीर्ण हो गये थे। सरला जी उनकी सेवा में लगी रहती। सरला जी को ग्राम के अन्य धंधों से ही बहुत कम अवकाश मिलता। लोग उनसे भी विश्राम करने को कहते, पर वह सेवा-

कार्य में हाथ बटाती ही रहती । उनकी भी अवस्था काफी हो चली थी । बाल उनके भी खिचड़ी होने लगे थे ।

गेहूँ की कटनई हो रही थी । होली का पर्व आ पहुँचा था । ऋतु-परिवर्तन का यह पर्व लोगो ने मैकू मामा का अभिनदन करने के लिये बड़ी धूम-धाम से मनाया । सरला जी के पास रमन तथा मौलश्री भाभी की चिट्ठी आई थी । वह लोग इन लोगो की ख्याति सुनकर उनके मिलने के लिए उत्सुक थे । उन लोगों ने पत्र में ऐसा आभास दिया था कि वह भी उसी ग्राम के निवासी बनना चाहते हैं । मौलश्री भाभी ने स्वीकार किया था कि उनका मार्ग गलत था । मैकू मामा को सरला जी ने इसकी सूचना दी । वह अत्यंत प्रसन्न थे ।

इस ऋतु-परिवर्तन के पर्व के दिन लोगो ने प्रातःकाल से ही ग्राम की परिक्रमा करते हुए प्रभात फेरियाँ प्रारम्भ कर दी । नवयुवक नवयुवतियों, ग्राम सेवक तथा सेविकाओं की एक सी बेशर्भूषा में नव निर्माण तथा नव जागरण के गीत गाते हुए मैकू मामा को अपने साथ लिवा लाये ग्राम के बीचोबीच में राष्ट्रीयध्वज के साथ मैकू मामा का ग्राम निवासियों के मध्य अभिनदन हुआ । आकाश निर्मल तथा स्वच्छ था । उषाकाल की स्वर्णिम धूल अशुमाली अपने साथ ढेर-सा गुलाल लिये हुए दिगाङ्गनाओं को किसी के अभिनदन निमित्त सौंप रहे थे । चंद्र तथा तारिकाये रूपहली अबरक पश्चिम दिग्बधू को उस महान व्यक्ति पर अर्पित करने के लिये अपने प्रदेश के दृश्य को निहारने के लिये उत्सुक हो रहे थे । ग्राम निवासियों ने भी उस नैसर्गिक स्वर्ण धूल में अपना अर्घ्य भी साकार कर देने के लिये ढेर सा अबीर गुलाल एकत्रित कर लिया था । मैकू मामा एक मंच पर बैठाये गये थे । पास ही जमनालाल तथा मधुसूदन जी थे । सरला जी एक थाल में आरती सजाकर उनकी आरती के लिये उद्यत थी । मैकू मामा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया । नव युवतियों द्वारा राष्ट्रीय गान गाये जाने के पश्चात् स्त्री-पुरुषों के लोकगीत प्रारम्भ हो गये । मैकू मामा सरला जी मैकू मामा

की अन्य ग्राम मेविकाओ के साथ आरती उतार रही थी, एक वृद्ध पुरुष आगे बढ़ता हुआ मैकू मामा के चरणों पर गिर पड़ा। उसके हँसे गले से अटपटे शब्द फूट पड़े 'मै अपराधी हूँ, पापी हूँ, मुझे क्षमा कीजिये। घन तुच्छ है। मनुष्य को विक्षिप्त बना देता है।'।

मैकू मामा उन्हे उठाते हुए बोल पड़े 'आप वृद्ध होकर यह क्या कर रहे हैं। कहिये मौलश्री कहाँ हैं और रमन ? मौलश्री जो पोछे में थी, रमन भी उसके पास खड़े थे, आगे बढ़ते हुए बोले—

'हम दोनों ही आपके साथ हैं। मौलश्री के पिता जी ने अपनी भूल स्वीकार कर ली। उन्हें पाश्चाताप हो रहा था अपने किये पर। 'हम लोग कही न जायेंगे। यही रहेगे।'

रमन ने आगे इधर-उधर देखते हुए कहा—

'पचू ने बीना से विवाह किया है। वह लोग भी यही रहेगे।'

मैकू मामा मुस्कुरा दिये। उनके सफेद बाल चमक उठे। भीड़ उत्सुक हो रही थी जानने को यह क्या हुआ अभिनदन के बीच। सब की समझ में आ गया। वह सब हमारे ग्राम की ओर भूले भटको का आकर्षण है।

वाद्य बज उठे। लोगो ने अबीर गुलाल मैकू मामा पर दूर से हवा में उड़ाना प्रारम्भ कर दिया। पास आ-आकर लोग उनके माथे पर गुलाल का टीका लगा जाते। 'इसके बाद लोगो' आ'प'ने एक दूसरे को अबीर गुलाल से सराबोर कर दिया।

सरला जी बहुत प्रसन्न थी। मैकू मामा के इस आदर को देख फूली न समा रही थी। वह भूल चुकी थी मैकू मामा उनके हैं। मैकू मामा सबके थे अतः उन्होंने अपने भौतिक प्रेम को विशुद्ध दिव्य तथा अलौकिक प्रेम में न्योछावर कर दिया।

ग्राम सभा की ओर से स्वादिष्ट मिठाइयों का प्रबध था। बच्चे खेलते कूदते हुए स्वादिष्ट पदार्थों का आनंद ले रहे थे। सभी स्त्री-

पुरुष आनदातिरेक से मैकू मामा की जय-जयकार कर रहे थे। मैकू मामा ने सबको एक क्षण शांत करते हुए कहा—

‘मेरी जय जयकार करने से कोई लाभ नहीं। कालोत्तर मे लोग मनुष्य विशेष की जयकार करने से पथ भ्रष्ट हो जाते हैं। उन्हें मति विभ्रम हो जाता है। ग्राम सबका है, हम ग्राम के हैं। लोक सबका, हम लोक के हैं। अतः ससार की जय कहो, धरती माता की जय कहो, जिसने हम सबको उत्पन्न किया है। वसुधैव कौटुम्बकम् का सदेश ससार में व्याप्त हो जाय। यही ईश्वर से प्रार्थना करो।’

भीड़ कुछ देर स्तब्ध खड़ी रही। फिर वही नारे लगने लगे। अबीर गुलाल से वातावरण रजित हो उठा। पास के पीड़-पौधे सब अपने हृदय का अनुराग, प्रदर्शित करते हुए लाल वर्ण के हो रहे थे। फिर भीड़ से जनरव सुनाई दिया।

‘धरती माता की जय हो, भारत माता की जय हो।’